# ABHISARAN

## HUMIANTIES RESEARCH JOURNAL

**ISSN- 2229-4856**
**MARCH 2026**
**SPECIAL ISSUE**

**ISSN 2229-4856**

# *Abhisaran*

***Special Issue- Vol. 01 March 2026***

**Half Yearly Research Journal**

Humanities & Commerce

---

Chief Editor

**Prin. Prof. Dr. S. S. Undare**

Editor

**Dr. S. K. Pardeshi**

Managing Editor

**Prof. Dr. B. D. Kokate**

Associate Editors

**Prof. Dr. S. N. Babar**

**Prof. Dr. R. K. Kale**

**Dr. B. R. Dahe**

**M.S.P. Mandal's**

**Balbhim Arts, Science and Commerce College, Beed 431122**

NAAC Reaccredited A+ Grade

ISO Certified: 45001:2018

UGC: Mentor College under PARAMARSH

Email– mspmbeed@gmail.com

abhisaranindia2229@gmail.com

**Website: www.mspmbeed.com**

**ISSN 2229-4856**

**Editorial Board:**

- Prof. Dr. Bhaskar Patil (Akola)
- Prof. Dr. Dattatray Murumkar (Mumbai)
- Prof. Dr. Ramdas Tonde (Palghar)
- Prof. Dr. Mustjib Khan (Chh.Sambhajinagar)
- Prof. Dr. R.A.F.Ajith (Kanyakumari)
- Prof. Dr. Vyanktesh Lamb (Sillod)
- Prof. Dr. Sandip Choudhari (Chh.Sambhajinagar)
- Prof. Dr. Sudhakar Morey (Mumbai)
- Prof. Dr. Mansram Autade (Chh.Sambhajinagar)
- Prof. Dr. Chandrashekhar Gitte (Nagpur)
- Prof. Dr. Vinodkumar Yadav (Arunachal Pradesh)
- Prof Dr. Dilip Chavan (Chh.Sambhajinagar)

**Registrar:** Shri P.P.Dawkar

**Editorial Office:** Balbhim Arts, Science and Commerce College, Beed
**Telephone No-** 02424 (222739) **Email–** mspmbeed@gmail.com
abhisaranindia2229@gmail.com

**Publisher:**Principal, Balbhim Arts, Science and Commerce College, Beed
**Owner:** Principal, Balbhim Arts, Science and Commerce College, Beed

(Editors are not always in agreement with the opinions and views expressed by the contributors /Authors in their articles)

# Index


| Sr. No. | Paper Title | Page No. |
|---|---|---|
| 01 | Contribution of Indian Women Entrepreneurs to the Global Economy: A Critical Study<br>Prof. Mangilal Ganpat Rathod | 01 |
| 02 | How Various AI Tools Can Be Used by Small-Scale Women Entrepreneurs in Their Own Businesses<br>Dr. Landge Y.V. | 04 |
| 03 | Role of SHGs in developing managerial skills of women in JalnaTaluka: An analysis<br>Dr.Pallavi Bhavsar | 11 |
| 04 | Socio-Cultural Barriers and Their Solutions: Experiences of Women Entrepreneurs”<br>Suhas Bhikaji Vidyagar | 16 |
| 05 | The Study of Women Empowerment in Marathi Literature She who holds the cradle’s rope, rules the world.<br>Vedpathak Archana Kumar | 21 |
| 06 | Leadership Qualities for Women Empowerment<br>Prof. Dr Mrs Anupama Prakash Pol | 24 |
| 07 | Women Entrepreneurship In The Digital Age: Online Platforms And Marketing Strategies<br>Sable S.A | 29 |
| 08 | Role of Government scheme and policies collaboration or challenge for women self-Employment<br>Yelme Prakash Shesherao | 32 |
| 09 | Role of woman in Marginal literature<br>Professor Dr. Sasane S.S., Professor Dr. Swati Kulkarni | 35 |
| 10 | Rural Women Entrepreneurship: Prospects and Social Transformation<br>Dr. Jyoti Rameshrao Kote | 38 |
| 11 | Empowering Rural Women through Entrepreneurship: Challenges and opportunities<br>Dr. Syed Tanvir Badruddin | 41 |
| 12 | Economic and Social Impact of Women’s Leadership in the Research Field<br>Dr. Gahininath Shivaji Bhosale | 45 |
| 13 | Impact of Self-Help Groups on Women Empowerment in Rural India<br>Dr.Geetanjali Anantrao Shelke | 48 |

| | | |
|---|---|---|
| 14 | Leadership Skills and Entrepreneurial Growth among Women in Small Scale Enterprises of Marathwada.<br>Dr.Sandipan Ambadas Unwane Dr. V. B. Kute | 54 |
| 15 | A Critical Study on Women Entrepreneurs in Small Scale Industry in the Marathwada Region<br>Dr.Sanjay Ratnaparkhe | 60 |
| 16 | From Survival to Leadership: Women in Today's Economy<br>Ms. Rohini Sopanrao Dharmode | 65 |
| 17 | Redefining Commercial Ethics: Sudha Murty's Vision<br>Dr. Anjali Anantrao Waghmare | 68 |
| 18 | Representation of Rural Women and Economic Agency in Indian English Literature<br>Dr.A.R. Maniyar | 71 |
| 19 | Representation of Rural Women and Economic Agency in Indian English Literature<br>Dr Patil Manisha Sarjerao | 81 |
| 20 | The Role of Pradhan Mantri Mudra Yojana in Promoting Entrepreneurship, Employment and Inclusive Economic Development in Maharashtra<br>Ms. Rajanandini Rajendra jain Dr. Vrushali B. Kute. | 85 |
| 21 | The Economic and Social Impact of Women's Leadership in India: A Statistical and Analytical Study<br>Sumit Prabhakar Gawali | 93 |
| 22 | Women Entrepreneurship in the Digital Age: Online Platforms and Marketing Strategies<br>Akshaykumar Umakant Bhadrashetti | 98 |
| 23 | International Collaboration and Market Access in Women Enterprises<br>Prof. S.N. Akulwar | 103 |
| 24 | Flying Towards Freedom: Identity, Heritage, and Liberation in Toni Morrison's Song of Solomon<br>Dr. Pratik Subhashkumar Sirsat | 112 |
| 25 | Women Entrepreneurship in the Age of Digitization (Indian Context)<br>Dr Ankush G Padle, | 114 |
| 26 | Role of Government Skim And Polycies Collaboration Or Chalenges For Women Self Employment.<br>Varsha M. Jaysingpure | 119 |
| 27 | A Study of Rural Women Entrepreneurship: Prospects and Socio-Economic Transformation.<br>Dr. Bharat Rawan Dahe | 121 |
| 28 | विविध क्षेत्रों में नारी सहभगिता के बदलते आयाम<br>डॉ .अरुण कुमार | 126 |

| | | |
|---|---|---|
| 29 | कामकाजी महिलायें एवं समस्यायें एक अध्ययन-<br>डॉ.कलावती गाडरिया | 131 |
| 30 | भारत में महिलाओं की प्रस्थिति एवं बदलते आयामतिहासिकऐ : अनुशीलन<br>डॉ.विमल कुमार तिवारी | 137 |
| 31 | ग्रामीण महिला उद्यमिता: सम्भावनाएँ एवं सामाजिक परिवर्तन<br>डॉ. शशि गुप्ता | 141 |
| 32 | महिला स्वयं सहायता समूहों की आर्थिक भूमिका<br>डॉ. भावना कमाने | 145 |
| 33 | महिला स्वयं सहायता समूहों की आर्थिक भूमिका और नेतृत्व क्षमता<br>डॉ.अमोल पालकर, श्री.हनुमान तुळशीराम नागणे | 149 |
| 34 | लघु उद्योगों में महिला नेतृत्व: सफलता की कहानियाँ और प्रेरणादायक उदाहरण"<br>प्रा.ज्योती बाबुराव चिलवंत | 153 |
| 35 | कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासो मे स्त्री पुरुष पात्रों के विविध रूप<br>शेख अली जाफर डॉ. मुरलीधर अच्युतराव लहाडे | 158 |
| 36 | हिंदी उपन्यासों में महिला उद्योजकता का चित्रण<br>डॉ.अमोल पालकर . | 163 |
| 37 | महिला नेतृत्व का आर्थिक और सामाजिक प्रभाव<br>प्रा. राजेंद्र वसंतराव जाधव | 166 |
| 38 | सरकारी योजनाओं और नीतियों की भूमिका: महिलाओं के स्वरोजगार के लिए सहयोग या चुनौतियां<br>शेख तौफीक महंमद रफीक | 169 |
| 39 | कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योगों में महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व<br>प्रियंका अशोक राऊत, प्रो. डॉ. ललिता एन. राठोड | 171 |
| 40 | चित्रा मुद्गल के साहित्य में उद्यमी महिला<br>डॉ. शिकलकर सुलताना गफूर | 177 |
| 41 | डिजिटल युग में महिला उद्यमिता: ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और विपणन रणनीतियाँ<br>सविता जगन्नाथ धुमाळ, डॉ. विनोद श्रीराम जाधव | 182 |
| 42 | नई शिक्षा नीति 2020 और व्यावसायिक शिक्षा : लड़कियों के लिए अवसर एवं दिशाएँ<br>राणुबाई सुभाष कोरे | 190 |
| 43 | नवसमाज निर्माण में हिंदी महिला लेखिकाओं की भूमिका: सामाजिक-आर्थिक चेतना का अध्ययन<br>डॉ. सुजाता सुर्यकांत हजारे | 196 |

| | | |
|---|---|---|
| 44 | पर्यावरणपूरक खेती में महिलाओं की भूमिका<br>औदुंबर बबनराव मोरे | 200 |
| 45 | भारत सरकार की योजनाएँ: अवसर एवं चुनौतियों से भरी ग्रामीण महिला उद्यमिता<br>पवार ज्ञानेश्वर राधाकिसन | 203 |
| 46 | सामाजिक महिला उद्यमियों के अनुभवों : समाधान सांस्कृतिक बाधाएँ और उनके-का संशोधन पर अध्ययन<br>प्रा.डॉ. भाऊसाहेब राजेंद्र नळे, प्रा. मंगल रामदास नेहरकर | 209 |
| 47 | महिला सशक्तिकरण : सरकारी योजनाओं की भूमिका<br>प्राजक्ता नानासाहेब देशमुख, प्रो .डॉ .ललिता एन .राठोड | 213 |
| 48 | महिला सशक्तिकरण में आर्थिक स्वावलंबन की भागीदारी<br>प्रा.डॉ.संगिता एकनाथराव आहेर | 218 |
| 49 | महिला स्वयं सहायता समूहों की आर्थिक भूमिका और नेतृत्व क्षमता<br>प्रा. डॉ. लक्ष्मण शिवराम मुंडे पल्लवी रघुनंदन खरात | 223 |
| 50 | मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण महिला उद्यमिता: संभावनाएँ और सामाजिक परिवर्तन'<br>प्रो. डॉ. मुरलीधर अच्युतराव लहाडे जयचंद अनंतराव तांबुरे | 227 |
| 51 | लघुउद्योगो मे महिला नेतृत्व सफलता की कहानियाँ : और प्रेरणादायक उदाहरण<br>प्रा.जयश्री जगन्नाथ पवार | 232 |
| 52 | सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ और उनके समाधान: महिला उद्यमियों के अनुभव<br>सौ. शीतल लिंडायत | 239 |
| 53 | नई शिक्षा नीति 2020 और व्यावसायिक शिक्षा: लडकियों के लिए अवसर और दिशाएँ<br>महेश खांडवे | 242 |
| 54 | नारी चेतना विमर्षमहादेवी वर्मा के साहित्यिक प्रदेय में :<br>डॉ. सुनिता यादव | 246 |
| 55 | उदय प्रकाश की कहानियों में समाजव्यवस्था का यथार्थवादी चित्रण<br>श्री. विजय हरिश्चंद्र सोमवंशी प्रो.डॉ. लहाडे मुरलीधर अच्युतराव | 251 |
| 56 | भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में महिला उद्यमियों की भूमिका<br>राधा आत्माराम राठोड | 256 |
| 57 | महिला सशक्तिकरण : सरकारी योजनाओं की भूमिका<br>प्राजक्ता नानासाहेब देशमुख | 263 |
| 58 | डिजिटल युग में महिला उद्यमिता: ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और विपणन रणनीतियां<br>हरिभाऊ नामदेव विटोरे | 268 |

| | | |
|---|---|---|
| 59 | भारतीयता: संकल्पना एवं स्वरूप<br>डॉ. राम सदाशिव बड़े | 271 |
| 60 | ग्रामीण महिला उद्योनिता संभावनाय व सामाजिक परिवर्तन"<br>डॉ . राजश्री बा . कल्याणकर | 275 |
| 61 | नई शिक्षा नीति और लड़कियों की वास्तविकता<br>बालासाहेब एकनाथराव येवले, डॉ. बाबासाहेब कोकाटे | 277 |
| 62 | नई शिक्षा नीति और व्यावसायिक शिक्षा लड़कियों के लिये अवसर और दिशायें<br>अंजु देवचंद वाघ | 281 |
| 63 | ग्रामीण महिला उद्यमिता: संभावनाएं और सामाजिक परिवर्तन<br>सय्यद सज्जाद एकबाल | 283 |
| 64 | महिला उद्यमियों हेतु सामाजिक- सांस्कृतिक बाधाएं एवं समाधान<br>प्रो.डॉ.ललिता एन.राठोड | 285 |
| 65 | ग्रामीण महिला उद्यमिता : संभावनाएं और सामाजिक परिवर्तन<br>सुनिता नारायण गायकवाड, डॉ.बाबासाहेब कोकाटे | 288 |
| 66 | नयी शिक्षा नीति और व्यावसायिक शिक्षा में महिलाओं हेतु अवसर एवं दिशाएँ<br>बिरकले शिवाजी विश्वांभर | 292 |
| 67 | भारत सरकार की योजनाएँ: अवसर एवं चुनौतियों से भरी ग्रामीण महिला उद्यमिता<br>पवार ज्ञानेश्वर राधाकिसन | 296 |
| 68 | डिजिटल युग में महिला उद्यमिता: ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और विपणन रणनीतियां<br>डॉ. आशा वैजनाथ फड | 302 |
| 69 | वर्तमान समय में हिंदी उपन्यासकारों का योगदान<br>प्रो.डॉ. ललिता राठोड शोध, अरुणा परशुराम राठोड | 307 |
| 70 | महाराष्ट्रातील स्त्री कामगार- लोकसंख्या प्रमाण आणि बेरोजगारीचा कल: स्वयंरोजगाराद्वारे सक्षमीकरणाची आवश्यकता"<br>आश्विनी कृष्णा केळे डॉ. डी. बी. मोरे | 310 |
| 71 | डिजिटल युगातील महिला उद्योजकता :ऑनलाइन प्लॅटफॉर्म आणि विपणन धोरण:<br>डॉ. रेणुका दशरथराव बडवणे (भावसार) | 317 |
| 72 | भारतातील महिला उद्योजकांच्या सामाजिक व सांस्कृतिक अडचणी व त्यांचे निराकरण<br>डॉ.माया वामनराव बनसोडे | 322 |
| 73 | महिलांच्या स्वयंरोजगारासाठी योजना आणि सरकारी धोरणे<br>प्रमिता हिम्मत भोजने, प्रो. डॉ. बाबासाहेब कोकाटे | 327 |
| 74 | कुटीर व हस्तकला उद्योगांमध्ये महिलांचा सहभाग<br>डॉ.रेखा बाजीराव ढेरे | 331 |

| | | |
|---|---|---|
| 75 | भिन्न'कादंबरीतील महिला सक्षमीकरणाचा विचार<br>डॉ. संदीप परदेशी | 333 |
| 76 | ग्रामीण महिला उद्योजकता : संधी आणि सामाजिक परिवर्तन<br>डॉ,काळनर सुनिता भास्कर. | 336 |
| 77 | पर्यायी व्यवसाय आणि पर्यावरण पूरक उत्पादनांमध्ये महिला बचत गटाची भूमिका<br>डॉ. स्वाती कुलकर्णी ' प्रा.एस.एस.ससाणे | 342 |
| 78 | स्वयंसाहाय्य गट चळवळीचा ऐतिहासिक विकास आणि ग्रामीण महिलांचे नेतृत्व-<br>डॉवनिता भास्कर साबळे | 347 |
| 79 | मराठा कालखंडातील कर्तृत्ववान स्त्रिया<br>प्रा .बप्पासाहेब रामलिंग शेजूळ | 351 |
| 80 | महिला उद्योजकतेमध्ये कौशल्य विकास प्रशिक्षण आणि नाविन्याची भूमिका<br>डॉ.पी.आर.बोडके | 359 |
| 81 | मुलींसाठी नवीन शैक्षणिक धोरण आणि कौशल्य विकास : एक ऐतिहासिक मीमांसा<br>डॉ. अनिता व्यंकटराव शिंदे | 364 |
| 82 | लघु उद्योगांमध्ये महिलांचे योगदान<br>डॉ. सुनिता अंबादास बोराडे | 376 |
| 83 | मुलींसाठी नवीन शैक्षणिक धोरण आणि व्यावसायिक दिशा व दशा<br>सुनिता अनंतराव राठोड | 380 |
| 84 | कुटीर आणि हस्तकला उद्योगांमध्ये महिलांचा सहभाग आणि नेतृत्व : एक संशोधनात्मक अभ्यास<br>श्री. अजय सुर्यकांत लांडगे | 383 |
| 85 | डिजिटल युगातील महिला सशक्तीकरण<br>प्रो. डॉ. मनोहर सिरसाट प्रा. आकांक्षा भगवानराव सोनवणे | 386 |
| 86 | महिलांच्या स्वयंरोजगारासाठी सरकारी योजना व धोरणे : कुक्कुटपालन आणि बंदिस्त शेळीपालनाच्या माध्यमातून आर्थिक सक्षमीकरणाचा अभ्यास.<br>डॉ.अशोक दशरथ सातपुते | 389 |
| 87 | महिला उद्योजकांसाठी सामाजिक व सांस्कृतिक अडथळे आणि त्यांचे निराकारण'<br>डॉ. अभिषेक राजेंद्र परब | 392 |
| 88 | महिला बचत गटांची आर्थिक भूमिका आणि नेतृत्व क्षमता<br>डॉ. वैशाली बागुल | 397 |
| 89 | ग्रामीण महिला उद्योजकता संधी आणि सामाजिक परिवर्तन :<br>सारिका मारोती दळवी प्रा. डॉ. द्रौपदी पंदीलवाड | 404 |

| | | |
|---|---|---|
| 90 | महिला उद्योजकांमध्ये आंतरराष्ट्रीय सहकार्य आणि बाजारपेठ<br>प्रा.डॉ. शामल भीवराव जाधव | 410 |

# Contribution of Indian Women Entrepreneurs to the Global Economy: A Critical Study

**Prof.Mangilal Ganpat Rathod**
( Head Department of History)
Vinaykrao Patil College,Vaijapur
Email: prof.mgrathod@gmail.com
Mo. 7744910866

**Abstract:**

This research paper examines the escalating influence of Indian women entrepreneurs on the global economic landscape. By shifting from traditional sectors to high-tech industries like Biotech, FinTech, and E-commerce, Indian women are redefining leadership. Using a mixed-method research approach, the paper analyzes the impact of key figures, identifies structural barriers such as the "Gender Funding Gap," and provides strategic recommendations for a more inclusive global economy.

## 1. Introduction:

The 21st century has witnessed a paradigm shift in the definition of entrepreneurship. No longer confined to small-scale domestic industries, Indian women have emerged as "Global Brands." According to a report by McKinsey Global Institute, achieving gender parity in entrepreneurship could add up to $12 trillion to the global GDP by 2025.

Indian women entrepreneurs are not just creating businesses; they are building ecosystems. From Kiran Mazumdar-Shaw's disruption of the pharmaceutical industry to Falguni Nayar's dominance in the digital beauty market, these leaders are fortifying the "Make in India" initiative on a global scale. This paper critically analyzes their journey, their impact on the global market, and the systemic challenges they continue to face.

## 2. Detailed Research Methodology:

This study employs a Mixed-Method Research (MMR) framework to ensure a holistic analysis.

Research Design: A combination of Descriptive (to outline the current state) and Analytical (to explain the "why" and "how") research.

**Data Collection:**

Secondary Data: Extensive review of reports from the World Bank, IMF, NITI Aayog, and Forbes.

**Case Study Method:** In-depth qualitative analysis of selected unicorn founders to understand leadership patterns.

**Quantitative Parameters:** Analysis of Market Share, Revenue Growth, and IPO valuations.

**Sampling:** A purposive sampling of five major sectors: Healthcare, Retail, Technology, Finance, and Education.

## 3. Global Success Stories: Case Studies

The following case studies illustrate how Indian women have scaled traditional barriers to achieve global dominance.

**3.1 Kiran Mazumdar-Shaw (Biocon Ltd.)**

Kiran Mazumdar-Shaw pioneered the biotechnology sector in India. Biocon's impact is global, as it is one of the largest producers of insulin in the world.

**Critical Contribution:** She challenged global monopolies by providing affordable, high-quality biosimilars. Her work ensures that life-saving drugs are accessible to millions in both developing and developed nations.

**3.2 Falguni Nayar (Nykaa)**

Starting her entrepreneurial journey at age 50, Nayar proved that age and gender are no bar to disruption.

**Global Impact:** Nykaa's successful IPO made it a "case study" for global investors. It demonstrated that an Indian-led, women-centric e-commerce platform could achieve sustainable profitability and high market valuation.

**3.3 Divya Gokulnath (BYJU'S)**

In the Ed-Tech sector, Gokulnath has played a pivotal role in taking Indian digital learning tools to the US and UK markets. Her leadership focuses on the intersection of pedagogy and technology.

**4. Critical Analysis of Global Economic Contribution**

**4.1 Innovation and Tech-Disruption**

Women like Upasana Taku (MobiKwik) and Suchi Mukherjee (Limeroad) have moved beyond "lifestyle businesses" into FinTech and Logistics. They have developed sophisticated algorithms and scalable systems that compete with global giants.

**4.2 Employment Generation**

Women-led enterprises in India are estimated to employ over 150 million people. Globally, their subsidiaries and export-oriented services provide high-value employment, contributing significantly to the service sectors of various nations.

**4.3 Sustainability and ESG**

Modern Indian women entrepreneurs are leading the way in ESG (Environmental, Social, and Governance) standards. There is a visible trend of women-led startups focusing on "Green Tech" and ethical supply chains, which is becoming a prerequisite for the future global economy.

**5. Challenges and Structural Barriers**

A critical study must address the "Glass Ceiling" that still exists in the global corporate structure.

**The Gender Funding Gap:** Statistics show that women-led startups receive only 2-3% of total venture capital funding globally. This systemic bias limits the scaling potential of innovative ideas.

The "Old Boys' Club" Network: Lack of access to high-level international networking circles often prevents women from securing large-scale global contracts.

Work-Life Integration: Unlike their male counterparts, women often face the "Double Burden" of domestic expectations and professional leadership, which can lead to burnout.

**6. Conclusion and Recommendations:**

The research concludes that Indian women are no longer just "participants" but "drivers" of the global economy. However, their full potential remains untapped due to financial and social bottlenecks.

**Recommendations:**

Global Exposure Funds: Governments and private financial institutions should create dedicated funds to help women-led startups expand into international markets.

Skill-Based Education Integration: Entrepreneurship and financial literacy should be core components of the higher education curriculum to foster a "Founder's Mindset" early on.

**Policy Support:** Tax incentives for companies with gender-diverse boards can encourage more inclusive corporate governance.

**7. References:**

1. World Bank (2024): Gender Equality and Global Trade Dynamics.
2. McKinsey Global Institute: The Power of Parity: Advancing Women's Equality in India.
3. Forbes (2025): The World's Most Powerful Women in Business.
4. NITI Aayog: Women Entrepreneurship Platform (WEP) Annual Report.

# How Various AI Tools Can Be Used by Small-Scale Women Entrepreneurs in Their Own Businesses

**Dr. Landge Y V**
**Tulsi Computer Science and IT College, Beed**

**Abstract:**

Artificial Intelligence (AI) is transforming the global business ecosystem by providing intelligent, data-driven solutions that enhance productivity, marketing effectiveness, financial management, and customer engagement. For small-scale women entrepreneurs—particularly those operating in rural and semi-urban areas—AI tools present unprecedented opportunities to overcome traditional barriers such as limited market access, financial constraints, lack of formal training, and restricted technological infrastructure. This research paper examines the various AI tools that can be effectively utilized by small-scale women entrepreneurs to improve operational efficiency, decision-making, and competitive advantage in their businesses.

The study explores specialized AI applications including AI-powered marketing platforms, chatbots for customer service, automated accounting systems, predictive analytics for demand forecasting, inventory optimization systems, AI-based design tools for branding and packaging, speech-to-text systems for vernacular communication, and mobile-based AI assistants. The paper discusses how these tools can be adopted in sectors such as handicrafts, agriculture-based enterprises, tailoring, food processing, beauty services, retail trade, and home-based manufacturing units. Special emphasis is placed on accessibility through smartphones, cloud-based services, and low-cost subscription models that make AI adoption feasible even in resource-constrained rural environments.The paper also addresses implementation challenges such as digital divide, language barriers, infrastructural limitations, and cybersecurity risks, while proposing policy recommendations, training frameworks, and community-based support models to promote inclusive AI adoption.

By providing a structured analysis of AI applications without relying on primary survey data, this paper contributes to the growing body of literature on digital empowerment and women entrepreneurship. It offers practical insights, conceptual frameworks, and strategic guidance for policymakers, educators, NGOs, and rural development agencies aiming to promote technology-driven sustainable entrepreneurship among women. The findings suggest that AI, when appropriately localized and supported through digital literacy initiatives, can serve as a powerful catalyst for economic transformation and gender-inclusive growth in rural economies.

**Keywords**

Artificial Intelligence, Women Entrepreneurs, Small-Scale Business, AI Tools, Digital Marketing, Business Automation, Financial AI

## 1. Introduction

The rapid advancement of Artificial Intelligence (AI) technologies has significantly transformed the global economic landscape, reshaping traditional business models and creating new opportunities for innovation and growth. AI refers to the development of intelligent systems capable of performing tasks that typically require human intelligence,

such as decision-making, language understanding, data analysis, pattern recognition, and predictive modeling. In recent years, AI-based tools have become increasingly accessible through cloud computing platforms, mobile applications, and low-cost subscription models, making them available not only to large corporations but also to small-scale enterprises. Women entrepreneurship has emerged as a critical driver of socio-economic development, particularly in developing economies.

Women entrepreneurs are increasingly recognized as essential contributors to economic development, job creation, and community resilience. In rural and semi-urban areas, women often run micro and small-scale businesses that provide household income and local services. These include tailoring, boutique operations, food processing, beauty salons, handicrafts, tutoring centers, and small retail shops.

Despite their contributions, women entrepreneurs face multiple constraints:

- **Limited access to markets**
- **Scarcity of capital and resources**
- **Lack of professional marketing expertise**
- **Manual bookkeeping and financial planning challenges**
- **Time-intensive operational tasks**

Artificial Intelligence (AI) is poised to address many of these challenges through automated, context-aware tools that can perform tasks traditionally requiring technical expertise. Thanks to cloud computing and mobile accessibility, many AI tools are now affordable and do not require programming knowledge.

This paper examines **how AI tools can be used by small-scale women entrepreneurs** across different business functions, supported by illustrative diagrams and examples.

## 2. Literature Review

### 2.1 Women Entrepreneurship in India

Women in India constitute a significant portion of micro and small entrepreneurs. Studies show that supporting women in business not only enhances family welfare but also contributes to regional economic growth. However, digital adoption among women entrepreneurs is lower compared to men due to structural barriers such as social norms, limited access to training, and confidence gaps.

### 2.2 AI Adoption in Micro and Small Enterprises

Artificial Intelligence tools have evolved from expensive proprietary systems to widely available SaaS solutions. Small businesses are increasingly adopting AI for marketing automation, customer service, inventory management, and financial forecasting.

### 2.3 Technology Adoption Theories

Technology Acceptance Model (TAM) and the Unified Theory of Acceptance and Use of Technology (UTAUT) highlight **perceived usefulness**, **ease of use**, and **facilitating conditions** as determinants of adoption. These frameworks are crucial in understanding how women entrepreneurs adopt AI tools.

## 3. Categorization of AI Tools for Small Businesses

AI tools can be categorized based on the primary business functions they support:

1. **Marketing & Promotion**
2. **Customer Engagement & Support**
3. **Operations & Workflow Automation**
4. **Financial Management**
5. **Analytics & Strategic Decision Making**
6. **Product Design & Innovation**

## 4. AI Tools for Marketing and Promotion

### 4.1 AI Content Generation Tools

AI content generation tools assist businesses in creating marketing content without hiring professionals.

**Examples:**

- **ChatGPT / Jasper** – Generate product descriptions, social media captions, and promotional content
- **Predis.ai** – Automates social media content scheduling and suggestion of trending hashtags

**Placeholder: Figure 1 — AI Content Marketing Workflow**

### 4.2 Social Media Automation

AI automation tools help entrepreneurs maintain an active online presence even with limited time.

**Functions:**

- Content scheduling
- Engagement tracking
- Hashtag recommendations
- Optimal posting time suggestions

**Example Tools:** Buffer, Predis.ai, Hootsuite with AI features

## 5. AI Tools for Customer Engagement

### 5.1 AI Chatbots

AI chatbots provide real-time automated interaction with customers on websites and messaging apps.

**Use Cases:**

- Respond to product queries
- Capture leads

- Provide appointment booking
- Automated follow-up messages

**Placeholder: Figure 2 — AI Chatbot Interaction Model**

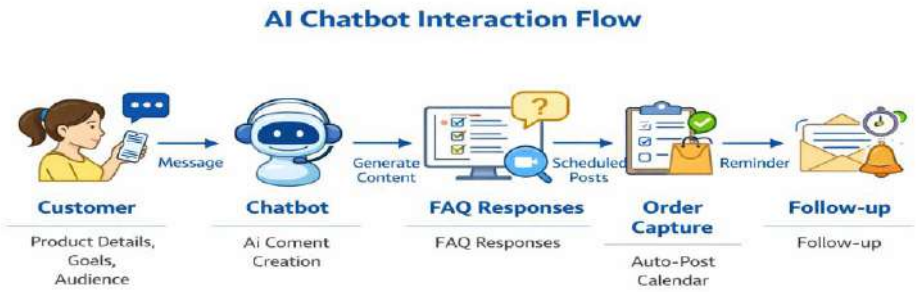


### 5.2 Sentiment and Feedback Analysis

AI sentiment analysis tools review customer feedback and extract insights.

**Examples:**

- Google NLP sentiment analysis
- Brand24 sentiment tagging
- AI tools built into review platforms

---

## 6. AI Tools for Operations & Workflow Automation

### 6.1 Workflow Automation Platforms

Platforms like **Zapier** and **AppyPie** allow non-technical users to automate business operations:

- Appointment reminders
- Order notifications
- Email sequences
- Data entry workflows

**Benefits:**

- Reduces manual repetition
- Saves time for core business tasks

**Placeholder: Figure 3 — Workflow Automation Model**

**7. AI Tools for Financial Management**

**7.1 AI-Enabled Bookkeeping**

AI bookkeeping tools automate expense categorization, invoicing, and cash flow tracking.

**Tools:**

- QuickBooks with AI categorization
- Wave Accounting
- Zoho Books automation

**7.2 Cash Flow Forecasting Tools**

AI forecasting tools use historical transaction data to predict future cash flow and financial trends.

**Use Case:** A tailor can anticipate slow seasons and adjust inventory or promotions accordingly.

**8. AI Tools for Analytics and Strategic Decision Making**

**8.1 Analytics Dashboards**

AI dashboards integrate data from sales, customer behavior, and finance to visualize:

- Sales performance
- Customer segments
- Product trends
- Inventory levels

**Tool Examples:** Microsoft Power BI, Google Data Studio, Tableau with AI connectors

**Placeholder: Figure 4 — AI Analytics Dashboard Layout**

**9. AI Tools for Product Design and Innovation**

**9.1 AI Product Idea Generators**

AI tools can generate product names, packaging ideas, labels, and visual mockups.

**Examples:** Canva AI design suggestions, Logo AI generators, AI prompt-based image generators

**10. Case Examples (Secondary Source Based)**

*(These are illustrative examples based on documented use cases from industry and research)*

**10.1 Rural Handicraft Business**

A group of women artisans used AI chatbots on WhatsApp to handle customer queries and share product images. They linked automated responses to order forms, enabling 24/7 engagement.

### 10.2 Home-Based Bakery

The bakery used AI content tools to generate weekly social media captions and schedule posts. Engagement and order volume increased by 30% in three months.

### 10.3 Small Boutique

The boutique used AI inventory forecasting and automated restock alerts, reducing overstock waste by 20%.

## 11. Benefits of AI Adoption for Women Entrepreneurs

| Benefit Category | Impact |
|---|---|
| **Market Reach** | Broader audience through automated marketing |
| **Time Savings** | Automation frees time for creative work |
| **Customer Experience** | Faster responses via chatbots |
| **Financial Control** | Automated bookkeeping and forecasts |
| **Strategic Decisions** | Data-driven insights from dashboards |

## 12. Barriers and Challenges

### 12.1 Digital Literacy Gaps

Limited skills in operating apps and interpreting data dashboards.

### 12.2 Infrastructure Limitations

Poor internet connectivity in rural areas.

### 12.3 Cost Perception

Even low data costs can seem high for micro-entrepreneurs.

### 12.4 Trust and Security Concerns

Fear of data privacy and unfamiliar interfaces.

## 13. Framework for Implementation

For effective AI adoption:

1. **Training & Capacity Building** – Local workshops in vernacular languages
2. **Affordable Access** – Subsidized data plans & tool freemium models
3. **Community Support Networks** – Peer learning groups
4. **Localized Interfaces** – AI tools with regional language support

## 14. Future of AI Adoption

Emerging trends include:

- AI voice assistants for non-literate users
- Multilingual AI interfaces
- Integration with IoT for real-time inventory
- Predictive marketing based on behavioral data

## 15. Conclusion

The integration of AI tools into small-scale women-owned businesses has transformative potential. Marketing automation, customer engagement, financial planning, and operations can be streamlined with AI tools that do not require deep technical expertise. To realize this potential, investment in digital literacy, infrastructure, and localized AI solutions is essential.

With strategic implementation, AI can become a cornerstone of entrepreneurial growth, socio-economic empowerment, and inclusive development for women entrepreneurs.

**References (APA Style)**

Brush, C. G., de Bruin, A., & Welter, F. (2009). A gender-aware framework for women's entrepreneurship. International Journal of Gender and Entrepreneurship, 1(1), 8–24.

Chatterjee, S., Rana, N. P., & Sharma, A. (2020). AI adoption in small businesses: An exploratory study. Journal of Business Research, 117, 456–467.

Kaplan, A., & Haenlein, M. (2019). Artificial intelligence: Business implications. Business Horizons, 62(1), 15–25.

Venkatesh, V., Morris, M., Davis, G., & Davis, F. (2003). User acceptance of information technology. MIS Quarterly, 27(3), 425–478.

World Bank. (2022). Women, business and the law. World Bank Publications.

# Role of SHGs in developing managerial skills of women in JalnaTaluka: An analysis

**Dr.Pallavi Bhavsar**
Associate Professor
(Economics Dept)
JSPM's Mahila Kala Mahavidyalay,
Chhatrapati Sambhajinagar

**Introduction:**

Managerial skills are important things behind every business. One of the most important human activities in a human life is managing. Managing has been essential to ensure the coordination of individual efforts. The human beings life runs in an organization, which means they are born in an organization called family, live in an organization called society; work in an organization called business. Only when the individual's efforts of the group are involved in the teamwork it leads the organization to a success.

Now a day's Self Helf Group (SHG) concept is spread all over. SHG also a good organization. Due to SHGs Women's are gathered, educated, entrepreneurs. Similar ideas were supported in International conference – 1994. It was said that' "Education is one of the most important means of empowering women with the knowledge, skills & self-confidence necessary to participate fully in the development process." Important of SHGs is accepted by all of us. Because of SHG womens are inspire their management skills comes in front of public. Women's already have management skills e.g. womens can manage their family well, live in society, work in an organization. SHGs has got best value in worldwide market. The present study assesses improved managerial skills in womens with the help of SHGs in Jalna Taluka of Maharashtra.

**Objectives:-**

1) To study the present nature of SHG.
2) To study the managerial skills in women's.
3) To analyse various skills improved in SHG women's.

**Methodology:-**

The study was based on primary and secondary data. Selection for study was in Jalna Taluka of Maharashtra. Out of total SHGs in Jalna District 188 SHGs established and working in Jalna Taluka. Villages are selected randomly and from them 20 SHGs are selected randomly. The sample size represents about 10.63 % and data were collected from them. For collecting data questionaries, interviews method are used. Data was analyzed qualitative and quantitatively. Average mean and percentage were also calculated. The study was to know their managerial skills, abilities, streagths etc.

**Meaning:-**

Management is the art of getting things done by a group of people with the effective utilization of available resources. Management is the art of getting the work done through and with people in formally organized groups. SHGs also organized group formed by NGO and other agencies.

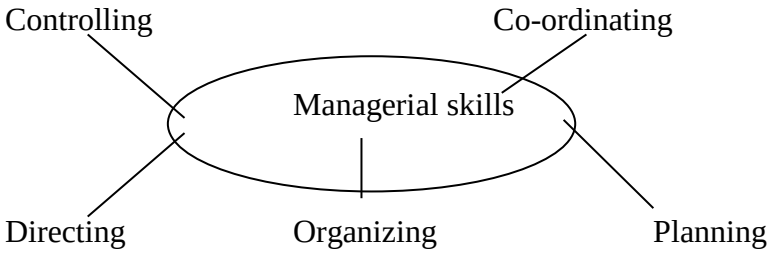


SHGs conists ten members to 20 members get to gathered and established a programme. By this SHGs activity it is promotive and encouragement to the managerial skills. By this way womens established business, manage and control themself. They do planning, well co-ordinate in group. All these increase unity & build financial discipline & improved their managerial skills.

**Managerial Skills: - It's Importance for Women:-**

Good managerial skills are crucial for women entrepreneurs, as they help them effectively handle business challenges, overall planning, team leadership, and risk management. This helps the business to remain sustainable, make profits in a competitive market, enhance decision-making, and progress confidently in the entrepreneurial journey.

Decision-making and leadership: To run a business smoothly, make good decisions, and motivate their teams, one needs good leadership qualities.

Financial literacy and planning: Financial understanding is important for managing the budget, profit and loss, and financial matters of a business properly.

Challenges: Problem-solving skills are useful for solving unexpected business problems (e.g., market changes, competition)

Networking and marketing: Connecting with people and beneficial marketing are essential for growing a business.

Benefiting from government schemes: To benefit from legal procedures and various government schemes (e.g., MSME loans), documentation and management skills are required.

**Study of JalnaTaluka:-**Some self-help groups were randomly selected from among the self-help groups in Jalna taluka. Some questionnaires were filled out by them and some conclusions were drawn based on that information**.** When we studied some self-help groups in Jalna taluka, the following conclusions emerged:

**Result &discussion:-**

**Table no.1:**

**General Information**

| **Members of SHGs** | |
|---|---|
| **No. of members** | **% age** |
| 10 - 12 | 50 |

| | |
|---|---|
| 12 - 14 | 45 |
| 14 - 16 | 5 |
| **Total** | **100** |
| **Monthly Saving** | |
| **Monthly saving** | **%age** |
| Rs. 200 | 50 |
| Rs. 500 | 50 |
| **Total** | **100** |
| **Business run by womens** | |
| **Types of business** | **% age** |
| Agro based | 40 |
| Non agro based | 60 |
| **Total** | **100** |

Table No. 1 shows that 50% SHGs are having members in 10 – 12 group and only 5% are having members in 14 – 16 group. 50% SHGs monthly saving are Rs 200 and 50% SHGs monthly saving are Rs 5S00. 40% women's run business which are agro based and 60% women's run non agro based business.

**Table no 2:-**

**Bank / SHGs Loan disbursed**

| **Loan disbursed** | **% age** |
|---|---|
| 5000 – 15,000 | 75 |
| 15,000 - 30,000 | 15 |
| 30,000 – 50,000 | 10 |
| **Total** | **100** |

Above table no 2 states that Banks and SHGs disbursing loans to SHGs womens for business. 75 % womens take loan in between Rs 5000 to 15,000 and only 10% take loan between Rs 30,000 to 50,000 similar study was shown by Dr. Madan Sir, Dr. Ahirao.

**Table no.3:-**

**Marketed by**

| Family member | % age |
|---|---|
| Self | 40 |
| Husband | 15 |
| Child | 45 |
| **Total** | **100** |

Table no. 3 shows that 45% of the products are marketed by children of womens and 40% of the products are marketed by womens self. This shows that marketing skills among women are developing..

**Table no.4:-**

**Profit Gained**

| Profit (Rs) | % age |
|---|---|
| 2000 – 5000 | 20 |
| 5000 – 9000 | 30 |
| 9000 – 13000 | 25 |
| 13000 – 18000 | 25 |
| **Total** | **100** |

Table no 4 shows that 20% womens earn monthly profit in between Rs 2000 – 5000 by their business. 25% women's earn profit in between Rs13000 – 18000 group.

**Table no. 5:-**

**Improve in managerial skills**

| Skills | % age |
|---|---|
| Good organizer | 25 |
| Good planner | 20 |
| Improved marketing skills | 25 |
| Gaining decision making | 20 |
| Get entrepreneur training | 10 |
| **Total** | **100** |

Table no.5 states that 25% were observed as good organizer and 20% were good planner .25% women's improved their marketing skills. 20% gaining their decision making and 10% were observed as entrepreneur training.

100% SHGs took Loan for their business. 55% women's invest self capital in business Rs. 500 – 1000 in this group. 50% were sold their goods in city market. 80% do their banking transaction them self.

**Conclusions:**

SHGs have played an important role to improved managerial skills in women's. There is a positive effect in women's managerial skills and development of resources i.e. their abilities and interests, organizers, decision makers.

There is scope for improvement in their overall progress and development and also to expand their business. Provided some additional benefits and schemes should be provided for their growth.

**References :-**

1. Savita shete (2019) "Empowerment of Women", souvenir of National conference, VASHI, page no. 27.
2. Dr. ShivajiMadon, Dr.IitendraAhirrao (2020) "Women Empowerment Through Micro Finance", Souvenir of state seminar, JALNA, page no. 39.
3. Dr. Varma, Aggarwal, Kings-personal management and industrial, Delhi.
4. The Management Principles and Application,

# Socio-Cultural Barriers and Their Solutions: Experiences of Women Entrepreneurs

**Suhas Bhikaji Vidyagar**
(Research Scholar, Mrs. K.S.K. Art, Science and commers college, Beed)

**Introduction:**

Entrepreneurship among women has been globally recognized as a catalyst for economic growth, innovation, and social transformation. Like rest of the world Women entrepreneurship has become an important component of economic development in India. With the help of various scheme in recent decades, numbers of women have started small businesses, microenterprises, and self-help initiatives across the country. However, increasing participation, women entrepreneurs face persistent socio-cultural barriers that limit their access to resources, networks, and decision-making power. In Maharashtra despite relatively high literacy rates and urban development women entrepreneurs often struggle with gender norms, caste hierarchies, limited access to financial networks, and social restrictions. These barriers stem from deeply entrenched gender norms, societal expectations, and structural discrimination that hinder women's entrepreneurial journeys. These barriers are especially visible among women from marginalized communities, including rural and Dalit women. This paper examines the socio-cultural barriers faced by women entrepreneurs in Maharashtra and proposes possible solutions to overcome these challenges.

Socio-Cultural Barriers Faced by Women Entrepreneurs

Gender Norms and Role Expectations

In many societies, traditional gender roles assign women primary responsibility for household chores and caregiving, which substantially limits time and mobility for business activities. Such expectations often force women to balance domestic responsibilities with entrepreneurial aspirations, affecting their capacity for sustained business engagement. Indian society, including Maharashtra, largely functions within a patriarchal framework where men are considered primary decision-makers in families and communities. Women are expected to prioritize domestic responsibilities such as childcare, household work, and family caregiving. These expectations significantly restrict women's capacity to participate in entrepreneurial activities. Even when women start businesses, their work is often perceived as supplementary income rather than a serious economic contribution.

In rural areas of Maharashtra, women entrepreneurs often require permission from family members to travel for business, attend training programs, or interact with male customers and suppliers. Such restrictions limit their ability to expand their enterprises. Furthermore, these roles are reinforced by community attitudes that regard men as more capable leaders, thereby reducing women's visibility in business forums and leadership roles.

Limited Access to Financial Resources

Access to financial capital is essential for entrepreneurial success. Access to credit and financial institutions remains a significant challenge for women entrepreneurs. Banks

often require collateral, property ownership, or male guarantors, which many women lack. Although government schemes such as the Mahila Udyam Nidhi and Self-Help Group (SHG) programs attempt to address this gap, many women remain unaware of these opportunities or face bureaucratic obstacles in accessing them.

In Maharashtra, women-led microenterprises are frequently concentrated in low-profit sectors such as tailoring, food processing, and handicrafts due to limited financial support and investment opportunities. Studies on financial inclusion indicate that Dalit entrepreneurs are less likely to receive institutional credit and often rely on informal lenders or self-financing. As a result, Dalit women entrepreneurs tend to start businesses with extremely limited capital, which restricts the scale and sustainability of their enterprises. This financial constraint often prevents them from investing in technology, marketing, or business expansion.

Limited Access to Networks and Mentorship

Social networks play a vital role in business growth. However, women entrepreneurs often lack access to influential business networks largely dominated by men. This exclusion impedes their ability to secure clients, partnerships, and influential mentors. Without these connections, women face additional challenges in accessing crucial market information and investor support. Entrepreneurship thrives on networking and mentorship, yet women entrepreneurs often lack access to professional networks. Business associations and industry groups are still dominated by men, which restricts women's participation in knowledge exchange and partnership opportunities. In smaller towns and rural regions of Maharashtra, women entrepreneurs often rely on informal support networks such as family or local self-help groups instead of broader business networks.

Cultural Stereotypes and Bias

Entrenched cultural stereotypes portray women as risk-averse and less capable in financial decision-making. Such biases not only undermine women entrepreneurs' credibility but also influence investor confidence and financial institutions' lending practices. Studies reveal that women often receive less favourable terms for funding compared to male counterparts, even when controlling for business performance.

Safety and Mobility Constraints

In many societies, public spaces are inherently unsafe for women due to harassment and violence, which restricts their ability to travel for business purposes. Lack of safe transportation and societal scrutiny further discourage women from accessing markets, suppliers, and formal training programs, placing them at a competitive disadvantage. Safety concerns and limited mobility also hinder women entrepreneurs. Many women in rural Maharashtra hesitate to travel alone for business purposes due to concerns about safety and social criticism. Limited transportation facilities and social restrictions reduce their ability to reach larger markets and expand their enterprises.

Solutions to Overcome Socio-Cultural Barriers

Promoting Inclusive Financial Policies

Governments and policy makers need to formulate and enforce policies that target gender inequality. This includes offering tax incentives for women-owned businesses, setting

quotas for women in business councils, and subsidizing childcare services. Governments and financial institutions should develop targeted policies that improve access to credit for Dalit women entrepreneurs. This includes reducing collateral requirements, offering low-interest loans, and expanding financial literacy programs. Public sector banks and microfinance institutions can also introduce specialized credit schemes for marginalized women entrepreneurs. Such measures can help reduce structural disadvantages and support women's participation in economic activities.

Strengthening Networks and Mentorship Programs

Building dedicated platforms and networks for women entrepreneurs can facilitate access to information, funding, and mentorship opportunities. Organizations should establish mentorship programs where experienced businesswomen guide emerging entrepreneurs. Collaborative networks also enable peer learning and collective problem-solving, which enhances confidence and business capability. Self-Help Groups (SHGs) have played a transformative role in empowering women entrepreneurs in Maharashtra. Programs such as *Maharashtra State Rural Livelihood Mission* encourage collective entrepreneurship, microfinance access, and peer support. These groups enable women to share resources, gain confidence, and expand business activities collectively.

Challenging Cultural Norms through Education and Media

Public awareness campaigns and gender sensitivity workshops are essential in dismantling stereotypes about women's roles in society. Schools, media outlets, and community leaders can help reshape perceptions by highlighting successful women entrepreneurs and emphasizing gender equality as an economic necessity. Skill development programs specifically designed for women can enhance entrepreneurial capacity. Institutions and government schemes such as *Skill India* and *Stand-Up India* provide training in financial literacy, digital marketing, and business management. Such programs are particularly important for rural women who lack formal business education.

Ensuring Safety and Mobility for Women

Governments and civic bodies must invest in safe transportation infrastructure and community governance that protect women. This includes well-lit public spaces, women-friendly transport systems, and legal protections against harassment. A secure environment enables women to participate fully in entrepreneurial and economic activities without fear. Long-term transformation requires challenging patriarchal attitudes through education and public awareness campaigns. Media representation of successful women entrepreneurs can inspire others and change societal perceptions about women's economic roles. Educational institutions should also integrate gender equality discussions into their curricula.

**Conclusion:**

Women entrepreneurs face complex socio-cultural barriers that extend beyond economic constraints. These challenges are deeply rooted in societal norms and biases that limit women's opportunity to thrive in business. However, through gender-responsive policies, expanded networks, cultural transformation, and enhanced safety measures, it is possible to create a more inclusive and equitable entrepreneurial landscape. Promoting

women entrepreneurship is not just a matter of fairness; it strengthens economies and fosters social progress.

Women entrepreneurs in Maharashtra continue to face multiple socio-cultural barriers rooted in patriarchal norms, caste hierarchies, limited financial access, and mobility constraints. These barriers not only affect individual women but also hinder broader economic and social development. However, initiatives such as self-help groups, skill development programs, gender-sensitive financial policies, and cultural awareness campaigns provide promising pathways for empowerment. By addressing these socio-cultural challenges and supporting women entrepreneurs, Maharashtra can foster a more inclusive and equitable economic environment.

Entrepreneurship among Dalit women is not merely an economic activity but also a form of social resistance and empowerment. By strengthening inclusive financial systems, promoting entrepreneurship training, expanding market access, and addressing socio-cultural inequalities, policymakers and social institutions can create an environment that supports the growth of Dalit women entrepreneurs. Empowering Dalit women entrepreneurs is therefore essential not only for economic development but also for advancing social justice and equality in Indian society.

**References:**

Ahl, Helene, and Ann-Marie Nelson. Gender, Entrepreneurship and the Sociology of Distinctions. Routledge, 2015.

Brush, Candida G., et al. Women's Entrepreneurship in the 21st Century: An International Multi-Level Research Analysis. Edward Elgar Publishing, 2009.

Greene, Patricia G., et al. The Entrepreneurial Advantage of Women: Toward an Integrative Theory. Greenwood Publishing Group, 2003.

Tambunan, Tulus. "Development of Women's Entrepreneurship in Asia." Journal of Developmental Entrepreneurship, vol. 19, no. 1, 2014, pp. 1–24.

Datta, Punita B., and Robert Gailey. "Empowering Women through Social Entrepreneurship: Case Study of a Women's Cooperative in India." Entrepreneurship Theory and Practice, vol. 36, no. 3, 2012, pp. 569–587.

Desai, Neera, and Maithreyi Krishnaraj. Women and Society in India. Ajanta Publications, 1987.

Deshpande, Ashwini. The Grammar of Caste: Economic Discrimination in Contemporary India. Oxford UP, 2011.

Goyal, Meenu, and Jai Parkash. "Women Entrepreneurship in India Problems and Prospects." International Journal of Multidisciplinary Research, vol. 1, no. 5, 2011, pp. 195–207.

Thoraton, Sukhadeo. Dalits in India: Search for a Common Destiny. Sage Publications, 2009.

Chawda, Sandeep. "Dalit Entrepreneurship and Access to Credit: Testing Ambedkar's Market-Entry Hypothesis." Research Hub International Multidisciplinary Research Journal, 2025. (Research Hub)

Kamble, Shantabai. Majya Jalmachi Chittarkatha. Usha Wagh Prakashan, 1984.

Pawar, Urmila. Aaydan: The Weave of My Life. Translated by Maya Pandit, Columbia University Press, 2009.

Pandhare, Ashwini, et al. "Transforming Rural Women's Lives in India: The Impact of Microfinance and Entrepreneurship on Empowerment in Self-Help Groups." Journal of Innovation and Entrepreneurship, 2024. (SpringerLink)

# The Study of Women Empowerment in Marathi Literature
## She who holds the cradle's rope, rules the world.

**Vedpathak Archana Kumar**
Department of English
K.N.Bhise Arts and Commerce College, Bhosare
Kurduwadi

**Abstract**:
The above proverb is indicating the capability of the woman who can change the world but in the reality is it really happened? India is the origin of the cultural development of the society which is based on the four **Vedas, Eighteen ancient memories, Ramayana** and **Mahabharata.** The structure of the society is male dominated and woman has the second place as a result she has been very puzzled in various places. In Vedic period the women were worshiped and respected. She had been played a major role in the family as well as in the society. After the destruction of Vedic period the importance of women decreased and she became a good for nothing for the society when the society was structured by Manu. Now we are in 21 first century still we can't get rid of the Manu's structure of society.

The whole life of the woman dedicated to the family. It is her blind faith that whatever she has been suffered in different circumstance it has been for her beneficial. She couldn't understand the importance of self-reliance and independence. She has been avoid the incident which can take place the conflict in family or her surroundings. Very few women can live their life according to their rules and regulations. When she accepts the circumstance against her it is the start of the development of the mental freedom, preparation for self development, tries to live as a human being and development of intellect along with body.

**Feminism : Outline and Development**

The woman is the source of life still it is said that she is not enough strong compare to male. The western and Indian writers tried to find out the truth behind the empowerment of the women through the ancient script. **Virginia Woolf, Elain Showalter, Kate Millet, Gayatri Chakravathi Spiwak, Tarabai shinde , Mahatma Fule , Dr, Babasaheb Ambedkar, Mahatma Gandhi**, current writers **Mangala Varkhade, Shobha Naik, Maya Pandit** tried to find out the reason of the worst condition of the women in the society.

Virginia Woolf's '**A Room's of Once Own'** is the first novel which introduced the theme of feminism. She unfolds the real life of British women through it. In that time women were not accepted as a writer so the female writers would use pseudonym. **Elian Showalter** pioneered **gynocriticism** a framework for analysing women writing on its own terms. She has been given three historical phases of women's literature, they are **Feminism** ( Imitation of male model), **Feminist** ( Protest against male ) , **Female** ( A more forward authentic self discovery an autonomous art). Simon de Beauvoir's **The Second Sex** is the book which analyses patriarchal history, myths and culture that keep women subservient. She has been thoughtfully showed the way of thinking of women in different incident which are come in her life. It is very hard to portrait the mind of the women than her body . The relation of male and female has been showed by **Kate Millet** through her novel **'Sexual Politics'**.

The study of women empowerment has been followed in India after western countries. '**Hindu Sanskriti Ani Stree'** is renowned thought provoking book of Dr. A.H. Salukhe which highlights the status of ordinary women in the context of Hindu culture and sociological perspective. **Tara Bai Shinde's** book **The Comparison between Men and Women** is a great start for establishing the ideology of the feminist movement and understanding the formation of its social base. **Dr. Babasaheb Ambedkar, Mahatma Phule, V.Ra.Shinde** these social reformers have been done so much work to change the condition of the women in the society.

**The Contribution of Marathi Novel in Women Empowerment:**

The women have been suppressed not only by the society but by religion also. Many writers have been explored the condition of the women through their novels, poems, dramas as well as by their own biography. They discovered the harsh reality of the women in the society.

**Balutai Dhada Ghe** is a famous autobiographical novel written by **Indiratai Sahastrabuddhe** which narrates the story of a woman named Sonu. It is an epistolary novel . The mother named Sonu taught her daughter about how to live the life. She is freely spoken about the treatment of the women which was given by the society. She told her daughter about the marriage , motherhood and the relation of the male and female after the marriage.

Another revolutionary female writer is **Vibhavari Shirurkar,** who wrote **Hindolyavar, Virlele Swapna, Jai, Shabari** , **Uma** ect. Novel which are very famous and showed the importance of the education of the woman. The character **Achala** from **Hindolyavar** is not satisfied with rejecting life. She is neither defeated nor victorious in it. At last she understood the importance of the education and wanted to change her marriage life. Jai from Jai novel has also took the high education and understand that there is no end of the responsibilities towards the house. Only education can change the condition of the women in the society.

**Kamal Desai's** Novel **Ratrandin Amha Yudhacha Prasang** depicts the struggle of middle class woman . The title symbolise the internal and external struggle of the heroine which is taken from Saint Tukaram's hymn. The novel told the psychological state of woman in society with fluidity. The characters like **Madhu, Shama, Shrinivas, Fernandes** who come together for revolutionary cause . The character wanted to find out her own identity in the difficult circumstances. The writer asked the question that why do this things happen to them. She wrote metaphysical problems. She wanted to create the question in her characters and situations, to give free scope. We can see the **Existentialism** in her writing. She emphasises individual freedom, responsibilities and subjectivity. It focuses on existence, personal choice and authentic living. She defines the meaning in an absurd through her characters.

**Saniya** is also one of the most gifted and senior short story writer and novelist in contemporary Marathi literature renowned for woman centric fiction. **Shodh, Pratitee, Khidkya, Ghrahachya Olakh, Bhumika, Valay, Pariman , Prayan , Ashi Vel and Punha Ekda** these are her short story collections.

**Kavita Mahajan, Asha Bage. Urmila Pawar, Gouri Deshpande , Kusumavati Deshpande, Malatibai Bedekar ,Viajaya Rajadhyaksha, Priya Tendulkar** just like these contemporary writers she has also confidently highlighted the issues of women in society with modernist humanitarian perspective. Women were not looked at a 'Sympathetic

**creature**' but as a human being in their own rights. Progressive thoughts and actions were given importance in this milieu. "Awareness about sexism and its long lasting impact is one of the most important movement amongst the ideologist, which shook the modern time", says **Saniya** in her **Vata Ani Mukkam**. She explored that how the woman shapes herself by the external forces. The characters are in her fiction are so intelligent , thoughtful, seeking for self-identification. They are constantly exploring life as a multidimensional forces, taking responsibilities of own decision and pay for it, self-realization about it desire for own space, independence intuition. The conflicts are not materialistic but more psychological. She tried to find out the maturity in the complex life and relationship. She said that to understand the culture one must have the broad perspective and examine on place on it.

**Conclusion:**

The comparison between men and women has been flourished through the fictional writing of the above writers. The other writers have been also given their contribution to empower the women in the society and live like a human being not a outsider. If the woman has self-realisation about her own life the comparison between men women should be reduced and we get the world in which two wheels are equally running on in same position in the society.

**References:**

1. Phadke Bhalchandra – Marathi Lekhika – Chinta aani Chintan
2. Jadhav Nirmala _ Bhartiya Striprashna Akalanachya Dishene
3. Aruna Dhere _ Stri – Likhit Kadambari
4. http:// sahitya akadami@gmail.com
5. Naik Shobha _ Bhartiya Sandharbhatun Strivad- Strivad Samiksha Ani Upayyojana

# Leadership Qualities for Women Empowerment

**Prof. Dr Mrs Anupama Prakash Pol**
Professor & Head Dept. of English,
K. N. Bhise Arts Commerce & Vinayakrao Patil
Science College, Vidyanagar, Bhosare

**Abstract:**

The present paper highlights the importance of developing leadership qualities for women empowerment all over the world. It will discuss in detail regarding importance of women empowerment, what are leadership qualities, how we can develop them, why it is important for women empowerment, barriers of women empowerment and remedies on it. This will enhance the leadership skills among the young, enthusiastic and courageous women entrepreneurs. In this era of digitalization leadership qualities of women entrepreneurs has been transformed completely. This paper will focus on these transformations of leadership qualities of women in detail. This will develop self confidence among the youngsters especially women. The present article also tries to emphasize both the advancements achieved and the ongoing efforts needed to attain gender equality in leadership.

**Key Words**: entrepreneurs, women empowerment, leadership qualities, gender equality, discrimination, gender bias, multitasking

## Introduction

Women Empowerment through leadership has been significantly evolved in the 21st century dynamically, particularly regarding the active participation of women in political, economic, and social fields all over the world. Women can be seen now stepping into leadership roles across various sector like from corporate offices to legislative bodies which were very difficult and nearly impossible historically and so it is completely out of reach due to male dominated and entrenched patriarchal systems. But today there is a shift which has been propelled by global feminist legal acts, government policy changes, focus and improved access to women education, and overveiling appreciation for women leadership approaches in the society.

## Objectives of the Research

The present paper has some objectives based on literature review and study related to tradition of feministic movements and women's involvement in various activities in different sector as well as from time to time emerging as strong voices against the patriarchy in India for their justice to survive with confidence and respect for self. These objectives are as follows:

To identify and understand the nature of women empowerment in terms of their perception.
To find out the characteristics, roles, and styles of leadership as a women leader.
To create awareness about empowerment and leadership among women.

To identify the women's presence in the socio-economic, political and cultural life of India as indicators of empowerment.

**Research Questions:**

What is the nature of women empowerment in terms of their perception in India?

What are the characteristics, roles, and styles of leadership as a women leader?

Why it is important to create awareness about empowerment and leadership among women?

How to identify Indian women's presence in various public sectors-political, cultural, social etc.?

**Leadership Qualities**

We can recognise the presence of differences in leadership perceptions of male and female, these differences can be seen from some of the key aspects of leadership. These skills and attributes are regarded as important in leading a task in terms of cooperation with parties that involved in running the business. There are several leadership qualities of women which usually implement in their own business.

**Motivation Skills**: It is found that women have more motivation skills in comparison to men. Women can be found more active in motivating others by changing their personal interests to achieve their group goal. They can encourage more active participation, share their power and knowledge through information for increasing the value of the community in which they survive.

**Intrapersonal Skills**: Other capabilities are women more likely than men to consider they serve as the strength of interpersonal skills or personal than for the purposes of the company. Women can bitterly try to create the fruitful situations that help people to change their perception to feel good about themselves in terms of employees and their duties well. They can make their own efforts to make people feel as the part of the organization.

**Social Skills**: Women leadership qualities may in general contain the nature of a democratic, participatory, and caring and it may also include encouraging community involvement and motivation. While the masculine leadership style is more emphasis on individualism, duty and clear rules (Shakeshaft, 1998). One of the researches using the survey method conducted by Bass and Avolio (1994) concluded that the value of the leadership of women is higher than men, judging from several criteria such as the speed of learning on organizational issues. Moreover, considered better in terms of ideal influence, inspirational motivation, intellectual stimulation and individual consideration, so that more responses about job satisfaction in the workplace with a woman leader.

**Self-determination:** This quality refers to everyone's internal need to control the environment (Conger and Kanungo, 1988). It can also be defined as women's need to choose, to initiate and regulate actions. We may can also add their need to choose the process and work behaviours at their workplace.

**Being meaningful:** This quality can be defined as evaluating the work done by women employees. It must be treated as valuable work and should be appreciated. They should be evaluated according to the job they do on their own values and they should feel that they are doing something meaningful work at their workplace.

**Professional growth:** This quality especially refers to the personal development of an employee in his or her job and profession. Every empowered woman should feel more professional growth in comparison to men in their career.

**Independence in decision-making**: This quality is very important for empowerment which makes them more independent and capable of decision making at any circumstance. All independent women should be treated to be empowered and could take decision on their own.

**Competence and self-efficacy:** This quality highlights efficiency and mastery over the work of an employee. It points at one's work role efficacy or personal mastery. All women must feel that they are more competent to engage in the behaviours required by the institute, organization or family. Thus, we could state that empowerment is about self-actualization and competence. We could say that competence and self-efficacy refer to enable women to be confident and more capable to make their own choices.

**Trust:** This quality is the core part in empowering women at any field. We can state that empowerment is connected with trust. We could find everywhere that trust creates an atmosphere for empowerment and it always grow in such trustworthy atmosphere. This quality also requires other values like solidarity and maturity. Hence, we can state that empowerment cannot be installed like software but it must be grown among them and built inside.

**Perseverance:** As a leader, women come across challenges, and they need persistence, perseverance and the ability not to take "no" for an answer.

**A Nurturing Spirit:** "Women being a nurturer have a sense of being fair and just, and use of our women's intuition is one of the strongest traits."

**Confidence:** One of the defining characteristics of leadership is confidence – "having unconditional belief in your own abilities." Most powerful women have the ability to cultivate confidence in their own abilities. Thet are more active at seeking out and responding to feedback. They take initiative in taking on tough assignments and excelling at them. They can maintain successful relationships and develop expertise that build their leadership qualities among them.

**What is 'empowerment'?**

To define empowerment, we could say that it has been used to represent a wide range of concepts and to describe a proliferation of outcomes. A development goal is based on the promotion of women's empowerment. It is the fact that social justice is an important aspect of human welfare and is intrinsically worth pursuing. Hence women's empowerment is a means to other ends. The concept of 'empowerment' is used in many different contexts and by different institutes and organizations. So, we can say that its meaning and understanding largely depends on the context in which it is being used. According to Oxfam empowerment means being able to challenge the existing oppression and inequality in society (Oxfam, 1995). While Rowland sees empowerment as a bottom-up process that cannot be formulated from top-down. He states that empowerment does not only mean to have access to decision-making but also being able and entitled to occupy the decision-making space (Rowland, 1995). On the other hand, Batliwala define it from a feminist perspective and state that women empowerment should result in an understanding that both men and women are equal

beings regardless of their gender. The researcher, Ken Blanchard suggests that empowerment requires two things: recognizing the importance of knowledge, experience and intrinsic motivation in improving performance, and releasing power by sharing accurate information, creating autonomy within boundaries and replacing hierarchy with self-managing teams. In short, we could say that empowerment is the most frequently used term in development dialogue today. We can't deny that it is also the most widely interpreted concepts, which has simultaneously become a tool for analysis and also an umbrella concept to justify development intervention. For some, the empowerment of women is an active multi-dimensional process which enables women to realize their own identity and self-powers in all spheres of life. For others, empowerment represents the ability of women to handle all risk-taking responsibilities, to build up a better future and to work hard to overcome all the obstacles that they come across all over the life.

**Women's Leadership**

It is recognized that all meaningful and enduring change begins with the internal work women leaders do to transform our outer behaviour. Women leadership skills and their capacity continue to strengthen with more practice, reflection and relationships that provide authentic and rigorous feedback and full devotional support. It seeks to confess the larger legacy of bias and imbalance in our decision-making, institutes and organizations, enterprises and the male dominated society at large. Most of the Indian women are no longer treated as show pieces to be kept at home for decoration and home responsibilities. We may state here that they are also enjoying the impact of globalization. Nowadays we can find out that women are making an influence not only on domestic but also on international sphere. Most of the women entrepreneurs are doing a wonderful job with a remarkable balance between their house and career.

Women like these are an inspiration for all other women who strive to achieve great heights in their lives. Taking them as role models each one of us can be there where they are right now. All we need have is faith in ourselves, confidence and above all a fixed aim that we need work towards.

**Conclusion**

From the above discussion, we can conclude here that the women leaders are more likely to push back when they are overly bound by regulations and rules. Empowered women can engage in more risk-taking activities and come up with innovative solutions. Women leaders are more assertive and persuasive. They have a stronger need to get the things done and are more willing to take risks at higher level than male leaders. Women leaders are also found to be more empathic and flexible, as well as stronger in interpersonal skills than their male counterparts. "These qualities combine to create a leadership style that is inclusive, open, consensus building, collaborative and collegial which ensures women empowerment." Without these leadership qualities women empowerment can't be possible.

**References:**

1.Catalyst. (2021). Women in Leadership: Quick Take.

2.Zenger, J., & Folkman, J. (2019). Research: Women Score Higher Than Men in Most Leadership Skills. Harvard Business Review.

3.Eagly, A. H., & Carli, L. L. (2007). Through the Labyrinth: The Truth About How Women Become Leaders. Harvard Business Review Press.
4.Kaushik, Sanjay, 2013. Challenges faced by Women Entrepreneurs in India. File retrieved from http:// www.irjcjournals.org/ijmssr/Feb2013/2.pdf
5. Choudhary, Neelam. An Account of Women Entrepreneurship Development in India: Challenges, Opportunities & Future Prospects. File Retrieved from https://editorialexpress.com/ cgibin/conference/download.cgidb_name IAFFE2013 & paper id=90.
6.Malhotra Anuj, Schulte Jennifer, Patel Payal & Petesch Patti. Innovation for Women's Empowerment and Gender Equality. File retrieved from www.icrw.org/node/288.

# WOMEN ENTREPRENEURSHIP IN THE DIGITAL AGE: ONLINE PLATFORMS AND MARKETING STRATEGIES

**Sable S.A**

Tulsi Computer Science & Information Technology College Beed.

**Abstract:**
The expansion of digital technologies has transformed the global entrepreneurial ecosystem, enabling women entrepreneurs to overcome traditional barriers such as limited access to capital, mobility restrictions, and restricted market linkages. International institutions including the United Nations and the World Bank emphasize the importance of women-led enterprises in promoting inclusive economic growth.
This research paper examines the role of online platforms and digital marketing strategies in strengthening women entrepreneurship globally. Using secondary data from international reports, policy documents, and case studies, the study evaluates digital opportunities, challenges, and strategic recommendations for sustainable development.
**Keywords:** Women Entrepreneurship, Digital Platforms, E-commerce, Social Media Marketing, Global Business, Digital Economy

## 1. Introduction

Women entrepreneurship has become a key driver of economic development worldwide. According to reports from the Global Entrepreneurship Monitor, women's participation in entrepreneurial activities has increased significantly with the expansion of digital technologies.
Digital platforms such as Amazon, Shopify, Instagram, and LinkedIn have reduced entry barriers by providing low-cost access to global markets. These platforms allow women to launch and scale businesses without heavy infrastructure investment.

## 2. Literature Review

Research from the International Labour Organization highlights that digital skill development significantly improves income generation among women-led micro and small enterprises.
The International Telecommunication Union reports that closing the gender digital divide can substantially increase GDP growth in developing economies.
Studies on social commerce through Facebook and TikTok demonstrate that digital marketing strategies have enabled women entrepreneurs to build strong brand communities and customer engagement.
Additionally, reports from the Organisation for Economic Co-operation and Development show that women entrepreneurs benefit significantly from digital financing tools and online marketplaces.

## 3. Research Methodology

- **Research Design:** Descriptive and analytical
- **Data Sources:** Secondary data from international organizations, peer-reviewed journals, and global entrepreneurship reports
- **Sampling:** Comparative case studies from North America, Europe, Asia, and Africa
- **Analysis Method:** Thematic and trend analysis

## 4. Role of Online Platforms in Women Entrepreneurship

### 4.1 E-Commerce Platforms

E-commerce marketplaces such as Etsy provide global visibility for women artisans and small-scale producers.

**Benefits:**

- Global market access
- Reduced operational cost
- Integrated logistics and payment systems

### 4.2 Social Media Platforms

Social media platforms allow direct engagement with consumers. Entrepreneurs use tools like WhatsApp Business for personalized marketing and customer support.

**Strategies include:**

- Influencer collaborations
- Live streaming sales
- Community engagement campaigns

### 4.3 Digital Financial Services

Fintech platforms enhance financial inclusion by offering mobile banking, crowdfunding, and digital payment systems. According to the World Economic Forum, fintech innovation has significantly improved credit access for women entrepreneurs.

## 5. Online Marketing Strategies

### 5.1 Content Marketing

Storytelling, blogging, and video marketing help establish brand credibility.

### 5.2 Search Engine Optimization (SEO)

Improves search rankings and online visibility.

### 5.3 Social Media Advertising

Targeted advertising enables precise customer segmentation.

### 5.4 Email Marketing

Enhances long-term customer retention and loyalty.

### 5.5 Influencer Marketing

Partnerships with micro-influencers expand international reach.

## 6. Challenges in the Digital Age

Despite opportunities, women entrepreneurs face challenges:

1. Gender digital divide
2. Limited access to venture capital
3. Cybersecurity and online fraud
4. Algorithm bias
5. Work-life integration pressures

Reports from UN Women emphasize that policy interventions are required to ensure inclusive digital ecosystems.

## 7. Findings

- Digital platforms reduce entry barriers and operational costs.
- Social commerce enables global brand visibility.
- Digital finance tools increase financial autonomy.
- Capacity-building initiatives improve sustainability of women-led enterprises.

**8. Recommendations**

1. Governments should invest in digital literacy programs.
2. International funding bodies must enhance financial inclusion policies.
3. Online platforms should ensure transparent algorithms and cybersecurity protections.
4. Women entrepreneurs should adopt integrated digital marketing strategies.

**9. Conclusion:**

Women entrepreneurship in the digital age represents a transformative global phenomenon. With support from international institutions such as the United Nations Conference on Trade and Development, digital ecosystems can become more inclusive and equitable.

Online platforms and innovative marketing strategies have empowered women to compete internationally. However, sustained policy support, digital infrastructure investment, and skill development are essential for long-term growth.

**References**

1. Global Entrepreneurship Monitor. (2023). Global Entrepreneurship Report.
2 .International Labour Organization. (2022). Women in Business and Management Report.
3 .International Telecommunication Union. (2023). Measuring Digital Development: Gender Digital Divide.
4. OECD. (2021). Entrepreneurship at a Glance.
5. UN Women. (2022). Progress on the Sustainable Development Goals: Gender Snapshot.
6 .United Nations Conference on Trade and Development. (2022). Digital Economy Report.
7. World Bank. (2023). Women, Business and the Law Report.
8. World Economic Forum. (2022). Global Gender Gap Report.

# Role of Government scheme and policies collaboration or challenge for women self-Employment

**Yelme Prakash Shesherao,**
Assistant Professor,
Department of English,
Pansare Mahavidyalaya Arjapur,
Tq Biloli , Dist Nanded,

**Abstract:**
Women entrepreneurship is significant in socio economic development of India. Over the last decade the Government of India has initiated various schemes including mudra Yojana, stand up India, skill India, and Mahila E -Haat, to encourage and support women entrepreneurs. Through these schemes, an attempt is being made to increase access to finance, skills development data from the period of 2015 to 2025, extracted from government report National level surveys, and policy related documents to analyze effectiveness of the schemes. Finding the state that there is growth in the number of women led to businesses, through this program; however the challenge remains in terms of illiteracy about scheme , access to credit, digital literacy, and social barriers, the paper does present recommendations that will make these schemes more inclusive and impactful. This research necessitates better implementation and outreach so that Government support reaches all aspiring women entrepreneurs across India.

**Introduction of government policy and scheme** :-

The Government of India bears a huge responsibility to bring all the downtrodden, poor and neglected sections of the society to the social / societal mainstream. The government's responsibility toward the socio economic development aspect of women needs special and high dimension attention. The strategy of the government to promote self employment for women through entrepreneurship encompasses: improving skills providing basic infrastructure; creating sceneries between the industries. This programmes are known as women entrepreneurial Development program ( WEPD )

1. Constitutional and legal reform.
2. Planned Development based on a mixed economy.
3. State support to social welfare activities

**Concept of women Empowerment:-**

Women Empowerment is a multifaceted concept encompassing various social, economics, political and cultural dimensions. It refers to the process of increasing the strength, confidence, and autonomy of women enabling them to achieve their full potential and participate in washing fully in all spheres of life.

**Women Empowerment contents:-**

Social empowerment of women: education, health, nutrition, drinking water and sanitation, housing and shelter environment, science, and technology women, in different circumstances violence against women right of the girl child man media.

Economic Empowerment: poverty, eradication, micro credit women and economic globalisation, women and agriculture, women and industry, support service.

Political Empowerment: decision making, leadership administration, capacity building international, cooperative Panchayat Raj institution, action plan, legislation judicial system.

**Objective of the study : -**

This research study has the following primary objective

1. To identity the important of women interpreneurship in India social and economic development
2. To review and analyze various government incentives launched toward support of women entrepreneurs.
3. To establish the impact of these incentives toward women entrepreneurs in both rural and urban settings.
4. To identify what challenge exist for women in receiving and utilising this incentive

**Overview of major government schemes for women entrepreneurs : -**

In the last 10 years the Government of India has implemented several schemes to encourage women's independence. These schemes include elements to promote financial support, capacity development and economic opportunities for women across the nation. Some key government programs are as follows:

1. **Stand - up - India scheme 2016**

- Goal : provide bank financial in the amount of 10 lakh Rupees to 1 crore rupees to women and SC / ST entrepreneurs to start new business
- Result :- 22 March 2025, 2. 2 lakh women entrepreneurs have benefited from this schemes ( source : stand - up - India progress report 2025 )
- Note :- this scheme is focused on Greenfield enterprises in the manufacturing, service and trading sector

2. **Mudra Yojana (launched in 2015) :-**

- Function gives the collateral free loan three in different categories, Shishu up to 5000 Rupees, Kishor 50, 000 - 5 Lakh Rupees, and Tarun 5 - 10 Lakh Rupees.
- Outcome: gender division of lending show that of total mudra loan women entrepreneurs accounted for over 68,% as of 2025 ( source: PMMY Annual Report 2025) Sunil Kumar and subedi (2023) explain that in helly state like Sikkim, micro finance scheme like Day-NULM and the mudra Yojana are being extended to women self-group, what are for less available to provide the entrepreneurship support required.

3. **Mahila E - Haat ( launched in 2016) :-**

- Goal: an online platform to support women entrepreneurs by selling their product to buyers.
- Impact by 2025, 40000 women were listening there product and service on the porta (l source ministry of women and children development 2025 )
- Special future: No charge for registration and digital marketing support

4. **Startup India ( launched in 2016 )**

- Purpose: initiative to facilitate innovation and entrepreneurship funding capacity building and ease of doing business.
- Impact approximately 18% of the recognised startup under these program are women - led startup ( source: DPIIT, startup India report 2024 )

1. Skill India and PMKVY ( launcher in 2015 )

- Purpose: to import skill training through various trade including entrepreneurship development.
- Impact : As of 2025, over 50 lakh women have been trained through skill India program (source : NSDC, 2025 )
- Special Features: courses are in regional language placement support available.

5. **Udhayam Shiksha portal ( launched 2018 )**

Purpose: - a Platform specially dedicated to guiding mentoring and supporting women entrepreneurs in the MSME space.

- Impact : provide end - to- end service from loan guidance to market linkages and project idea
- Special Features:- this was created by the MSME ministry to promote only women - specific entrepreneurs support.

**Conclusion: -**

Government schemes in India have a vital role in promoting and supporting women entrepreneurs with programs like mudra, stand up India, start up India, and skill India providing access to loan, training and plat farm supporting entrepreneurs. There has been an increase in the number of women led enterprises over the past 10 years. More so in urban area

**Reference Book:** -

1. Sharma, M, Sharma S.K, women Entrepreneurs in India evaluating the ground impact of government scheme shodh kosh journal of visual

2. National skill Development corporation ( 2024 ) women skilling and Entrepreneurship Report Report 2023 - 2024

3. Niti aayog 2023 women Entrepreneurship platform (WEP) annual review Report Government of India.

4. Wikipedia.com

# Role of woman in Marginal literature

**Professor Dr. Sasane S.S.**
English Department
Swa.Sawarkar Mahavidyalaya Beed

**Professor Dr. Swati Kulkarni**
Physics Department
Swa.Sawarkar Mahavidyalaya Beed

Marginal literature is the new form of writing that deals with the voice of particular class and community that faces violence, degradation and inhuman treatment from dominated class and community in India

in the 20th century education has been given to all sections of society so the voice of such oppressed class has been coming from various sources and medium

As due to education and reformation ,the wave of marginal literature has been arisen in all language and literature in India, India is known for society where caste is predominated from centuries, the human is identified with caste not by his deeds ,the caste system is based on discrimination and hatred specially women are the easier target to defame her .Actually here every woman has been criticized and marginalized but dalit woman is double marginalized as woman and dalit so her condition is horrible to digest and understand her problems

As marginal section has been educated, they think about their life and the surrounding people, the various traditions, In Maharashtra from 1950 such marginal literature has been produced

" In an era when issues relating to human rights have been under critical focus ,literary depiction of the experiences of marginalized groups have acquired great significance The resent spurt in Dalit literature in India is attempt to bring to the forefront the experiences of discrimination ,violence and poverty of the Dalit .Expression of these experiences have long been silenced ,often with religious and social sanction and relegated to the margins as non-literary More recent is the trend to deny their existence altogether "

Dalit literature has been created on the backdrop of realism, the realistic portrait of downtrodden whom everything has been denied on the name on religion and culture of India *Manusmruti* is the religious book of Hindu in that book, woman has been given a code of conduct according to the humanism has been rejected, her life is lower than dog or any animal, she has been denied all human rights

"Dali literature is marked by revolt and negativism, since it is closely associated with the hopes for freedom of a group of people who as untouchables, are victims of social, economic and cultural inequality "

There are many theories about the origin of Dalit writing, Literature from Buddha, Literature has been written by Chhokhamela .Dalit writing has been depicted the social evil and dominant psychology of upper caste group ,Janabai has also faces discrimination from society as she was coming from marginal community

Waman Nimbalkar has composed Mother poerty ,depiction of woman character as mother as realistic to that present situation ,her life was full mof hard work and struggle to live life ,her body is also become weak it is depiced as

"Slicing darkness, a shadow heavily draws near
On her head, a burden. Her legs a –totter
Thin dark of body …my mother"

Ancient Mother Mine by Shiva Ingole is also the depiction of woman, her pain and suffering. the poetry deals with the struggle of dalit woman and mothers in society, poetry dealt with the painful condition of woman. poetry highlights social injustice and caste discrimination

"None but I
Have tattooed songs of liberty
On the brave torsos
And planted drumps of defiance
On the lips
Of womenfolk here from then on, my ancient mother
Conceives not the progeny
Of the sun and the moon"

Here every word shows the condition of woman who is from marginal society, from the ancient time, this was the situation of woman

The purity of woman is also different, upper caste woman has security but marginal woman has various obstacle in her way to live respectful life

"At such juncture
Even the aged cows
Are not sold to the butcher
But here –
In the polluted atmosphere
Of vedanic wrangling
All Draupadis are
Auctioned in the bazar and
I run a school for the bastardized mothers and sisters
Since then, my ancient mother
Scraps together
Rags of freedom
To over
Her naked bosom"

The social evil Anand first attacked is casteism .He finds it to be the greatest evil of Indian society .He knows that India, the emerging republic from colonial rule could become a powerful nation only if caste system is done away with ,just caste system has been in India since immemorial attempts to abolished it have also been there from that time onwards "

The reformatory work of Mahatma Phule and Dr.Babasaheb Amedkar is the start of reformation and Dalit writing in Maharashtra ,Dr Ambedkar is the pioneer of Dalit literature ,the term Dalit literature can be first traced in the first Dalit conference in 1958 ,this conference was neglected by the central flow of social group from this it has been understood how Dalits are neglected and marginalized .Annabhau Sathe ,Baburao Bagul ,Shankarrao Kharat ,Daya Pawar ,Waman Nimbalkar ,Arjun Dangale ,Namdev Dasal ,Kumud Pawade

Our houses stand
Like footprints of cattle in the mud
In the midst of it all is a soul
Eager to swim along the current"

Dalit colony has been depicted by Keshav Meshram who is Mahatashtrian Dalit poet ,Mulkraj Aande has also depicted dalit colony

"The outcaste colony was a group of mud walled houses that clustered together in two roués, under the shadow both of the town and cantonment but outside their boundaries and separate. A brook run near the lane once with crystal clear water now soiled by the dirt and filth of the public latrines. Situated about it, the odour of the hides and skins of dead carcasses left dry on its banks……"

Woman is the center of home so it is quite dangerous for her to live in such horrible and unhygienic condition

So from above description of Dalit colonies are dangerous, they have been denied everything as human status, living just like animal, animal has the better status as they have rights to touch, when Dalit is touches, everything was spoils, even they don't have right to take water

Usually woman fetch water from well and waterbody that time it was mandatory to her to wait to upper caste men or woman who givers water to her from well or waterbody so it was very inhuman behavior of society towards a woman

, cow is sacred animal but the touch of human is impure, how polluted mentality is of Indian society. Dr Babasaheb Ambedkar, the father of all marginal has given education to woman to live respectful life

**References**


- Dr. Ambedkar Kalam Ka Kamal Part – I by L.R. Bali Bhim Patrika Publication Fist edition 30 sept 2007 Page No. 221
- Arjun Dangale ed. Poisoned Bread, oriental Longman
- K .Kavitha,Dalit literature in English ,Indian Journal of Research ,Paripex
- C.J.George ,Mulkraj Anand HIS Art and Concerns ,Atlantic Publication
- Mulkraj Anand, Untouchable
- Dr. Ambedkar Kalam Ka Kamal Part – I by L.R. Bali Bhim Patrika Publication Fist edition 30 sept 2007 Page No. 221

# Rural Women Entrepreneurship: Prospects and Social Transformation

**Dr. Jyoti Rameshrao Kote**
Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded
Sub Campus, Parbhani
Email- jyotikote7@gmail.com

**Abstract-**
Rural women entrepreneurship is a catalyst for economic empowerment and social transformation. Rural women entrepreneurship is a powerful tool for economic empowerment and social change. By starting their own businesses, rural women can contribute to their families' income, create employment opportunities, and drive community development. The emergence of women entrepreneurs and their contribution to the national economy is quite visible in India. The number of women entrepreneurs has grown over a period of time, especially in the 1990s. Women entrepreneurs need to be lauded for their increased utilization of modern technology, increased investments, finding a niche in the export market, creating a sizable employment for others and setting the trend for other women entrepreneurs in the organized sector.

**Keywords-** Women Entrepreneurship, Social Transformation, National Economy.

**Introduction-**

Entrepreneurship is progressively acknowledged as a pivotal component within the competitive business environment. Particularly, female entrepreneurs epitomize resilience and ingenuity, striving towards attaining financial self-sufficiency and nurturing more robust family dynamics, often surpassing their male counterparts. Paralleling the sentiments of Dr. APJ Abdul Kalam, the empowerment of women is fundamental in constructing a robust nation. The empowerment of women initiates a beneficial domino effect, commencing from cultivating a stable family unit to shaping a prosperous society and, ultimately, a flourishing nation. While women entrepreneurs have demonstrated their potential, the fact remains that they are capable of contributing much more than what they already are. Women's entrepreneurship needs to be studied separately for two main reasons. The first reason is that women's entrepreneurship has been recognized during the last decade as an important untapped source of economic growth. Women entrepreneurs create new jobs for themselves and others and also by being different. They also provide the society with different solutions to management, organization and business problems as well as to the exploitation of entrepreneurial opportunities. The second reason is that the topic of women in entrepreneurship has been largely neglected both in society in general and in the social sciences. Not only have women lower participation rates in entrepreneurship than men but they also generally choose to start and manage firms in different industries than men tend to do.

The concept of "women entrepreneurs" encompasses women who actively participate in various business sectors, including manufacturing, assembling, job works, repairs, servicing, and other enterprises. These entrepreneurs often play critical roles in their businesses, sometimes holding controlling interests. Their economic and social advancement is seen as key to their emancipation, yet they often face disparities in social status compared to men, impacting their entrepreneurial efforts In emerging economies, challenges such as

religious and cultural restrictions, illiteracy, and lack of training further complicate their endeavors'.

**Rural Women the Social Transformation of Entrepreneurship**

Empowering women particularly rural women is a challenge. Micro enterprises in rural area can help to meet these challenges. Micro – enterprises not only enhance national productivity, generate employment but also help to develop economic independence, personal and social capabilities among rural women. Following are some of the personal and social capabilities, which were developed as result of taking up enterprise among rural women.

***Improved standard of living-**

An improved standard of living means having access to better healthcare, education, housing, and overall well-being. For rural women and their families, entrepreneurship can be a key driver of this positive change.

**• Economic empowerment-**

Economic empowerment means having control over one's financial resources, decisions, and future. For rural women, it often involves accessing opportunities like entrepreneurship, employment, and financial services, leading to greater independence and self-sufficiency.

**• Self confidence**

Self-confidence is believing in your abilities, worth, and potential. It about trusts yourself to make decisions, take risks, and overcome challenges. When women entrepreneurs develop self-confidence, they're more likely to succeed and inspire others.

**• Enhance awareness**

Enhancing awareness means spreading knowledge, understanding, and insights to create a more informed and empathetic community.

**• Sense of achievement-**

Sense of achievement is a wonderful feeling that comes from accomplishing something you've worked hard for or achieving a long-term goal. It's a mix of pride, satisfaction, and happiness.

**• Increased social interaction-**

Increased social interaction can be a huge confidence booster and a great way to build connections. Whether it's reconnecting with old friends, making new ones, or being more active in your community, social interaction can really enrich your life.

**• Engaged in political activities-**

Engaging in political activities can be a powerful way to make your voice heard and create change. Whether it's volunteering for a campaign, attending rallies, or joining a discussion group, being involved in politics can be super fulfilling.

**• Increased participation level in gram sabha meeting-**

Increased participation in Gram Sabha meetings is a fantastic way to contribute to your community and make your voice heard. It's awesome that you're taking an active role in local governance and decision-making.

**• Improvement in leadership qualities-**

Leadership qualities are like muscles - they grow stronger with practice! Improvement in leadership qualities can open up new opportunities and help make a bigger impact.

**• Involvement in solving problems related to women and community-**

Involvement in solving problems related to women and the community involves a multi-faceted approach focusing on economic empowerment, education, legal rights, and health, primarily driven by grassroots organizations, NGOs, and community-led initiatives.

**• Decision making capacity in family and community-**

Decision-making capacity is the legal and functional ability of an individual to understand, appreciate, reason, and communicate choices regarding their personal welfare or property, generally presumed for all adults but often evaluated as time- and issue-specific. It is crucial for autonomy, with processes often involving family members in collaborative decision-making or substituted decision-making when capacity is lacking.

**Conclusion-**

Rural women entrepreneurship is a critical driver of both economic growth and social transformation in developing nations, particularly in India, where it helps reduce poverty and fosters sustainable development. While rural women entrepreneurs (RWEs) face significant obstacles—including limited access to finance, low literacy rates, and deeply ingrained patriarchal barriers—their increasing participation is shifting mindsets and fostering a more inclusive economic landscape. Rural women entrepreneurship acts as a crucial, "quiet revolution" for economic independence and social empowerment in developing economies, particularly in India. While facing significant challenges, this sector holds bright prospects for transforming traditional societal structures.

**References**

1. Donald F. Kuratko, Richard M. Hodgetts. (1997) “Entrepreneurship”. Dryden Press Series in Entrepreneurship, Hardcover, USA

2. Meenu Agrawal, Shobana Nelasco (2009) “Empowerment of Rural Women in India” Kanishka Publishers, New Delhi

3. G. Sen and C. Grown, Development crises and alternative visions: Third world women’s perspectives. Routledge, 2013.

4. J. Ahirrao, “Entrepreneurship and Rural women in India,” (No Title), 2013.

# Empowering Rural Women through Entrepreneurship: Challenges and opportunities

**Dr. Syed Tanvir Badruddin**
Professor in Sociology,
Milliya Art`s ,Sci. & Mang. Sci College, Beed.43112
Email :- tanvir_syed123@rediffmail.com

**Abstract:-**

Women play vital role in the development of a society. Developed countries have worked on providing favorable environment for women to work and contribute towards the development of their country. Unlike the developed countries, developing countries could not ensure that environment for women to become an entrepreneur. Women of the developing countries in general and of India in particular face multiple issues ranging from personal, family, cultural, social and technical skills to start their own work. In most developing countries, like India, women are the active players in the informal sector (mbeehe, 2002). It is estimated that women Entrepreneurs account for about 10% of the total entrepreneurs in India (Barhate, 2012). Though many women entered into the world of business and have become successful entrepreneurs, the rate of their participation in the business is very low, in spite of its increase in last one decade. This growth rate of women's participation in economic activities is lower than the participation of women in developed countries. Thus, in this article, an attempt has been made to find out the various problems faced by the rural women Entrepreneurs.

***Keywords:-*** ***Entrepreneurship,*** ***rural women Entrepreneurs, problems.***

**Introduction:**

Entrepreneurship means different things to different people. Conceptually and in practice, the term hints of no orthodox model. Yet it's very etymology- derived from the French, `entreprendre`, which exactly means, to undertake` indicates the minimum characteristics of an entrepreneur. From the outlook of economic functions, three crucial characteristics of entrepreneurial activities are: risk taking, innovation and venturing into new business activities for profit. Entrepreneurship is the, "process of creating something new with value, allocate the necessary time and effort assuming the risk and reward". Richard Cantillon was the first to introduce the term, "entrepreneur". He defined an entrepreneur as "the agent who buys means of production at certain prices in order to combine them into a product that he is going to sell at prices that are uncertain at the moment at which he commits himself to his costs" (Richard Cantillon 1951). So in this way entrepreneurs introduce new jobs, products, services etc. providing a boost in the nations growth as well as his/her personal stability. Women entrepreneur is an adult who introduces or runs an enterprise, mostly a commercial one either solely or jointly ventured with keeping the risk factors in mind. The concept of women entrepreneurship over the years has quite significantly made its way in the global business because of the rise of different organizations for empowering women.

**Objectives of the study:-**

The study was planned for assessing the following objectives:

1) To understand the concept of rural women entrepreneur and entrepreneurship.
2) To examine the various problems faced by rural women entrepreneurs.

***Hypothesis:-***

1) The Rural women entrepreneurs face various problems and challenges related to family, society, economical and marketing, etc.

**Research Methodology:-**

The information required for the study has been collected from secondary sources.This researcher has adopted the method of reviewing different research articles, research journals, and case studies, to collect data about various problems and challenges faced by rural women entrepreneurs.

**Women Entrepreneurs:-**

The Government of India has defined Women Entrepreneurs based on women participation in equity and employment of business entrepreneurs. Accordingly, a Woman Entrepreneur is defined as "an enterprise owned and controlled by a women having a minimum financial interest of 51 per cent of the capital and giving at least 51 per cent of employment generated in the enterprise to women". However this definition is subject to criticism mainly on the condition of employing more than 50 per cent women workers in the enterprises owned and run by the women (Khanka S.S. 2007). Women entrepreneurs are those women, "who generate business ideas, identify profitable business opportunities, assemble the necessary resources, combine the factors of production, undertake risks and use their business skills to operate the enterprise for the purpose of generating profit income and growth" (Sudha G.S. 2007).

**Concept of Rural Women Entrepreneurship:-**

Rural entrepreneurship implies entrepreneurship emerging in rural areas. Rural entrepreneurship means rural industrialization. Industrialization can't originate or sustain without entrepreneurship whether rural or urban. Industries coming under the purview of **KVIC** are treated as rural industries. Rural industrialization means encouraging location of large and small scale units away from urban areas or planned shifting of units from urban areas to rural areas. Rural entrepreneurship can stop the increasing migration towards cities as it provides wide range of employment opportunities to the village people. In India, 65% of population lives in rural areas. Women population is 50 % share of general population. Therefore, rural women need to turn up into entrepreneur which is an important factor in socio-economic development. However, there is increasing evidence that more and more women are showing interest in small business ownership and actually starting up with the business, the status of rural women are bounded to low level.

**Drivers of Rural Women Entrepreneurship:-**

All The rise of rural women entrepreneurship in India is driven by a blend of economic, social, and institutional factors that empower women to start and sustain business ventures, contributing significantly to local and national economies.

**1) Economic Necessity and Livelihood Opportunities:-**

In many rural regions, entrepreneurship stems from economic necessity. With limited job opportunities, women often turn to small-scale enterprises to support their families. A study emphasized that rural women entrepreneurs in India significantly contribute to both household income and the broader rural economy, especially through micro, small, and medium enterprises

**2) Government Policies and Initiatives:-**

Government programs play a critical role in promoting rural women entrepreneurship. Schemes like Self-Help Groups (SHGs) and microcredit programs provide women with access to financial resources and entrepreneurial training. These
initiatives have led to an increase in women-owned businesses, particularly in rural sectors where
traditional employment is scarce.

**3) Social and Cultural Shifts:-**

Social attitudes towards women in business are gradually evolving. Increased awareness of gender equality and the importance of women's economic participation has encouraged many rural women to pursue entrepreneurial ventures. This shift has been supported by community efforts and education that challenge traditional gender roles.

**4) Technological Advancements and Market Access:-**

Technological advancements, particularly the rise of digital platforms, have opened new avenues for rural women entrepreneurs. Access to smartphones and internet services has enabled women to market their products beyond local communities, leading to increased revenues and business expansion.

**5) Role of Education and Skill Development:-**

Education and skill development are essential drivers of women's entrepreneurship. Vocational training programs in areas like handicrafts, agriculture, and digital literacy equip rural women with the skills necessary to establish and run successful businesses.

**6) Community and NGO Support:-**

Non-governmental organizations (NGOs) play a pivotal role in supporting rural women entrepreneurs. They provide mentorship, training, and funding opportunities, creating a nurturing ecosystem for women-led businesses in rural areas.

**Challenges for Rural Women Entrepreneurs:-**

The main challenges that women face in business are Problems of raising start-up capital, educational and work background, difficulty in borrowing fund, balancing their time share between work and family, Thought-cut completions rare continuation of small companies, Problems of availing raw-materials access to export market without intermediaries, as well as an overall psychological barrier on the part of banks, suppliers, and clients alike, are a few of these challenges. There have been a lot of factors affecting women entrepreneurs around the country. These are affecting the confidence and motivation of women across the country. In addition to this some of the challenges faced by rural women entrepreneurs are as follows-

**1) Problems of raising start-up capital:-**

The first most important problem that women extremely face is raising funds for the enterprise. Bankers as well as financial institutions show their unwillingness to sanction funds to them due to their credit unworthiness. This induces the possibility of raising funds for the enterprise. Most of the rural entrepreneurs fail to get external funds due to absence of concrete security and credit in the market. The procedure to avail the loan facility is too time-consuming that its delay often disappoints the rural women entrepreneurs. Lack of finance available to rural women entrepreneurs is one of the biggest problems.

**2) Balancing their time share between work and family**:-

Having primary responsibility for children, home and older dependent family members, few women can devote all their time and energies to their business. The financial institutions discourage women entrepreneurs on the belief that they can at any time leave their business and become housewives again. Women in India are very much attached to their family. They have been made to believe that they are the ones supposed to all the household works like taking care of their children and parents, cleaning of house, food preparation etc.

**3) Failure of training in skills:-**

Skill is the elemental thing, on which the success of every entrepreneur lies. Besides these, management skills and training should be offered based on their area of interest. Women entrepreneurs have very least amount or limited technological awareness about technology. In fact, they may not have any kind of technological knowledge, it will nil among rural women. If at all they have then the knowledge of technology less than the rural men.

**4) Lack of Infrastructural Facilities:-**

The growth of rural women entrepreneurs is not very healthy in spite of efforts made by government due to lack of proper and adequate infrastructural facilities.

**5) Low Skill Level of Workers:-**

Most of the women entrepreneurs of rural areas are unable to find workers with high skills. Turnover rates are also high in this case. They have to be provided with on the job training and their training is generally a serious problem for the entrepreneur as they are mostly uneducated and they have to be taught in the local language which they understand easily. The industries in rural areas are not only established just to take advantage of cheap labor but also to bring about an integrated rural development.

**Conclusion:-**

Women today are more willing to start their own business or to take over family owned business. The contribution of rural women to the economy is quite significant. Women entrepreneurs not only give employment to greater number of people, they also enhance the economy to grow faster than before, this results the women entrepreneurs to take challenging career and improve the nation as a whole. Women play a vital role in the growth and development of the economy of the nation. They attain the success in the entrepreneurial world by facing a lot many problems. There may be various problems for women to get entered into the world of entrepreneurship. But their ultimate aim is to reach the peak of success and to be economically sound. This type of target of every rural women entrepreneur brightens the development of country along with the development of women entrepreneurs. The problems faced by rural women entrepreneurs are more than that of the problems faced by the men of rural area and the women of urban area.

**Reference:-**

**1)** Sujit Gouda Role of Women Entrepreneur in Rural Development National Seminar On Accelerating Rural Growth: By Empowering Women Through Innovation And Technology I J R T E R - *Special Issue; November - 2016 [ISSN: 2455-1457*]

**2)** R. Chandra, R. Sah, B. Mateen, R. Pant, "Women Empowerment and Entrepreneurship in Rural Communities in Uttarakhand, India", International Journal of Scientific Research in Engineering and Management, 2024.

**3)** Engineering and Management, 2024.Ghosh, R., Gupta, M., & Dhar, D. S. (1998). *Women and entrepreneurship in India*. New Delhi: Sage Publications.

**4)** B. C. Das, S. Jana, ―Women Entrepreneurship and Sustainable Rural Development in India‖,2020.

**5)** 2020.Brijesh Patel International Journal of Advance Research in Computer Science and Management Studies Kirit Chavda Volume 1, Issue 2, July 2013.

**6)** B. Parekh, Role of Indian Women in Development of Entrepreneurship, 2020.

**7)** G.Henry James, Dr.K.Satyanarayana, Women Entrepreneurs in India –Problems and Proespects, International Journal of Academic Research, Vol.2, Issue- 2(8), April-June, 2015.

# Economic and Social Impact of Women's Leadership in the Research Field

**Dr. Gahininath Shivaji Bhosale**
Assistant Professor,
Dept. of English,
Balbhim Arts, Science and Commerce College, Beed.
gahininathbhosale13@gmail.com

**Abstract:**
This paper explores the economic and social impacts of women's leadership within the research field. Despite decades of progress in gender equality, women remain underrepresented in leadership positions across scientific disciplines. Drawing on empirical studies, case analyses, and global data, this study examines how women leaders contribute to innovation, productivity, and societal well-being. Findings suggest that increasing women's participation in research leadership enhances research quality, promotes inclusive decision-making, and generates measurable economic benefits. The paper concludes with policy recommendations to foster gender parity and leverage women's leadership potential in research institutions worldwide.

**Keywords:** gender equality, women's leadership,

**Introduction:**

The underrepresentation of women in leadership roles across academia and research institutions remains a persistent challenge. According to UNESCO (2021), women comprise less than 30% of researchers globally, with an even smaller proportion holding senior leadership positions. This gender disparity not only limits equitable access to career opportunities but also constrains the diversity of ideas and approaches critical for scientific innovation.

Women's leadership in research can reshape organizational culture, enhance collaborative outcomes, and influence societal perceptions of gender roles. This paper investigates both the economic and social consequences of women's leadership in research, highlighting the benefits of gender-inclusive governance and the broader societal impacts.

**Literature Review:**

Research on gender and leadership indicates that women often employ participative and collaborative leadership styles (Eagly & Carli, 2007). Studies have shown that such styles enhance team performance, creativity, and problem-solving capacity. In scientific research, diverse leadership teams are linked to higher innovation rates, as evidenced by an increase in interdisciplinary publications and patent outputs (Hunt et al., 2018).

Economically, institutions led by women are associated with more efficient resource allocation and greater emphasis on mentorship and professional development, contributing to talent retention and long-term institutional growth. Socially, women leaders challenge traditional stereotypes, encouraging young women to pursue STEM careers, thereby influencing societal norms and educational outcomes.

**Methodology:**

This study adopts a mixed-methods approach, combining quantitative data analysis with qualitative case studies.

**Quantitative Analysis**: Statistical examination of global research institutions to identify correlations between women in leadership and research productivity, funding acquisition, and patent generation.

**Qualitative Case Studies:** In-depth analysis of institutions with prominent women leaders, focusing on organizational culture, policy innovations, and community engagement.

Data sources include UNESCO's Institute for Statistics, Scopus publication databases, and institutional reports from leading universities and research centers.

**Economic Impact:**

Women's leadership contributes to measurable economic outcomes in research institutions:

Increased Productivity: Studies show that research teams with women leaders produce a higher number of publications and patents per capita.

Resource Optimization: Women leaders tend to prioritize efficient allocation of research funds and human resources, enhancing institutional ROI.

Innovation and Collaboration: Inclusive leadership promotes interdisciplinary collaboration, leading to high-impact innovations and increased grant success rates.

Overall, the presence of women in leadership positions correlates with improved institutional performance and economic resilience.

**Social Impact:**

The social impact of women's leadership in research extends beyond institutional metrics:

Role Modeling: Women leaders serve as role models, increasing STEM participation among young women and underrepresented groups.

Organizational Culture: Inclusive leadership fosters collaborative, transparent, and ethical organizational practices.

**Policy Advocacy:** Women leaders often champion policies promoting work-life balance, equity, and diversity,

Benefiting both employees and the broader community.

By challenging entrenched gender norms, women in research leadership roles drive societal change toward equity and inclusivity.

**Discussion:**

The findings underscore the importance of gender parity in research leadership for both economic efficiency and social progress. While systemic barriers persist—including bias in hiring, funding, and promotion—evidence demonstrates that institutions with women leaders outperform their peers in innovation, productivity, and employee satisfaction.

Moreover, fostering women's leadership is not merely a social imperative but an economic strategy that maximizes human capital and institutional potential.

**Conclusion and Policy Recommendations:**

Women's leadership in research significantly benefits both economic and social dimensions of scientific institutions. To harness this potential, the following measures are recommended:

Implement targeted mentorship and leadership development programs for women researchers.

Promote transparent and equitable recruitment, promotion, and funding policies.

Encourage research institutions to adopt family-friendly and flexible work policies.

Monitor and report gender-disaggregated metrics for research productivity and leadership representation.

Empowering women in research leadership positions is critical for achieving both scientific excellence and social progress.

**References:**

1. Eagly, A. H., & Carli, L. L, Through the Labyrinth: The Truth about How Women Become Leaders. Harvard Business School Press, 2007.
2. Hunt, V., Layton, D., & Prince, S. Delivering Through Diversity. McKinsey & Company, 2018.
3. UNESCO Institute for Statistics, Women in Science. Retrieved from [UNESCO website], 2021.

# Impact of Self-Help Groups on Women Empowerment in Rural India

**Dr.Geetanjali Anantrao Shelke**
Asst.Prof. English Dept.
Balbhim College, Beed.
Email:geetanjalishelke5458@.gmail.com
Mob.9552037704/9322646448

**Abstract:**

Women empowerment is a crucial element of sustainable rural development in India. In the last few decades, Self-Help Groups (SHGs) have emerged as a powerful grassroots mechanism for enhancing the socio-economic status of rural women. This research paper examines the impact of Self-Help Groups on women empowerment in rural India by analyzing economic, social, political, and psychological dimensions. The study is based on secondary data, research articles, and case studies related to SHGs and microfinance interventions in India. The findings reveal that SHGs significantly contribute to financial inclusion, decision-making ability, leadership skills, entrepreneurship, and social mobility among rural women. However, challenges such as illiteracy, market access, and patriarchal norms still limit their full potential. The paper concludes that SHGs are an effective model for achieving inclusive growth and gender equality in rural India.

**Keywords:** Women Empowerment, Self-Help Groups, Rural Development, Microfinance, Gender Equality, India

## 1. Introduction:

Women empowerment refers to the process through which women gain control over economic resources, decision-making, and social status. In rural India, women face multiple challenges such as poverty, illiteracy, lack of employment opportunities, and gender discrimination. These issues restrict their participation in socio-economic activities and limit their autonomy.

Self-Help Groups (SHGs) have emerged as a transformative strategy to empower rural women by providing financial support, social solidarity, and entrepreneurial opportunities. SHGs are small voluntary groups, usually consisting of 10–20 women, who come together to save money, access credit, and undertake income-generating activities.

India has one of the largest SHG movements in the world, especially under schemes like National Rural Livelihood Mission (NRLM). SHGs promote financial inclusion and collective decision-making, which enhances women's agency and confidence. Research indicates that SHG participation improves economic autonomy, confidence, and participation in household decisions among rural women.

## 2. Objectives of the Study:

1. To understand the concept of women empowerment in rural India
2. To examine the role of Self-Help Groups in empowering women
3. To analyze the socio-economic impact of SHGs on rural women
4. To identify challenges faced by SHGs in rural development
5. To suggest policy recommendations for strengthening SHGs

**3. Research Methodology:**

This study is based on qualitative and descriptive research methodology. The data used in this research paper is collected from:

- Research journals
- Government reports
- Books and academic articles
- Case studies on SHGs

**4. Conceptual Framework: Women Empowerment and SHGs**

Women empowerment is a multidimensional concept that includes:

- Economic empowerment
- Social empowerment
- Political empowerment
- Psychological empowerment

Self-Help Groups function as a microfinance-based collective model that promotes savings, credit access, entrepreneurship, and social awareness. Studies show that SHGs act as platforms where women share resources, build skills, and engage in economic activities, thereby increasing their self-reliance and empowerment.

**5. Literature Review**

Several scholars have examined the relationship between SHGs and women empowerment.

A micro-level study conducted in Karnataka found that women who joined SHGs showed higher participation in household decision-making, health, education, and financial matters compared to non-members .

Another study in Maharashtra revealed that SHG participation increased women's income, savings, and entrepreneurial activities, particularly in dairy farming, tailoring, and food processing sectors.

Research conducted in Tamil Nadu also highlights that SHGs significantly contribute to both social and economic empowerment of rural women by improving their financial independence and social status.

A multidimensional analysis across rural regions of India shows that SHGs promote economic self-reliance, leadership development, and social transformation among women.

**6. Role of Self-Help Groups in Women Empowerment**

**6.1 Economic Empowerment**

Economic independence is the foundation of women empowerment. SHGs provide:

- Microcredit facilities
- Savings opportunities
- Employment generation
- Entrepreneurship support

Research indicates that women's monthly income and savings significantly increase after joining SHGs due to participation in income-generating activities and micro-enterprises.

SHGs encourage women to start small businesses such as:

- Dairy farming

- Handicrafts
- Food processing
- Tailoring
- Poultry farming

These activities enhance financial stability and reduce poverty in rural households.

**6.2 Social Empowerment**

SHGs promote social awareness and collective identity among women. Rural women who participate in SHGs experience:

- Increased mobility
- Improved social status
- Greater awareness about rights
- Reduction in gender discrimination

Participation in group meetings and training programs enhances communication skills and confidence. Women become more active in community development activities and social campaigns.

**6.3 Political Empowerment**

SHGs encourage women's participation in local governance and decision-making. Many SHG members actively participate in Gram Sabha meetings and Panchayati Raj Institutions.

Studies reveal that SHG membership increases women's leadership qualities and public participation, enabling them to influence community-level decisions and policies.

**6.4 Psychological Empowerment**

Psychological empowerment refers to self-confidence, self-esteem, and decision-making ability. SHGs create a supportive environment where women:

- Share experiences
- Solve problems collectively
- Develop leadership skills

This collective solidarity enhances confidence and reduces social isolation among rural women.

**7. Impact of SHGs on Rural Women in India**

**7.1 Financial Inclusion**

SHGs play a crucial role in linking rural women with formal banking systems. Microfinance and SHG-bank linkage programmes promote financial literacy and savings habits among women.

**7.2 Improvement in Decision-Making Power**

Women involved in SHGs actively participate in household decisions related to:

- Education
- Health
- Property
- Family expenditure

Studies confirm that SHG membership significantly enhances women's autonomy and decision-making power within families.

**7.3 Entrepreneurship Development**

SHGs encourage micro-entrepreneurship by providing loans and skill training. Research shows that SHGs foster entrepreneurship regardless of educational background and help bridge socio-economic disparities among women.

**7.4 Poverty Reduction**

SHGs contribute to poverty alleviation by:

• Generating employment

• Increasing household income

• Promoting self-employment

Government initiatives also integrate SHGs into livelihood programs to promote sustainable rural development.

**7.5 Social Transformation**

SHGs challenge traditional patriarchal norms by promoting gender equality. Women gain bargaining power in families and communities, leading to long-term social change.

**8. Challenges Faced by Self-Help Groups**

Despite their success, SHGs face several challenges:

**8.1 Lack of Education and Skills**

Many rural women have low literacy levels, which restrict their financial management and business development abilities.

**8.2 Market Access Issues**

Limited access to markets and digital platforms affects the growth of SHG-based enterprises.

**8.3 Patriarchal Social Structure**

Traditional gender roles and societal restrictions still limit women's participation in economic activities.

**8.4 Financial Constraints**

Insufficient credit support and delayed bank loans hinder SHG functioning.

**8.5 Leadership and Management Issues**

Some SHGs suffer from weak leadership, mismanagement, and lack of proper training.

**9. Government Initiatives Supporting SHGs in India**

The Indian government has launched several schemes to promote SHGs, such as:

• National Rural Livelihood Mission (NRLM)

• SHG-Bank Linkage Programme

•Deendayal Antyodaya Yojana

These initiatives focus on skill development, financial inclusion, and entrepreneurship among rural women.

**10. Case Study Perspective (Rural India)**

In many states like Maharashtra, Tamil Nadu, and Assam, SHGs have transformed rural women's lives by promoting income generation, savings, and leadership. Evidence shows that women engaged in SHGs experienced significant improvement in income levels, savings patterns, and standard of living after joining group-based economic activities.

**11. Findings of the Study:**

1. SHGs significantly enhance women's economic independence
2. They improve decision-making power and leadership skills
3. SHGs promote entrepreneurship and self-employment
4. Social awareness and gender equality increase through SHG participation
5. Financial inclusion is strengthened in rural areas
6. However, structural challenges still hinder full empowerment

**12. Suggestions and Policy Recommendations**

1. Strengthening financial support and microcredit facilities
2. Providing skill development and digital training
3. Enhancing market linkages for SHG products
4. Promoting financial literacy programs
5. Encouraging women's participation in governance
6. Increasing government funding for SHG initiatives

**13. Conclusion**

Self-Help Groups have emerged as a powerful instrument for women empowerment in rural India. They not only provide financial support but also promote social awareness, leadership, and self-confidence among women. SHGs contribute significantly to poverty reduction, entrepreneurship development, and gender equality.

The study concludes that SHGs are an effective grassroots model for empowering rural women economically, socially, and psychologically. However, challenges such as illiteracy, market barriers, and patriarchal norms must be addressed to maximize their impact. With proper policy support, training, and financial inclusion, SHGs can play a transformative role in achieving sustainable rural development and women empowerment in India.

**14. References**

1. Pandhare, A. et al. (2024). Transforming Rural Women's Lives through SHGs and Microfinance.
2. Saravanan, M. (2016). Impact of SHGs on Socio-Economic Development of Rural Women.
3. Chaitra & Indira (2023). Impact of SHGs on Women's Decision-Making.
4. Qualitative Research in Financial Markets (2022). Socio-economic Development through SHGs.
5. Government of India Reports on NRLM and SHG-Bank Linkage Programme.
6. Sen, A. (1999). Development as Freedom. Oxford University Press.
7. Desai, V. & Joshi, S. (2014). Rural Development in India. Himalaya Publishing House.
8. NABARD. (2018). Status of Microfinance in India. National Bank for Agriculture and Rural Development.
9. Chaitra, C. N., & Indira, M. (2023). The Impact of Self-Help Groups on Women's Participation in Decision Making: A Micro Level Study. International Journal of Management and Development Studies.
10. Indian Agricultural Research Journals
11. Roy, N. S., & Chakraborty, S. (2024). Formal Education and Women's Empowerment among SHG Participants. Journal of Educational Analytics.
12. Ministry of Rural Development, Government of India. (2011). National Rural Livelihoods Mission (NRLM) Framework.
13. Government of India. (2020). DAY-NRLM Annual Report.
14. Planning Commission (NITI Aayog). (2018). Women Empowerment and Livelihood Programs in India.

15. Chaitra, C. N., & Indira, M. (2023). The Impact of Self-Help Groups on Women's Participation in Decision Making. International Journal of Management and Development Studies.

# Leadership Skills and Entrepreneurial Growth among Women in Small Scale Enterprises of Marathwada

**Dr.Sandipan Ambadas Unwane**
Assistant Professor
Balbhim College, Beed

**Dr. V. B. Kute**
Assistant Professor
Balbhim College, Beed

**Abstract:**
This study explores the relationship between leadership skills and entrepreneurial growth among women involved in small scale enterprises in the Marathwada region of Maharashtra, India. Women entrepreneurs face unique challenges that include limited access to resources, socio-cultural constraints, and restricted market linkages. The research identifies key leadership competencies that contribute to business performance and sustainable growth. Quantitative and qualitative data were collected from women entrepreneurs across six districts in Marathwada. Results suggest that transformational leadership traits — such as vision setting, effective communication, decision-making, and adaptability — are positively associated with enterprise growth. The paper concludes with policy recommendations and strategies to strengthen leadership capacity among women in small enterprises.

**Keywords:** Women Entrepreneurship, Leadership Skills, Small Scale Enterprises, Marathwada, Entrepreneurial Growth, Economic Empowerment.

**Introduction:**

Women's participation in entrepreneurship has increased significantly over the past decade in India. However, many women entrepreneurs in small scale sectors still face barriers that limit their growth potential. Leadership skills play a vital role in shaping entrepreneurial outcomes — From opportunity recognition to strategic business expansion. In the context of Marathwada,

a region characterized by agrarian challenges and emerging industrial growth, understanding how leadership attributes influence business success is critical.

Women-led small-scale enterprises drive economic growth through resilience, adaptability, And social intelligence, often utilizing collaborative leadership to overcome resource Constraints. Key skills like emotional intelligence, strategic networking, and proactive Decision-making directly enhance business performance and innovation. Empowering these Leaders requires targeted skill development and access to financial resources.

**Drivers of Growth in Women-Led Enterprises:**

1. **Innovation and Creativity:** Entrepreneurial activities, such as developing new products or services, are key drivers for business growth.
2. **Empowerment through Training:** Education helps women develop critical thinking and management skills, which are essential for identifying business opportunities and managing resources.
3. **Digital Adoption:** Utilizing modern technology and social platforms for marketing and operations can scale small businesses.

***Situation*** **of Marathwada:**

Marathwada, located in the central part of Maharashtra, India, comprises eight districts**:** Aurangabad, Beed, Jalna, Latur, Hingoli, Nanded, Osmanabad, and Parbhani. The

region is largely agrarian and has historically faced recurrent droughts, limited industrial investment, infrastructural constraints, and lower socio-economic indicators compared to the rest of Maharashtra. These challenges shape the entrepreneurial ecosystem, especially for women, making business growth and leadership development both necessary and difficult. Socio-cultural norms in Marathwada often prioritize traditional household roles for women. As a result, women entrepreneurs frequently balance family responsibilities with enterprise obligations, affecting both the time they dedicate to business activities and their opportunities to build advanced leadership competencies. Marathwada faces structural economic issues including drought, unemployment, and limited industrial investment. Women entrepreneurs in the region often rely on micro enterprises in dairy, handicrafts, food processing, tailoring, and allied services.

**Summary of the Current Situation:**

| Sr. No. | Component | SituationinMarathwada |
|---|---|---|
| 1 | Leadership Vision | Moderate |
| 2 | Decision Making | Moderate |
| 3 | Networking | Low |
| 4 | Financial Management | Low |
| 5 | Enterprise Growth | Slow to Moderate |
| 6 | Market Access | Local & Limited |
| 7 | Access to Finance | Limited |

**Research Objectives:**

1. To examine the level of leadership skills among women entrepreneurs in Marathwada.
2. To assess the relationship between leadership competencies and enterprise growth.
3. To identify barriers faced by women entrepreneurs in achieving business growth.
4. To propose development strategies for enhancing leadership and entrepreneurial success.

**Research Methodology:**

**Research Design:** The study adopts a descriptive and analytical research design.

**Sample and Sampling Technique:** A stratified random sample of 150 women entrepreneurs across Beed, Parbhani, Nanded, Latur, Hingoli, and Osmanabad was selected. Participants were engaged in manufacturing, services, and trading.

**Data Collection:**

1. **Primary Data:** Structured questionnaires, interviews
2. **Secondary Data:** Government reports, scholarly journals
3. **Analytical Tools:** Percentage analysis, Correlation and regression, SWOT analysis

**Women's Participation in Small Scale Enterprises:**

Despite structural constraints, women in Marathwada have increasingly ventured into small scale entrepreneurial activities — such as:

1. Handicrafts and traditional arts
2. Food processing and food products
3. Tailoring and garment services
4. Dairy and allied agri-business
5. Beauty and wellness services
6. Home-based micro enterprises

These small scale enterprises provide income avenues for women and contribute to local economic resilience. However, many of these businesses remain at the micro or survival stage, growing slowly due to challenges in access to markets, capital, and leadership development.

**Leadership Skills among Women Entrepreneurs:**

Leadership skills are critical for managing a business, making strategic decisions, and ensuring sustainable growth. In Marathwada, the present situation of leadership capabilities among women entrepreneurs can be summarized as follows:

**a. Vision and Goal Setting**

Many women entrepreneurs demonstrate a strong sense of purpose and drive to improve household income. However, long-term strategic planning — such as market expansion goals or product diversification — is often limited due to inadequate exposure and formal training.

**b. Decision-Making and Risk-Taking**

Women show confidence in making every day operational decisions, particularly related to production and service delivery. Yet, decision-making involving financial risk, investment expansion, or scaling operations is often cautious. This cautious approach is influenced by limited access to credit and fear of financial loss.

**c. Communication and Networking**

Women in Marathwada are generally effective in internal team communication and maintaining customer relationships. However, their professional networks — such as entrepreneurial associations, buyers' networks, and industry contacts — remain weak. This limits access to new business opportunities and collaboration.

**d. Financial Management Skills**

Knowledge of financial record-keeping, credit management, pricing strategies, and investment planning is often moderate to low. Lack of formal business education and technical training in financial management affects enterprise sustainability.

**Entrepreneurial Growth Trends:**

Entrepreneurial growth among women in Marathwada displays the following characteristics:

**a. Slow but Steady Growth**

Many women-led micro enterprises show incremental growth year-by-year. Growth is often seen in improved sales, customer base presence in local markets, and increased household income — rather than rapid expansion or scaling.

**b. Barriers to Market Access**

Women entrepreneurs frequently rely on local and nearby markets. Limited digital literacy and marketing skills have reduced their capacity to reach broader customer segments, including urban and e-commerce markets.

**c. Finance and Credit Constraints**

Access to formal financial institutions, such as banks and microfinance services, remains a major barrier. Women often depend on self-savings, family resources, or informal lenders. High interest costs and limited credit history inhibit investments in technology, infrastructure, and human resources.

**d. Policy and Institutional Support**

Government programs (such as MSME schemes) and NGOs provide training and support; however, availability and reach vary across districts. Many women entrepreneurs are not fully aware of these schemes or lack the confidence to apply for benefits.

**Impact of Leadership Skills on Entrepreneurial Growth:**

There is a **positive correlation** between leadership skills and enterprise growth among women in Marathwada:

1. Women who demonstrate **strong communication, planning, and decision-making skills** are more likely to diversify products, improve quality, and attract new customers.
2. Entrepreneurs with better **networking and negotiation skills** secure new supply channels and partnership opportunities.
3. Leadership knowledge equips women to **navigate barriers**, seek financial resources, and adopt modern technologies.

However, because foundational leadership skills themselves are unevenly developed, entrepreneurial growth is often **constrained and slower** compared to regions with stronger institutional support and training infrastructure.

**Findings and Discussion:**

**Profile of Respondents:**

1. Majority aged between 30–50 years
2. 60% had secondary education or higher
3. Most enterprises operational for 3–7 years

**Leadership Skill Levels:**

Measured on a Likert scale (1–5):

| **o** | **lership Skill** | **n Score** |
|---|---|---|
| | ɔn & Goal-setting | |
| | sion Making | |
| | munication | |
| | ɹorking | |
| | ncial Planning | |

Women reported *moderate to high* proficiency in communication and vision setting but comparatively lower skills in financial planning and networking.

**Relationship between Leadership and Growth:**

**Correlation analysis** shows a significant positive relationship between leadership competencies and business growth indicators (sales increase, market expansion, employment generation).

1. **r = 0.72** ($p < 0.01$) between overall leadership score and annual revenue growth
2. *Decision-making competency* showed the highest influence on growth.

**Barriers Identified:**

1. Limited access to credit and financial literacy
2. Family responsibilities and social norms
3. Market access and digital divide

4. Lack of formal training in managerial skills

**Case Study:**

**Woman-Led Food Processing Unit (Latur)**

A small flaxseed oil processing unit led by a Marathwada woman entrepreneur expanded into local markets after building leadership strengths in negotiation, credit access, and team building. This case highlights how self-confidence and strategic vision can transform micro enterprises.

**Recommendations:**

**Skill Development Programs:**

- Government and NGOs should offer leadership training focused on strategic planning, financial management, digital marketing, and networking.

**Financial Support and Mentoring:**

1. Microcredit schemes tailored for women
2. Mentorship networks linking senior entrepreneurs with new entrants

**Encouraging Peer Learning:**

Entrepreneurs can benefit from cluster-based learning groups where best practices are shared.

**Policy Interventions:**

**Local policy must focus on:**

**1.** Subsidies for women-owned enterprises
2. Easier business registration
3. Market linkage initiatives

**Conclusion:**

Leadership skills are a strong predictor of entrepreneurial growth for women in small scale enterprises in Marathwada. Enhancing competencies such as decision-making, financial planning, and strategic vision can significantly improve business outcomes. Addressing systemic challenges through training, financial access, and supportive policy frameworks will empower women entrepreneurs to contribute more effectively to regional economic development. The current situation in Marathwada reflects a growing but constrained entrepreneurial environment for women. While women engage actively in small scale enterprises and often demonstrate strong resilience, their leadership competencies — especially in financial planning, networking, and strategic decision-making — require strengthening. Improving these skills through targeted training, mentoring, and policy support can accelerate business growth and enhance economic empowerment among women in the region.

**References:**


1. Brush, C. G. (1992). *Research on Women Business Owners.*
2. Northouse, P. G. (2018). *Leadership: Theory and Practice.*
3. Minniti, M., & Naudé, W. (2010). *Entrepreneurship and Economic Development.*
4. Government of Maharashtra Reports on MSME Sector.
5. Mahajan, A., & Chowdhary, R. (2022). Entrepreneurial Competencies of Indian Women Entrepreneurs in Micro Service Enterprises. AMC Indian Journal of Entrepreneurship.
6. Singh, M. (2022). Equality Means Business: Factors Affecting Indian Women-Owned Small Businesses' Scalability and Impact of Entrepreneurship on Financial Independence. Journal of Student Research.
7. Zashumo, J., & Singh, A. P. (2023). Empowering Women Entrepreneurship through MSMEs: Nagaland's Perspective. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts.
8. Ashadevi, M., & Anil, P. V. (2024). Bibliometric Analysis on Women Entrepreneurship in the MSME Sector. EPRA International Journal of Economics, Business and Management Studies.
9. Biswas, S. (2021). She Innovates: Female Owner and Firm Innovation in India. arXiv Working Paper.

# A Critical Study on Women Entrepreneurs in Small Scale Industry in the Marathwada Region

**Dr.Sanjay Ratnaparkhe**
M.Com.,MBA.,NET.,GDC & A., LL.B., Ph.D.,
Associate Professor
Faculty of Commerce
Balbhim Arts, Science & Commerce College, Beed.

**Abstract:**

Women entrepreneurship has emerged as a significant instrument for economic growth and social transformation in India, particularly in backward and semi-arid regions such as Marathwada in Maharashtra. The present study critically examines the status, performance, challenges, and prospects of women entrepreneurs engaged in small-scale industries in the Marathwada region. The study is based on both primary data collected through structured questionnaires and interviews with women entrepreneurs across selected districts, and secondary data obtained from government reports, journals, and institutional publications.

The findings reveal that women entrepreneurs in the region are predominantly involved in agro-based industries, food processing, textiles, handicrafts, and service-oriented enterprises. While these enterprises contribute significantly to employment generation, income enhancement, and women's socio-economic empowerment, they face multiple constraints such as limited access to finance, inadequate technical and managerial skills, lack of marketing networks, and socio-cultural barriers. Although various government schemes and financial support mechanisms are available, their reach and effectiveness remain limited due to lack of awareness and procedural complexities.

**Keywords:** Women; People; Enterpreneur; Employment; Business;

**Introduction:**

The Marathwada region of Maharashtra — comprising the districts of Aurangabad, Jalna, Parbhani, Nanded, Latur, Hingoli, Beed, and Osmanabad — is predominantly agrarian. Historically, it has faced droughts, economic distress, and limited industrialization. In such a context, women entrepreneurs have increasingly stepped into small-scale industries to generate income, diversify livelihoods, and empower communities.

Women Entrepreneur: A woman who initiates, organizes, and operates a business venture, assuming both risks and rewards.

Small Scale Industry (SSI): Enterprises with limited capital investment in manufacturing or services — typically less than □10 crore investment (varying by government definitions).

Background & Significance

Marathwada has a large rural and semi-urban population.

Women in the region traditionally relied on agriculture and household work.

With rising education, banking access, and self-help groups (SHGs), women have entered small-scale enterprises.

These include food processing units, handicrafts, tailoring, beauty salons, dairy and agri-based units.

Significance of Study:
Understanding how women participate in SSI.
Analyzing the socio-economic impact on families and communities.
Identifying policy and institutional support gaps.

**Objectives of the Study:**

To explore the growth and trends of women entrepreneurs in Marathwada.
To analyze factors motivating women to enter SSIs.
To identify challenges faced in business operations.
To examine the role of government and financial institutions in supporting them.
To recommend strategies for enhancing women entrepreneurship.
Methodology of the study
The methodology adopted for the purpose of project study was collection of necessary Data from both primary as well as secondary data available on Web.

**Primary data**

The data and Information for the study is collected through two main sources. Primary data would be original data from which the researcher will directly collect data that have not been previously collected. Primary data will be firsthand information collected through by the way of various methods such as canvassing.

Secondary data

Secondary data like published Annual Reports and statistical tables relating to Mutual funds for analyzing the data, the technique of ratio analysis, simple mathematical tools like average, percentage etc. and M.Phil, Ph.D thesis different, circulars, reference books, Differentpolicies of Private and Government organisation pertaining HRM, publication, journals, newspapers, Internet, websites etc. will be

Profile of Women Entrepreneurs in Marathwada

Demographic Characteristics

Majority are between 25–45 years of age.
Education levels vary — from secondary schooling to graduate degrees.
Predominantly from rural and semi-urban households.

Types of SSI Enterprises

| Sector | Examples |
|---|---|
| Food Processing | Pickle, papad, spice mixes |
| Textiles & Handloom | Embroidery, tailoring units |
| Beauty & Wellness | Salons, spa services |

| | |
|---|---|
| Agri-based units | Dairy, oil extraction |
| Handicrafts | Pottery, decorative items |

**Motivating Factors**

Women pursue entrepreneurship due to:

Desire for economic independence

Need to support family income

Availability of microfinance and SHGs

Support from government skill programs

Encouragement from NGOs and community networks

**Challenges Faced**

A. Financial Constraints

Difficulty accessing formal credit

Reliance on informal lenders

Lack of collateral security

B. Skill & Training Gaps

Need for technical and business management training

Limited exposure to market dynamics

C. Social & Cultural Barriers

Family and community resistance

Social norms restricting mobility and decision-making

D. Marketing & Competition

Limited market access

Weak brand positioning

Competition from larger firms

E. Infrastructure Challenges

Power outages

Poor transport links

Lack of incubation hubs

Critical Analysis

Strengths

Growing number of women SHGs.

High motivation to succeed.

Increasing access to micro credit.

Local market niches for traditional products

Weaknesses

Limited formal education in business.

Low use of technology.

Dependence on local markets.

Opportunities

Government subsidies & schemes

Worldwide demand for ethnic and handmade products

E-commerce platforms for remote market access

Threats

Global competition.
Instability in agricultural supply chains.
Policy inconsistency.

Government and Institutional Support

Policies and Programs

MSSDS / MSME schemes — credit-linked subsidies

Skill India — training for business

Stand-Up India — funding support

District Industries Centre (DIC) initiatives

Role of SHGs

Promotes savings and credit discipline

Develops collective production activities

Enables group marketing and bulk procurement

Key Findings

Entrepreneurial interest among women is high, but conversion to viable business still low.

Access to technology and finance remains major obstacles.

SHGs act as critical gateways for women entrepreneurship.

Lack of market linkages constrains growth beyond local demand.

**Recommendations:**

Create training centers focused on managerial skills Promote digital literacy & e-commerce adoption Strengthen credit access with minimal collateral Foster entrepreneurship mentoring networks Build market linkages and branding support Encourage private sector partnerships

**Conclusion:**

Women entrepreneurs in Marathwada are an emerging force in small-scale industries. While they demonstrate resilience and creativity, systemic constraints — especially in finance, market access, and skill development — impede growth. With targeted policy support and institutional strengthening, women-led small enterprises can significantly boost regional economic development and contribute to inclusive growth.

**Reference:**

1. Michael Armstrong, a Handbook of Management Technique, Kogan Page India Pvt.Ltd.
2. Manmohan Joshi , Human Resource Management
3. N.D. Kapoor Mercantile Law.
4. S.A.Sherlekar & Virendra Sharad Shelekar,Modern Business Organistion and Management.
5. Munish Bhandari, Corporate and Allied Laws.
6. James A O'Brien, George M Marakas & Ramesh Behl,Management Information
System, Tata Mc Graw Hill,2010
7. Azar Kazmi, Strategic Management and Business Policy, Tata McGraw Hill, 2011.
8. www.naac-india.co
9. Introduction to Information Technology by Rajaraman V

10.Introduction to Information Technology: ITL Education Solutions Limited by ITL ESL
11.An Introduction to Information Theory: Symbols, Signals and Noise by John R Pierce
12. http://www.en.wikipwdia.org.Wikipedia
13. Google.com15.

# From Survival to Leadership: Women in Today's Economy

**Ms. Rohini Sopanrao Dharmode**
Dept. of English
Balbhim Art's, Science and Commerce College, Beed.

**Abstract:**

In the contemporary global economy, women's participation has moved beyond survival-based economic activities toward visible leadership in entrepreneurship, labour markets and community institutions. This transition is not merely economic but deeply social and political, reflecting changing gender roles, access to education, digital technologies, financial inclusion, and collective action. This research paper examines the journey of women from subsistence and informal work to positions of leadership and decision-making in today's economy. It explores how women negotiate structural constraints such as patriarchy, unpaid care work, limited access to finance, and socio-cultural norms, while simultaneously creating new spaces of economic power through entrepreneurship, self-help groups, small industries, and digital platforms. The paper adopts an interdisciplinary approach, drawing from feminist economics, development studies, and sociological research to analyse women's economic agency. By focusing on leadership rather than mere participation, the study highlights women as active economic agents shaping growth, innovation, and social transformation. The paper argues that women's leadership is not an outcome of economic development alone but a necessary driver of inclusive and sustainable growth.

Keywords: Women entrepreneurship, women leadership, informal economy, financial inclusion, digital economy, self-help groups, gender and development, economic empowerment

Introduction

Historically, women's engagement with the economy has been shaped by survival needs rather than choice or opportunity. Across societies, women have contributed significantly to household economies through unpaid labour, informal work, and subsistence activities, yet their contributions remained undervalued and invisible. In agrarian and developing economies, women's work was often confined to family farms, home-based production, and low-paid informal sectors. Even in industrialized contexts, women's labour participation was restricted by gender norms that prioritized domestic responsibilities over economic independence.

In today's economy, however, a significant shift is taking place. Women are no longer only participating for survival; they are increasingly emerging as entrepreneurs, leaders of small and medium enterprises, innovators in digital spaces, and decision-makers within economic institutions. This transition from survival to leadership reflects broader structural changes such as increased access to education, expansion of microfinance, growth of self-help groups, digital connectivity, and policy interventions aimed at women's empowerment. Yet, this transformation is uneven and contested, shaped by class, caste, location, and access to resources.

This paper seeks to analyse women's evolving economic roles through the lens of leadership. Rather than viewing women merely as beneficiaries of development, it

positions them as agents who actively shape economic processes. The central question guiding this research is: how do women move from survival-based economic participation to leadership roles in today's economy, and what social, cultural, and institutional factors enable or constrain this transition? For decades, women's economic participation was concentrated in survival economies characterized by informality, low wages, and lack of social security. In rural areas, women engaged in agricultural labour, livestock care, and allied activities, often without ownership of land or control over income. In urban contexts, women dominated domestic work, home-based manufacturing, and petty trade. These forms of work were essential for household survival but rarely translated into economic power or social recognition.

Feminist economists have long argued that the exclusion of unpaid and informal labour from national accounting systems reinforced gender inequalities. Women's work sustained economies, yet women remained economically dependent and politically marginalized. Survival-based participation limited women's bargaining power within households and communities, making leadership roles inaccessible. The contemporary economy presents new opportunities for women to move beyond survival. Education has played a crucial role in enhancing women's skills, confidence, and aspirations. Literacy and vocational training have enabled women to access diverse forms of employment and entrepreneurship. At the same time, the expansion of microfinance and self-help groups has provided women with access to credit, savings, and collective platforms. Self-help groups, in particular, have emerged as powerful spaces for women's leadership. By pooling resources and engaging in collective decision-making, women gain financial autonomy and leadership experience. Many women leaders at the grassroots level begin their journey within such collectives, later expanding into enterprise development and community leadership. The digital economy has further accelerated this transition. Online platforms, social media, and e-commerce have lowered entry barriers for women entrepreneurs. Home-based businesses can now access regional and global markets, allowing women to balance domestic responsibilities with economic leadership. Digital visibility has also challenged traditional notions of women's work by making their enterprises visible and scalable.

Women's entrepreneurship represents a critical site of leadership in today's economy. Unlike necessity-driven entrepreneurship rooted in survival, contemporary women-led enterprises increasingly reflect innovation, market orientation, and growth ambitions. Women entrepreneurs contribute to job creation, local economic development, and social innovation. Leadership in women-led enterprises often adopts collaborative and community-oriented approaches. Studies suggest that women entrepreneurs are more likely to reinvest profits in education, health, and community welfare, thereby amplifying social impact. This leadership style challenges dominant, profit-centric models of economic success and introduces alternative values such as sustainability and inclusivity.

However, women entrepreneurs continue to face structural barriers, including limited access to capital, gender bias in markets, and regulatory constraints. Leadership, therefore, is not a linear outcome but a negotiated process shaped by resistance and adaptation. Despite progress, women's transition to leadership remains constrained by socio-cultural norms. Gendered expectations around caregiving, mobility, and obedience often limit women's time, resources, and autonomy. Leadership by women is frequently questioned or resisted within families and communities. Women navigate these constraints through

strategies such as collective action, negotiation within households, and gradual assertion of authority. Leadership, in this context, is relational rather than individualistic. It emerges through everyday practices of decision-making, income control, and community engagement. The impact of women's leadership extends beyond individual success. Economically, women-led enterprises contribute to diversification, resilience, and inclusive growth. Socially, women's leadership transforms gender relations by challenging stereotypes and expanding possibilities for future generations.

Research consistently shows that increased women's leadership is associated with improved outcomes in health, education, and social cohesion. When women control resources and participate in decision-making, communities become more equitable and resilient. Thus, women's leadership is not only a gender issue but a development imperative.

Conclusion

The journey from survival to leadership marks a profound transformation in women's relationship with the economy. While survival-based participation ensured household sustenance, leadership enables women to shape economic structures and social norms. This transition is facilitated by education, financial inclusion, digital technologies, and collective institutions, yet constrained by persistent gender inequalities.

This paper argues that women's leadership should be recognized as a central driver of economic and social development rather than a secondary outcome. Policies and programs must move beyond increasing women's participation to actively supporting leadership, decision-making, and control over resources. Only then can economies become truly inclusive and sustainable. Women's leadership in today's economy represents not just personal advancement but a redefinition of development itself.

**References:**

1. Agarwal, B. (1997). "Bargaining and Gender Relations: Within and Beyond the Household." Feminist Economics, 3(1), 1–51.
2. Benería, L. (2003). Gender, Development, and Globalization: Economics as if All People Mattered. Routledge.
3. Chant, S., & Sweetman, C. (2012). "Fixing Women or Fixing the World?" Gender & Development, 20(3), 517–529.
4. Kabeer, N. (1999). "Resources, Agency, Achievements: Reflections on the Measurement of Women's Empowerment." Development and Change, 30(3), 435–464.
5. , M. (2011). Creating Capabilities: The Human Development Approach. Harvard University Press.
6. OECD. (2020). Women at the Core of the Fight Against COVID-19 Crisis. OECD Publishing.
7. Sen, A. (1999). Development as Freedom. Oxford University Press.
8. World Bank. (2022). Gender Equality and Development. World Bank Publications.

# Redefining Commercial Ethics: Sudha Murty's Vision

**Dr. Anjali Anantrao Waghmare**
Assistant Professor
Department of English
Balbhim Art's, Science and Commerce College, Beed
E-mail Id - anjaliwaghmare2012@gmail.com

**Abstract:**
The present-day marketable world increasingly faces ethical study about sustainability, inclusivity, and social responsibility. This paper examines ethical leadership and relational enterprise through the life and philosophy of Sudha Murty. In distinction to dominant marketable paradigms that emphasize growth and competition, Murty advocates a leadership frame rested in integrity, modesty, empathy, and social commitment. Portrayal on ethical leadership proposition, feminist reviews of marketable entrepreneurship, and investor suggestion, this study argues that Murty's model challenges masculinized structures of authority and proposes a comprehensive and sustainable morality of business leadership. Through enterprise of the Infosys Foundation, her philosophy is enacted in education, healthcare, pastoral development, and humanitarian relief. The paper appreciates that collaborative initiative offers a transformative conclusion to orthodox wanted models and contributes meaningfully to arguments on ethical entrepreneurship and complete growth in India.

**Keywords:** Ethical Leadership, Relational Enterprise, Sudha Murty, Feminist Economics, Inclusive Development.

**Introduction:**

Sudha Murty born 19 August 1950 is an Indian educator, author, and philanthropist. She is the Founder-Chairperson of the non-profit charitable organization Infosys Foundation. She is married to the co-founder of Infosys, N. R. Narayana Murthy. In 2024, Murty was nominated as Member of Parliament, Rajya Sabha on 8 March 2024 for her contribution to social work and education. Murty was awarded the Padma Shri, the fourth highest civilian award in India, for social work by the Government of India in 2006. In 2023, she was awarded the Padma Bhushan, the third highest civilian award in India.[1]

Leadership in required discourse has usually been connected with uncertain success, scale, and profit budget. similar models continuously recognize masculinized beginnings of success that marginalize values similar as empathy, honesty, and community welfare. still, evolving socio-profitable challenges have heightened calls for necessary leadership models that integrate ethical responsibility with social purpose.

In this area, Sudha Murty occurs as a convincing example of ethical initiative. As an architect, author, patron, and long- serving speaker of the Infosys Foundation, Murty constantly says a philosophy centred on modesty and service. Reflecting on leadership, she observes **"Leadership is not about being in charge. It's about taking care of those in your charge"**[2] (Murty). This description boons watch over dominance and relational responsibility over authority.

This paper explores Murty's leadership through theoretical lenses of ethical leadership and relational enterprise, arguing that her model reimagines marketable culture as based in social relations rather than classified power.

**Review of Literature:**

Ethical leadership is understood as conduct showed by ethical morals and responsibility to various stakeholders. Brown and Treviño argue that ethical leaders demonstrate integrity, translucence, and concern for others in decision- timber. Feminist scholars, analogous as Gilligan, emphasize an **"ethics of care,"** foregrounding concerned and interpersonal values in difference to abstract rationalism. In business studies, stakeholder proposition (Freeman) broadens marketable scores to include social and Eco-friendly communities.

Yet academic investigates of individual leaders who represent these values especially within Indian marketable culture — remain limited. Sudha Murty's philosophy responses this gap, merger ethical responsibility with relational engagement in both particular and institutional surroundings.

**Ethical Management in Practice:**

Ethical leadership needs moral clarity, equality, and trust. Murty's lived drawing reproduces these principles. She has reflected on the essential part of reserve and ease **"A person who has taste in life is one who can see beauty in simple goods"**[3] (Murty). Her leadership shows through active engagement with communities. Murty emphasizes listening to people's exploits **"Advance your cognizance to hear to their difficulties multitudinous times you cannot have a result; you should just hear to their story"**[4] (Murty).

These reflections stick ethical leadership not as a set of abstract principles but as everyday relational engagement — a central element of relational enterprise.

**Relational Enterprise and Feminist Interventions:**

Relational enterprise reframes business as a socially established action. Rather than fastening solely on expansion, it highlights sustainable growth and community impact. Murty reviews narrow criteria of success, stating **"Success is not just about wealth but about making a difference in the lives of others"**[5] (Murty).

Her leadership style reflects relational authority — authority derived from dialogue, empathy, and trust. Murty also states **"Vision without action is simply a dream; action without vision is simply transitory time; but vision and action together can change the world"**[6] (Murty). similar statements challenge profit- driven textiles and highlight the combination of purpose and practice.

She also reflects on the social limitations of material wealth "**capitalist is one thing which rarely unites and mainly divides people"**[7] (Murty). Her enterprise philosophy declares that moral values and community connection are essential aspects of meaningful success.

**Rethinking traditional leadership norms:**

Main marketable narratives constantly valorise trouble- taking, competition, and scale. Murty's model contests these hypotheticals through modesty and service. She emphasizes rested leadership **"Rich or poor, it's good to do your own work. It keeps you rested"**[8] (Murty).

This viewpoint challenges traditional standards that associate direction with authority. relatively, Murty highlights collaborative respect and social expert — rates connected with cooperative and socially responsible enterprise. Her lived responsibility to deal carry into line

with feminist money-making insight that business culture must tie compassion and responsibility rather than arrange competition alone.

**Committing Ethical Enterprise:**

The Infosys Foundation proves how Murty's philosophical declarations interpret into official enterprise. The Foundation has supported education, pastoral development, healthcare, sanitation, and disaster relief across India. Murty describes marketable social responsibility as a moral imperative **"CSR is an effective tool to bridge the gap between the haves and the have- nots; to promote equal distribution of resources and overall well- being of the society"**[9] (Murty). In her official practice, wealth is not simply together but reallocated through focused social gathering — a useful model of ethical creativity.

**Conclusion:**

The leadership philosophy of Sudha Murty suggestions a convincing frame for ethical and social enterprise. By contributing honesty, empathy, and concern into structural practice, she encounters traditional examples that diagnose competition and material gathering. Through both reflection and action, Murty redefines success as socially responsible and innocently rested — a form of enterprise acquainted toward cooperative welfare rather than individual dominance.

Her authentic citations — highlighting care, modesty, and interactive engagement — support a vision of business not as an extractive medium but as a socially answerable and complete form of ethical leadership. As debates on ethical capitalism and extensive growth merge, her model offers a valuable frame for reimagining marketable culture in India and beyond.

**Work Cited:**


1. Brown, Michael E., and Linda K. Treviño. *Ethical Leadership A Review and future Directions.* The Leadership Quarterly, vol. 17, no. 6, 2006, pp. 595 – 616.
2. Freeman, R. Edward. *Strategic Management A Stakeholder Approach*. Pitman, 1984.
3. Gilligan, Carol. *In a Different Voice Psychological Theory and Women's Development. Ha*rvard UP, 1982.
4. Murty, Sudha. *Wise and differently*. Penguin India, 2000.
5. Murty, Sudha. *The Day I Stopped Drinking Milk.* Penguin India, 2011.
6. *"Sudha Murty Quotes on Leadership and Life."* Times of India, Feb. 2025,
7. *"God Has Given Me So important. I Want to Serve His Children Sudha Murty."* Money control, 2020, https//www.moneycontrol.com/news/business/
8. *"CSR Requires Passion and Utmost Commitment."* Infosys Foundation Newsroom, https//www.infosys.org/infosys-foundation/newsroom/csr-requires-passion-commitment.html
9. https://en.wikipedia.org/wiki/Sudha_Murty#:~:

# Representation of Rural Women and Economic Agency in Indian English Literature

**Dr. A.R. Maniyar,**
Associate Professor,
Head,Department of English,
Balbhim College, Beed.
Email: abdulkadar.maniyar@gmail.com

**Abstract:**
This paper examines the representation of rural women and their economic agency in Indian English literature, with a particular focus on how literary narratives construct women's relationship to labor, property, livelihood, and decision-making within agrarian and caste-based social structures. Rural women form the backbone of India's agricultural and informal economy, yet their economic contributions often remain invisible, undervalued, and constrained by patriarchal norms, caste hierarchies, and limited access to resources. Indian English literature provides a powerful medium through which these layered realities are articulated, critiqued, and reimagined.
Through close textual analysis of selected works by Mahasweta Devi, Arundhati Roy, Bama Faustina, and Anita Desai, this study explores how rural women are portrayed not merely as passive victims of oppression but as complex subjects negotiating survival, dignity, and autonomy. The paper analyzes themes such as unpaid domestic labor, subsistence agriculture, caste-based exploitation, micro-entrepreneurship, collective resistance, and the subtle forms of everyday agency that emerge within restrictive socio-economic frameworks.
By employing feminist literary criticism and intersectional theory, the study demonstrates that economic agency in these texts is often fragmented, conditional, and contested, yet deeply significant. Indian English literature, therefore, does not simply mirror socio-economic realities; it interrogates them, challenges dominant narratives of development, and envisions alternative models of empowerment rooted in resilience, community solidarity, and resistance. Ultimately, the paper argues that literary representations of rural women contribute meaningfully to broader debates on gender, labor, and economic justice in postcolonial India.

**Introduction:**
Indian English literature has been a dynamic space for negotiating identity, gender, caste, class, rural–urban divides, and cultural change. Among these, the representation of **rural women**—their lives, labor, and struggles—reveals profound insights into patriarchy, poverty, and resilience. Rural women constitute a large majority of India's female population and are central to agrarian economies. Yet, their contributions are often unrecognized, undervalued, and invisibilized both socially and economically.
**Economic agency** refers to the capacity to make decisions, take action, and influence one's economic life—accessing resources, controlling labor, earning income, and participating in economic decision-making. In rural India, women's economic agency remains deeply constrained by caste hierarchy, gender norms, lack of education, and limited access to land and credit. Literature brings these constraints to life and also imagines spaces of resistance and change.

Indian English literature—particularly novels, short stories, and narrative non-fiction—represents rural women in diverse ways: as victims of exploitation, subjugation by patriarchal and caste systems, survivors with agency, and agents of collective transformation. This paper examines these representations through the lens of feminist literary criticism, cultural studies, and rural sociology.

**Review of Literature:**

Scholars have examined gender and rurality in Indian literature from historical, sociological, cultural, and feminist perspectives, highlighting the complex intersections of caste, class, patriarchy, and regional identity. Much of the existing scholarship foregrounds oppression, marginality, and resistance, but fewer studies directly analyze rural women's **economic agency** as a central interpretative lens.

**Urmila Pawar's writings** on Dalit women's lives and labor have significantly contributed to understanding how caste and gender intersect in rural spaces. Her autobiographical and critical works foreground the everyday economic struggles of Dalit women—agricultural labor, domestic servitude, and informal work—while also revealing their resilience and strategies of survival. Scholars analyzing Pawar emphasize the embodied experience of labor and how economic marginalization is inseparable from caste-based discrimination.

**Tanika Sarkar's work** on gender, nationalism, and memory in South Asia provides an important historical context for understanding women's representation. While her scholarship often focuses on nationalist discourse and women's participation in public life, it also illuminates how rural women were symbolically constructed in political narratives—either as custodians of tradition or as silent sufferers. Her work helps frame how literature negotiates these ideological constructions.

**Elaine Duncan's essays** on rural women in South Asian fiction examine how narrative structures portray agrarian life, domestic confinement, and women's emotional and economic struggles. Duncan notes that rural women are frequently represented within patriarchal family systems that restrict their mobility and economic autonomy, yet she also points to moments of subtle resistance embedded in everyday practices.

Critical studies on **Mahasweta Devi's tribal women protagonists**, especially in stories like *"Draupadi,"* focus on resistance, bodily autonomy, and subaltern dignity. Scholars influenced by postcolonial theorists such as Gayatri Chakravorty Spivak interpret Devi's characters as embodiments of political defiance against both state violence and patriarchal control. However, while resistance is foregrounded, economic dispossession—land alienation, bonded labor, and exploitation—often remains an underexplored dimension in literary criticism.

Similarly, analyses of **Bama Faustina's *Karukku*** approach the text as an autobiographical narrative exposing caste oppression, gender discrimination, and religious hypocrisy. Critics emphasize identity formation, voice, and testimonial writing. Though the text vividly describes wage labor, economic vulnerability, and collective self-help initiatives among Dalit women, scholarship tends to prioritize its political and spiritual dimensions rather than systematically examining its articulation of economic agency.

In addition to these authors, broader feminist literary criticism in India—drawing from scholars such as Kumkum Sangari and Susie Tharu—has analyzed the representation of women's work, domesticity, and sexuality. Yet even within this tradition, economic agency is often discussed implicitly rather than as a central category of analysis.

Thus, while existing scholarship richly addresses themes of caste, patriarchy, resistance, and identity, there remains a noticeable gap in research that explicitly connects **economic agency** with representations of rural women in Indian English literature. Previous studies largely focus on social oppression, symbolic marginalization, or narrative voice. Fewer critiques examine how rural women are portrayed as economic actors—whether through agricultural labor, entrepreneurship, wage work, collective organizing, or control over resources—or how literature critiques the systemic denial of such power. This paper seeks to address that gap by foregrounding economic agency as a crucial interpretative framework for reading rural women in Indian English texts.

**Theoretical Framework**

This paper draws upon three interrelated theoretical approaches in order to examine the representation of rural women and their economic agency in Indian English literature.

**1. Feminist Literary Criticism**

Feminist literary criticism provides the primary analytical lens for this study. It examines how literary texts construct and represent gender roles, power relations, identity, and agency. Rather than reading female characters as merely symbolic figures, feminist criticism interrogates how narrative voice, characterization, language, and plot structures reinforce or challenge patriarchal norms.

In the context of rural women, this framework helps analyze:

- How women's labor—both domestic and agricultural—is portrayed.
- Whether women are given narrative agency or silenced within male-dominated discourse.
- How texts critique or reproduce traditional gender hierarchies.

By applying feminist criticism, the study explores whether rural women are represented as passive sufferers, moral symbols of sacrifice, or as individuals capable of economic decision-making and resistance.

**2. Intersectionality Theory (Kimberlé Crenshaw)**

Intersectionality theory, introduced by Kimberlé Crenshaw, argues that systems of oppression do not operate independently but intersect in complex ways. Gender discrimination cannot be understood in isolation from caste, class, religion, ethnicity, or region.

In the Indian rural context, this framework is particularly crucial because:

- A Dalit woman's experience of economic marginalization differs significantly from that of an upper-caste rural woman.
- Tribal women face land dispossession and state violence alongside gender oppression.
- Poverty and lack of education intensify patriarchal restrictions.

Intersectionality enables this paper to analyze how literature portrays rural women as positioned within overlapping structures of caste hierarchy, economic exploitation, and patriarchal control. It moves beyond a single-axis analysis of "woman" and instead highlights layered inequalities that shape economic opportunities and constraints.

**3. Rural Feminist Economics**

Rural feminist economics examines women's participation in agrarian and informal economies and critiques the traditional economic models that ignore unpaid domestic labor and subsistence farming. It challenges the conventional understanding of "productive labor" by recognizing caregiving, food production, livestock management, and household management as economically significant activities.

Applying this framework allows the study to:

- Evaluate how literature portrays invisible or unpaid labor performed by rural women.
- Examine access to land ownership, credit systems, and micro-enterprise.
- Analyze whether texts recognize women as economic contributors or marginalize their role.

This approach connects literary representation with real-world socio-economic debates about women's empowerment, rural development, and economic justice.

**Textual Analysis:**

**1. Mahasweta Devi – "Draupadi" (from *Imaginary Maps*)**

Mahasweta Devi (1926–2016), a socially committed Indian writer and activist, is known for her powerful portrayal of tribal and marginalized communities. In "Draupadi," she presents Dopdi Mejhen, a Santhal tribal woman involved in an anti-state insurgency. Although the narrative foregrounds political violence, economic dispossession forms the silent but decisive backdrop of Dopdi's life.

**Economic Marginalization**

Dopdi belongs to a tribal community historically deprived of land rights and forced into exploitative labor systems. The text implicitly refers to bonded labor, land alienation, and state repression that push tribal communities into insurgency. Dopdi's participation in rebellion is not merely ideological but deeply rooted in material deprivation. Her life reflects:

- Lack of ownership over land and resources.
- Absence of institutional economic support.
- Exploitation by landlords and state authorities.

The rural tribal woman here is economically excluded from legitimate participation in agrarian wealth distribution. Economic marginalization becomes the structural cause behind political rebellion.

**Agency in Resistance**

After being captured and assaulted by state forces, Dopdi's refusal to clothe herself before the officer becomes a radical act of defiance. Her nakedness, instead of symbolizing vulnerability, becomes a weapon of resistance. Though not directly economic, this act symbolizes reclaiming bodily autonomy in a system that denies her both economic and physical dignity.

Her resistance can be interpreted as an assertion of agency when formal economic avenues are blocked. Devi suggests that when systems deny rural women access to land, wages, and property, resistance becomes an alternative form of agency.

**Interpretation**

Devi's portrayal complicates the idea of economic empowerment. Dopdi does not achieve economic independence in a conventional sense. Instead, her agency emerges through confrontation with state and patriarchal violence. The story reveals that rural tribal women's economic struggles are inseparable from political oppression. Economic exclusion becomes both the cause of rebellion and the site of dignity.

**2. Arundhati Roy – *The God of Small Things***

Arundhati Roy's Booker Prize-winning novel is set in rural Kerala and explores caste, patriarchy, family structures, and social taboos. While much scholarship emphasizes caste transgression and forbidden love, the novel also subtly foregrounds women's economic struggles and entrepreneurship.

**Economic Vulnerability and Patriarchal Control**

Mammachi (often referred to as Amma in family context) initially suffers under an abusive husband who suppresses her talents. Despite being a skilled violinist and entrepreneur, she is economically and emotionally dominated. Her divorce places her in a socially vulnerable position within conservative rural society.

In traditional patriarchal systems, divorced women are often economically dependent on male relatives. Mammachi's situation reflects this social reality.

**Entrepreneurship and Economic Agency**

However, Mammachi establishes and runs a pickle factory. What begins as a domestic skill—cooking—transforms into a commercial enterprise. She converts her culinary expertise into economic capital. Through this:

- She enters a male-dominated marketplace.
- She negotiates business relationships.
- She generates income independently.

Although male relatives later attempt to control the business, Mammachi's entrepreneurial initiative demonstrates how rural women can transform domestic labor into economic agency.

**Interpretation**

Roy suggests that rural women's economic participation can provide partial autonomy. However, this autonomy remains fragile within entrenched caste and patriarchal hierarchies. Mammachi's agency is real but constrained. Roy thereby portrays economic empowerment not as complete liberation but as negotiation within restrictive structures.

**3. Bama – *Karukku***

Originally written in Tamil and widely read in English translation, *Karukku* is an autobiographical narrative that exposes caste oppression, religious hypocrisy, and gender discrimination in rural Tamil Nadu.

**Caste and Economic Exploitation**

Bama vividly describes Dalit women's labor:

- Agricultural wage work.
- Domestic service in upper-caste households.
- Low wages and delayed payments.
- Sexual harassment in workplaces.

Dalit rural women perform physically demanding labor but remain economically insecure. Their work sustains both their families and dominant caste households, yet they lack bargaining power and social respect.

The text exposes how caste hierarchy systematically limits access to education, land ownership, and financial independence. Economic exploitation becomes normalized within rural society.

**Agency through Collective Action**

Unlike the dramatic resistance seen in Devi's text, Bama emphasizes everyday strategies of survival. Women form informal networks and self-help groups:

- Pooling savings.
- Supporting each other during crises.
- Sharing information about wages and employment opportunities.

These collectives enable negotiation for better pay and protection against exploitation. Economic agency here is not individualistic but communal.

**Interpretation**

Bama's narrative redefines agency. It is not a singular heroic act but sustained collective resistance. Economic autonomy emerges gradually through solidarity and awareness. The text highlights grassroots empowerment rooted in lived experience rather than institutional reform.

**4. Anita Desai – *Clear Light of Day***

Anita Desai's fiction often focuses on psychological depth and domestic life. While *Clear Light of Day* is primarily set in urban Old Delhi, its portrayal of women's domestic confinement resonates with rural patriarchal structures and economic dependence.

**Domestic Labor and Economic Dependence**

Female characters such as Bim and others are confined within household responsibilities. Domestic labor—cooking, caregiving, emotional management—is central to their identity. However:

- This labor remains unpaid.
- It does not translate into financial independence.
- Economic decisions are controlled by male family members.

Desai subtly critiques how women internalize economic dependency as normal.

**Internalized Patriarchy**

Unlike Devi or Bama's overt resistance, Desai presents psychological struggle. Women often accept limited economic roles despite their intellectual or personal capabilities. The absence of rebellion highlights how patriarchy operates through normalization rather than force.

**Agency in Mundanity**

Desai complicates the idea that agency must involve public action or economic mobility. Emotional endurance, caretaking, and self-reflection become forms of survival. Though not economically transformative, these forms of agency question rigid definitions of empowerment.

**Comparative Insight**

Across these texts, rural women's economic agency appears in varied forms:

- **Radical Resistance** (Dopdi in Devi)
- **Entrepreneurial Negotiation** (Mammachi in Roy)
- **Collective Grassroots Action** (Dalit women in Bama)
- **Psychological Survival within Dependency** (Desai)

Together, these representations reveal that economic agency in Indian English literature is complex, layered, and context-specific. It may manifest through rebellion, enterprise, solidarity, or endurance. Importantly, these texts challenge the simplistic portrayal of rural women as passive victims and instead present them as negotiators of economic and social power within restrictive systems.

**Discussion**

**Themes Emerging Across Texts**

A comparative reading of the selected texts reveals recurring thematic patterns that deepen our understanding of how rural women's economic agency is imagined in Indian English literature. While each author writes within a distinct socio-cultural and narrative framework,

certain central concerns—labor invisibility, constrained agency, intersectional oppression, and collective empowerment—emerge consistently. Together, these themes illuminate the complex realities of rural women's economic lives and challenge dominant narratives about development and empowerment.

**1. Economic Labour: Invisible but Vital**

One of the most powerful themes across these texts is the invisibility of rural women's labor. Rural women perform multiple forms of work—agricultural labor, animal husbandry, household management, caregiving, food processing, and informal wage work. Yet, this labor is rarely recognized as "productive" in formal economic discourse.

In literary representation:

- In *Draupadi*, the tribal community's subsistence labor remains backgrounded by political violence, yet it forms the foundation of their struggle. Dopdi's life is rooted in agrarian survival, land disputes, and economic dispossession.
- In *The God of Small Things*, Mammachi's culinary labor initially belongs to the domestic sphere—considered an extension of femininity rather than entrepreneurship. Only when commodified does it gain economic legitimacy.
- In *Karukku*, Dalit women's agricultural and domestic work sustains both their families and upper-caste households, yet they remain underpaid and socially degraded.
- In Desai's fiction, domestic labor is central to women's identity but detached from economic valuation.

These texts critique dominant developmental frameworks that measure productivity through visible, market-based transactions. By foregrounding unpaid and informal labor, literature exposes the limitations of economic models that ignore women's contributions.

Furthermore, the invisibility of labor is not merely economic but symbolic. When women's work is unseen, their authority in household and community decision-making also diminishes. Literature, therefore, functions as a corrective space—making visible what society renders invisible.

**2. Agency in Constraint**

Another recurring theme is the negotiation of agency within restrictive systems. The women portrayed are rarely free from patriarchal or caste-based control. Instead, they operate within constraints and carve out limited but meaningful spaces of autonomy.

Agency in these texts is not absolute liberation but strategic negotiation:

- Dopdi's resistance is born from the denial of economic and political participation. When economic rights are blocked, resistance becomes her mode of asserting dignity.
- Mammachi negotiates within patriarchy—her entrepreneurial success does not dismantle male dominance, yet it disrupts it.
- Bama's Dalit women organize savings groups and share labor responsibilities, transforming marginalization into solidarity.
- Desai's women exhibit subtle psychological agency, choosing emotional endurance and self-definition within domestic confines.

This pattern challenges Western liberal feminist notions that equate empowerment solely with financial independence or public leadership. Instead, these narratives suggest that rural women's agency is often incremental, situational, and relational.

Economic agency may appear as:

- Managing household finances quietly.
- Transforming domestic skills into income.
- Participating in collective savings.
- Refusing humiliation.

Such portrayals highlight resilience rather than revolution. Agency is shaped by structural limitations yet remains deeply significant.

**3. Intersectional Oppression**

The intersection of caste, class, and gender emerges as a defining theme, particularly in the works of Mahasweta Devi and Bama. Intersectionality clarifies why rural women cannot be treated as a homogenous category.

Tribal and Dalit women experience:

- Land dispossession.
- Wage exploitation.
- Sexual violence.
- Social exclusion from education and mobility.

In *Draupadi*, Dopdi's tribal identity compounds her vulnerability. She is not merely a woman; she is a tribal woman confronting state machinery. Economic exclusion and political repression are inseparable.

In *Karukku*, Dalit women's labor is physically demanding yet economically undervalued. Their caste identity determines their occupation, wages, and social interactions. Unlike upper-caste rural women who may be economically dependent but socially privileged, Dalit women face layered discrimination.

This intersectional analysis reveals that economic agency is unevenly distributed. Access to land, credit, and education is mediated by caste hierarchy. Literature makes visible how development narratives that speak of "rural women's empowerment" often overlook these stratifications.

**4. Collective Support Enhancing Economic Agency**

A significant theme across texts is the transformative power of collective networks. While individual agency appears in characters like Mammachi, collective solidarity emerges as a more sustainable form of empowerment, especially among marginalized communities.

In *Karukku*, self-help groups and informal women's networks function as micro-economic institutions. They:

- Provide small loans.
- Enable savings.
- Share information about employment.
- Offer emotional and social support.

These collectives increase bargaining power and reduce vulnerability to exploitation. Economic agency becomes communal rather than individualistic.

Even in Devi's and Roy's works, community structures influence women's economic lives—whether through insurgent groups or family networks. The texts suggest that rural women rarely operate as isolated individuals; their agency is embedded within social relationships.

This emphasis on collectivity challenges neoliberal ideas of empowerment based solely on entrepreneurship. Instead, literature highlights solidarity, shared labor, and community resilience as essential tools for survival and autonomy.

**5. Redefining Empowerment**

Taken together, these themes encourage a redefinition of empowerment. Economic agency in Indian English literature is not always synonymous with wealth accumulation or institutional power. It includes:

- Assertion of dignity in the face of exploitation.
- Transformation of domestic labor into economic capital.
- Collective resistance to caste oppression.
- Emotional resilience within dependency.

Literature thus complicates simplistic binaries of victimhood and empowerment. Rural women are neither purely oppressed nor fully liberated; they inhabit dynamic spaces of negotiation.

**Synthesis**

The discussion reveals that Indian English literature performs a dual function:

1. **Documentation** – It records the socio-economic realities of rural women's lives.
2. **Interrogation** – It questions systems that marginalize women's labor and agency.

By foregrounding invisible labor, constrained agency, intersectional oppression, and collective empowerment, these texts contribute to broader debates on gender justice and economic equality in postcolonial India.

Ultimately, rural women in these narratives are portrayed as economic actors—even when denied formal recognition. Their struggles and strategies invite readers to reconsider the meaning of development, productivity, and empowerment in agrarian societies.

**Conclusion:**

This study has examined the representation of rural women and their economic agency in Indian English literature through selected works of Mahasweta Devi, Arundhati Roy, Bama, and Anita Desai. By applying feminist literary criticism, intersectionality theory, and rural feminist economics, the paper has demonstrated that literary narratives do more than portray rural women as passive victims of poverty and patriarchy. Instead, they present complex figures who negotiate economic survival, assert dignity, and challenge structural inequalities in diverse and nuanced ways.

A key finding of this study is that rural women's labor—whether agricultural, domestic, or informal—is central to both household survival and rural economies, yet remains systematically undervalued. Literature exposes this invisibility and critiques development models that measure productivity solely through formal market participation. Through narrative attention to unpaid labor, subsistence work, and emotional caregiving, these texts broaden our understanding of economic contribution beyond conventional economic metrics.

The analysis also reveals that agency in these works is rarely absolute or revolutionary. Rather, it emerges within constraint. Dopdi's defiance in Mahasweta Devi's "Draupadi" represents resistance born from economic and political dispossession. Mammachi's entrepreneurial initiative in *The God of Small Things* illustrates negotiation within patriarchal systems. Bama's *Karukku* foregrounds collective solidarity as a pathway to economic resilience among Dalit women. Even in Anita Desai's more interior narratives, subtle forms

of endurance and self-definition challenge the assumption that agency must always be overtly economic or public.

Intersectionality further clarifies that caste and class intensify gendered marginalization. Tribal and Dalit women face layered forms of exclusion, including land dispossession, wage discrimination, and social stigmatization. Literary representation thus reveals that rural women cannot be treated as a homogenous category; economic opportunities and constraints are shaped by intersecting hierarchies of caste, class, and gender.

Ultimately, Indian English literature functions as both social documentation and ethical critique. It records the lived realities of rural women while simultaneously questioning systems that deny them economic recognition and authority. These narratives expand the meaning of empowerment to include resilience, negotiation, collective action, and dignity. By foregrounding rural women's economic lives, literature contributes meaningfully to broader discussions of gender justice, rural development, and social transformation in postcolonial India.

Future research may extend this inquiry by incorporating contemporary Indian English novels, regional literatures in translation, or empirical comparisons between literary representation and field-based studies of rural women's economic participation. Such interdisciplinary engagement would further enrich our understanding of how literature reflects and shapes socio-economic discourse.

**References:**

Bama. *Karukku*. Translated by Lakshmi Holmström, Oxford University Press, 2000.

Crenshaw, Kimberlé. "Mapping the Margins: Intersectionality, Identity Politics, and Violence against Women of Color." *Stanford Law Review*, vol. 43, no. 6, 1991, pp. 1241–1299.

Desai, Anita. *Clear Light of Day*. Heinemann, 1980.

Devi, Mahasweta. "Draupadi." *Imaginary Maps*. Translated by Gayatri Chakravorty Spivak, Routledge, 1995.

Duncan, Elaine. "Rural Women in South Asian Fiction." *Journal of Commonwealth Literature*, vol. 34, no. 2, 1999, pp. 45–60.

Okin, Susan Moller. *Justice, Gender, and the Family*. Basic Books, 1989.

Roy, Arundhati. *The God of Small Things*. Random House India, 1997.

Sangari, Kumkum, and Sudesh Vaid, editors. *Recasting Women: Essays in Indian Colonial History*. Kali for Women, 1989.

Sarkar, Tanika. *Hindu Wife, Hindu Nation: Community, Religion, and Cultural Nationalism*. Indiana University Press, 2001.

Spivak, Gayatri Chakravorty. "Can the Subaltern Speak?" In *Marxism and the Interpretation of Culture*, edited by Cary Nelson and Lawrence Grossberg, University of Illinois Press, 1988, pp. 271–313.

# Representation of Rural Women Empowerment in Indian English Literature

**Dr Patil Manisha Sarjerao**
Asst. Prof. English Dept.
Balbhim Arts, Sci. and Comm College Beed
patilmanishasarjerao@gmail.com

## Abstract:

Women's empowerment has become an important theme in modern literature, especially in the context of social and cultural transformation in India. Rural women, who often face multiple forms of oppression such as poverty, illiteracy, and patriarchal restrictions, have been portrayed in Indian English literature as symbols of struggle, resilience, and gradual empowerment. This research paper examines how Indian English writers represent rural women and their journey toward empowerment. Through literary analysis of selected works by prominent authors, the paper explores themes such as gender inequality, resistance, social awareness, and self-identity. The study highlights how literature reflects the realities of rural life while also presenting rural women as agents of change in their communities. The paper argues that Indian English literature plays a significant role in bringing attention to the challenges faced by rural women and in promoting awareness about gender equality and social justice.

Indian English literature has increasingly focused on the representation of women's experiences, particularly those of rural women who struggle against patriarchal traditions, poverty, caste discrimination, and social inequality. Through fiction, autobiographies, and narratives, writers depict the transformation of rural women from marginalized and oppressed individuals to agents of resistance and empowerment. This research paper examines how Indian English literature portrays rural women's empowerment through themes such as education, economic independence, resistance to patriarchy, and identity formation. By analyzing selected works by authors like Kamala Markandaya, Arundhati Roy and Anita Desai, the study highlights the evolving representation of rural women in literature and its significance in social discourse.

**Keywords:** Rural women, empowerment, Indian English literature, gender equality, social change.

## Introduction

Indian English literature has often reflected the social realities of Indian society, including issues related to class, caste, gender, and rural life. Among these themes, the representation of women—especially rural women—has gained increasing attention in literary studies. Rural women in India often live under difficult circumstances shaped by poverty, traditional social structures, and gender discrimination. Despite these challenges, literature portrays many rural women as strong individuals who struggle against oppression and gradually achieve empowerment.

Empowerment refers to the process through which individuals gain the ability to make decisions, control resources, and shape their own lives. For rural women, empowerment may involve gaining education, economic independence, social recognition, and the confidence to challenge oppressive traditions. Indian English literature presents these struggles through powerful narratives that highlight both the difficulties and the strength of rural women. Many Indian writers have focused on the experiences of rural women in their works. These writers use literature as a means of representing social realities and questioning gender inequality. Through storytelling, they reveal the voices of women who are often marginalized in society. As a result, literature becomes an important medium for discussing social change and women's empowerment.

This research paper explores how rural women are represented in Indian English literature and how these representations contribute to the broader discussion of empowerment and gender equality.

## Rural Women and Social Challenges in Literature:

Indian English literature often portrays rural women as living within strict patriarchal systems. In many rural communities, women face limitations in terms of education, employment opportunities, and social freedom. Cultural traditions and gender expectations often place women in subordinate roles within families and society.

Literary works highlight these challenges by depicting women who struggle against social oppression. For example, the writings of Kamala Markandaya frequently focus on rural life and the difficulties faced by women in traditional societies. In her novel *Nectar in a Sieve*, the character Rukmani represents the struggles of a rural woman dealing with poverty, social expectations, and family responsibilities. Despite these hardships, Rukmani demonstrates resilience and inner strength. Despite numerous hardships, she demonstrates resilience, courage, and moral strength. Rukmani's character represents the quiet empowerment of rural women who survive adversity through determination and emotional strength. She represents the struggle of rural Indian woman. She believes in hope and faith even in the darkest moments. Her otinistic outlook makes her a powerful and inspiring character.

Such representations show how rural women are often forced to endure economic hardship and social discrimination. However, literature also reveals their courage and determination to survive under difficult circumstances. These narratives help readers understand the complexity of rural women's lives and the social structures that shape their experiences.

## Awakening of Female Identity:

Another important aspect of rural women empowerment in Indian English literature is the awakening of female identity. Many literary works depict women gradually becoming aware of their rights and personal dignity. This awakening often occurs through experiences of suffering, social injustice, or personal reflection.

The novels of Anita Desai frequently explore the psychological struggles of women seeking self-identity. Although her works often focus on urban settings, the themes of emotional conflict and the search for identity also resonate with the experiences of women in rural contexts.

Through such literary representations, readers witness the transformation of female characters from passive individuals into self-aware personalities. This transformation symbolizes empowerment, as women begin to question traditional roles and seek independence.

Maya is the central character of novel, which is more sensitive in loveless marriage. She grow up pampered as a toy princess by her father, leaving her emotionally immature, dependent and incapable of facing the harsh realities of life. The novelist uses the stream of consciousness technique to delve into the deepest often irrational, concern of Maya's mind.

## Resistance against Patriarchal Structures:

Indian English literature also portrays rural women resisting patriarchal norms and social injustice. Patriarchy refers to a system in which men hold dominant power in social, political, and economic spheres. In many rural communities, patriarchal traditions limit women's freedom and decision-making power.

Literary narratives often depict women challenging these limitations. The works of Arundhati Roy, particularly The God of Small Things, illustrate how women struggle against oppressive social structures. Female characters in such works attempt to challenge societal expectations and assert their individuality. The central character **Ammu** challenges social norms and caste restrictions. Her rebellion against patriarchal and social expectations represents a form of empowerment, even though society ultimately punishes her for defying established rules. The novel reveals how women who challenge traditional structures often face severe consequences, highlighting the complexities of empowerment. Through these stories, literature portrays rural women not only as victims of oppression but also as individuals capable of resistance. Their acts of courage and defiance represent steps toward empowerment and social change.

Ammua is the mother of Rahal and Estha. She is a strong but tragic character. Ammu rebels against traditional social norms. Though out the life she suffers because of no reasons, her married life is victim of her tragic death of emotion and her love with Veluth is the crisis of her life. Ammu represents the struggle patriarchal and social restrictions.

## Education and Economic Independence:

Education and economic independence are frequently portrayed in literature as key element of women's empowerment. Many narratives emphasize the importance of education in enabling women to gain confidence; knowledge, and opportunities. In rural settings, education often becomes a symbol of progress and transformation. When women gain access to education, they become more aware of their rights and are better able to challenge discriminatory practices. Similarly, economic independence allows women to contribute to family income and gain respect within their communities.

Woman empowerment is essential for achieving gender equality and sustainable development. Empowered woman contribute to economic grout, social stability and improving living standards. They also play a vital role in shaping future generations by educating and nurturing their children.

Several literary works highlight how access to education and employment opportunities can change the lives of rural women. These narratives emphasize that empowerment is not only a personal transformation but also a social process that influences entire communities.

## Literature as a Voice for Rural Women:

Indian English literature plays a significant role in giving voice to marginalized groups, including rural women. Through storytelling, writers bring attention to the realities of rural life and the struggles faced by women in these environments.

Literature also creates empathy among readers by presenting human experiences in a powerful and emotional way. When readers encounter the stories of rural women in literary works, they gain a deeper understanding of the social challenges these women face. Furthermore, literature encourages discussion about gender equality and social justice. By portraying rural women as strong and resilient individuals, writers challenge stereotypes and highlight the importance of empowering women in all areas of society. Indian women writers have played a significant role in bringing marginalized voices into mainstream literature and challenging patriarchal ideologies. Literature therefore becomes a powerful tool for both cultural expression and social transformation.

**Conclusion:**

The representation of rural women empowerment in Indian English literature reflects the complex realities of gender, culture, and social change in India. Literary works portray rural women as individuals who face numerous challenges, including poverty, social discrimination, and patriarchal oppression. At the same time, these works also highlight the strength, resilience, and determination of women who strive for dignity and independence. Through themes of resistance, self-identity, education, and economic independence, Indian English literature presents rural women as active participants in the process of social transformation. These narratives not only reflect social realities but also inspire readers to think critically about gender equality and women's rights.

In this way, literature becomes an important tool for promoting awareness and encouraging empowerment. By giving voice to rural women and portraying their struggles and achievements, Indian English literature contributes to a broader understanding of women's empowerment in contemporary society.

## Work cited.

Desai, Anita. Cry, the Peacock. Orient Paperbacks.1980

Markandaya, Kamala. Nectar in a Sieve.Penguin Books.1954.

Roy, Arundhati. The God of Small Things.HarperCollins, 1997

Naik, M. K. A History of Indian English Literature.SahityaAkademi, 1982

# The Role of Pradhan Mantri Mudra Yojana in Promoting Entrepreneurship, Employment and Inclusive Economic Development in Maharashtra

**[1]Ms. Rajanandini Rajendra jain, [2]Dr. Vrushali B. Kute.**
[1]Research Scholar, Balbhim Arts, Science & Commerce College, Beed.
[2]Research Supervisor, Balbhim Arts, Science & Commerce College, Beed.

**Abstract:**
The Pradhan Mantri Mudra Yojana (PMMY), launched by the Government of India on April 8, 2015, is a significant financial inclusion scheme aimed at promoting entrepreneurship. Under this scheme, collateral-free institutional loans are provided to micro and small entrepreneurs in the unorganized sector. The main objective of this scheme is to foster entrepreneurship, create self-employment opportunities, and promote inclusive economic development. The scheme provides financial assistance tailored to different stages of business development through three loan categories: Shishu, Kishore, and Tarun. The scheme has been implemented extensively in Maharashtra, a state with a diverse industrial, agricultural, and service sector. This study examines the impact of the Pradhan Mantri Mudra Yojana in Maharashtra on entrepreneurial development, employment generation, and socio-economic inclusion. Based on primary data collected through questionnaires and interviews, and analysis of secondary data, this study reveals that PMMY has increased self-employment opportunities and empowered women and socially disadvantaged groups. However, challenges such as limited loan amounts, lack of financial literacy, and repayment stress persist.
Keywords: Pradhan Mantri Mudra Yojana, Entrepreneurship, Employment, Inclusive Growth,

## 1.Introduction

Entrepreneurship is considered a crucial factor for economic growth, job creation, and poverty alleviation. In a developing country like India, a large proportion of the workforce operates in the unorganized sector, making it difficult for them to access credit from formal financial institutions. To address this structural challenge, the Government of India, under the Ministry of Finance, launched the Pradhan Mantri Mudra Yojana (PMMY) on April 8, 2015, which is implemented through Scheduled Commercial Banks, Regional Rural Banks, Small Finance Banks, Non-Banking Financial Companies (NBFCs), and Microfinance Institutions (MFIs).

The main objective of PMMY is to provide formal, affordable, and collateral-free credit to small borrowers, thereby promoting entrepreneurship, reducing dependence on informal moneylenders, and fostering equitable economic development. This study explores how effectively PMMY has contributed to promoting entrepreneurship, expanding employment, and enhancing financial inclusion in India.

## 2.Objective of the study

- To examine the role of PMMY in promoting entrepreneurship in Maharashtra
- To analyse the employment opportunities created by the Mudra scheme

- To access the impact of PMMY on inclusive economic development, particularly among women and marginalised group
- To identify challenges faced by beneficiaries in accessing and utilizing Mudra loans

## 3. Review of literature

Several studies have examined the impact of the Pradhan Mantri Mudra Yojana (PMMY) on entrepreneurship, employment generation, and financial inclusion across different regions of Maharashtra. Bainade and Mali-Jagtap (2025) analyzed the comprehensive impact of PMMY on MSMEs in Maharashtra and found that Mudra loans significantly improved the financial stability of small entrepreneurs. Their study highlights the scheme's important role in integrating informal sector enterprises into the formal financial system. However, they also reported challenges such as procedural complexities and inadequate dissemination of information among beneficiaries.

Chaturvedi and Mishra (2025) emphasized the role of the Mudra scheme in promoting entrepreneurship, particularly in rural areas and among women. Their findings indicate notable improvements in business expansion, income growth, and self-employment generation. Despite these positive outcomes, the study points out persistent issues such as repayment stress and low levels of financial literacy, which affect the sustainability of enterprises.

Studies focusing on inclusive economic development suggest that PMMY has played a significant role in bringing marginalized groups into the mainstream economy. Varalakshmi (2025) observed a steady increase in loan disbursement under PMMY and other MSME credit schemes, demonstrating their contribution to employment generation and enhanced financial inclusion. Similarly, Gehlot, Sharma, and Soni (2025) reported that increased awareness of PMMY among women has strengthened financial inclusion and led to a substantial improvement in women's economic participation, which is crucial for inclusive development.

With specific reference to women entrepreneurship, a study published in IJCRT (2024) based on Amravati district revealed that PMMY has enhanced women's economic self-reliance by enabling self-employment opportunities. The study reported improvements in the socio-economic status of women beneficiaries; however, it also highlighted challenges related to inadequate training and lack of continuous guidance, which affect long-term business sustainability.

Urban-focused studies also provide important insights into PMMY implementation. Rao and Singh (2023), based on a primary survey in Pune city, found that Mudra loans effectively met the capital requirements of micro and small enterprises and supported business expansion. However, their study noted a relatively limited impact on employment generation, reflecting the mixed outcomes of PMMY in urban settings.

Earlier studies further establish the scheme's positive role in financial inclusion and employment generation. Rajagopal (2022) reported that PMMY contributed significantly to social development by improving access to institutional finance for micro-enterprises. Mahajan (2019), in his critical evaluation of PMMY in Maharashtra, examined loan disbursement trends, beneficiaries' socio-economic profiles, and initial implementation challenges, thereby providing a historical perspective on the evolution of the scheme in the state.

Although several studies have examined the impact of PMMY at the national and state levels, limited empirical research based on primary data is available focusing on entrepreneurship and employment generation in Maharashtra. Moreover, existing studies rarely analyse the socio-economic profile of beneficiaries in detail. Therefore, the present study attempts to fill this research gap.

## 4. Research Methodology

### 4.1 Research Design

This study adopts a descriptive-causal research design based on primary data

### 4.2 Sampling Technique

Study Area: Pune, Aurangabad, and Nashik districts of Maharashtra.
Sampling: Stratified random sampling.
Sample Size: 300 PMMY loan beneficiaries.
Strata: Loan category (Shishu, Kishore, Tarun), gender, and enterprise type.

### 4.3 Data Collection

Primary data: Questionnaires, personal interviews
Secondary data: Reports, government publications, research articles
Key Variables:
Type of micro-enterprise
Loan amount received
Business performance indicators (sales, profits)
Employment generated (self + hired workers)
Household income changes
Perceptions of inclusivity and challenges

### 4.4 Data Analysis

Descriptive statistics
inferential tests: Chi-square, t-tests
Regression analysis to assess predictors of business performance.

## 5. Results, Data Analysis and Findings

| Cast Category | Male | Female | Count | Percentage |
|---|---|---|---|---|
| Scheduled Cast | 24 | 22 | 46 | 15.33% |
| Scheduled Tribe | 15 | 13 | 28 | 9.33% |
| Other Backword Class | 19 | 48 | 97 | 32.34% |
| General Category | 64 | 65 | 129 | 43.00% |
| **Total** | **152** | **148** | **300** | **100.00%** |

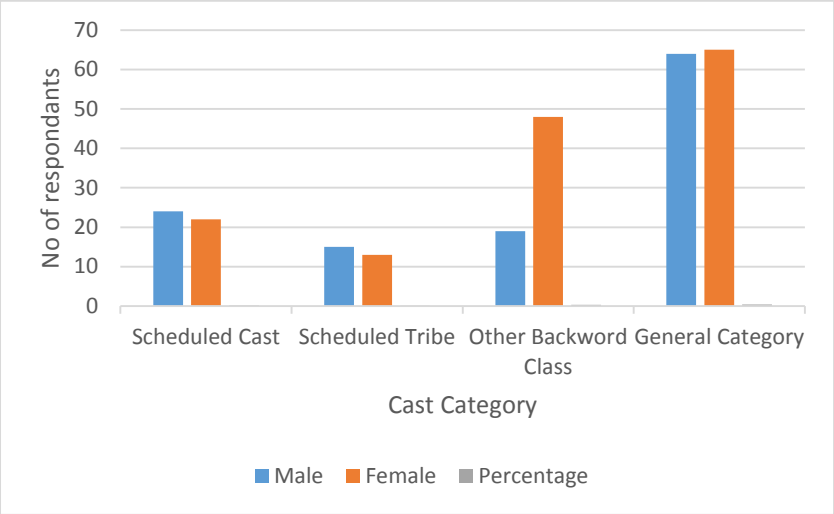


This indicates that the PMMY has ensured inclusive access to credit and has encouraged women participation across different social group in Maharashtra.

**5.2 Loan Category Wise Distribution**

| Loan | Loan Amount | No. | Percentage |
|---|---|---|---|
| Shishu | 50000 | 138 | 46.00% |
| Kishor | 50001-500000 | 104 | 34.37% |
| Tarun | 500001-1000000 | 58 | 19.33% |
| **Total** | | **300** | **100.00%** |

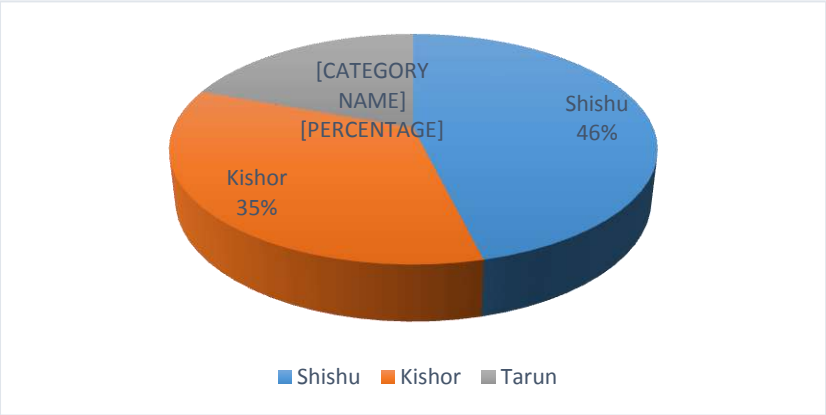


The dominance of Shishu loans suggests that PMMY primarily supports early-stage micro-entrepreneurs.

**5.3 Nature of Enterprise**

| Type of Business | No. | Percentage |
|---|---|---|

| | | |
|---|---|---|
| Retails Trade | 108 | 36.00% |
| Food processing/Hotel | 76 | 25.33% |
| Manufacturing Industry | 61 | 20.34% |
| Service Sector | 55 | 18.33% |
| **Total** | **300** | **100.00%** |

The table indicates that the PMMY support diversified entrepreneurial activities in Maharashtra.

**5.4 Impact on Entrepreneurship**

| Types of Entrepreneurships | No. | Percentage |
|---|---|---|
| Started a new business | 204 | 68% |
| Expansion of existing business | 73 | 25% |
| No major changes | 23 | 7% |

68% of beneficiaries started a new business
25% of beneficiaries expanded their existing business
Mudra loans reduced the barriers to starting a business

**5.5 Employment Generation**

| Employment Type | No. |
|---|---|
| Self-employment | 300 |
| Family Employment | 214 |
| External worker | 392 |
| Total job creation | 906 |

1. Average number of jobs created per enterprise: 2.3
2. Women-led businesses employed more part-time workers compared to male-led businesses (statistically significant).
3. Total estimated number of jobs created in the sample group: ~690 jobs.

**5.6 Income and Economic Well-Being**

| Income Level | Before Loan | After Loan |
|---|---|---|
| Less than □10000 | 167 | 62 |
| □10,001–□20,000 | 103 | 151 |
| More than □20,000 | 30 | 87 |

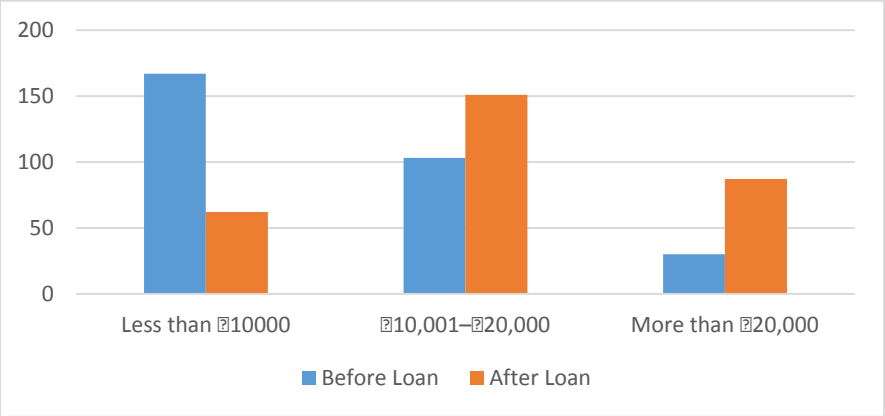


1.78% of beneficiaries experienced an increase in income.
2.Mean monthly household income increased from ₹12,500 to ₹18,750 after loan utilization (t-test significant at $p < 0.01$).

3. The observed increase in income levels confirms the positive economic impact of MUDRA loan utilization.

**5.7 Inclusive Growth Indicators.**

- Women: 50% of beneficiary enterprises are owned or co-owned by women.
- SC/ST/OBC groups: 57% representation among beneficiaries.
- 72% indicated improved decision-making power in household due to business income.

**5.8 Challenges Reported**

Major constraints included:

- High interest rates by banks
- Complex documentation
- Delays in loan disbursement
- Lack of business training

Respondents suggested need for:

- Business mentoring programs
- Market linkages
- Entrepreneurial skill enhancement

## 6. Discussion

The primary findings of the study indicate that the Pradhan Mantri Mudra Yojana (PMMY) has emerged as an effective financial inclusion initiative promoting micro-entrepreneurship and employment generation in Maharashtra, particularly in the Marathwada region. The collateral-free loans provided under the scheme have reduced financial entry barriers to entrepreneurship, especially for women, socially disadvantaged groups, and economically weaker sections, thereby enhancing opportunities for self-employment.

The study reveals that after accessing credit, beneficiaries experienced increased income levels, improved business expansion capacity, and greater participation of women in household financial decision-making. This reflects not only economic progress but also significant social empowerment.

However, the study also identifies several structural challenges in the implementation of the scheme. High interest rates, complex documentation procedures, delays in loan disbursement, and lack of business training limited the ability of some beneficiaries to fully utilize the scheme's benefits. In rural areas, low digital literacy and limited market linkages emerged as major constraints.

Thus, while PMMY has been successful in providing financial opportunities, its long-term and sustainable impact depends on the availability of complementary support systems and policy improvements.

## 7. Conclusion

The study concludes that the Pradhan Mantri Mudra Yojana plays a crucial role in promoting grassroots entrepreneurship, generating employment opportunities, and supporting inclusive economic development. The scheme has enabled small entrepreneurs to access institutional finance, thereby fostering self-reliance and significantly contributing to women's economic empowerment.

Nevertheless, to maximize the scheme's effectiveness and ensure long-term sustainability, supportive measures such as financial literacy programs, skill development training, simplification of loan procedures, business mentoring, and improved market access are essential.

Therefore, PMMY should not be viewed merely as a credit scheme but as a strategic instrument for socio-economic transformation, particularly for rural and marginalized populations. With effective implementation and adequate support mechanisms, the scheme has the potential to play a decisive role in achieving inclusive and sustainable economic growth.

## 8. Policy Recommendations

1.Simplify documentation and approval processes for easier access to credit.

2. Special support for female and marginalized entrepreneurs through targeted training and incentives.

3.Post-loan support systems: mentoring, financial advice, and market access initiatives.

4.Digital awareness programs to improve application and utilization rates in rural pockets.

## 9. Limitations of the Study

Restricted to three districts.

Cross-sectional data limits long-term impact analysis.

Possibility of self-reporting bias.

## 10. Future Research

Longitudinal studies to track growth over time.

Comparative analysis with other states.

Sector-specificimpact

## 11.Reference

1. Bainade, M. L., & Mali-Jagtap, A. J. (2025). Empowering MSMEs in Maharashtra: A study on the impact of Pradhan Mantri Mudra Yojana. Zenodo.

2. Chaturvedi, A., & Mishra, S. S. (2025). A comprehensive review of MUDRA loan scheme:

Implications for MSME development. SMART MOVES Journal IJOSCIENCE.
3. Varalakshmi, D. (2025). Catalysing inclusive growth: The role of MSME credit schemes in India's economic development. International Research Journal on Advanced Engineering Hub.
4. Gahlot, S., Sharma, N. M., & Soni, R. (2025). Awareness and impact of the Pradhan Mantri Mudra Yojana (PMMY) on women MSME entrepreneurs in Chhattisgarh, India. Asian Journal of Economics, Business and Accounting, 25(9), 237–247.
5. A Study on the Impact of Mudra Yojana in Creating Sustainable Entrepreneurship Among Women (2024). International Journal of Creative Research Thoughts.
6. Rao, S., & Singh, K. (2023). Analysing the influence of Mudra loans on small/micro enterprises in Pune City, Maharashtra. Journal of Technology Management for Growing Economies.
7. Mahajan, D. Y. (2019). A study and review of Pradhan Mantri Mudra Yojana (PMMY) in the state of Maharashtra. International Journal of Advance and Innovative Research.ir.vidyasagar.ac.in
Government of India. (2023). Economic survey 2022–23. Ministry of Finance. https://www.indiabudget.gov.in
Ministry of Finance. (2022). Status of Pradhan Mantri Mudra Yojana. Government of India. https://www.mudra.org.in
Mudra Limited. (2021). Annual report 2020–21. Government of India.
Reserve Bank of India. (2021). Report on trend and progress of banking in India. RBI. https://www.rbi.org.in
Reserve Bank of India. (2022). Financial inclusion in India: Issues and challenges. RBI Bulletin.

**Appendices**

- Questionnaire
- Interview guide
- Tables & Graphs

# The Economic and Social Impact of Women's Leadership in India: A Statistical and Analytical Study

**Sumit Prabhakar Gawali**
Assistant Professor,
Department of English,
Balbhim College, Beed.
Email: Sumitgawali17101999@gmail.com
Mobile: 8087335585

**Abstract:**
The rise of women's leadership in India has proven to be a powerful force, driving economic growth and bringing about social transformation. This paper delves into the impact that female leaders have had on both fronts by examining secondary data, reports, and existing research. Through this analysis, we gain insight into how these inspiring individuals contribute not only to organizational productivity but also to inclusive development, improved governance practices, and community welfare. By looking at statistical trends surrounding female labor participation rates, entrepreneurship opportunities and political representation, it becomes clear that there is indeed a shifting landscape when it comes to women taking charge. In addition, the study highlights some persistent barriers that continue holding back their full potential as leaders. It is therefore crucial for practical measures to be implemented in order strengthen their involvement. Furthermore, this goes beyond just achieving gender equality; it proves vital for sustainable national development.

**Introduction**

In the twenty-first century, women leadership has gained increasing recognition across political, economic, and social domains throughout the world. The increasing partnership of women in decision-making process is widely seen as an essential component of inclusive and sustainable development. Leadership is no longer viewed as a male-dominated sphere; rather, it is increasingly understood as an area where women's skills, and abilities contribute significantly to institutional effectiveness and social progress.

India, as one of the fastest-developing economies, has witnessed a gradual yet notable rise in women occupying leadership positions in business organizations, governance structures, educational institutions, and social enterprises. Government initiatives, constitutional guarantees of equality, have collectively enabled more women to step into leadership roles. Women leaders
today are actively involved in entrepreneurship, local governance, corporate management, and community-based organizations.

The impact of women's leadership extends far beyond numerical representation. Economically, women leaders contribute to productivity, innovation, and employment generation. Studies have shown that organizations with gender-diverse leadership often demonstrate better financial performance and more balanced decision-making. In the India, women entrepreneurs have played a vital role in making strong rural economies, promoting financial inclusivity, and supporting household income stability.

Socially, women's leadership has transformative implications. Women leaders very much give priority to issues like education, healthcare, sanitation, child welfare, and gender equality. Their presence in leadership positions challenges deeply rooted patriarchal norms and inspires younger generations of girls to aspire toward higher education and professional

achievement. In local governance institutions such as Panchayati Raj institutions, the strong participation of women has been associated with improved responsiveness to community needs and more inclusive development practices.

However, with all that women in India still continue to face multiple structural, institutional, and socio-cultural barriers that restrict their full leadership potential. Persistent gender stereotypes, unequal domestic responsibilities, limited access to finance, workplace discrimination, and safety concerns continue to hinder women's advancement into senior decision-making roles. Statistical evidence also indicates that women remain underrepresented in corporate boardrooms, higher administrative services, and top political positions.

In this context, it becomes critically important to examine the measurable economic and social impact of women's leadership through reliable statistical data and scholarly research. Understanding both the achievements and the existing gaps can help policymakers, educators, and institutions design more effective strategies for women's empowerment.

Therefore, this paper tries to discuss the economic-social impact of women's representation in India in the light of available statistics and research studies.

**Economic Impact of Women's Leadership**

The significance of women's leadership in propelling economic progress cannot be emphasized enough. Countless real-world studies and government reports have consistently shown that companies with a balanced representation of genders among their top leaders tend to experience greater financial success, make more well-rounded decisions, and possess stronger creative capabilities. Teams led by diverse individuals are inclined towards careful risk management strategies, foster collaborative work environments, and encourage long-term strategic planning - all factors that contribute positively to the overall performance of an organization. In today's interconnected global economy, having female representation in leadership roles is no longer just about promoting equality; it has become imperative for achieving optimal efficiency and staying competitive.

From last few years, there is a significant increase in female entrepreneurs across various sectors in India. From micro and small enterprises to digital commerce, handicrafts, food processing, and service industries - women have made their mark. The government steps like Start-up India and Stand-up India with addition of Self-Help Groups (SHGs), many aspiring women entrepreneurs have received institutional support. This has resulted in these enterprising individuals making valuable contributions towards household income generation, poverty reduction as well as grassroots economic dynamism. Especially outstanding is the impact that women-led enterprises associated with SHGs and microfinance networks are having on rural and semi-urban regions. These visionary businesswomen are not only strengthening local markets but also promoting financial inclusion for all members of society.

According to recent economic estimates, increasing the number of women in the workforce could greatly enhance India's Gross Domestic Product (GDP). In fact, international assessments suggest that closing the gender gap in labor force participation could add hundreds of billions of dollars to India's economy. This clearly shows how empowering women economically can directly contribute to national economic growth. Moreover, businesses led by women have been found to create even more job opportunities for others, particularly fellow female workers. By doing so, they help establish a supportive ecosystem within regions where formal employment options may be scarce. It is undeniable that

investing in and promoting greater involvement of Indian women in their country's workforce will yield significant benefits on both individual and collective levels. Not only does it increase productivity and income generation but also fosters an inclusive society with equal opportunity for all genders.

Furthermore, female leaders frequently exhibit inclusive approaches to management that prioritize the welfare of their employees, uphold ethical principles in governance, and actively engage with their communities. These leadership practices not only contribute to the development of sustainable business models but also foster socially responsible institutions. As India strives towards achieving a more equitable and all-encompassing growth, it is imperative for women's leadership roles to expand across various sectors as they are not just desirable but also economically essential.

**Social Impact of Women's Leadership**

The leadership of women goes beyond just financial contributions; it has a profound and extensive impact on society. Women in positions of power often possess an inclusive and compassionate perspective, making them valuable assets to governance and decision-making within organizations. Their priorities tend to revolve around pressing social issues such as education, healthcare, sanitation, nutrition, and gender equality - all crucial factors that directly affect the well-being of communities.

In democratic institutions at the grassroots level like Panchayati Raj, there has been a notable increase in female representatives taking charge. This change led to improvements regarding public service delivery with heightened transparency levels. Furthermore, it's worth noting that these women leaders are highly attentive to local developmental needs-addressing them with utmost importance.

Their leadership skills have brought about tangible results where welfare schemes are concerned; resulting in their better implementation for the benefit of the community. These remarkable achievements can also be attributed to their responsive engagement with people from various backgrounds. Without a doubt, women's leadership is truly transformative and should continue being nurtured for a more equitable world.

At level of society, women leaders serve as powerful symbols of transformation. Through the important positions in leadership, they challenge deeply ingrained patriarchal norms and traditional gender inequality that have from past trapped women to domestic spheres. Their remarkable achievements act as a catalyst like, motivating young girls to dream big and pursue higher education, professional careers, and leadership opportunities with unwavering determination. The increasing visibility of female leaders also has a ripple effect on family dynamics by promoting more progressive attitudes towards investing in girls' education and skills development.

Moreover, female leaders often embrace collaborative and compassionate approaches to leadership that foster unity and establish trust within communities. By actively participating in self-help groups, local governing bodies, educational institutions, and civil society organizations, they play a crucial role in constructing more fair and inclusive societal frameworks. In this way, women's leadership serves not only as symbolic representation but also acts as an energetic force for lasting social evolution and forward-thinking development in Indian culture.

**Statistical Trends in Women's Leadership in India**

The statistical data on women's leaders in India paints a promising picture of gradual progress and meaningful change. A closer look at the numbers reveals a new trend, with more women taking up key positions in decision-making roles. But its not only about statistics; there are real success stories to back this claim. One such example can be seen at the grassroots level where we witness a significant rise in female participation. Thanks to constitutional reservation policies, nearly half (46%) of elected leaders in Panchayati Raj Institutions (PRIs) are now females - truly a great achievement! This shift towards gender-inclusive local governance marks a major milestone for our nation. Moreover, this growth has resulted in creating an impressive pipeline of capable and competent female leaders across villages and districts alike. As they step into powerful positions within their communities, these strong-willed individuals have made themselves visible as influential political figures - something that was long overdue but finally coming to fruition. To conclude, there is much work to be done towards achieving complete equality for all genders when it comes to leadership opportunities, the recent developments are appreciable.

The world of economics has seen a significant rise in the number of women entrepreneurs. In fact, India alone boasts an estimated 13.5-15.7 million businesses owned by women, making up approximately 20 percent of all enterprises. This growth can be attributed to various factors, including government initiatives that have further propelled this trend forward. For example, under the Startup India program, more than 73,000 startups with minimum one female director have been recognized and supported. Moreover, there is evidence that financial inclusion and participation in entrepreneurship are on the rise for women as well. A staggering 68 percent of loans granted through PM Mudra Yojana (a loan scheme) were given to female entrepreneurs – showcasing their increasing presence within the formal economic ecosystem. These numbers demonstrate not only tangible progress but also highlight a shift towards recognizing and empowering talented businesswomen who bring unique perspectives and ideas into play.

The latest labor market data showcases a promising improvement, although it must be acknowledged that there are some crucial limitations. Looking into the Periodic Labour Force Survey (PLFS), India has experienced a noteworthy advance in its female labour force participation rate (FLFPR) from 23.3 percent in 2017-18 to approximately 41.7 percent in the year of 2023-24. This upward trend indicates an encouraging rise in women's economic involvement, particularly within rural areas and self-employed sectors. However, despite this positive development, we cannot ignore the fact that employment quality and nature continue to vary significantly among individuals. Sadly, many women still find themselves trapped within informal or low-paying jobs despite these recent advancements.

Overall, the statistics paint a complex yet cautiously hopeful outlook. India has taken notable strides in promoting women's involvement in local governance, entrepreneurship, and employment. However, there are still huge inequalities seeing women representation at the high levels of corporations and parliament as well as access to high-quality jobs.

**Challenges Faced by Women Leaders**

The reality for women leaders in India is riddled with numerous obstacles, both structural and socio-cultural. These barriers persistently hinder their ability to fully embrace leadership roles. Traditional gender norms deeply ingrained within society often confine women to domestic spheres, making it increasingly difficult for them to advance professionally. Aspiring female leaders face a plethora of challenges as they strive towards success. One

major hurdle is the constant struggle to balance work and private life - an issue that disproportionately affects women due to societal expectations placed upon them as primary caregivers within households. Furthermore, limited access to institutional financing presents another significant barrier hindering the growth potential of aspiring female entrepreneurs and professionals alike. Property ownership constraints also pose a challenge, limiting opportunities for economic advancement among women in leadership positions. In essence, these persistent issues create roadblocks along the path towards progress for Indian women striving towards leadership roles – ultimately stunting their professional growth potential.

Efforts to address these interconnected challenges are crucial in unleashing the untapped potential of women's leadership in India. It is imperative that we strengthen institutional support, promote gender-sensitive workplace policies, expand access to finance and mentorship opportunities, and cultivate progressive social attitudes. These necessary measures will help create a more conducive environment for female leaders to thrive. It is only through sustained and multi-faceted interventions that India can truly harness the developmental advantages brought about by women at the helm. By taking action on multiple levels simultaneously, we can pave the way for an inclusive society where female leaders have equal opportunity to contribute their unique perspectives.

**Conclusion**

The study reveals the crucial role of women's leadership in India, not just in driving economic growth but also catalyzing social transformation. Statistical data provides concrete evidence of progress made by women leaders in various spheres such as local governance, entrepreneurship, and workforce participation. Their contributions are far-reaching - from boosting productivity to creating job opportunities, promoting inclusive decision-making processes and enhancing community well-being. However, despite these advancements, there still exist deep-rooted socio-cultural barriers that hinder the rise of women into higher leadership positions. The pervasive culture of discrimination at workplaces coupled with limited access to resources further impedes their path towards success. It is important for us to address these challenges head-on through robust institutional support mechanisms and equitable policies tailored specifically for gender inclusivity. Empowering female leaders is more than just a step towards achieving gender equality; it is an essential strategy for fostering sustainable development on a national level that leaves no one behind. By breaking down societal norms and providing equal opportunities for all genders to thrive professionally, we can pave the way towards building a society where al have an equal chance at reaching their full potential.

**References**

Government of India. (2023–24). *Periodic Labour Force Survey (PLFS) Annual Report*. Ministry of Statistics and Programme Implementation.

Ministry of Panchayati Raj. (2023). *Status of Women Representatives in Panchayati Raj Institutions*. Government of India.

NITI Aayog. (2023). *From Intent to Impact: Compendium of Good Practices on Gender Parity at Workplace*. Government of India.

Reserve Bank of India. (2023). *Report on Trend and Progress of Banking in India*.

Startup India. (2023). *Startup India Annual Report*. Department for Promotion of Industry and Internal Trade (DPIIT), Government of India.

World Bank. (2022). *Women, Business and the Law Report*. World Bank Publications.

# Women Entrepreneurship in the Digital Age: Online Platforms and Marketing Strategies

**Akshaykumar Umakant Bhadrashetti**
Assistant Professor
Balbhim College, Beed.
Email: Bhadrashetty20@gmail.com
Phone:9764999992

**Abstract**

The growth of digital technology has changed the way businesses are created and managed around the world. In recent years, digital platforms have provided new opportunities for women to start and grow their own businesses. Earlier, many women faced challenges such as limited financial support, restricted mobility, and fewer market opportunities. However, the rise of the internet, social media, and e-commerce platforms has made entrepreneurship more accessible. Women entrepreneurs can now promote their products and services online, communicate directly with customers, and manage business operations more easily. Digital marketing strategies such as social media marketing, email marketing, and search engine optimization help businesses reach a wider audience. This research paper examines how online platforms and marketing strategies support women entrepreneurship in the digital age. The study is based on secondary sources such as books, academic articles, and reports. The findings show that digital platforms have increased business opportunities and helped many women achieve financial independence. However, challenges such as lack of digital skills, limited internet access, and cybersecurity issues still affect many women entrepreneurs. The study concludes that improving digital education and providing better technological access can further support women entrepreneurship.

## Introduction

Entrepreneurship plays an important role in economic development. It helps create employment, encourages innovation, and contributes to the overall growth of a country. In recent years, women have increasingly entered the field of entrepreneurship and started their own businesses. Women entrepreneurship has become an important factor in promoting economic development and gender equality.

Traditionally, women faced several barriers in starting businesses. Many women had limited access to financial resources and business networks. Social expectations and family responsibilities often restricted their ability to participate in business activities. As a result, many women entrepreneurs found it difficult to compete in the traditional market environment.

The development of digital technology has changed this situation. The internet, smartphones, and digital communication tools have created new opportunities for entrepreneurs. Women can now start and manage businesses using online platforms without the need for large investments or physical stores. Digital platforms allow entrepreneurs to reach customers across different cities and countries.

Online platforms such as social media networks and e-commerce websites have become powerful tools for business promotion. Women entrepreneurs can display their products online, interact with customers, and promote their brands through digital marketing strategies.

These opportunities have helped many women become financially independent and confident.

However, despite these opportunities, women entrepreneurs still face certain challenges in the digital environment. Many women lack digital knowledge and access to technology. Issues such as online fraud, cybersecurity risks, and social barriers also create difficulties. Therefore, it is important to understand the role of digital platforms in supporting women entrepreneurship.

This research paper examines how online platforms and digital marketing strategies contribute to the growth of women entrepreneurship in the digital age. It also discusses the challenges faced by women entrepreneurs and suggests ways to improve their participation in digital business.

## Literature Review

Many researchers have studied the role of digital technology in promoting women entrepreneurship. Previous studies show that digital platforms provide new opportunities for women to start and manage businesses.

Some researchers highlight that social media platforms help women entrepreneurs promote their products at low cost and reach a large number of customers. Social media marketing allows entrepreneurs to communicate directly with customers and receive immediate feedback.

Other studies emphasize the importance of e-commerce platforms in expanding business opportunities. Online marketplaces allow entrepreneurs to sell products beyond their local markets and reach national or international customers. These platforms also provide support services such as payment systems and delivery networks.

Research also shows that digital marketing strategies play an important role in business growth. Strategies such as content marketing, email marketing, and search engine optimization help businesses improve their online visibility and attract more customers.

However, several studies also point out the challenges faced by women entrepreneurs in the digital economy. Limited digital literacy, lack of technological infrastructure, and cybersecurity concerns are common issues. Some researchers also highlight the influence of social and cultural barriers that restrict women's participation in entrepreneurship.

Overall, previous research indicates that digital technology has significantly improved opportunities for women entrepreneurs, but additional support and training are necessary to overcome existing challenges.

## Research Methodology

This research is based on secondary data. Information for the study has been collected from books, academic journals, research articles, government reports, and online publications related to women entrepreneurship and digital marketing.

The collected data has been analyzed using a descriptive approach. The study examines how online platforms and marketing strategies influence the growth of women entrepreneurship in the digital age.

## Women Entrepreneurship in the Digital Age

Women entrepreneurship refers to businesses that are owned and managed by women. Over the years, the number of women entrepreneurs has increased due to better education, improved awareness, and supportive government policies.

The digital age has created a new environment for entrepreneurship. Digital technologies allow individuals to start businesses with fewer resources and lower costs. Women entrepreneurs can now use online platforms to promote and sell their products.

Many women run home-based businesses using digital platforms. For example, women sell clothing, handmade products, beauty items, and food products through online marketplaces and social media. Others provide services such as online teaching, graphic design, and digital content creation.

Digital communication tools also allow entrepreneurs to interact easily with customers and suppliers. Mobile phones, messaging applications, and social media platforms make it possible to manage business activities quickly and efficiently.

Therefore, the digital economy has opened new opportunities for women entrepreneurs and enabled them to participate actively in business and economic development.

*Role of Online Platforms in Women Entrepreneurship*

Online platforms have become essential tools for modern entrepreneurship. These platforms help entrepreneurs promote products, reach customers, and manage business operations.

Social media platforms such as Instagram, Facebook, and WhatsApp are widely used by women entrepreneurs. Through these platforms, entrepreneurs can share product images, promotional videos, and customer reviews. Social media also allows entrepreneurs to communicate directly with customers and build strong relationships with them.

E-commerce platforms such as Amazon and Flipkart provide additional opportunities for women entrepreneurs. These platforms allow sellers to list products online and reach a large customer base. They also offer services such as digital payments, order management, and delivery systems.

Digital payment systems have also improved business efficiency. Online banking, mobile wallets, and unified payment systems make financial transactions faster and more secure. Customers can easily pay for products using digital payment methods.

Because of these online platforms, women entrepreneurs can operate businesses from their homes and reach customers across different regions and markets.

*Digital Marketing Strategies Used by Women Entrepreneurs*

Digital marketing has become an important tool for business promotion. Women entrepreneurs use different digital marketing strategies to attract customers and increase sales. Social media marketing is one of the most common strategies. Entrepreneurs post pictures, videos, and advertisements of their products on social media platforms. Creative content and regular updates help attract customers and increase brand visibility.

Content marketing is another useful strategy. Entrepreneurs create informative and engaging content such as blogs, product demonstrations, and tutorials. This type of content helps build trust with customers and improves brand reputation.

Email marketing is also used to maintain communication with customers. Entrepreneurs send newsletters, promotional messages, and updates about new products and discounts.

Search engine optimization is another important strategy. By using relevant keywords and quality website content, entrepreneurs can improve their ranking on search engines such as Google. This increases website traffic and helps attract new customers.

These digital marketing strategies help women entrepreneurs expand their businesses and compete in the online marketplace.

## Challenges Faced by Women Entrepreneurs in the Digital Age

Although digital technology offers many opportunities, women entrepreneurs still face several challenges. One of the main challenges is the lack of digital skills. Many women are not familiar with online tools and digital marketing techniques.

Limited access to technology is another issue. In some areas, internet connectivity is poor and digital devices are expensive. This makes it difficult for women to manage online businesses.

Cyber security is also a major concern. Online businesses are exposed to risks such as hacking, fraud, and identity theft. Women entrepreneurs may also face online harassment on social media platforms.

Social and cultural barriers continue to affect women's participation in entrepreneurship. In some communities, traditional beliefs discourage women from starting businesses or working independently.

## Findings and Suggestions

The study shows that digital platforms have created many opportunities for women entrepreneurs. Online platforms allow women to start businesses with low investment and reach a wider audience.

Social media marketing is one of the most widely used strategies among women entrepreneurs. It helps promote products and build strong relationships with customers.

However, the study also identifies several challenges. Many women entrepreneurs lack digital skills and technological resources. Cybersecurity risks and social barriers also affect their participation in digital entrepreneurship.

To overcome these challenges, governments and organizations should provide digital training programs for women. Improving internet access and providing financial support can also encourage women to start businesses. Mentorship programs and entrepreneurship workshops can further help women develop business skills.

## Conclusion

Women entrepreneurship in the digital age has become an important part of economic and social development. Digital platforms and marketing strategies have made it easier for women to start and manage businesses. Social media, e-commerce platforms, and digital payment systems have opened new opportunities for women entrepreneurs.

These technologies have helped many women achieve financial independence and participate actively in economic activities. However, challenges such as limited digital knowledge, technological barriers, and cybersecurity risks still exist.

To promote women entrepreneurship, it is important to improve digital education, increase access to technology, and provide supportive policies. Encouraging women entrepreneurs

will contribute not only to economic growth but also to social empowerment and gender equality.

**References**

*Bhagat, R., & Rajan, S. Digital Marketing Strategies Adopted by Women Entrepreneurs and Its Impact on Business Performance.*

*Rathore, N. Digitalization in Women Entrepreneurship.*

*Windarsari, W. Empowering Women Entrepreneurs Through Digital Marketing.*

# International Collaboration and Market Access in Women Enterprises

**Prof. S.N. Akulwar**
Dept. of Public Administration
Balbhim College, Beed. (Maharashtra)
E-mail : snakulwar@gamil.com

## Introduction

Women entrepreneurship refers to business initiatives that are owned, managed, and controlled by women with the aim of generating income, employment, and social empowerment. In recent decades, women-led enterprises have emerged as a powerful force for economic growth and innovation. These enterprises contribute significantly to poverty reduction, gender equality, and inclusive development across both developed and developing economies. Women entrepreneurs are increasingly entering sectors such as manufacturing, services, technology, and international trade, thereby enhancing their participation in the global economy.International collaboration plays a vital role in strengthening women enterprises by providing access to global knowledge, financial resources, technology, and new markets. Collaboration with foreign partners enables women entrepreneurs to improve product quality, adopt innovative practices, and enhance competitiveness. Partnerships with international institutions, multinational corporations, and global networks also help women overcome local limitations and gain exposure to international standards.

Market access refers to the ability of enterprises to sell their products and services in domestic as well as international markets without facing major barriers. For women entrepreneurs, market access involves access to distribution channels, trade networks, financial resources, and supportive policies. Globalization has opened new opportunities for women-led enterprises through digital platforms, e-commerce, and international trade agreements, allowing them to expand beyond national boundaries. Despite progress, women entrepreneurs continue to face challenges such as limited financial resources, lack of international exposure, cultural barriers, and restricted networking opportunities. The research problem focuses on understanding how international collaboration influences market access for women enterprises. The main objectives of this study are to analyze the role of international partnerships, identify barriers faced by women entrepreneurs in global markets, and suggest policy measures to enhance market participation of women-led enterprises.

## Review of Literature

The literature on women entrepreneurship highlights its importance in promoting inclusive economic growth and social development. Early theoretical foundations emphasize the role of gender equality, empowerment, and access to resources in encouraging women to participate in entrepreneurial activities. Scholars have argued that women entrepreneurs often face structural barriers such as unequal access to finance, education, and training, which affect business performance and growth opportunities. Global studies indicate that women enterprises contribute significantly to employment generation and innovation. Research conducted in developed economies shows that women-led businesses perform effectively when provided with institutional support, training, and financial assistance. Studies in developing countries reveal that socio-cultural barriers, limited property rights, and lack of mobility restrict women's participation in entrepreneurship and international trade. Research on international collaboration suggests that partnerships with global institutions and foreign firms enhance knowledge transfer, skill development, and market competitiveness. Collaboration helps women entrepreneurs adopt new technologies, improve production quality, and access global supply chains. Various studies also emphasize the importance of networking platforms, export promotion councils, and trade associations in facilitating international partnerships. Market access remains a major challenge for women entrepreneurs in developing countries. Literature highlights issues such as limited credit availability, lack of market information, high export costs, and complex legal procedures. Digital trade and e-commerce have emerged as effective tools for overcoming traditional barriers and improving global reach.

Despite growing research, there exists a gap in understanding the combined impact of international collaboration and market access on women enterprises. Limited empirical studies focus on how institutional support and global partnerships jointly influence the growth of women-led businesses. This study attempts to fill this gap by providing an integrated conceptual perspective.

**Conceptual and Theoretical Framework**

The conceptual framework for analyzing international collaboration and market access in women enterprises is based on multiple theoretical perspectives that explain entrepreneurial development, resource mobilization, and institutional support systems.Feminist Entrepreneurship Theory emphasizes the importance of gender equality and

empowerment in business development. This theory explains how social norms, cultural expectations, and gender roles influence entrepreneurial opportunities for women. It highlights the structural inequalities that limit women's access to finance, education, and decision-making power. Feminist theory supports the idea that policy interventions and supportive institutional mechanisms are essential to create equal opportunities for women entrepreneurs in global markets.Network Theory explains the importance of social and professional relationships in business success. According to this theory, entrepreneurs benefit from strong networks that provide access to information, financial resources, and business opportunities. For women entrepreneurs, networking plays a critical role in overcoming barriers such as limited mobility and restricted access to formal institutions. International collaboration enhances network expansion by connecting women entrepreneurs with global partners, suppliers, and customers. Resource-Based View (RBV) focuses on the internal capabilities of enterprises such as skills, knowledge, innovation, and technology. The theory suggests that firms achieve competitive advantage when they effectively utilize unique resources. Women enterprises often face limitations in accessing financial and technological resources. International collaboration helps them gain access to advanced technology, training, and managerial expertise, thereby strengthening their competitive position in international markets. Institutional Theory highlights the role of formal and informal institutions in shaping entrepreneurial activities. Government policies, financial institutions, trade regulations, and cultural norms influence the growth of women enterprises. Supportive institutions such as export promotion agencies, financial organizations, and training centers create a favorable environment for international collaboration and market access.

The conceptual model of this study links international collaboration with market access for women enterprises. International partnerships facilitate knowledge transfer, innovation, and financial support, which improve product quality and competitiveness. Strong institutional frameworks and digital platforms further support women entrepreneurs in accessing global markets. The framework assumes that collaboration enhances entrepreneurial capabilities, which in turn improve market participation and business growth. Thus, the theoretical framework integrates gender perspectives, network relationships, resource availability, and institutional support to explain how international collaboration contributes to improved market access for women-led enterprises.

**International Collaboration in Women Enterprises**

International collaboration refers to partnerships between enterprises across national boundaries for achieving mutual economic benefits. For women entrepreneurs, collaboration provides opportunities to access foreign markets, improve product quality, and adopt innovative business strategies. Global partnerships also help women enterprises gain exposure to international standards and improve competitiveness.

There are various types of international collaboration that support business growth. Joint ventures involve partnership between domestic and foreign firms to share resources, risks, and profits. Women entrepreneurs benefit from joint ventures through access to capital, technology, and global distribution networks. Strategic alliances involve cooperation between enterprises without forming a new legal entity. These alliances enable knowledge sharing, research collaboration, and product development. Export partnerships allow women enterprises to sell their products in international markets through distributors, agents, or online platforms. Such partnerships reduce the risk associated with entering foreign markets. Technology transfer agreements enable women entrepreneurs to adopt advanced production methods and improve product quality. Access to modern technology enhances productivity and competitiveness in global markets. International organizations play an important role in promoting collaboration by providing financial assistance, training, and networking opportunities. Trade agreements between countries also reduce barriers such as tariffs and import restrictions, thereby encouraging cross-border business activities. Regional trade agreements create favorable conditions for women entrepreneurs to expand their business operations. Digital platforms and global networking tools have transformed international collaboration. Online marketplaces, virtual meetings, and digital communication enable women entrepreneurs to connect with global customers and partners at low cost. Social media platforms also help promote products and build international brand identity.

Case studies of successful women enterprises show that international collaboration enhances innovation, market expansion, and financial sustainability. Women entrepreneurs who participate in global networks gain better exposure to international trends and consumer preferences. Collaboration also encourages skill development and confidence among women entrepreneurs. Overall, international collaboration acts as a catalyst for improving market access, increasing competitiveness, and promoting sustainable growth of women-led enterprises in the global economy.

**Market Access for Women Enterprises**

Market access refers to the ability of enterprises to sell their products and services in domestic and international markets under fair and competitive conditions. For women entrepreneurs, market access is an essential factor for business growth, sustainability, and profitability. It involves access to customers, distribution channels, financial services, technology, and institutional support. Market access includes several dimensions such as physical access to markets, digital connectivity, availability of financial resources, and supportive trade policies. Women enterprises often face difficulties in reaching international markets due to lack of market information and limited exposure to global trade practices. Effective market access strategies help women entrepreneurs expand their customer base and improve revenue generation. Financial constraints remain one of the major barriers to market entry. Women entrepreneurs often face difficulties in obtaining loans due to lack of collateral and limited credit history. Cultural and social barriers also affect business expansion. In many societies, women face restrictions related to mobility, decision-making power, and participation in trade activities. Such challenges limit their ability to explore international opportunities.

Legal and regulatory barriers such as complex export procedures, licensing requirements, and trade restrictions also create obstacles for women enterprises. Lack of professional networks further limits access to market information and business partnerships. Limited participation in trade fairs and exhibitions reduces visibility of women-led enterprises. E-commerce and digital trade have emerged as powerful tools for improving market access. Online platforms allow women entrepreneurs to reach global customers without large investments. Digital payment systems and logistics services support cross-border transactions. Government initiatives promoting digital literacy and financial inclusion also help women entrepreneurs adopt online business models. Government schemes and export promotion policies play an important role in supporting women enterprises. Financial subsidies, training programs, and marketing assistance improve business competitiveness. Export promotion councils provide information about international markets and trade regulations.

Improving market access requires coordinated efforts from government agencies, financial institutions, and international organizations. Supportive policies and digital technologies can significantly enhance global participation of women-led enterprises.

**Role of International Institutions and Programs**

International institutions play a crucial role in promoting women entrepreneurship by providing financial support, policy guidance, and capacity building programs. These institutions create a supportive environment that encourages women entrepreneurs to participate in international trade and collaboration. The World Trade Organization promotes fair and transparent trade practices among member countries. It encourages reduction of trade barriers and supports policies that promote inclusive trade. WTO initiatives aim to improve participation of women entrepreneurs in global markets by encouraging equal opportunities and non-discriminatory trade practices. The United Nations and its agencies promote gender equality and economic empowerment of women. Programs related to skill development, financial inclusion, and digital literacy help women entrepreneurs strengthen their business capabilities. International platforms organized by UN agencies encourage networking and knowledge sharing among women entrepreneurs from different countries. The World Bank provides financial and technical support for entrepreneurship development programs. Its initiatives focus on improving access to finance, promoting innovation, and supporting small and medium enterprises. Women entrepreneurs benefit from financial assistance and policy reforms supported by the World Bank.

The International Finance Corporation supports private sector development and encourages investment in women-led enterprises. IFC programs promote financial inclusion, leadership development, and access to international markets. Training programs organized by IFC improve managerial skills and business performance. Various global initiatives focus specifically on women empowerment in business. International conferences, funding programs, and mentorship networks support women entrepreneurs in expanding their business globally. Collaboration between governments and international organizations creates opportunities for women entrepreneurs to participate in global value chains. These institutions play a significant role in reducing gender inequality and promoting inclusive economic growth. Their initiatives help women entrepreneurs overcome financial and institutional barriers and improve market access.

**Policy Implications and Recommendations**

Policy support is essential for promoting international collaboration and improving market access for women enterprises. Governments and policy makers need to create an enabling environment that encourages women entrepreneurs to participate in global trade and business networks. Strengthening international trade policies can reduce barriers faced by women entrepreneurs. Simplification of export procedures, reduction in tariffs, and transparent trade regulations can improve participation of women enterprises in global markets. Policies promoting gender equality in trade agreements can ensure fair opportunities for women entrepreneurs. Financial inclusion strategies are necessary to address the problem of limited access to credit. Special loan schemes, low interest credit facilities, and financial literacy programs can support women entrepreneurs in expanding their businesses. Microfinance institutions and digital banking services also provide opportunities for women to access financial resources. Capacity building programs play a crucial role in improving entrepreneurial skills. Training in business management, digital marketing, export procedures, and financial planning enhances confidence and efficiency of women entrepreneurs. Skill development initiatives help women adapt to changing market conditions. Digital empowerment is an important factor for improving market access. Governments should promote digital literacy programs and encourage adoption of e-commerce platforms. Access to digital infrastructure enables women entrepreneurs to reach global customers and expand their business operations.

Public-private partnerships can provide financial support, mentorship, and networking opportunities. Collaboration between government agencies, private companies, and international organizations can create supportive ecosystems for women entrepreneurship. Industry associations and trade bodies can also provide guidance related to export opportunities. Effective policy implementation requires coordination between various stakeholders. Supportive policies can encourage innovation, increase productivity, and promote sustainable development of women enterprises. A comprehensive policy framework can significantly improve international collaboration and market access for women entrepreneurs.

**Conclusion**

Women entrepreneurship plays a significant role in promoting economic growth, employment generation, and social development. Women-led enterprises contribute to innovation, productivity, and inclusive growth in both developed and developing economies. The study highlights the importance of international collaboration and market access in strengthening women enterprises and improving their global competitiveness. The analysis shows that international collaboration provides access to knowledge, technology, financial resources, and global networks. Partnerships with foreign enterprises and international institutions help women entrepreneurs improve product quality and expand market reach. Collaboration also encourages innovation and skill development, which enhance competitiveness in international markets. Market access is a critical factor influencing the success of women enterprises. Barriers such as limited financial resources, lack of market information, and socio-cultural restrictions affect business growth. Digital platforms and e-commerce have created new opportunities for women entrepreneurs to overcome traditional challenges and participate in global trade. The study contributes to theoretical understanding by integrating feminist theory, network theory, resource-based view, and institutional theory. These theories explain how gender equality, resource availability, networking opportunities, and institutional support influence entrepreneurial success. The conceptual framework highlights the interrelationship between international collaboration and market access.

The findings emphasize the importance of supportive policies, financial inclusion, and capacity building programs. Government initiatives, digital empowerment, and public-private partnerships can significantly improve global participation of women enterprises. International institutions also play an important role in providing financial support and promoting inclusive trade practices. Future research can focus on empirical analysis of women enterprises across different sectors and regions. Comparative studies between developed and developing countries can provide deeper insights into challenges and opportunities. Research can also examine the role of digital technologies in promoting global entrepreneurship among women. Overall, international collaboration and improved market access can empower women entrepreneurs and contribute to sustainable economic development. Promoting women entrepreneurship is essential for achieving gender equality and inclusive globalization.

**References**

1)Anggadwita, G., & Indarti, N. (2024). Women entrepreneurship in the internationalization of SMEs: A bibliometric analysis for future research directions. European Business Review.

2)Aparicio, S., Urbano, D., & Audretsch, D. (2016). Institutional factors, opportunity entrepreneurship and economic growth. Technological Forecasting and Social Change, 102, 45–61.

3)Ratten, V., & Tajeddini, K. (2018). Women's entrepreneurship and internationalization: Patterns and trends. International Journal of Sociology and Social Policy, 38(9/10), 780–793.

4)Jennings, J. E., & Brush, C. G. (2013). Research on women entrepreneurs: Challenges and opportunities. Entrepreneurship Theory and Practice, 37(4), 663–715.

5)De Bruin, A., Brush, C., & Welter, F. (2006). Towards building cumulative knowledge on women's entrepreneurship. Entrepreneurship Theory and Practice, 30(5), 585–593.

6)Noguera, M., Alvarez, C., & Urbano, D. (2013). Socio-cultural factors and female entrepreneurship. International Entrepreneurship and Management Journal, 9(2), 183–197.

7)Anderson, J., Smith, K., Davis, R., Ruiz, K., & Robbins, A. (2025). Women entrepreneurs and access to finance. International Journal of Management, 6(1), 1–10.

8)Pradana, M., Setiawati, C. I., & Elisa, H. P. (2025). Female entrepreneurship: A bibliometric analysis and perspectives. SAGE Open.

9) Sui, S., Morgan, H., & Baum, M. (2022). Internationalization of women-owned firms: Barriers and opportunities. Journal of International Business Studies.

10) Brush, C. G., de Bruin, A., & Welter, F. (2009). A gender-aware framework for women's entrepreneurship. International Journal of Gender and Entrepreneurship, 1(1), 8–24.

# Flying Towards Freedom: Identity, Heritage, and Liberation in Toni Morrison's Song of Solomon

**Dr. Pratik Subhashkumar Sirsat**
Assistant Professor
Department of English
Baburaoji Adaskar Mahavidyalaya, Kaij.
Tq- Kaij,Dist- Beed
Gmail ID:pratikkumarsirsat81@gmail.com
Mobile No. 9260000881

**Abstract**

Toni Morrison's Song of Solomon (1977) is a profound exploration of African American identity, cultural memory, and the journey toward self-realization. This paper examines the protagonist Milkman Dead's psychological and physical journey as a symbolic representation of the African American quest for roots and freedom. Morrison masterfully interweaves myth, folklore, and magical realism to reflect the complexities of race, masculinity, and generational trauma. By analyzing Morrison's narrative techniques, symbolic motifs (especially the motif of flight), and historical references, this paper demonstrates how Song of Solomon affirms the importance of heritage and collective memory in shaping identity and achieving liberation.

**Keywords:**

Toni Morrison, Song of Solomon, African American literature, identity, heritage, flight motif, magical realism, cultural memory, liberation, masculinity

**Introduction**:

Toni Morrison, a Nobel Laureate and one of the most influential voices in American literature, presents in Song of Solomon a rich and multilayered narrative that explores themes of identity, ancestry, and emancipation. Published in 1977, the novel tells the story of Macon "Milkman" Dead III, whose quest to understand his family history leads him on a transformative journey. Morrison's intricate use of folklore, biblical allusions, and African American oral traditions allows her to craft a narrative that is at once personal and political. This paper seeks to investigate how Morrison uses the protagonist's odyssey to represent a broader historical and cultural reclaiming of identity, while also critiquing racial, gender, and societal constraints in 20th-century America.

**Conclusion:**

In Song of Solomon, Morrison offers more than a coming-of-age narrative; she delivers a powerful meditation on the importance of knowing one's roots and the liberating power of self-discovery. Through the symbolic act of flight, Milkman's journey signifies a spiritual and cultural awakening. Morrison's blending of realism and myth enables her to reconstruct African American history through a lens of resilience and hope. Ultimately, the novel reaffirms that healing and liberation are possible through an understanding and acknowledgment of one's heritage, family, and community.

**References:**


- Morrison, Toni. Song of Solomon. Alfred A. Knopf, 1977.
- Mbalia, Doreatha Drummond. Toni Morrison's Developing Class Consciousness. Associated University Presses, 1991.
- Bell, Bernard W. The Afro-American Novel and Its Tradition. University of Massachusetts Press, 1987.
- Bloom, Harold, ed. Toni Morrison's Song of Solomon (Bloom's Modern Critical Interpretations). Chelsea House, 2009.
- O'Reilly, Andrea. "Flight as Freedom in Song of Solomon." Modern Fiction Studies, vol. 39, no. 3-4, 1993, pp. 571–589.
- Christian, Barbara. Black Feminist Criticism: Perspectives on Black Women Writers. Pergamon Press, 1985..

# Women Entrepreneurship in the Age of Digitization (Indian Context)

**Dr Ankush G Padle,**
Associate Professor,
Department of Commerce & Management,
Shri Muktanand College Gangapur
Email: ank.padle@gmail.com

**Abstract:**

The Format of Indian Women Entrepreneurship is different. It starts from the kitchen to the online platforms. The digitization has totally transformed entrepreneurial ecosystem. This research paper discusses about the role of online platforms, use of AI (Artificial Intelligence), digital marketing, affiliate marketing in the context and promotion of women entrepreneurship in the age of AI & Digitization.

Indian women have their own limitation due to traditional and cultural barriers such as socio-culture constraints, support of family & society, their own hesitations, dependency, mobility restriction, lack of knowledge, limited access of capital and resources, digital literacy and Infrastructure etc.. However, many institutes are coming forward to encourage women entrepreneurs through training, funding and managerial support.

However, digitization has changed market place, it has opened-up the opportunities by enabling access of the knowledge through online courses and AI tools, global market, it reduces the cost of promotions as well as brought flexible business operations.

The present study is based on the secondary data collected from academic journals, government reports, and industry publications. It is strived to know the use of Digitization, Use of Ai and in the context of Indian Women Entrepreneurship.

Use of digital platforms, AI and Online Marketing Strategies through social media, e-commerce marketplace, digital payment system and AI tools significantly improves business performances and market reach. As well as Affiliate marketing has come forward as a low-investment model that allows women to generate income through commission-based activities without having inventory.

**Introduction:**

Entrepreneurship is the main drivers to the economic development. Entrepreneurs innovate and generate employment through entrepreneurial activity. It is only remedy to the unemployment and associated threats. Inclusive growth and gender equality has promoted the women entrepreneurship in India. However, the women entrepreneurs, have various challenges such as socio-culture constraints, support of family & society, their own hesitations, dependency, mobility restriction, lack of knowledge, limited access of capital and resources, digital literacy and Infrastructure.

The emerging Digitisation and AI have transformed today's entrepreneurial landscape. The Online digital platform such as online marketplaces, social media and digital payment have reduced entry barriers, because the investment cost to go through online platform is minimal. The global reach through online platform become at figure tip. It provides access to a global customer base, real-time communication and cost-effective marketing tools (Nambisan, 2017).

Digital India and Startup India initiative are the step towards encouraging women participation in the entrepreneurship. The digital India initiative provide digital infrastructure, deliver government services electronically (e-Governance) and promote digital

literacy among citizens. The Startup India Initiatives Encourage startup creation and innovation, provide financial support and incentives and simplify regulatory processes.

The online platform has brought the promotional activities on figure tip through social media platforms. It has become one of the prominent tools to reach to the customer for the branding and customer engagement. It enables local business to reach global such as handicrafts and rural products.

AI allows enabling automation, predictive analytics, and personalized marketing. Hence one can understand and learn make business model and marketing strategies according their need and requirement. while AI enhances business efficiency through automation and data-driven insights (Huang & Rust, 2021).

Marketing strategies like affiliate marketing through social media has becoming trending now a days. It allows women to earn income with minimal investment,

Despite these opportunities, challenges such as digital literacy gaps, infrastructure limitations, and cybersecurity concerns continue to hinder growth.

This study aims to know and understand the role of digital platforms, affiliate marketing, and AI in promoting women entrepreneurship, supported by empirical evidence and case studies.

**Objectives of the Study**

1. To know the role of digital platforms in women entrepreneurship.
2. To understand the digitization in the Indian Women entrepreneurship.

**Research Methodology:**

The present study is mainly based on the secondary data. Which is collected form the online journals, government and institutional reports. The present study also uses primary data such as online newspapers etc.

**Women Entrepreneurship in the Age of Digitatzation:**

The Women Entrepreneurship started from the kitchen to the online platform has significant journey. At the initial stage the business form small-scale activities limited to geographical area has expanded though online platform it also expanded an opportunities such as e-commerce, online education and digital service, e-marketing etc.

Online platforms play a very vital role in enabling entrepreneurship to access global and cross broader marketplace. Online platforms such as social medial facilitate entrepreneurs to promote and brand their product to the customer through customer engagement. Digital payment system allows the receive and pay without going to the bank or to face to face. It has brough revolution in the payment system through simplified financial transactions, improving efficiency. One can pay to the person seating across the border.

Digital marketing strategies such as social media marketing, content marketing, influencer marketing, and SEO (Search Engine Optimization) have enhanced visibility and customer engagement (Chatterjee & Kar, 2020). These strategies are cost-effective and scalable, making them suitable for women entrepreneurs.

Affiliate marketing is one of the emerged entrepreneurial models for home-makers and small-scale entrepreneurs that, allows women to promote product and earn commission seating at their own place without having inventory.

Artificial Intelligence has transformed style of entrepreneurship. AI tools enable personalized marketing, predictive analytics, and automated customer support. These technologies improve decision-making and operational efficiency (Dwivedi et al., 2021).

Despite these benefits, challenges such as digital illiteracy, financial constraints, and cybersecurity risks remain significant barriers. Addressing these challenges is essential for inclusive growth.

**Table 1:**

**Women Entrepreneurship in India**

| Indicator | Data |
|---|---|
| Women-owned enterprises | 13.76% |
| Women-owned MSMEs | 20.37% |
| Women-led businesses | 15.7 million |
| Employment generated | 22–27 million |
| Startups with women directors | 73,000+ |

(Source: Government of India 2024; Kinaracapital 2024)

According to the Government of India, the participation of Indian women entrepreneurs owns approximately **13.76% of total enterprises,** it reflects gradual but limited participation in the entrepreneurship (Government of India 2024). Participation in MSME sector shows relatively higher engagement of women entrepreneurs i.e. own nearly **20.37% of MSMEs.** It contributes significantly to employment generation (Kinaracapital 2024). Collectively, India hosts approximately **15.7 million women-led enterprises,** employing between **22 and 27 million individuals** (Kinaracapital 2024).

**Table 2:**

**Impact of Digital Tools on MSMEs**

| Digital Tool | % Impact on Growth |
|---|---|
| Social media | 53% |
| Digital Payments | 73% |
| E-commerce Platforms | 65% |
| AI Tools | 40% |

(Source: Economic Times 2025; Windarsari 2025)

The above table no. 2 indicates the impact of digital tools on MSMs. Digital transformation has strengthened its ecosystem. A recent survey indicates that **73% of MSMEs experienced business growth due to digital adoption,** particularly through smartphones and digital payment systems (Economic Times 2025). Additionally, the Startup India initiative reports that over **73,000 startups include at least one woman director,** indicating increasing representation in formal entrepreneurship (Government of India 2024).

Despite these advancements, women still constitute only **14–18% of total entrepreneurs,** highlighting persistent gender disparities (Smile Foundation 2026). However, projections suggest that increasing women's participation could generate **150–170 million**

**jobs by 2030,** emphasizing the economic significance of inclusive entrepreneurship (Startup India 2024).

**Conclusion:**

The Digitization has transformed the women Entrepreneurship through online platforms particularly, e-commerce and social media. It is a significant shift towards the inclusive economic development. The digitisation has enabled women entrepreneurs to overcome the traditional and socio-cultural barriers. The digitization has equipped women to run more miles. It has made her to break all the barriers staying at home to reach at global market. It has seen that Digital & AI tools helps to expand business globally, improve customer reach and engagement and enhance business performance. Adoption of Digitization has improved business performance. It not only helps to communicate it also offers self-dependency through online learning. Digitization has opened-up global opportunities to the Indian Women Intrapreneurs. Digital India and Start-up India has positively impacted on the digitisation and encouragement of the women entrepreneurs in India.

However, Indian Women Entrepreneurs faces challenges like, Socio-cultural and traditional barriers, men mindset, digital illiteracy and infrastructure limitations etc.

It is need to have more focused policy towards digital literacy and its inclusion in women entrepreneurial training initiatives. It is also needed to have focus on financial inclusion, and infrastructure development.

**References:**


1. Bhagat, R., Sharma, P., & Kaur, S. (2024). *Digital marketing strategies adopted by women entrepreneurs and its impact on business performance*.
2. Chatterjee, S., & Kar, G. K. (2020). Why do small and medium enterprises use social media marketing and what is the impact: Empirical insights from India. *International Journal of Information Management, 53*, 102103. https://doi.org/10.1016/j.ijinfomgt.2020.102103
3. Davis, F. D. (1989). Perceived usefulness, perceived ease of use, and user acceptance of information technology. *MIS Quarterly, 13*(3), 319–340. https://doi.org/10.2307/249008
4. Dwivedi, Y. K., Ismagilova, E., Hughes, D. L., Carlson, J., Filieri, R., Jacobson, J., Jain, V., Karjaluoto, H., Kefi, H., Krishen, A. S., Kumar, V., Rahman, M. M., Raman, R., Rauschnabel, P. A., Rowley, J., Salo, J., Tran, G. A., & Wang, Y. (2021). Artificial intelligence (AI): Multidisciplinary perspectives on emerging challenges, opportunities, and agenda for research. *International Journal of Information Management, 57*, 101994. https://doi.org/10.1016/j.ijinfomgt.2019.08.002
5. Government of India. (2024). *Women entrepreneurship statistics*. Ministry of Statistics and Programme Implementation. https://www.mospi.gov.in
6. Huang, M.-H., & Rust, R. T. (2021). Artificial intelligence in service. *Journal of Service Research, 24*(1), 3–19. https://doi.org/10.1177/1094670520902266
7. JODAC. (2022). The role and importance of social media on women entrepreneurship: A study with special reference to Chennai city. https://jodac.org

8. Nambisan, S. (2017). Digital entrepreneurship: Toward a digital technology perspective of entrepreneurship. *Entrepreneurship Theory and Practice, 41*(6), 1029–1055. https://doi.org/10.1111/etap.12254
9. Pai, H. A. (2023). *Digital startups and women entrepreneurship*. International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR). https://www.ijrar.com
10. Windarsari, W. R. (2025). *Empowering women entrepreneurs through digital marketing*. Journal of Urban Management and Economic Policy Research. https://malaqbipublisher.com
11. Kinaracapital. 2024. *Financial independence and growth: Impact of women entrepreneurs in India*.
12. Smile Foundation. (2026). *India's women entrepreneurship story*. https://www.smilefoundationindia.org/blog/indias-women-entrepreneurship-story/ Available at: https://kinaracapital.com/financial-independence-and-growth-impact-of-women-entrepreneurs-in-india/

# Role of Government Skim And Polycies Collaboration Or Chalenges For Women Self Employment.

**Varsha M. Jaysingpure**
Balbhim College Beed.

**ABSTRACT:**
Government schemes and policies play acrucial role in promoting women's self-employment by providing financial support,skill development and supportive ecosystem. Here is a clear and structured explanation which is fallowed in my observation.various skims are available for helping the women,s self emporment.

INTRODUCTION

Women,s self-employment is essential for economic growth,gender equality and poverty reduction. However, women often face challenges such as lack of capital, limited
Skills, and social barriers .Government schemes and policies aim to address these issues and empower women to become entrepreneurs. Many schemes provide loans, subsidies,and grants to women entrepreneurs.

OBJECTIVES OF THE STUDY.

To understand the role of government schemes in promoting women self-employment.
To analyze the types of support provided by the Government.
To Identify the impact of these schemes on women empowerment.
To highlight the challenges faced in implementation.

ROLE OF GOVERNMENT SCHEMES IN WOMEN SELF –EMPLOYMENT

There are various skims of Government to give women financial support to stats their small scale business. Some are as fallows-

a) Financial Support-

1. Pradhan Mantri Mudra Yojana (PMMY)—offers collateral-free loans to start small businesses.
2. Stand –up India Scheme-- Provides loans to women for setting up enterprises.
3.Mahila E-Haat- Helps women sell products online.
4.Grands and subsidies for starting small businesses.

Skill Development and Training

Schemes offer training programs to improve skills such as:

1. Entrepreneurship development.
2.Vocational skills (tailoring, food processing, handicrafts)
3.Digital literacy and online business

Government initiatives encourage women to become entrepreneurs by:

a Providing mentorship and guidance.
b. Creating incubation centers
c. Supporting startups
d. Organizing exhibitions and fairs

e.Promote gender equality
f. Increase decision-making power of women
g.Improve their social status and independence.
Economic Independence leads to overall empowerment.

3.Support for Rural Women ,special focus is given to rural women through:-
Self –help groups under National Rural Livelihood Mission.
Promotion of agriculture-based and cottage industries.Tis reduces rural poverty and migration.

CHALLENGES IN IMPLEMENTATION

Despite the benefits, several challenges exist:
1. Lack of awareness about schemes.
2. Complex procedures and documentation
3.Social and cultural barriers
4. Limited access to technology
5. Inadequate infrastructure in rural areas.

CONCLUSION

Government schemes acts as a backbone for women self- employment by providing financial aid,skills, opportunities, and support systems. They not only help women start businesses but also ensure their long term sustainability and empowermrnt. However, challenges like lack of awareness, social barriers,and limited access still exist, which need to be addressed for maximum impact.

REFERENCES

1. Government of India Reports on women.
2.Ministry of Micro, small andMedium Enterprises.
3. Prime Minister's Employment Generation Programme.
4.Ministry of Rural Development. Deendayal antyodaya Yojana National Rural LivelihoodMission.
5.Pradhan Mantri Kaushal vikas Yojana etc.

# A Study of Rural Women Entrepreneurship: Prospects and Socio-Economic Transformation.

**Dr. Bharat Rawan Dahe**
Assistant Professor
Faculty of Commerce
Balbhim Arts, Science and Commerce College, Beed.

**Abstract:**

Women entrepreneurship promotes poverty reduction, job creation, and gender equality, especially in developing economies. Socioeconomic factors like income, education, and cultural norms influence its growth, while barriers such as limited finance and stereotypes hinder progress. This paper examines objectives, challenges, opportunities, and policy needs for sustainable transformation.

Women entrepreneurship has emerged as a important instrument for economic growth, social inclusion, and sustainable development worldwide. As more women engage in entrepreneurial activities, they contribute not only to employment generation and income creation but also to gender equality and social empowerment. This study examines the prospectus of women entrepreneurship and its role in socio-economic transformation. It analyzes the opportunities, challenges, and policy frameworks influencing women-led enterprises. Based on secondary data and analytical review, the findings reveal that women entrepreneurship enhances household welfare, promotes inclusive growth, and reduces poverty. However, barriers such as limited access to finance, socio-cultural constraints, and inadequate institutional support continue to restrict its full potential. The study concludes that strengthening the entrepreneurial ecosystem for women is crucial for achieving long-term socio-economic transformation.

**Keywords:**

Women Entrepreneurship, Socio-Economic Transformation, Gender Equality, Economic Empowerment, Inclusive Growth, Sustainable Development, Women Empowerment

**Introduction:**

Women-led businesses contribute to economic mobility and societal change, yet they represent only 14% of entrepreneurs in contexts like India despite comprising nearly half the population. Global shifts highlight their role in innovation and growth, but persistent gaps in access to resources persist. This study explores prospects for socio-economic impact through entrepreneurship.

Entrepreneurship is widely recognized as a catalyst for economic development and innovation. In recent decades, women entrepreneurship has gained increasing attention as an important driver of inclusive growth and social transformation. Women entrepreneurs are defined as women who initiate, organize, and manage business enterprises while assuming associated risks and responsibilities.

The concept of entrepreneurship as a transformative force was emphasized by economists such as Joseph Schumpeter, who described entrepreneurs as innovators contributing to economic dynamism through creative destruction. In the context of women, entrepreneurship goes beyond economic participation—it becomes a tool for empowerment, independence, and societal change.

Globally, institutions such as the World Bank and United Nations have recognized women entrepreneurship as essential for achieving sustainable development goals, particularly gender equality and poverty reduction. Women-owned enterprises contribute significantly to national GDP, employment generation, and community development. However, despite growing participation, women entrepreneurs face multiple structural, financial, and cultural challenges that limit their business growth.

Socio-economic transformation refers to structural improvements in economic conditions and social systems that enhance quality of life, equity, and productivity. Women entrepreneurship plays a central role in this transformation by increasing household incomes, improving children's education and health outcomes, and strengthening community resilience.

**2. Objectives of the Study:**

The main objectives of this study are:

To examine the concept and growth of women entrepreneurship.

To analyze the role of women entrepreneurs in socio-economic transformation.

To identify opportunities and challenges faced by women entrepreneurs.

**3. Research Methodology:**

This study is based on a descriptive and analytical research design. The research primarily relies on secondary data collected from:

Research journals and academic publications, Government reports and policy documents, Publications of international organizations, Books and entrepreneurship development reports.

Qualitative analysis has been used to interpret trends, challenges, and impacts of women entrepreneurship on socio-economic development. Comparative analysis between developed and developing countries is also incorporated to understand varied contexts and outcomes.

**4. Importance of the Study:**

The study holds significance for the following reasons:

Women entrepreneurship boosts GDP, reduces poverty, and promotes regional balance by mobilizing capital and challenging gender roles. It strengthens household incomes and social empowerment, informing policies for inclusive growth. Studies like this guide targeted support for vulnerable contexts.

Economic Importance: Highlights women entrepreneurship as a source of employment generation and economic diversification.

Social Significance: Demonstrates how women-led enterprises promote gender equality and social empowerment.

Policy Relevance: Provides insights for governments and institutions to design gender-sensitive entrepreneurial policies.

Academic Contribution: Enriches literature on gender studies and development economics.

**Challenges and Opportunities:**

Rural women entrepreneurs suffer from inadequate financial resources and working capital. They lack of access to external funds due to their inability to provide concrete security. Very few women have property in their names. Male members, on whose name most of the family properties exist, usually think it is a big risk financing the ventures run by women. Banks also have a negative attitude while providing finance for women entrepreneurs. The result is women entrepreneurs are forced to rely on their own savings and loans from family friends. The sum of such funds is often negligible leading.

Other Challenges include internal barriers like low self-confidence and skills gaps, plus external ones such as finance access, gender discrimination, and work-life imbalance, Lack of collateral, credit, and financial literacy, Poor access to transportation, energy, and digital tools.

Opportunities arise from government schemes, technological innovation, and networks that enhance sustainability. Collaborative strategies personal, societal, governmental can unlock potential.

**5. Findings:**

**The major findings of the study are as follows:**

Socio-economic factors positively impact income and empowerment, with women entrepreneurs transforming norms and accessing resources. In India, they drive employment and growth despite comprising under 5% of formal businesses. Support programs show promise but need expansion for rural and informal sectors.

**Employment Generation:** Women entrepreneurs create job opportunities, especially for other women, thereby contributing to inclusive employment.

**Income and Poverty Reduction:** Increased participation of women in business improves household income and reduces poverty levels.

**Social Empowerment:** Entrepreneurship enhances women's decision-making power within households and communities.

**Skill Development and Innovation:** Women-led enterprises foster innovation and skill enhancement, particularly in small and medium sectors.

**Challenges Identified:**

Limited access to credit and financial services

Lack of property ownership and collateral security

Socio-cultural challenges and gender bias

Limited access to markets and technology

**Policy Gaps:** Although various support schemes exist, awareness and implementation remain inadequate in many regions.

**Conclusion:**

Women entrepreneurship offers a pathway to India's economic goals and broader transformation by overcoming barriers through policy and education. Strengthening capacities and resources will amplify its role in equality and prosperity. Future efforts must prioritize inclusive ecosystems.

Women entrepreneurship has immense potential to transform economies and societies by promoting inclusive growth and gender equality. It serves as a powerful instrument for socio-economic transformation by generating employment, reducing poverty, and empowering women socially and economically.

However, to fully realize this potential, governments must strengthen institutional support systems, improve access to finance, provide entrepreneurship education, and eliminate socio-

cultural barriers. Encouraging women's participation in digital entrepreneurship and innovation-driven sectors can further enhance economic resilience and sustainable development.

**References:**


1. Schumpeter, J. A. (1934). The Theory of Economic Development. Harvard University Press.
2. Drucker, P. F. (1985). Innovation and Entrepreneurship. Harper & Row.
3. World Bank. (2021). Women, Business and the Law Report.
4. United Nations. (2022). Sustainable Development Goals Report.
5. Z. J., & Audretsch, D. B. (2003). Handbook of Entrepreneurship Research.
6. Narasaiah Lakshmi, M (2004) Globalization and Sustainable Tourism Development, Discovery Publishing House, New Delhi, p-56.

# विविध क्षेत्रों में नारी सहभगिता के बदलते आयाम

**डॉअरूण कुमार .**
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
अभिनवप्रज्ञा स्नातकोत्तर महाविद्यालय चौडगरा फतेहपुर, उ.प्र.

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं की प्रस्थिति अनेकों निषेधों और आदर्शो से निर्धारित होती रही है। बदलते आधुनिक परिवेश में इन भूमिकाओं में अन्तर्द्वन्द्व एक स्वाभाविक घटना है। नवीन प्रौद्योगिकीय मूल्यों और आदर्शो ने महिलाओं की भूमिका में मौलिक परिवर्तन करने को अभिप्रेरित किया है।

स्पष्ट शब्दों में कहा जाय तो आज, जबकि समस्त समाज ''भूमंडलीय अर्थव्यवस्था'' से सम्बद्ध होते जा रहे हैं, ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की अनिवार्यता बढ़ गयी है। रंगनाथ भारद्वाज-, अध्यक्ष, शिक्षा अनुसंधान एवं लिये आवश्यकता है। भारतवर्ष तेजी से ''सरल समाज'' से ''विकसित समाज'' के रूप में परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। ऐसी नवीन परिस्थितियों के उद्भव से भारत के विश्वसमुदाय से समन्वित - सहयोग का दायरा बढ़ता जा रहा है। अतः यह आवश्यक हो गया है कि, भारत ज्ञानविज्ञान से अपने - नागरिकों को परिचित कराये। भारतीय शिक्षाप्रणाली की यह विसंगति कि-, महिलाआंे का सार्वजनिक जीवन से नाममात्र सरोकार होता है। इसलिए उन्हें मात्र घरपरिवार के संचालन के योग्य ही शिक्षा प्राप्त - करना चाहिए। तेजी से बदलाव आ रहा है। आज यह सर्वविदित हो गया हैं कि, जिस समाज के जितने सदस्य शिक्षित होंगे (स्त्री व पुरूष दोनों), उसका उतना ही संतुलित व तीव्र विकास होगा। इस सत्य को सरकार, सामान्य जन और स्वयं महिलाएँ अंगीकृत करने लगी हैं। फलस्वरूप महिला शिक्षा के विकास में तीव्र परिवर्तन परिलक्षित है। इस परिवर्तन की प्रक्रिया को सूचनाक्-रान्ति ने और भी सशक्त बना दिया है। इस रूप में संरचित समाज में महिलाओं के ऊपर सदियों से आरोपित ग्रन्थीय निषेधों का प्रभाव कम होता जा रहा है और ये विभिन्न क्षेत्रों में दृढ़तापूर्वक कदम बढ़ा रही है।

देश की पहली आई0पी0एस0 अधिकारी और मैग्सेसे पुरस्कार विजेता ''किरण बेदी'' का मानना हैं कि, महिला होना एक बड़ी नियामत है और अपने आप में एक दायितव भी। आत्मनिर्भर और जागरूक महिलाएँ सामाजिक परिवर्तन का मूल्यवान माध्यम बन सकती हैं। महिला सशक्तिकरण पर उनका विचार है कि, महिला दिवस समारोह को मनाने के अलावा हमें यह समझना होगा कि, महिलाओं के अधिकार उसी समाज के कर्तव्य हैं जिनमें हम रहते हैं। एक स्वस्थ्य और शिक्षित महिला राष्ट्र के लिए सम्पदा होती है। वह समाज की समृद्धि में उसी प्रकार योगदान करती हैं जैसे एक निरक्षर, निर्धन और अस्वस्थ महिला, कमजोर, कुपोषित ओर उपेक्षित बच्चों है।

गत पांच दशकों में हमने कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण और बहुमुखी उपलब्धियां हासिल की है। इन उपलब्धियों में महिलाओं का योगदान भी कम नहीं है। इस योगदान को देखते हुए साफ है कि, भारतीय नारी ने अपनी परंपरागत छवि को तोड़ समाज में एक नया स्थान बनाया है। आज की नारी पहले की अपेक्षा कहीं अधिक स्वतंत्र है। सामाजिक व रूढ़िवादी मान्यताओं रूपी बेड़ी को उसने काट कर फेंक दिया है। खास बात यह है कि समय के साथसाथ चलते हुए भी उसने अपनी संस्कृति का दामन नहीं छोड़ा। आज भी उसके -

लिए परिवार पहली प्राथमिकता है। इस आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि, भारतीय नारी दमखम के मामले में पुरूषों से काफी आगे हैं। जो व्यावसायिक जिम्मेदारियों के साथरिक जिम्मेदारी का साथ पारिवा- भी सफलतापूर्वक निर्वहन कर रही हैं। मनोरंजन, खेल, राजनीति, व्यापार, चिकित्सा, विज्ञान जैसे क्षेत्र में महिलाएं अपनी उपलब्धियों के झंडे तेजी से गाड़ने में व्यस्त हैं।

इसका यह मतलब कतई नहीं है कि, पहले की भारतीय नारी की अवहेलना की जा रही है या उसे नजरअंदाज किया जा रहा है। देखा जाय तो नींव की मजबूती पर इमारत की बुलन्दी टिकी होती है। यानी भारतीय नारी की नींव ही इतनी मजबूत है कि, वह आज उस पर अपनी सफलताओं की इमारत खड़ी करती जा रही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से ही भारतीय नारी ने अपनी पहचान बनानी शुरू कर दी है। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में उसने रूचि लेनी शुरू की और पहली सफलता उसे शिक्षा के क्षेत्र में मिली जब हंसा मेहता सन् 1949 में बड़ौदा विश्वविद्यालय की पहली महिला कुलपति बनीं। शिक्षा के क्षेत्र में नाम पैा करने के बाद महिलाओं का ध्यान पुरूषों की बपौती माने जाने वाले क्षेत्रों की ओर गया। नतीजतन सन् 1950 में अन्ना राजम् जार्ज ने भारतीय प्रशासनिक सेवा के तहत पहली महिला अधिकारी होने का गौरव प्राप्त किया।

इस तरह भारतीय महिला ने पहली बार पुरूषों को सीधी चुनौती दी। इसके बाद सन् 1951 में प्रेम माथुर ने महिलाओं की 'कोमलांगी' छवि को ध्वस्त किया। वे देश की प्रथम व्यावसायिक पायलट बनीं। इसमें सुनहरे हर्फ जोड़े विजयलक्ष्मी पंडित ने जो संयुक्त राष्ट्र आम सभा की पहली महिला अध्यक्ष चुनी गई। सन् 1953 में इस उपलब्धि को हासिल करने से पूर्व श्रीमती पंडित मास्को मंे भारत की राजदूत भी रह चुकी थीं।

बहादुरी और वीरता के मामले में भी महिलाएं पीछे नहीं रहीं। वीरता प्रदर्शित करने के लिए ग्लोरिया बेरी को सन् 1956 में मरणोपरान्त अशोक चक्र प्रदान किया गया। साहित्य के क्षे में पहली सफलता अमृता प्रीतम को मिली, जब उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए चुना गया।

जहां साहित्य जैसे गूढ़ विषय में महिलाएं अपनी श्रेष्ठता साबित कर रही थीं, वहीं खतरे के काम में भी पीछे नहीं थीं। भारतीय वायु सेना में गीता घोस सन् 1957 में पहली महिला पैराटूपर बनी। यह नहीं सन् 1958 में पीसेना में मेजर जनरलके पद पर आसीन हुई। खतरों से भरे पूरे इन क्षेत्रों में सरस्वती भारतीय .एस. महिलाओं ने जो झंडे गाड़े उसे और ऊंचाई प्रदान की आरती साह ने। आरती ने सन् 1959 में इग्लिश चैनल तैर कर पार किया। उस वक्त आरती अपनी युवावस्था में थी। इसके ठीक दो वर्ष बाद यानी सन् 1961 में मीना साहा ने खेलकूद में उल्लेखनीय प्रदर्शन के बलबूत अर्जुन पुरस्कार ग्रहण किया।

सन् 1963 में महिलाओं ने राजनीति के क्षेत्र में अपना वर्चस्व सिद्ध किया। सुचेता कृपलानी देश के उŸार प्रदेश पहली महिला मुख्यमंत्री बनीं। सन् 1966 में एसयुक्त राष्ट्र आम सभा सुब्बालक्ष्मी ने सं .एस. में शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत कर भारतीय महिलाओं की उपलब्धि में चार चांद लगा दिए। खूबसूरती में तो भारतीय महिलाओं का कोई मुकाबला रहा ही नहीं है। इसके सिद्ध किया रीता फारिया ने सन् 1966 में, जब उन्होंने मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता जीती। ग्लैमर की दुनिया में भारतीय महिलाओं के आगाज के बाद मील का पत्थर स्थापित किया नर्गिस दŸा ने। सन् 1968 में उन्हें फिल्म 'रात और दिन' के दिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके ठीक एक वर्ष बाद सन् 1969 में देविका रानी को दादा

साहब फाल्के पुरस्कार प्रदान किया गया। सन् 1970 में इसी क्रम में नाम जोड़ा केटी मिर्जा ने जो देश की प्रथम महिला प्लेबॉय बनी थीं।

सन् 1971 में श्रीमती इंदिरा गांधी 'भारत रत्न' पाने वाली प्रथम भारतीय महिला बनीं। यह वह दशक था जब महिलाओं ने पुरूषों के वर्चस्व को बिल्कुल ध्वस्त कर दिया था। सन् 1972 में किरण बेदी भारतीय पुलिस सेवा की पहली महिला अधिकारी बनीं। इसी वर्ष ईला भट्ट ने श्रमिक संगठन का नेतृत्व संभाला। कालीकट, उड़ीसा में सन् 1973 में देश का महिला पुलिस थाना बना और पद्मिनी को इसका प्रभारी बनाया गया। आशापूर्णा देवी को सन् 1976 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

खेल के क्षेत्र में भी महिलाएं अपनी क्षमता का भरपूर प्रदर्शन करने लगी थीं और उसकी शुरूआत हुई थी क्रिकेट से। चन्द्रा नायडू सन् 1977 में पहली महिला कमेन्टेटर बनीं। इसके बाद सन् 1978 में कमलजी संधु ने एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक प्राप्त कर भारत का नाम दुनिया भर में रौशन किया। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त नोबेल पुरस्कार मदर टेरेसा को सन् 1979 में मिला। इसी साल सुशीला चौरसिया देश की पहली पोस्ट मास्टर जनरल नियुक्त हुई।

अब जैसे फिल्म के क्षेत्र में ऑस्कर सबसे बड़ा पुरस्कार है। इसे पाने की तमन्ना दुनिया के हर कलाकार में होती है, लेकिन इसे पाने का और पहला भारतीय होने का गौरव प्राप्त है भानू अथ्थैया को। सन् 1984 को उन्हें कास्ट्यूम डिजायनिंग के वर्ग में ऑस्कर के लिए चुना गया। इस सबसे ऊंचे पुरस्कार के साथ ही दुनिया की सबसे ऊंची चोटी पर पहली भारतीय महिला बछेन्द्री पाल ने इसी वर्ष तिरंगा लहराया। तो स्वर्ण परी पीऊषा ने ओलम्पिक फाइनल में प्रवेश किया। .टी. यह भारत, उसमें भी भारतीय महिलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर के गले के दीवाने दुनिया भर में हैं। सबसे ज्यादा गाना गाने वाली गायिका के रूप में लता को सन् 1984 में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में शामिल किया गया। चिकित्सा के क्षेत्र में भी भारतीय महिला पीछे नहीं रही। सन् 1986 में इंदिरा हिन्दूजा ने प्रथम टेस्ट ट्यूब बेबी को जन्म देकर निःसंतान दंपत्तियों को आशा की एक नई किरण दिखाई। इस वर्ष देख की दुनिया में दो भारतीय महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। भाग्यश्री साठे ने ग्रांड मास्टर खिताब जीता। तो आयशा कैप्टन महिला जॉकी बनीं। (घुड़सवार)

सलाम बॉम्बे और कामसूत्र जैसी बोल्ड फिल्म बनाने वाली मीरा नायर पहली भारतीय महिला निर्देशक थी, जिन्हें सन् 1988 में फिल्म समारोह में श्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार दिया गया। रोमांच और खतरों से जूझते हुए उज्जवला पाटिल ने इसी वर्ष नौका से विश्व भ्रमण पूरा किया। यही नहीं इसके बाद जिब्राल्टर खाड़ी को पार करने वाली आरती प्रधान पहली महिला बनीं। महिलाओं को हमेशा से ही न्याय का प्रतीक माना जाता है। इसे सिद्ध किया मीरा साहिब फातिमा बीबी ने। सन् 1969 में वे उच्चतम न्यायालय की न्यायाधीश नियुक्त हुयीं। व्यावसायिक कार्यो के क्षेत्र में सन् 1984 को दो महŸवपूर्ण बातों के लिए भी याद किया जाएगा। निजी क्षेत्र की कम्पनी हिन्दुस्तान टेलीप्रिंटर लिको लक्ष्मी मेनन के रूप में पहली महिला . अध्यक्ष मिली। दूसरी तरफ जसबीर कौर नं भारी वाहन वर्ग में ट्रक चलाने का लाइसेंस प्राप्त कर देश की पहली महिला ट्रक ड्रायवर बनने का गौरव हासिल किया।

इस सदी के अंतिम दशक की शुरूआत से ही भारत में महिलाओं के बीच जागृति तेजी से बढ़ने लगी थी। उदारीकरण की हवा ने तो महिलाओं के मानों पंख लगा दिए। इससे प्रभावित होकर सन् 1991 में सबीना ओबराय ने मुम्बई में सिर्फ महिलाओं के लिए क्लब शुरू किया। राज्य सभा को पहली महिला महामंत्री वी रामादेवी के रूप में सन् .एस.1993 में मिली। इसके बाद सन् 1994 ने तो भारतीय महिलाओं की सारी बेड़ियां ही काट डाली। सुष्मिता सेन ने मिस यूनिवर्स का खिताब जीत दुनिया भर में भारतीय सुदंरता का परचम फहराया।

अब भारतीय महिला पुरूषों को भी पीछे छोड़ने लगी थी जैसे कि, हरिता कौर द्ओल ने किया। लड़ाकू विमान उड़ाना सिर्फ पुरूषों की वश की बात मानी जाती थी। हरिता ने सन् 1994 में इस परिपाटी को ध्वस्त कर देश की पहली महिला पायलट बनने का गौरव हासिल किया। इसी तरह आज शोभा डे किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। वे पहली भारतीय महिला लेखक हैं जिनकी किताब इंग्लैण्ड के इण्डो अफ्रीका स्कूल ऑफ स्टडीज में शामिल की गयी। कल्पना चावला ने बीते वर्ष अंतरिक्ष विमानन क्षेत्र मंे नाम किया। नासा से प्रथम भारतीय स्नातक होने का गौरव प्राप्त करने वाली कल्पना अमेरिकी शटल प्रोग्राम मंे विशेषज्ञ के तौर पर शामिल रहीं। धर्म के क्षेत्र में भी महिलाएं पीछे नहीं रहीं। कटकशमा सन् 1996 में केरल की 'गुड सेमरिटन इवानजेल्किाल ल्यूथेरन गिरजाघर'की पादरी नियुक्त हुई।

इस वर्ष अरूंधति राय और मंजूलापद्मनामन ने भारत का नाम रौशन किया। अरूंधति अपने / ल थिंग्स के चलते ब्रिटेनउपन्यास द गॉड ऑफ स्मा, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, कनाडा, दअफ्रीका की बेस्ट . सेलर सूची के प्रथम सोपान पर कब्जा जमाए बैठी हैं। इधर मंजुला ने अपने नाटक हार्वेस्ट के लिए ओनेसिस एवार्ड पाया है। वर्तमान में भी भारतीय महिलाएँ समाज सेवा, कारपोरेट जगत, खेल,

संदर्भ ग्रन्थ सूची-:


1. भारद्वाज, रंगनाथ :''भूमंडलीय अर्थव्यवस्था में ज्ञान'' योजना, फरवरी 2006, पृ0 7.3.
2. बेदी, किरण :''महिला सशक्तिकरण कुछ :विचार'', योजना, नई दिल्ली-01अक्टूबर, 2008,पृ0 15.
3. पंवार, मंजू :''आरक्षित वर्ग और पंचायतेंसहभागिता के अनुभव :'', कुरूक्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्रएवं रोजगार मंत्रालय, नई दिल्ली, अप्रैल, 1966, पृ0 37-38.
4. ग्रोवर, इंदु और अग्रवाल, दीप्ती :'पंचायत और महिलाएँ', कुरूक्षेत्र, अप्रैल, 1999, पृ0 45.
5. सोनी, विविन्द्र कुमारविका प्रभाग-शोधार्थी महिला एवं बाल :, डॉ0 बाबा साहेब अम्बेडकर राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान संस्थान, महू (मध्य प्रदेश), कुरूक्षेत्र, फरवरी 2000, पृ0 29-30.
6. पंवार, मंजू :'महिला और पंचायत': पांच वर्ष का आकलन', कुरूक्षेत्र, अप्रैल, 1998, पु0 35-36.
7. सिसोदिया डॉ)0) यतीन्द्र सिंह :'लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण और महिलाओं का सशक्तिकरण', कुरूक्षेत्र, अप्रैल 1998, पृ0 51-52.

8. पांडा डॉ)0) स्नेहलता :'पंचायत मंे महिलाओं की भूमिका', योजना, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली, अक्टूबर 1998, पृ0 17.

9. पिल्लै, सुधा :'पंचायती राज द्वारा अधिकार सम्पन्नता', योजना, अगस्त 2001, पृ0 35-36.

# कामकाजी महिलायें एवं समस्यायें एक अध्ययन-

डॉकलावती गाडरिया .
सहायक प्राध्यापक,राजनीति विज्ञान
नेताजी सुभाषचंद्र बोस शासकीय स्नातक महाविद्यालय, इछावर,सीहोर, म.प्र.

औधोगिक क्रांति के प्रभाव से महिलाओं को घर से बाहर धंधे के अधिक अवसर मिलने लगे मालिकों को महिला श्रम सस्ते दर पर उपलब्ध होने के कारण महिलामजदूरों की माँग बढ़ती गई और - उन्नीसवीं सदी की समाप्ति के बाद सब देशों मेंा श्रम जीवी वर्ग में महिलाओं के स्थान का महत्व बढ़ता गया। मीडिया के सर्वेक्षण के अनुसार अमेरिका में 33 प्रतिशत जर्मन फेडरल रिपब्लिक में 36 प्रतिशत, पोलैंड में 44.8 प्रतिशत, रूस में 45 प्रतिशत तथा भारत में 27 प्रतिशत महिलायें किसी न किसी रूप में कार्यरत है।' भारत में वर्तमान सदी में आर्थिक क्षेत्र, व्यवसाय एवं धंधो में महिलाओं का स्थान महत्वपूर्ण बनता जा रहा हैं। अगर गौर करें तो उन्नीसवीं सदी से ही महिलाओं का रोजगार में आना कुछ कारणों से हुआ। निम्न वर्ग की महिलाओं को तो आर्थिक मंहगाई के कारण विवश होकर मजदूरी करनी पड़ती थी। उन्नीसवीं सदी में महिलाओं से खेतांे में जोतने निराने का कार्य और पत्थर की खानों तथा चाय के बगीचों में काम करवाया जाता था, किन्तु मध्यमवर्गीय महिला व्यवसाय में काफी देर से आई। महिला शिक्षा को गति प्रदान करने के लिये और महिलाओं को आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़ा करने के लिये सबसे पहले शिक्षक के कार्य का द्वारा खुला। जैसेओं की व्यावसायिक वैसे महिला-जैसे आर्थिक विकास होता गया वैसे- गतिविधियों भी बढ़ती गई। शिक्षा के प्रचार के कारण प्रशिक्षणयुक्त व्यवसायों में महिलाओं की प्रवेश संख्या उत्तरोत्तर बढ़ने लगी।

1920 के बाद तो व्यावसायिक क्षेत्र में महिलायें अपना स्थान बनाने लगीं। दूसरी विश्व युद्ध के बादसे केवल एक व्यक्ति की आंय से जीवन निर्वाह कठिन हो गया। अतः मध्यमवर्गीय महिला श्रमबाजार में आने लगी। - विशेषतः शिक्षित, मध्यम व उच्च वर्ग की महिला बहुत आघात पहुंचा। वर्तमान समय मे महिलाओं ने प्रत्येक उस क्षेत्र तक अपना स्थान बना लिया हैं जहाँ तक कभी सिर्फ पुरूष वर्चस्व हुआ करता था। आज धरती से लेकर चाँद तक महिलाओं ने अपना परचम फैलाया है। महिलाओं की भागीदारी सर्वाधिक व पुरूषों से अधिक सिर्फ कृषि में हैं बाकी उच्च श्रेणी में उसकी भागीदारी अत्यधिक कम है अतः आवश्यकता है कि महिलाओं की रोजगार में भागीदारी को प्रत्येक क्षेत्र में अधिक करने की ओर इसका सबसे महत्वपूर्ण उपाय है उच्च शिक्षा जो कि महिलाओं के कार्य स्तर श्रेणी का आधार है। सरकारी स्तर पर भी महिलाओं की गतिविधियों की ओर हमारा ध्यान जाता है, जिस समाज में कुछ समय पूर्व निर्धारित समय के बाद घर से बाहर निकलने पर प्रतिबंध था तथा बालकों की देखभाल तथा गृहस्थी व परिजनों की देखरेख तक ही महिलाओं का कार्य क्षेत्र सीमित था, वैसे पृष्ठभूमि में विभिन्न धंधों में महिलाओं को कार्य करते देख आश्चर्य व गर्व दोनों होता हैं। किन धंधों मे महिलायें कितनी प्रतिशत कार्यरत हैं इसका लेखाजोखा देखने - होता है कि अधिकाँश महिलायें अकुशल श्रमिक के रूप में ही कार्यरत दिखाई पड़ती हैं। इससे यह से मालूम निष्कर्ष निकलता है कि महिलाओं की शिक्षा और प्रशिक्षण की मात्रा इतनी कम हे कि उच्च पद की नौकरी बहुत कम महिलाये प्राप्त कर सकती है। इसका एक गंभीर परिणाम यह दिखाई पड़ता है कि जैसेजैसे -

वैसे महिला कर्मचारियों व श्रमिकों की मांग घटती जा रही है और महिला -यंत्रीकरण बढ़ता जा रहा है वैसे बेकारों की वृद्धि होती जा रही है।

एक और परिस्थिति उत्पन्न होती हैउन उत्पादन क्षेत्रों में जैसे कृषि मजदूर -, खान व गृहउद्योग में महिलाये - काम करती हैं, उन उद्योगों में कार्य पद्धति, वातावरण इत्यादि खतरनाक व अपरिभाषित हैं। इस प्रकार हम कामकाजी महिलाओं के संक्षिप्त अध्ययन से ज्ञात कर पाते हैं कि महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिये अभी अत्यधिक प्रयासों की आवश्यकता है। इसमें भी सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि आर्थिक क्षेत्र में महिलायें अधिकांशतः किसी न किसी मजबूरी में ही आती है। अगर किसी महिला को पूर्ण सुविधायें घर में नौकरचाकर-, धन, अच्छा परिवार व अन्य सब सुविधाओं के साथसाथ अपनी इच्छा से जीवन व्यतीत - अपना खाली समय क्लब में या करने की आजादी हो तो वो कोई नौकरी या व्यवसाय करने की अपेक्षा शापिंग में व्यतीत करना पसंद करेगी।

नौकरी धंधे करने वाली महिलाओं के विषय में भारत तथा अन्य देशों में किये गये अध्ययनों से मालूम पड़ता है कि अधिकांश महिलायें धंधों को मौज मस्ती की वजह से नहीं वरन् आर्थिक तंगी के कारण अपनाती है। आर्थिक दबाव के कारण काम धंधे की ओर अग्रसर हैं, केवल 11 प्रतिषत महिलायें सिर्फ इसलियें कार्य करती हैं कि वे आर्थिक स्वावलम्बन चाहती है, समय का सदुपयोग तथा धंधे को इच्छा से कार्य करती है। उन महिलाओं का है जो कि किसी ना किसी मजबुरी में आर्थिक तंगी के कारण सिर्फ धनोपार्जन हेतु कार्यक्षेत्र में प्रवेश की हैं। इन महिलाओं का कहना था कि अगर इनके पास सब सुख सुविधायें होतीं तो ये भी आराम से घर पर रहकर सुखी जीवन व्यतीत करती ना कि बाहर निकलकर घर व बाहर दोनों के बीच में पिसती, इनका कार्य करने का उद्देश्य सिर्फ धनोपार्जन है इनमें से अधिकांश महिलायें निम्न व मध्यम वर्ग के कार्यों में संलग्न हैं सबसे कम प्रतिशत 9 प्रतिषत उन महिलाओं का है जो सिर्फ अपनी योग्यता का लाभ उठाने हेतु कार्य कर रही है। उनके साक्षात्कार के माध्यम से ज्ञात हुआ कि ये वे महिलायें है जो पूर्णतः शिक्षित, प्रशिक्षण प्राप्त वे महिलायें हैं जिनके पास सब सुविधायें है परन्तु ये अपनी शिक्षा को व अपनी योग्यता की व्यर्थ नहीं होने देना चाहती है इनमें से कुद महिलाये तो परिवार का विरोध करके कार्यक्षेत्र में आई है। इनके कार्य करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि ये अपनी शिक्षा व अपनी योग्यता के आधार पर कार्य चाहती है इन्हें अपनी योग्यता से कम स्तर का कार्य पसन्द नहीं है ना ही ये निम्न स्तर का कार्य पसन्द करती है।

बाकी 19 प्रतिषत महिलायें सिर्फ इसलिये धनोपार्जन के क्षेत्र में आई हैं क्योंकि उन्हें स्वावलम्बी होना पसन्द है इन महिलाओं का मानना है कि जब तक कोई भी महिला आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं है वो परिवार या समाज में बराबरी का स्थान नही पा सकती है तथा महिलाओं के सशक्तिकरण के लिये वो आर्थिक निर्भरता को आवश्यक मानती हैं। इन महिलाओं में उच्च शिक्षित व निम्न शिक्षित सब तरह की महिलायें है इनके लिये ये आवश्यक नहीं कि कार्य उच्च वर्ग का ही हो बस इन्हें स्वंय आत्मनिर्भर होना है ये इसलिये कार्य क्षेत्र में उतरी है। अन्य 12 प्रतिषत महिलायें वों महिलाये हैं जो सिर्फ अपने समय को व्यतीत करने हेतु कार्य करती है इन महिलाओं के या तो बच्चे बड़े होकर हॉस्टल आदि में रह रहे है या किसी कारणवश परिवार में हैं परन्तु परिवार का वातावरण बोझिल है व यह अपना ज्यादा समय घर से बाहर ही बिताना

चाहती है। भारत में कामकाजी स्त्रियों बहुत ही गरीब हैं या वे आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से काम करती हैं, जबकि बहुत अमीर स्त्रियों अपनी बौद्धिकता की भूख मिटाने के लिये और आत्मसंतोष के लिये काम करती है। शायद कहीं ना कहीं महिलाओं के कार्य करने का कारण भी इस तथ्य का कारण हैं कि अधिकांशतः महिलायें निम्न व माध्यम स्तर की कार्यों द्वारा आर्थिक जरूरतों की पूर्ति कर रही हैं तथा देश में बहुत कम महिलायें उच्च पदों पर आसीन है। ''मास्टर कार्ड वर्ल्डमांइड वुमन इंडेक्स'' के मुताबिक भारत में प्रबंधक के तौर पर काम करने वाली महिलाओं का पुरूषों की तुलना में अनुपात मात्र 12 ही है। यानि प्रत्येक 100 पुरूषों की तुलना में मात्र 12 महिलायें ही बड़ें ओहदों पर है जबकि चीन में यह अनुपात 75 है।

विभिन्न देशों के सांख्यिकी ब्यूरो द्वारा लिये गये आंकड़ों के मुताबिक सिंगापुर में यह अनुपात सबसे ज्यादा 100 पुरूषों पर 86 महिलायें प्रबन्धक है। उच्च आय वाली महिलाओं में भी सिंगापुर सबसे आगे है यहाँ 90 महिलायें 100 पुरूषों की तुलना में मध्यम से अधिक आय वाली हैं जबकि भारत में उच्च आय वाली महिलाओं का यह अनुपात 22 फीसदी है। परन्तु जिस तेजी से देश में औद्योगिकरण व महिला साक्षरता में वृद्धि हो रही है बड़े अहिवों पर महिलाओं की संख्या व भारत में कार्योजित महिलाओं की संख्या बढ़ेगी पैसा विश्वास किया जा सकता है।

कामकाजी महिलाओं की संख्या में पुरुषों की तुलना में कमी का सबसे महत्वपूर्ण कारण उनके जीवन की समस्यायें हैं अगर कहा जाये कि कार्योजित महिलाओं का जीवन काटो से भरा होता है तो इसमें कुछ भी गलत नहीं होगा। कार्योजित स्त्री के जीवन में अनगिनत समस्यायें होतीं हैं जिनका सामना करते हुये कार्योनजन के क्षेत्र में डटे रहना शायद प्रत्येक स्त्री के वश की बात नहीं है।

कामकाजी महिलाओं की समस्यायें-:

गृहस्थी से यान, यान से राष्ट्रर्वाहन करने वाली परिचालन तक के कठिन दायित्वों का सफलतापूर्वक नि- नारी ने आर्थिक स्वतंत्रता अर्जित करते हुये असंख्य तनावों और संघर्षों को अपने दामन में समेट रखा है। ऐसा प्रतीत होता है कि शारीरिक यातना की स्थूल बेड़ियों से निकलकर वह मानसिक क्लेश की सूक्ष्म बेड़ियों में जकड़ गयी है क्योंकि सामाजिक संस्थायें प्रगति व बदलाव के डंके पीटने के बावजूद आज भी यथावत् है सैद्धानितक समानता एवं व्यावहारिक असमानता के अन्तर को कामकाजी महिला अधिक गहराई से समझ रही है, अपितु उससे उतनी ही सीमा तक पीड़ित भी है। आज के संक्रमण कालीन युग के मध्य खड़ी कामकाजी महिला परिस्थितियों के दबाव मे कितना टूट रही है, अर्जक के रूप में उसकी समस्यायें पूरूषों से कई गुना अधिक है। महिला अत्याचार के कारण अधिकांश महिलाये श्रम का कार्य कर रही है। भारत में आधी संख्या में महिला श्रमशील हैं। 10 फीसदी शहरी महिलायें राष्ट्र की उन्नति में योगदान दे रही हैं। ज्ञान इतिहास के युग मे स्त्रियों ने अपनी मेहनत और कौशल के बल बूते पर हमारी गौरवशाली- 'परम्परा को न केवल संरक्षण दिया वरन उसे पूर्णतया विकसित भी किया। उदाहरण के लिये उनकी मेहनत के बल पर देश हथकरघे और हस्तशिल्प के विभिन्न उत्पादित वस्तुओं को भेजकर आर्थिक विकास की दिशा में आशातीत वृद्धि कर रहा है तथा इस प्रकार विदेशी मुद्रा के अर्जन को बढ़ावा भी दे रहा है, ऐसी स्थिति में एक बिडम्बना ही कहा जायेगा कि कामकाजी महिलाओं की संख्या में पुरुषों की तुलना में कमी का सबसे महत्वपूर्ण कारण उनके जीवन की समस्यायें हैं अगर कहा जाये कि कार्योजित महिलाओं का जीवन काटो से भरा होता है तो इसमें कुछ भी गलत नहीं होगा। कार्योजित स्त्री के जीवन में अनगिनत समस्यायें

होतीं हैं जिनका सामना करते हुये कार्योनजन के क्षेत्र में डटे रहना शायद प्रत्येक स्त्री के वश की बात नहीं है। आज के संक्रमण कालीन युग के मध्य खड़ी कामकाजी महिला परिस्थितियों के दबाव में कितना टूट रही हैं, अर्जक के रूप में उसकी समस्यायें पुरूषों से कई गुुना अधिक हैं 1। जो उनके जीवन को अस्तव्यस्त - ती हैं। किये रहती है और शायद जिनसे एक निम्न कार्य से लेकर उच्च कार्य वर्ग तक की महिला सामना कर कामकाजी स्त्री पद अपने श्रम द्वारा आय अर्जित करने वाले एक छोटे विशेषकर शहरी वर्ग के लिए ही रूड़ होकर रह गया। कार्यशील महिलाओं को हम तीन श्रेणीयों में रख सकते है .1. घरेलू कार्यशील महिलाए, 2. नौकरी पेशा महिलाए, 3. श्रमिक महिलाए इत्यादि।

इनके कार्यों को भी तीन वर्गों में रख सकते है -01. निम्नवर्ग, 2. मध्यम वर्ग, 3. उच्च वर्ग के कार्य, निम्नवर्ग के कार्यों के अन्तर्गत निम्न आय वाले, मध्यम वर्ग के कार्यों के अन्तर्गत मध्यम आय वाले तथा उच्च वर्ग के कार्यों के अन्तर्गत उच्च आय के कार्यों को रखा जा सकता है। कार्योजित महिला चाहे किसी भी वर्ग की हो या किसी भी श्रेणी की परन्तु समस्याएँ सबके साथ एक समान है इनके मार्ग में आने वाली समस्याओ को हम इस प्रकार से रखते है कि समस्त समस्याओं का विवरण किया जा सके। इनके मार्ग में आने वाली समस्याये प्रायः निन्नलिखित हैं -

01. शिक्षा -:

हमारे देश में कार्योजित महिलाओ का एक चौथाई भाग ही उच्च शिक्षा ग्रहण किये है। कार्योजित महिलाओं के मार्ग में आने वाले अधिकांश समस्याऐं अल्पशिक्षित या अशिक्षित महिलाओं के साथ ही होती है। ‘‘योजना आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार निम्न वर्ग की अधिकतर कामकाजी महिलाएं अशिक्षित या अल्पशिक्षित होती है काम करना इस वर्ग की महिलाओं की मजबूरी होती है। अगर हमारे देश में लड़कियों को भी शिक्षा पर लड़कों के समान बल दिया जाय व उन्हें शिक्षा की सुविधाएं उपलब्ध करायी जाय तो वह भी अधिक ज्ञान अर्जित कर उच्च पदो पर आसीन होगी तथा अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होगी एक घरेलू महिला या कामकाजी महिला दोनो के लिए ही शिक्षा अति आवश्यक है।

1. मजदूरी में असमानताः-

भारतीय संविधन में महिलाओं एवं पुरुषों को संविधान के अनुच्छेद 16 (2) के अर्न्तगत लिंग के आधार पर कोई नागरिक किसी नौकरी के लिए अपात्र नही समझा जाएगा और नही उसके साथ भेदभाव किया जाएगा। समान पारिश्रमिक अधिनियम 1976 के अर्न्तगत महिला श्रमिकों को समान पारिश्रमिक के भुगतान का प्रावधान है। इसमें विभेद करना दण्डनीय अपराध है, परन्तु व्यावहारिक रूप से इस अधिनियम का पालन कही नही किया जाता है। समान कार्य में महिलापुरुष की मजदूरी में भी अन्तर पाया जाता हैं महिलाओं को - शोषण सबसे अधिक बीड़ी एवं अन्य लघु कुटीर घरेलू उद्योग, दिहाड़ी कार्यों में हो रहा है। न्यूनतम मजदूरी पारिश्रमिक अधिनियम के अनुसार इन श्रमिकों को जो राशि दिए जाने का प्रावधान है वह इन महिला श्रमिकों को नही दिया जाता केवल बामुष्किल 100 रुपये ही दिए जाते है। पत्थर तोड़ने, पीसने, क्रेशर मशीन पर कार्य आदि कार्यो मे भी महिला श्रमिकों का शोषण हो रहा हैं। भेदभावपूर्ण कानून के कारण भी महिलाएं कार्योजन के क्षेत्र में पीछे रह जाती हैं 2।

02. श्रम का शोषण ः-

कई कार्यों में महिलाओं के कार्य के घंटे निश्चित नही होते है। श्रम कानून के अन्तर्गत किसी श्रमिक से 8 घण्टे काम लिया जा सकता है। यदि श्रमिक 8 घण्टे काम करता है तो वह मजदूरी कहलाती है लेकिन 8 घण्टे से ज्यादा काम बिना अतिरिक्त पारिश्रमिक दिए लिया जाता है तो वह शोषण है। 10 घण्टे से अधिक काम बिना अतिरिक्त पारिश्रमिक दिए लिया जाता है तो दोहन कहलाता है। हमारे देश में श्रमिक वर्ग शोषण दोहन का शिकार है। इनका पूर्ण रूप से शोषण किया जाता है। इसके अलावा रात्रिकालीन ड्यूटी में महिलाओं को लेकर सुरक्षा भी एक अहम मुद्दा बन कर उभरा है। सुरक्षा के भय से भी महिलायें अपने परिवार के सदस्यों के साथ ही रहना पसंद करती हैं इस कारण उभी उनके आर्थिक विकास में बाधा आ रही है।

03. परिवारिक समस्याए ः-

श्रम करने वाली कामकाजी महिलाओं को आर्थिक दृष्टि से कमजोर होने के कारण श्रम करने के लिए विवश होना पड़ता है जिस कारण से उनको घर की जिम्मेवारी के कारण ताने सुनने पड़ते हैं। पति हमेषा चाहते हैं कि पत्नियां ही घरेलू जिम्मेवारी का सामना करें। महानगरों के रहवास की समस्या अत्यंत जटिल है 3।

कुल मिलाकर देखा जा सकता है कि महिला द्वारा श्रम के क्षेत्र में आने का जो मूलभूत कारण आर्थिक - बाने में हो रहे बदलाव ने भी -अभाव था वहीं आज भी प्रभाव डाले हुए है। इसके अलावा सामाजिक ताने स्थिति को कमजोर किया है। आज बच्चों की परवरिष की बात हो या अन्य जिम्मेवारी जैसे परिजनों की गह हेल्पर के रूपसुश्रुवा सभी ज-सेवा में महिलाओं से आषा किया जाता है। ऐसी स्थिति में उनके लिए श्रम का भाग बन कर अपने कौषल को बढ़ाने की जगह उनका स्वास्थ्य एवं सौष्ठव भी खराब होता जा रहा है। कई जगह देखा गया है कि पत्नियों की कमाई को पुरूष वर्ग नषाखोरी में खराब कर देता है। इस दिषा में सिविल सोसाइटी, गैर सरकारी संस्थाओं को आगे आने की जरूरत है। तभी महिला सषक्तिकरण के उद्देष्यों की प्राप्ति की मंषा पूरी हो सकती है। धीरेधीरे इस दिषा में सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे - हैं।

संदर्भ सूची

01. कृति अग्रवाल, कामकाजी महिलायें व समस्यायें प .217

02. मनोज सुजाता, कानून और लिंग भेद रहित न्याय, योजना 2001

03. कृष्णकांत सुमन, इक्कीसवीं सदी की नारी, दिल्ली 2001

04. अन्यअन्यादि स्रोत-

5. क्मेंपए छममतं ंदक ज्ञतपींदंतंरए डण् रू ॅवउमद ंदक ैवबपमजल पद प्दकपंए चण्27.28ण्

6. ऋग्वेद :3/53/4 (गृहणी गृहमुच्येत्.(

7. शतपथ ब्राह्मण :5/21/10 एवं ऐतरेय ब्राह्मण :1/2/5.

8. ऐतरेय ब्राह्मण :7/3/13 ''सखा ही जाय''.।सजमामतए ।ण्ैण् रू ॅवउमद पद भ्पदकन ब्पअपसेंजपवदए चण्93

# भारत में महिलाओं की प्रस्थिति एवं बदलते आयामऐतिहासिक : अनुशीलन

**डॉविमल कुमार तिवारी .**
अतिथि संकाय, पैनल, इतिहास, उच्च षिक्षा विभाग, म.प्र.

वर्तमान समय महिला सशक्तीकरण का दौर माना जा रहा है जिधर देखें उधर ही महिलाओं के उत्थान पर विचार हो रहा है परन्तु आखिर भारतीय स्त्री की दुर्दशा कैसे हुई, सामाजिक जीवन कभी भी देश एवं काल के प्रभांव से अछूता नही रह सकता है। प्राचीन भारतीय समाज मे महिला का दर्जा बहुत ऊँचा था ऐसी मान्यताओं को यथार्थ की कसौटी पर कसने की आवश्यकता है। यदि यह स्वीकार कर लें कि प्राचीन युग में महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी थी तथा उनका स्थान ऊँचा था तो उनकी उच्चता के प्रेरक तत्व कौनतथ कौन से थें-ा उसका ह्रास कब हुआ, यह समझने के लिए इतिहास पर दृष्टियान अनिवार्य है।' भारतीय समाज व्यवस्था में महिलाओं की स्थिति एक लम्बे समय से विवाद का विषय रही हैं। हालांकि पश्चिमी विद्वानों ने यहाँ तक माना है कि महिला के कुछ ऐसे जन्मजात दोष है जिनके कारण वह पुरुषो के साथ समानता का दावा नही कर सकती है। रुबैक का विचार है कि महिलाओ मे जन्म से ही अंसगति और परस्पर विरोध का दोष होता है जबकि फ्रायड ने यहाँ तक कह दिया है कि यह स्वीकार करना होगा कि महिलाओं मे न्याय की भावना बहुत कम होती है क्योकि उनके मस्तिष्क में ईर्ष्या भरी रहती है। भारतीय समाज में ऐसी कोई धारणा नही पाई जाती है। हमारी मौलिक सामाजिक व्यवस्था मे महिलाओ को सम्पत्ति, ज्ञान, और शक्ति का प्रतीक माना गया है जिसकी अभिव्यक्ति के रुप मे लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा की पूजा की जाती रही है।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों को सुःख, ज्ञान, शक्ति और सम्पत्ति का प्रतीक माना गया है, जिसकी अभिव्यक्ति के रूप में सरस्वती, दुर्गा की पूजा की जा रही है। नारी की क्षमता और बौद्धिकता भारतीय समाज में अत्यधिक समृद्धषाली रही है। स्त्रियांँ हमारी संस्कृति का आधार ही नहीं परंतु धर्म और मानवता के विकास की कुंजी भी है। स्त्री को भारतीय समाज में माता का स्थान सबसे पहले दिया गया है1। प्राचीन काल में भारतीय समाज और घर में स्त्रियों का आदर था। मनु ने कहा जहाँ स्त्रियों का आदर होता है उस घर में देवता निवास करते हैं तथा जहांँ उनका आदर व सम्मान नहीं होता वहाँ सब काम असफल होते हैं जिस कुल में स्त्रियों दुःखी रहती है, वह कुल जल्दी नष्ट हो जाता है, परंतु वे सुखी रहती है, वह कुल उन्नति प्राप्त करता है। जहाँ स्त्री से पति और पति से स्त्री संतुष्ट है, उस कुल में हमेषा कल्याण होता है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों में समान के प्रति गौरवमयी परम्परायें रही भारतीय संस्कृति को विष्व की अन्य संस्कृतियों से अनूठी, भिन्न एवं मौलिक बनाती है। आम भारतीयों के मन में स्त्री का जो आदर्ष रूप में एक बीज की तरह बोया जाता है वह जीवन की सहजता को भंग करता है2। नारी परिवार की नींव है, परिवार समुदाय की तथा समुदाय राष्ट्र[a] की। स्पष्ट है कि स्त्री ही राष्ट्र[a] अथवा देष में स्त्रियों का समुचित मानसम्मान होता है-, वही राष्ट्र[a] एक आदर्ष और उन्नतिषील बन सकता। प्रारम्भ में भारतीय हिंदू समाज में स्त्रियों को काफी अधिकार व सम्मान था। उत्तर वैदिक काल के पष्चात समाज में रूढ़ियों ने स्थान ले लिया, जिसके फलस्वरूप स्त्रियों के अधिकार कम होते चले गये। पुरूष समाज स्त्रियों के अधिकारों की छीनता गया, उनका शोषण करता रहा, जिसके फलस्वरूप उनकी स्थिति हीन होती गयी3। वैदिक काल में

स्त्रियों की स्थिति उन्नत थी। इस काल में स्त्रियों की षिक्षा पर विषेष बल दिया गया था। कहा जाता है कि ऋग्वेद की अनेक रचनाएं लोपमुद्रा, विष्ववारा, षिकता, निवावरी एवं इंद्राणी आदि विदुषी स्त्रियों से रची हुई है। वैदिक काल में स्त्रियों का विवाह 16 वर्ष की आयु में होता था। इस काल में विवाह की प्रथा पूर्णतया विद्यमान थी। वैदिक साहित्य के अध्ययन से पता चलता है कि नारी पुरूष की प्रकृति है तथा नारी के बिना पुरूष का जीवन अधूरा था। पत्नी के रूप में स्त्री की स्थिति काफी उच्च थी। ऋग्वेद में नारी को ही घर माना गया है। अथर्ववेद में कहा गया है कि नववधू तू जिस घर में जा रही है, वहां की तू सम्राज्ञी हैै। तेरे सास, श्वसुर, देवर व अन्य तुम्हें साम्राज्ञी समझते हुए तेरे शासन में आनंदित है। इस काल में स्त्रियों को षिक्षा एवं साहित्य के अध्ययन करने की पुरूषों के समान स्वतंत्रता थी। इस काल में धर्म के कार्य बिना अर्द्धांगिनी के पूरे नहीं किये जा सकते थे 4।

वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति उन्नत थी। इस काल में स्त्रियों की षिक्षा पर विषेष बल दिया गया था। कहा जाता है कि ऋग्वेद की अनेक रचनाएं लोपमुद्रा, विष्ववारा, षिकता, निवावरी एवं इंद्राणी आदि विदुषी स्त्रियों से रची हुई है। वैदिक काल में स्त्रियों का विवाह 16 वर्ष की आयु मेंे होता था। इस काल में विवाह की प्रथा पूर्णतया विद्यमान थी। वैदिक साहित्य के अध्ययन से पता चलता हे कि नारी पुरूष की प्रकृति है तथा नारी के बिना पुरूष का जीवन अधूरा होता है। पत्नी के रूप में स्त्री की स्थिति काफी उच्च थी। ऋग्वेद में नारी को ही घर माना गया है। अथर्ववेद में कहा गया है कि नववधू तू जिस घर में जा रही है, वहाँॅ की तू साम्राज्ञी है। तेरे सास, श्वसुर, देवर व अन्य तुम्हें साम्राज्ञी समझते हुए तेरे शासन में आंनदित है। इस काल में स्त्रियों को षिक्षा एवं साहित्य के अध्ययन करने की पुरूषों के समान स्वतंत्रता थी। इसक काल में धर्म के कार्य बिना अर्द्धांगिनी के पूरे नहीं किये जा सकते थे 5।

वैदिक काल में स्त्रियों को सम्पत्ति संबंधी अधिकार प्राप्त नहीं थे। लेकिन यहाँ हमेंे इस बात को ध्यान में रखना कि इस समय पितृ सत्तात्मक ही परिवार की सम्पत्ति का स्वामी माना जाता था, केवल स्त्रियों को ही नहीं अन्य पुरूष सदस्यों को भी परिवार की सम्पत्ति पर अधिकार प्राप्त नहीं थे। वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति काफी संतोषजनक थीं उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में काफी स्वतंत्रता प्राप्त थी, समग्र रूप में समाज उनको आदर की दृष्टि से देखता था 6। उत्तर वैदिक काल में षिक्षा की व्यवस्था थी परंतु धीरेधीरे - स्त्री षिक्षा का पतन होता जा रहा था। केवल उच्च कुल घराने की लड़कियों की षिक्षा पर ध्यान दिया जाता था। उत्तर वैदिक में पति के चुनाव में लड़कियों की इच्छा को महत्व दिया जाता था। विषेष परिस्थितियों में विवाह विच्छेद की भी आज्ञा थी। विधवा को पुनर्विवाह का अधिकार था, वह अपने देवर या किसी अन्य से विवाह कर सकती थी। इस समय सती प्रथा का प्रचलन नहीं था। पर्दाप्रथा नहीं थी-, परंतु इस काल में स्त्रियों का सार्वजनिक सभाओं में सम्मिलित होना बंद हो चुका था। उत्तर वैदिक काल का समय 600 ईसा पूर्व से लेकर 300 वर्ष बाद तक माना जाता है। महाभारत की रचना इसी युग के आरम्भ में हुई थी। ऐसा प्रतीत होता है कि महाभारत काल एक संक्रांति काल था, जिससे अन्य सामाजिक व्यवस्थाओं के समान स्त्रियों की स्थिति के बारे में मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो गयी 7। उत्तर वैदिक युग में स्त्रियों को सामाजिक तथा धार्मिक अधिकारों से वंचित करने के दो मुख्य कारण थेता की धारणा कर्म काण्ड की जटिलता तथा पवित्र- में वृद्धि हो जाने से यह विष्वास किया जाने लगा किया मंत्रों की थोड़ी सी भूल अनिष्ट कर सकती है, इसलिए स्त्रियों को धर्म ग्रंथों के अध्ययन से अलग कर दिया गया। आर्यों ने अपने समुदाय में स्त्रियों की

कमी होने से अनार्यों से विवाह करना शुरू कर दिया। विवाह स्त्रियों के लिए अनिवार्य कर दिया गया जिससे पत्नी बहु विवाह का प्रचलन और अधिक बढ़ गया 8।

उत्तर वैदिक काल का समय बहुत लम्बा हैं इस युग की गणना 800 ईसा पूर्व से लेकर 200 तक अथवा 1000 वर्ष के लम्बे समय तक फैला हुआ है। इस काल में स्त्रियों की स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई पड़ते हैं। भारतीय जीवन के अनुसार हिंदुओं के चार पुरूषार्थ हैधर्म-, अर्थ, काम और मोक्ष जीवन के चार पुरूषार्थ चार आश्रमों में विभाजित कर दिये गये हैं। ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और संन्यास आश्रम प्रत्येक आश्रम के स्पष्ट उत्तरदायित्व होते हैं 9। मार्यकाल में स्त्रियों की स्वतंत्रता पर कुछ प्रतिबंध लगा दिये गये। बाल्यकाल में स्त्रियाँ अपने पिता, यौवनावस्था में पति और वृद्धावस्था में पुत्र के संरक्षण में रहती थी, उनका स्वतंत्र रहना उचित नहीं समझा जाता था। अभिजात वर्ग के परिवारों में पर्दाप्रथा - का प्रारम्भ हुआ। इस काल में देवदासियां रखने की प्रथा का वर्णन भी मिलता हैं। इस काल में सती प्रथा विद्यमान नहीं थी। विधवाएं व्रत व उपवास करके सादा जीवन बिताती थी। परंतु इस काल में धर्मषास्त्रकारों का दृष्टिकोण स्त्रियों के प्रति सहानूभूतिपूर्ण था, फिर भी समाज में स्त्रियों की स्थिति दयनीय थी 10। स्मृति काल में मनु, बृहस्पति और विष्णु आदि महत्वपूर्ण स्मृतिकार हुए। इस काल में स्त्रियों की स्थिति में आपसी विरोधी विचार पाये जाते हैं। मनुस्मृति की रचना इसी काल में हुई। अनेक लेखकों ने मनु पर स्त्री विरोधी होने का आरोप लगाया है। परंतु मनुस्मृति के विष्लेषण से पता चलता है कि मनु पर स्त्रियों के अधिकारों के हनन के आरोप लगाते समय केवल एक पक्ष पर ही विचार किया गया है। मनु की भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक श्लोक ही पर्याप्त है। संतान उत्पत्ति के लिए घर पर भाग्योदय करने वाली, आदर समान के योग्य स्त्रियाँ गृहज्योति होती हैं। शोभा, लक्ष्मी व स्त्री में कोई अंतर नहीं है, वह घर की प्रत्यक्ष शोभा है 11। मनु ने पुत्रपुत्री को समान मानकर उन्हें पैतृक सम्पत्ति के समान अधिकारी माना है। - की हत्या व अपहरण करने वालों के लिए यातना पूर्ण दण्ड देने के बाद देष निकाला का मनु ने नारियों आदेष देकर स्त्रियों की सुरक्षा को सुनिष्चित किया है। स्मृतिकाल में मनु वास्तव में स्त्रियों की स्वतंत्रता के विरोधी नहीं थे। उनके मतानुसार स्त्रियों की सुरक्षा सर्वप्रथम आवष्यकता है। अतः वास्तविक रूप से मनु स्मृति की व्यवस्थाएं स्त्री विरोधी नहीं है, वे पक्षपात रहित है। 200 वर्ष 300 वर्ष पष्चात के काल में देष में अनेक आक्रमण हुए, जिसके साथ हुए भयंकर युद्धों में भारी जनधन की हानि हुई-, और विषादपूर्ण वातावरण का प्रभाव स्त्रियों पर भी पड़ा। विधवा पुनर्विवाह का प्रचलन समाप्त कर दिया। बाल विवाहों की संख्या में वृद्धि हुई एवं सती प्रथा का प्रचलन भी प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार इस काल में स्त्रियों की अषिक्ष, अज्ञानता के कारण उनके अधिकारों का हनन हुआ। गुप्तोत्तर काल को सामाजिक और धार्मिक संकीर्णताओं का युग कहा जाता है। स्त्री जो किसी समय अपने व्यक्तित्व द्वारा देष के साहित्य और समाज के आदर्षों को प्रभावित करती थी, अब परतंत्र, पराधीन निःसहाय एवं निर्बल बन चुकी थीं। इसकाल में पुत्री की स्थिति अब पुत्र की अपेक्षा बहुत गिर गयी थी, इसमें पुत्र को सुख का प्रतीक और पुत्री को दुःख का मूल माना गया है। स्त्रियों के लिए उपनयन संस्कार समाप्त हो चुका था। कुछ धनी परिवारों को छोड़कर शेष लोगों में स्त्री षिक्षा समाप्त हो चुकी थीं इस काल में भरणपोषण का पूरा उत्तरदायित्व पति का समझा जाता - रूष कई पत्नियांँ रखते थे। इस काल में स्त्रियों के अधिकारों के संबंध में समाज था। अभिजात्य वर्ग में पु जागरूक तो था तथापि स्त्रियों की स्थिति शोचनीय थीं। इस काल में महाभारत की रचना हुई। यह एक संक्रांति काल था, जिसमें स्त्रियों की स्थिति के संबंध मंे विरोधी विचार पाये जाते हैं। उदाहरण के रूप में

भीष्म पितामह ने कहा है कि स्त्री को सदैव पूज्य मानकर उसे स्नेह का व्यवहार करना चाहिए। जहाँ स्त्रियों का आदर होता है वहाँ देवताओं का निवास होता है, और उनकी अनुपस्थिति में कार्य पुण्य रहित हो जाते। इस काल में स्त्रियों को उनके सम्पत्ति संबंधी अधिकारों से वंचित कर दिया गया तथा साथ यह भी कहा गया कि विवाह का विधान ही स्त्रियों का उपनयन है। पति की सेवा ही गुरूकुल का वास है, और घर का काम ही अग्नि की सेवा है। इन सब बातों से स्पष्ट हो जाता है कि इस युग में स्त्रियों की स्थिति और अधिक खराब हो गयी और इसके फलस्वरूप स्त्रियाँ वस्तु बन गयी, जिसे पुरूष अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी प्रकार उपयोग में ला सकता था। परिणामतः नारी की समाजिक स्थिति में गिरावट आना प्रारम्भ हो गया। जो निरंतर पतन की ओर ही चलता गया। आगे चलकर मध्यकाल में महिला को पर्दा प्रथा एवं बहुविवाह तथा जन्म के बाद कन्या हत्या जैसे प्रकरणों से भी दबाया गया।

संदर्भ सूची


01. डॉदीपा जैन ., महिला सुरक्षा एवं महिला पुलिस, 2007

02. षिव कुमार गुप्त, आधुनिक भारत का सामाजिक तथा आर्थिक इतिहास, पृ 9

03. प्रज्ञा शर्मा, महिला विकास और सषक्तिकरण, पृ 1

04. डॉदीपा जैन ., महिला सुरक्षा एवं महिला पुलिस, 2007

05. डॉदीपा जैन ., महिला सुरक्षा एवं महिला पुलिस

06. मोतीलाल गुप्ता, भारत में समाज, 1990, पृ .388

07. अखिल आनंद, भारतीय समाज, 2000, पृ .244

08. प्रज्ञा शर्मा, महिला विकास और सषक्तिकरण वर्ष 2001

09. नीरा देसाई, भारतीय समाज में नारी, 1982, पृ .7

10. डॉ दीपा जैन, महिला सुरक्षा एवं महिला पुलिस, 2007,पृ

11. प्रज्ञा शर्मा, महिला विकास और सषक्तिकरण 2001, पृ 2

# ग्रामीण महिला उद्यमिता: सम्भावनाएँ एवं सामाजिक परिवर्तन

**डॉ. शशि गुप्ता**
प्राध्यापक-समाजशास्त्र विभाग
शासकीय बिलासा कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

**सारांश**

समाज मानव का एक समूह है समाज में ही मानव का विकास होता है। समाज ही नैतिक एवं अनैतिक कार्यों की समीक्षा करता है। नैतिक कार्यों को समाज हित की श्रेणी में गिना जाता है तथा अनैतिक कार्यों को समाज विरोधी करार की संज्ञा प्रदान की जाती है। यही कारण है कि समायोपयोगी कार्यों का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। समाज को अनेक भागों में विभक्त किया गया है। जैसे-बाल समाज] पुरुष समाज] महिला समाज] युवा समाज] प्रौढ़ समाज तथा सामाजिक कार्यकर्ता समाज आदि।

देश में बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ-ही-साथ एक अन्य समस्या 'बेरोजगारी की समस्या' ये प्रमुख समस्याएँ हैं। बढ़ती हुई बेरोजगारी की समाधान या सामना हम उद्यमिता विकास के माध्यम से ही कर सकते हैं। उद्यमिता विकास में पुरुष के साथ ही महिला वर्ग का भी जुड़ना अति आवश्यक है।

उद्यमी द्वारा किये गये कार्य को उद्यमिता की संज्ञा प्रदान की जाती है। युवा (महिला-पुरुष) वर्ग में उद्यमिता की भावना को जाग्रत करने के लिए ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में युवाओं को संगठित करके उनमें उद्यमिता विकास की प्रेरणा को आत्मसात करना अति आवश्यक है।

**बीज शब्द**

समाज, मानव, ग्रामीण, महिला, समूह, विकास, नैतिक, अनैतिक, समीक्षा, कार्य, हित, अनहित, विरोध, श्रेणी, विस्तृत, जनसंख्या, बेरोजगारी, समस्या, समाधान, उद्यमी, उद्यमिता, आत्मसात् तथा प्रेरणा आदि।

**प्रस्तावना**

ग्रामीण महिलाओं की बेरोजगारी को दूर करके उन्हें सशक्त बनाने की पहल में ग्रामीण महिला उद्यमिता अत्यंत कारगर एवं कल्याणकारी योजना है। इतना ही नहीं यह भारतवर्ष में ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार, कौशल प्रशिक्षण एवं वित्तीय सहायता प्रदान करके उन्हें सशक्त तथा आत्मनिर्भर बनाने का सराहनीय कार्य कर रही है। हमारे देश मंे महिला उद्यमिता विकास के लिए दो योजनाएँ सरकारी स्तर पर कार्यरत हैं। प्रथम योजना मुख्यमंत्री महिला उद्यमी योजना है तथा दूसरी महिला आजीविका मिशन योजना है। इन दोनों योजनाओं के माध्यम से महिलाएँ लघु उद्योग स्थापित करके अपनी आय में वृद्धि कर रही हैं तथा देश की अर्थव्यवस्था में अपना अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान भी कर रही हैं।

**विश्लेषण**

हमारे देश भारतवर्ष के ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं द्वारा स्वयं के जीविकोपार्जन हेतु किये गये स्वयं के रोजगार को ग्रामीण महिला उद्यमिता की संज्ञा प्रदान की जाती है। रोजगार के विभिन्न स्वरूप इस प्रकार हैं-

हस्तशिल्प यथा-सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, ब्यूटी पार्लर वर्क आदि। कृषि प्रसंस्करण, लघु उद्योग मोमबत्ती, पापड़, माला बनाना, अगरबत्ती बनाना तथा खाद्य-पदार्थ बनाना आदि। ग्रामीण महिला उद्यमिता विकास की योजनाएँ सरकार द्वारा वित्तीय सहायता के माध्यम से भी क्रियान्वित की जाती हैं जिससे स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजित कर महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने में कारगर सिद्ध हो रही हैं।

उद्यमिता विकास का ग्रामीण क्षेत्र में विशेषकर महिलाओं के लिए अत्यंत महत्व है। इससे लाभ का विवरण इस प्रकार है-

ग्रामीण महिला उद्यमिता से मानव संसाधन का सशक्तिकरण होता है। इसके साथ-ही-साथ सामाजिक प्रतिष्ठा, गरीबी में कमी, रोजगार की उपलब्धता, बेरोजगारी समस्या का समाधान, राष्ट्रीय विकास में उत्पादकता के माध्यम से वृद्धि, प्रेरणा स्रोत, आय में वृद्धि, जीवन स्तर में सुधार, पारिवारिक विवादों में कमी, अपराधिक वृत्तियों में कमी तथा महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार आदि अनेक लाभ हैं।''1

उद्यमिता का आधुनिक समय में अर्थ इस प्रकार है- ''गतिशील आर्थिक वातावरण में सृजनात्मक एवं नव प्रवहनकारी योजनाओं एवं विचारों को क्रियान्वित करने की योग्यता को 'उद्यमिता' कहा जाता है।''2

हमारे देश की जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि जारी है। जनसंख्या वृद्धि के कारण आजीविका के साधनों में कमी होना स्वाभाविक है। प्राचीनकाल में केवल 'बनजारा' व्यापार करने के लिए अपने निवास स्थान से दूर तक जाता था परन्तु इस समय हमारे देश में ही नहीं बल्कि विश्व में मनुष्य आजीविका के कारण यत्र-तत्र फैला हुआ है। उद्यमिता के संदर्भ मेंएक परिभाषा इस प्रकार है-

''उद्यमिता से तात्पर्य नवप्रर्वतन से है। यह अनिश्चितताओं का सामना करने के लिए काम लेने की अंतःप्रेरणा और इच्छा है अर्थात् यह भावी घटनाओं को इस प्रकार देखने की क्षमता है जो बाद में सही हो सके।''3

आज महिला विकास मानसिक एवं बौद्धिक दोनों स्तरों पर प्रायः परिपक्वता के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है फिर भी ग्रामीण स्तर पर महिला विकास की गति मन्दर है। वर्तमान समय में सामाजिक परिस्थितियाँ इतना तीव्र स्वरूप कारण करती जा रही हैं कि नारी समस्या ने सामाजिक समस्या का स्वरूप ग्रहण कर लिया है। नयी चेतना के अंतर्गत नारी में बौद्धिक क्षमता, आर्थिक स्वतन्त्रता तथा संघर्ष करने की मानसिक तैयारी महिलाओं में भी व्याप्त हो गयी है। सरकार का उद्देश्य नारी को शिक्षित बनाकर समाज की आर्थिक व्यवस्था से लड़ने के लिए सक्षम बनाना है। ''व्यक्तिगत जीवन की समस्याएँ ही आज विश्व के अनेक राजनीतिक आर्थिक एवं सामाजिक कुचक्रों के बीजरूप और मूलभूत प्रतीक एवं आधार भूत सिद्धान्त हैं।''4

ग्रामीण महिला उद्यमिता ग्रामीण महिलाओं की आय में वृद्धि करके उनकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में सुधार करती है। इसके अलावा यह उपक्रम ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं में आत्मविश्वास की भावना भी पैदा करती है। इतना ही नहीं इस प्रकार के उपक्रमों से महिलाओं के अतिरिक्त भी अन्य ग्रामीण जन समुदाय को रोजगार प्राप्त होता है। शहरी क्षेत्र की महिलाओं की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र में आय के साधन सीमित होने के कारण ग्रामीण महिलाओं को हमेशा आर्थिक तंगी बनी रहती है जिसके कारण उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह उपक्रम ग्रामीण महिलाओं की आजीविका में सुधार करने तथा आत्मनिर्भर बनाने का एक सशक्त माध्यम है। ग्रामीण महिला उद्यमिता में ग्रामीण संसाधनों की क्षमता का उपयोग करने, आर्थिक विकास में वृद्धि करने तथा रोजगार उत्पन्न करने जैसी अनेक गतिविधियाँ सम्मिलित हैं। ग्रामीण उद्यमी अधिकतर एकल या एक से अधिक व्यक्तियों का समूह होता है। यह प्राकृतिक संसाधनों, पारम्परिक कौशल और स्वदेशी ज्ञान सहित स्थानीय संसाधनों, पारम्परिक कौशल और स्वदेशी ज्ञान सहित स्थानीय संसाधनों के कुशल उपयोग को बढ़ावा देता है। ग्रामीण महिला उद्यमिता कृषि पर निर्भरता की मात्रा में कमी करता है तथा लिंग समानता में वृद्धि प्रदान करता है तथा आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता भी प्रदान करता है।

"ग्रामीण महिला उद्यमिता ग्रामीण क्षेत्र में संसाधनों एवं परम्परागत कुशलता का उपयोग करके उद्यमशीलता में वृद्धि करता है इसके अतिरिक्त यह अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरण की अनुकूल पद्धतियों का प्रयोग करती है जिससे पर्यावरणीय संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग में योगदान देते हैं।"5

ग्रामीण महिला उद्यमिता में विभिन्न प्रकार के उद्यम सम्मिलित हैं, जो सामुदायिक विकास एवं आर्थिक विकास में वृद्धि करने के उद्देश्य से सहयोग प्रदान करते हैं तथा स्थानीय संसाधनों, कौशल एवं रोजगार के अवसर एवं बेरोजगारी को दूर करने आदि का सराहनीय कार्य करते हैं।

हमारे देश भारतवर्ष के ग्रामीण क्षेत्रों का विकास करने एवं वहाँ की बेरोजगारी को दूर करने के लिए भारत सरकार ने योजनाओं के माध्यम से भागीरथी प्रयत्न किया है। गाँवों का विकास करने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्य एवं नीतियों का निर्धारण करना आवश्यक होता है। पूर्व से प्रचलित कुटीर उद्योगों में संशोधन करके उनकी कमियों को दूर किया जाता है। ग्रामीण विकास नीति की संरचना में मूल्य निर्धारण नीति एक महत्वपूर्ण तत्व है। इसके माध्यम से उद्यमी को उत्पादित वस्तु का उचित मूल्य प्राप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त इसी नीति के अन्तर्गत आर्थिक सहायता प्रदान करके ग्रामीण जनमानस को व्यापक स्तर पर आवश्यक कच्ची सामग्री उपलब्ध करवाकर उनके विकास में सहयोग प्रदान किया जाता है।

**निष्कर्ष**

भारतवर्ष के ग्रामीण क्षेत्र में अशिक्षा, गरीबी, आर्थिक असमानता, बेरोजगारी, नशे की प्रवृत्ति, शोषण, दादागीरी तथा जबरन बेगारी की समस्या आदि विकास के मार्ग में बाधा बने हुए हैं। इनमें से सर्वाधिक दयनीय स्थिति महिला वर्ग की है। यही कारण है कि वर्तमान समय में ग्रामीण महिला उद्यमिता की नितान्त आवश्यकता है। इस नीति के माध्यम से ग्रामीण महिला वर्ग की आर्थिक समस्या को दूर करके

उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। हमें यह सदैव स्मरण रखना होगा कि समाज परिवार की उत्पत्ति का मूल स्रोत (महिला वर्ग) को सुखी एवं सम्पन्न रखना अति आवश्यक है। इस वर्ग को अनेक सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों के माध्यम से समूहों की स्थापना करके महिलाओं की सामाजिक स्थिति को सुदृढ़ करने का बीड़ा उठाया गया है।

**संदर्भ**

1.राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: शिक्षा में नवाचार-सं. डा. प्रवीण कुमार, पृ. 26,27 संस्करण 2024, स्वराज प्रकाशन दिल्ली।

2.वही, पृ. 24

3.वही, पृ. 25

4.नये दौर की नारी-डा. शम्भुनाथ द्विवेदी, पृ. 84, संस्करण 2016, दिया डिस्ट्रीब्यूटर्स कानपुर।

5.भारतीय अर्थव्यवस्था एवं ग्रामीण विकास- डा. जी.डी. त्रिपाठी, पृ. 185, संस्करण 2017, माक्स पब्लिशर्स जयपुर।

# महिला स्वयं सहायता समूहों की आर्थिक भूमिका

**डॉ. भावना कमाने**
प्रभारी-प्राचार्य
बाबू पढरीराव कृत शासकीय महाविद्यालय,
सिलौटी, धमतरी (छ.ग.)

**सारांश**

महिला स्वयं सहायता समूह एक ऐसा उपक्रम अर्थात् सरकार प्रदत्त योजना है जिसके माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाकर महिलाओं का सशक्तिकरण करना है। महिला स्वयं सहायता समूह को अंग्रेजी भाषा में 'WOMEN SELF HELP GROUPS' कहा जाता है। यह समूह आर्थिक रूप से पिछड़े महिला एवं पुरुष दोनों वर्गों को वित्तीय सहायता प्रदान करके सामाजिक एवं पारिवारिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। स्वयं सहायता समूहों का आधार सामूहिक सहयोग तथा सामूहिक प्रयास पर ही निर्भर है।

प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय एवं सोचनीय थी। आज के समय में ऐसा नहीं है फिर भी महिलाओं की स्थिति का विकास अभी भी अपूर्ण है। हमारे देश भारतवर्ष की कोई भी योजना तब तक कल्याणकरी नहीं समझी जायेगी जब तक महिलाओं को अशिक्षा, आर्थिक निर्भरता एवं सामाजिक स्वतंत्रता आदि के साथ-ही-साथ उन्हें आत्मनिर्भर न कर दिया जाये।

महिलाओं के कल्याण हेतु कुछ कार्यक्रमों की नितान्त आवश्यकता है जैसे वयस्क महिलाओं की शिक्षा के लिए संक्षिप्त पाठ्यक्रम, श्रमिक नारियों के लिए महिला निवास, महिला मण्डल, आवासीय संस्थाएँ, कानून सहायता, महिला समाज शिक्षा केन्द्र, पारिवारिक कल्याण सेवाएँ तथा रोजगार उपलब्धता आदि। महिला स्वयं सहायता समूहों का प्रमुख उद्देश्य महिलाओं को संगठित कर उन्हें आर्थिक एवं सामाजिक स्तर पर आत्मनिर्भर बनाना है।

**बीज शब्द**

महिला स्वयं सहायता समूह, योजना, शासकीय, आत्मनिर्भर, वित्तीय, आर्थिक, विकास, भूमिका महत्व, सामूहिक, प्रयास, समाज, दयनीय, कल्याणकारी, अशिक्षा, स्वतंत्रता, कार्यक्रम, मण्डल, सेवा, रोजगार, कानून, सशक्तीकरण तथा संस्थाएँ आदि।

**प्रस्तावना**

हमारे देश भारतवर्ष में महिलाओं को सशक्त बनाने, सूक्ष्म ऋण बचत और स्व रोजगार के माध्यम से महिला स्वयं सहायता समूह आर्थिक स्थिरता प्रदान करते हैं इतना ही नहीं ये समूह महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं। शासन स्तर पर महिला वर्ग के कल्याण के लिए इन समूहों को अत्यंत कम ब्याज दर पर ऋण के रूप में आर्थिक राशि भी प्रदान की जाती है।

**विश्लेषण**

महिला स्वयं सहायता समूह केवल एक वित्तीय साधन नहीं है बल्कि यह ग्रामीण समाज में महिलाओं के साथ-ही-साथ वंचित समुदायों को आत्मनिर्भर तथा सशक्त बनाने का एक क्रान्तिकारी माध्यम भी है। सामूहिक बचत, ऋण वितरण और सामूहिक निर्णय प्रक्रिया के माध्यम से ये समूह सदस्यों को आत्मनिर्भर एवं वित्तीय अनुशासन का मार्ग प्रस्तुत करते हैं।

"हमारे देश भारतवर्ष में महिलाओं के सामाजिक आर्थिक विकास में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका महिलाओं का उत्थान करना है। इसके अतिरिक्त ये संगठन महिलाओं के समानान्तर अन्य कमजोर वर्गों के लिए भी काम करते हैं।"1

भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक सम्मान जनक एवं आशाजनक स्थिति की अवधारणा शनैःशनैः विकसित हो रही है। वर्तमानकाल में कोई भी व्यक्ति सशक्तिकरण नामक मंत्र के माध्यम से अपने जीवन में सब कुछ प्राप्त कर सकता है। महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महिला स्वयं सहायता समूहों की भूमिका वर्तमान समय में अत्यंत दृढ़ स्वरूप में दृष्टिगोचर हो रही है। यह गरीब एवं वंचित वर्ग को सशक्त बनाने का माध्यम है। "भारत में स्वयं सहायता समूहों की अवधारणा का उदय 8वें दशक अर्थात् 1980 ई. में हुआ। इसे ग्रामीण विकास, महिला उत्थान, तथा गरीबी उन्मूलन के लिए एक क्रान्तिकारी कदम माना जाता है। सन् 1987-88 ई. में इसे नाबार्ड (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक) ने एक प्रयोग के रूप में कार्यान्वित किया गया। 1980 के दशक में नाबार्ड ने पायलट परियोजना का प्रारम्भ किया जिसमें गरीब वर्ग के मध्य छोटे-छोटे समूह बनाने का प्रस्ताव लागू किया गया।"2

स्वयं सहायता समूहों ने भारतवर्ष में ग्रामीण विकास एवं गरीबी उन्मूलन के क्षेत्र में एक सफल व्यवसायी की भाँति अपनी चमकदार पहचान बनायी है। स्वयं सहायता समूहों का मुख्य उद्देश्य बचत को बढ़ावा देकर समाज के निर्बल वर्ग को सशक्त बनाने के साथ-ही-साथ उसकी बेरोजगारी की समस्या का समाधान करना है। "विशेषकर ये समूह महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता, सामुदायिक नेतृत्व और परिवार के निर्णयों में भागीदारी का भी अवसर प्रदान करते हैं। ये एक प्रकार से परिवर्तन के महत्वपूर्ण उपकरण हैं जो दहेज प्रथा, बाल-विवाह तथा लैंगिक असमानता जैसी कुरीतियों के जागरूकता अर्थात् जन जागरण भी करते हैं।"3

गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि इससे जरूरतमंद तथा कमजोर वर्ग को लाभ मिलता है। सुनिश्चित रोजगार योजना तथा समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम से माध्यम से गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वालों को आर्थिक सहायता प्रदान की जा सकती है। स्वयं सहायता समूहों की योजनाआंे में अनेक प्रकार के सरकारी ऋण एवं अनुदान से कार्यक्रम चलाये जाते हैं जिससे धनोपार्जन होकर आत्मनिर्भर बनने की दिशा में मार्ग प्रशस्त होता है। ये योजनाएँ निम्न प्रकार से हैं।

1. पशुपालन योजना।
2. कुटीर उद्योग स्थापना योजना।

3. लघु उद्योग यथा सिलाई प्रशिक्षण, टाइप, राइटिंग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ब्यूटिशियन प्रशिक्षण आदि। प्रशिक्षण योजना द्वारा न केवल जन-चेतना जागृत की जाती है बल्कि उपयुक्त तकनीकी की जानकारी देकर कम लागत में अधिक उत्पादन आदि की भी जानकारी दी जाती है। ग्रामीण विकास से गरीबी की समस्या का समाधान किया जा सकता है।

"स्वयं सहायता समूह ग्रामीण विकास तथा महिला सशक्तिकरण के लिए एक प्रभावी एवं कारगर उपाय सिद्ध हुआ है। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से न केवल महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है बल्कि उनके सम्मान तथा सामाजिक स्तर के साथ-ही-साथ आत्मनिर्भरता का उपाय भी प्राप्त हुआ है जो कि एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।"4

वर्तमान समय में ग्रामीण क्षेत्र के विकास में महिलाओं का योगदान भी अत्यंत सराहनीय है। परिवार के पालन पोषण के साथ-ही-साथ महिलाएँ परिवार की आर्थिक स्थिति में भी भरपूर सहयोग कर रही हैं। शिक्षा का प्रभाव महिलाओं पर दृष्टिगोचर हो रहा है। "ग्रामीण क्षेत्र में पशु-पालन कृषि के पश्चात् दूसरा आय का सशक्त माध्यम माना गया है। पशुपालन में महिलाओं की विशेष भूमिका एवं योगदान है। पशुपालन के व्यवसाय में स्वयं सहायता समूहों ने विशेष रूप से वित्तीय सहायता प्रदान की है।"5 प्रायः यह देखा गया है कि पशुपालन का कार्य अधिकतर स्त्रियाँ ही करती हैं।

पशुपालन से अनेक लाभ मिलते हैं जैसे कृषि क्षेत्र के लिए गोबर के रूप में खाद (Fertilizer) मिलती है। खाना पकाने के लिए गोबर गैस एवं ईंधन प्राप्त होता है। सर्वाधिक लाभ दूध से प्राप्त होता है। दूध से अनेक पदार्थ जैसे दही, घी, छाछ, पनीर, विभिन्न प्रकार की मिठाइयाँ आदि की बिक्री से परिवार ही नहीं बल्कि देश की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होती है। स्वयं सहायता समूह भैंस एवं गाय पालन के लिए कम ब्याज दर पर बैंक ऋण प्रदान करते हैं जिसमें अनुदान भी सम्मिलित होता है। स्वयं सहायता समूह के अतिरिक्त सरकार कौशल प्रशिक्षण के कार्यक्रम भी समय-समय पर आयोजित करती है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम महिलाओं को केवल प्रशिक्षण ही नहीं प्रदान करते हैं बल्कि उन्हें व्यावसायिक कौशल के साथ-ही-साथ सामूहिक सहयोग एवं नेतृत्व के महत्व को समझाने में भी सहायता करते हैं।

हमारे देश भारतवर्ष में स्वयं सहायता समूह ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में गरीबों तथा विशेषकर महिलाओं के लिए आर्थिक, सामाजिक सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भरता हेतु महत्वपूर्ण माध्यम बन गये हैं। ये समूह सूक्ष्म ऋण, सामूहिक बचत, ऋण सुविधाओं और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से गरीबी उन्मूलन, आर्थिक स्वतन्त्रता तथा सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने में कारगर सिद्ध हो रहे हैं। केवल घरेलू जिम्मेदारियों तक सीमित रहने वाली महिला अब आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन गयी है। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को अपनी आय के स्रोत विकसित करने में भरपूर मदद मिली है। समूहों में सम्मिलित होने के पश्चात् महिलाएँ सिलाई, बुनाई, दूग्ध डेयरी तथा अन्य लघु उद्योगों में अपना अमूल्य योगदान देने लगी हैं। कढ़ाई, सिलाई, हस्तशिल्प तथा कृषि आधारित अनेक कुटीर उद्योगों के माध्यम से महिलाओं के लिए नये आय के स्रोत उपलब्ध हुए हैं। यह स्वयं सहायता समूहों की ही देन है।

**संदर्भ**

1. आत्मनिर्भरता और स्वयं सहायता समूह-डाॅ. रज्जन त्रिवेदी, पृ. 15, संस्करण 2026, संकल्प प्रकाशन कानपुर।

2. वही, पृ. 10

3. एन.जी.ओ. एवं समाज कार्य-संगीता नटराजन, पृ. 37, संस्करण 2014, माक्र्स पब्लिशर्स जयपुर।

4. ग्रामीण समाजशास्त्र-कृति छाया, पृ. 176, संस्करण 2017, माक्र्सपब्लिशर्स जयपुर।

5. वही, पृ. 176

# महिला स्वयं सहायता समूहों की आर्थिक भूमिका और नेतृत्व क्षमता

**डॉ. अमोल पालकर**
प्राध्यापक हिंदी विभाग,
बलभीम महाविद्यालय बीड
तहसील बीडजिला बीड महाराष्ट्र,
ईमेल:-amolpalkar00@gmail.com
दूरभाष :- 9404885185

**श्रीहनुमान तुळशीरा.म नागणे**
शोध छात्र,
बलभीम महाविद्यालय बीड
तहसील बीड
ईमेल:hanumannagne99@gmail.com
दूरभाष :- 9021968864

**शोध आलेख का सारांश-:**

महिला स्वयं सहायता समूह )Self Help Groups – SHGs) ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्रों में - हैं। भारत में इस महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम बनकर उभरे आंदोलन को संस्थागत रूप देने मेंNational Bank for Agriculture and Rural Development (नाबार्ड द्वारा प्रारंभ किया गया (SHG–Bank Linkage Programme तथा National Rural Livelihood Mission (NRLM) की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। SHGs के माध्यम से महिलाओं में नियमित बचत की आदत विकसित हुई तथा उन्हें कम ब्याज दर पर ऋण की सुविधा प्राप्त हुई। इससे उन्होंने दुग्ध उत्पादन, सिलाईकढ़ाई-, मसाला निर्माण, पशुपालन, लघु उद्योग आदि स्वरोजगार गतिविधियाँ प्रारंभ कीं, जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई और परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई। इस प्रक्रिया ने वित्तीय समावेशन को भी बढ़ावा दिया तथा महिलाओं को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से जोड़ा।

यद्यपि विपणन, प्रशिक्षण और डिजिटल साक्षरता जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं, फिर भी SHGs ने महिला सशक्तिकरण, गरीबी उन्मूलन और सामुदायिक विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया है। उचित नीतिगत समर्थन और तकनीकी सहायता से यह आंदोलन भविष्य में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को और अधिक सशक्त बना सकता है।

**बीज शब्द -:**

सशक्तिकरण,सहायता,उद्यमिता,आजीविका,सृजन,सामाजिक,लोकतांत्रिक,आत्मनिर्भर,पशुपालन, हस्तशिल्प, सिलाई,प्रशिक्षण,विपणन

**प्रस्तावना :-**

महिला स्वयं सहायता समूह )Self Help Groups - SHGs) ग्रामीण और शहरी गरीब महिलाओं के सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम बन-चुके हैं। भारत में इन समूहों को संगठित रूप से बढ़ावा देने में National Bank for Agriculture and Rural Development (NABARD) की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज स्वयं सहायता समूह न केवल बचत और ऋण की व्यवस्था करते हैं, बल्कि उद्यमिता, आजीविका सृजन और सामुदायिक नेतृत्व के सशक्त मंच के रूप में स्थापित हो चुके हैं। भारत में महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में महिला स्वयं सहायता समूह )Self Help Groups - SHGs) एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यह समूह विशेष रूप से गरीब और ग्रामीण महिलाओं के लिए आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण का एक प्रभावी साधन बन चुके हैं। SHGs महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता, सामाजिक पहचान और नेतृत्व क्षमता प्रदान करते हैं। यह समूह, जो आमतौर पर 10-20

महिलाओं का एक छोटा सा समूह होता है, महिलाएं एक साथ मिलकर नियमित रूप से बचत करती हैं और सामूहिक कोष तैयार करती हैं। इस कोष से महिलाएं आवश्यकतानुसार कम ब्याज दर पर ऋण प्राप्त कर सकती हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से वे आर्थिक सशक्तिकरण के साथसाथ अपने जीवन में महत्वपूर्ण - बदलाव ला सकती हैं। भारत में महिला स्वयं सहायता समूहों का आंदोलन विशेष रूप से1992 में भारतीय राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक )NABARD) द्वारा शुरू किए गए SHG-Bank Linkage Programme से तेज़ हुआ। इस कार्यक्रम के तहत SHGs को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से जोड़ा गया और महिलाओं को अपने उद्यमों के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त हुई।

**स्वयं सहायता समूह की संरचना :-**

इन समूहों का गठन महिलाओं द्वारा स्वयं किया जाता है और इसका उद्देश्य आमतौर पर एक दूसरे से वित्तीय मदद करना, परस्पर सहायता करना और विभिन्न विकासात्मक कार्यों में एक साथ काम करना होता है। समूह की सदस्यताएँ समान होती हैं, और निर्णय प्रक्रिया भी सामूहिक होती है, जिससे महिलाएँ समान रूप से अपने अधिकारों का इस्तेमाल करती हैं। SHG के कार्यों का संचालन पारदर्शी और लोकतांत्रिक तरीके से किया जाता है, जिसमें कोषाध्यक्ष, सचिव, और अध्यक्ष जैसे पदों पर महिलाएँ चुनाव करती हैं। इसके माध्यम से महिलाओं में संगठनात्मक और नेतृत्व क्षमता का विकास होता है।

**महिला स्वयं सहायता समूहों का उद्देश्य :-**

महिला स्वयं सहायता समूहों का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना है। इसके अतिरिक्त, SHGs का उद्देश्य महिलाओं को सामूहिक रूप से निर्णय लेने, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने और सामाजिक समस्याओं पर कार्य करने में सक्षम बनाना है। इसके माध्यम से महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार आता है, और वे अपने परिवारों और समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम होती हैं।

महिला स्वयं सहायता समूहों की आर्थिक भूमिका :-

वित्तीय समावेशन :-

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को अक्सर बैंकिंग सेवाओं से वंचित रखा जाता है। इस स्थिति को सुधारने के लिए NABARD द्वारा SHG-Bank Linkage Programme को लागू किया गया। इस कार्यक्रम ने महिलाओं को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से जोड़ा और उन्हें बैंक ऋण लेने के योग्य बनाया। इससे पहले, महिलाएं असंरचित वित्तीय संस्थाओं (जैसे साहूकारों) पर निर्भर रहती थीं, जो अत्यधिक उच्च ब्याज दरों पर ऋण प्रदान करते थे। SHGs के माध्यम से महिलाएँ अब औपचारिक बैंकिंग संस्थाओं से कम ब्याज दरों पर ऋण प्राप्त करती हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है।

सूक्ष्म वित्त )Microfinance) :-

महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा आयोजित सूक्ष्म वित्त मॉडल एक महत्वपूर्ण आर्थिक भूमिका निभाता है। SHGs के सदस्य एक निश्चित राशि को मासिक रूप से बचत के रूप में जमा करते हैं, जिससे एक सामूहिक कोष तैयार होता है। इस कोष से महिलाएँ लघु उद्यमों के लिए ऋण ले सकती हैं। सूक्ष्म वित्त के तहत महिलाओं को खेती, पशुपालन, हस्तशिल्प, सिलाई, आदि के लिए आवश्यक पूंजी मिलती है, जिससे वे छोटे-छोटे व्यवसाय स्थापित कर सकती हैं और अपनी आजीविका अर्जित कर सकती हैं।

स्वरोजगार और छोटे व्यवसायों की स्थापना :-

महिला स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार के अवसर प्रदान किए हैं। महिलाएँ लघु उद्योगों, जैसे कि खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प, सिलाई, बुनाई, और कृषि आधारित

गतिविधियों में संलग्न होकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर रही हैं। उदाहरण स्वरूप, केरल के *कुडुम्बश्री* कार्यक्रम ने लाखों महिलाओं को छोटे व्यवसायों से जोड़ा है और उन्हें प्रशिक्षण और विपणन के अवसर दिए हैं। इसके माध्यम से महिलाएँ न केवल अपनी आय बढ़ा रही हैं, बल्कि स्थानीय और राष्ट्रीय बाजारों में अपनी उपस्थिति भी दर्ज कर रही हैं।

सामूहिक उद्यम :-

SHGs महिलाओं को सामूहिक रूप से काम करने का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें पूंजी जुटाने, व्यावसायिक योजनाएँ तैयार करने और विपणन में मदद मिलती है। सामूहिक उद्यम के माध्यम से महिलाएँ एक दूसरे की सहायता करती हैं और साझा संसाधनों का उपयोग करती हैं, जिससे वे अधिक प्रभावी रूप से कार्य कर सकती हैं। उदाहरण के तौर पर, *श्री विजया महिला समूह* ने अपने समूह के माध्यम से डेयरी उत्पादों का उत्पादन शुरू किया, जो अब स्थानीय बाजारों में एक प्रमुख उत्पाद बन चुका है। आर्थिक भूमिका के साथ-साथ SHGs ने महिलाओं में नेतृत्व क्षमता का भी विकास किया। समूह की लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली ने निर्णय लेने की क्षमता, आत्मविश्वास और संगठनात्मक कौशल को सुदृढ़ किया। महिलाएँ सामाजिक मुद्दों—जैसे बाल विवाह, स्वच्छता, शिक्षा और स्वास्थ्य—पर सक्रिय हुईं तथा कई स्थानों पर स्थानीय राजनीति में भी भागीदारी करने लगीं।

महिला स्वयं सहायता समूहों का नेतृत्व :-

निर्णय लेने की क्षमता का विकास :-

महिला स्वयं सहायता समूहों में महिलाओं को संगठनात्मक निर्णय लेने के अवसर मिलते हैं, जिससे उनकी नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। प्रत्येक महिला सदस्य को समूह की बैठकों में भाग लेने का अवसर मिलता है और वे सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होती हैं। इस प्रकार महिलाएँ अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों में अपनी भूमिका निभाती हैं और सामाजिक और व्यक्तिगत मुद्दों पर उनकी आवाज़ सुनी जाती है।

सामाजिक जागरूकता और सुधार :-

SHGs महिलाओं को विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर जागरूक करते हैं। ये समूह बाल विवाह, दहेज प्रथा, स्वास्थ्य, शिक्षा, और स्वच्छता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर जागरूकता अभियान चलाते हैं। इसके माध्यम से महिलाएँ न केवल अपनी स्थिति में सुधार लाती हैं, बल्कि वे अपने समुदाय में भी बदलाव लाने का कार्य करती हैं। उदाहरण के रूप में, राजस्थान के *महिला सहयोग संगठन* ने बाल विवाह और महिलाओं के अधिकारों के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाने का कार्य किया।

पंचायत और स्थानीय निकायों में नेतृत्व :-

महिला स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को पंचायत और स्थानीय निकायों में भागीदारी के लिए प्रेरित किया है। SHGs की महिलाएँ अब पंचायत चुनावों में भाग लेकर अपनी स्थिति और अधिकारों के प्रति अधिक सजग हैं। कई राज्यों में SHGs से जुड़ी महिलाएँ पंचायत प्रतिनिधि के रूप में कार्यरत हैं, जिससे महिलाओं का राजनीतिक और सामाजिक सशक्तिकरण हुआ है।

कोविड-19 महामारी के दौरान SHGs की भूमिका :-

कोविड-19 महामारी के दौरान महिला स्वयं सहायता समूहों ने अभूतपूर्व भूमिका निभाई। इन समूहों ने न केवल महामारी के दौरान मास्क और सैनिटाइज़र का उत्पादन किया, बल्कि सामुदायिक रसोई स्थापित की, जरूरतमंदों को खाद्य सामग्री वितरित की, और स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाए। SHGs के द्वारा किए गए इस प्रकार के कार्यों ने उनकी सामाजिक जिम्मेदारी और नेतृत्व क्षमता को और भी सशक्त किया।

चुनौतियाँ और समाधान :-

विपणन और ब्रांडिंग की कमी :-

SHGs को अपनी उत्पादन इकाइयों के विपणन और ब्रांडिंग में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अक्सर वे अपने उत्पादों को सही बाजार नहीं पा पातीं, जिससे उनके उत्पादों की बिक्री प्रभावित होती है। इसके समाधान के लिए, SHGs को विपणन प्रशिक्षण, डिजिटल प्लेटफार्मों पर पहुंच और सरकारी योजनाओं का समर्थन आवश्यक है।

तकनीकी और डिजिटल साक्षरता की कमी :-

हालांकि महिला स्वयं सहायता समूहों ने सफलता प्राप्त की है, फिर भी कई महिलाएँ डिजिटल तकनीकी और ऑनलाइन बिक्री में साक्षर नहीं हैं। इसके लिए सरकार को तकनीकी प्रशिक्षण और डिजिटल साक्षरता के कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए।

वित्तीय साक्षरता :-

अधिकांश ग्रामीण महिलाएँ वित्तीय साक्षरता से वंचित होती हैं, जिससे वे अपने आर्थिक निर्णयों में सही दिशा नहीं अपना पातीं। SHGs को वित्तीय प्रबंधन और बजट बनाने की ट्रेनिंग देने से उनकी आर्थिक स्थिति में और सुधार हो सकता है।

**उपसंहार :-**

महिला स्वयं सहायता समूह न केवल आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण मंच हैं, बल्कि वे महिलाओं की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार करने का भी एक प्रभावी साधन हैं। SHGs ने महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता, नेतृत्व क्षमता, और समाज में सक्रिय भूमिका निभाने के अवसर प्रदान किए हैं। हालांकि, अभी भी कुछ चुनौतियाँ मौजूद हैं, लेकिन उचित सरकारी समर्थन, प्रशिक्षण और विपणन सुविधाओं के माध्यम से इन चुनौतियों को पार किया जा सकता है। SHGs की यह यात्रा महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।महिला स्वयं सहायता समूह आर्थिक सशक्तिकरण और नेतृत्व विकास का प्रभावी माध्यम हैं। इन्होंने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया, गरीबी कम की और सामाजिक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। नाबार्ड और NRLM जैसी संस्थाओं के सहयोग से SHGs भारत में महिला सशक्तिकरण की मजबूत आधारशिला बन चुके हैं। भविष्य में यदि प्रशिक्षण, विपणन और डिजिटल समावेशन पर ध्यान दिया जाए, तो यह आंदोलन ग्रामीण भारत में व्यापक परिवर्तन ला सकता है।

संदर्भ सूची :-


1. National Bank for Agriculture and Rural Development (NABARD). *SHG—Bank Linkage Programme Reports.*
2. National Rural Livelihood Mission. *Annual Progress Reports.*
3. मायरा, के. जी. (2004). *Self Help Groups and Microfinance in India.*
4. सेठ, के. (2010). *महिला सशक्तिकरण और स्वयं सहायता समूह.*
5. भारत सरकार, ग्रामीण विकास मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट।

# लघु उद्योगों में महिला नेतृत्व: सफलता की कहानियाँ और प्रेरणादायक उदाहरण

**प्रा.ज्योती बाबुराव चिलवंत**
Assistant teacher MA.Med.(Hindi)
श्री.खोलेश्वर महाविद्यालयअंबाजोगाई,बीड

**प्रस्तावना:-**

भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका लंबे समय तक घरेलू कार्यों तक सीमित मानी जाती रही है। परंतु बदलते सामाजिक और आर्थिक परिवेश में महिलाएँ अब व्यवसाय और उद्योग के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। विशेषकर महाराष्ट्र जैसे प्रगतिशील राज्य में महिलाओं ने लघु उद्योगों के माध्यम से अपनी अलग पहचान बनाई है।

लघु उद्योग कम पूंजी, स्थानीय संसाधनों और कौशल पर आधारित होते हैं, जिससे महिलाओं के लिए इनकी स्थापना अपेक्षाकृत सरल होती है। यह न केवल आय का साधन बनता है बल्कि आत्मविश्वास और सामाजिक सम्मान भी प्रदान करता है।

**उद्देश्य:-**

1. महाराष्ट्र की सफल महिला लघु उद्योग उद्यमियों के उदाहरण प्रस्तुत करना।
2. इन कहानियों के माध्यम से महिला नेतृत्व के महत्व को स्पष्ट करना।
3. यह सिद्ध करना कि लघु उद्योग सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम है।
4. लघु उद्योगों में महिला नेतृत्व की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
5. महिला उद्यमियों की सफलता के कारकों का विश्लेषण करना।
6. महिला नेतृत्व के समक्ष आने वाली चुनौतियों की पहचान करना।
7. सरकारी योजनाओं की भूमिका का मूल्यांकन करना।
8. महिला उद्यमिता के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव का अध्ययन करना।

**विषय का महत्व :-**

१.महिला आर्थिक सशक्तिकरण को समझने में सहायक।

२.नीतिनिर्माताओं के लिए उपयोगी।-

३.ग्रामीण एवं शहरी विकास की दिशा में मार्गदर्शक।

४.लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में सहायक।

**विषय की परिकल्पनाएँ :-**

- यदि महिलाओं को पर्याप्त वित्तीय सहायता उपलब्ध हो तो वे लघु उद्योगों में सफल नेतृत्व प्रदान , कर सकती हैं।
- शिक्षा एवं डिजिटल साक्षरता महिला उद्यमिता की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- सरकारी योजनाएँ महिला नेतृत्व को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।
- सामाजिक समर्थन मिलने पर महिलानेतृत्व वाले उद्योगों की स्थिरता बढ़ती है।-

## १. सफल महिला लघु उद्योग उद्यमियों की कहानियाँ

### १.१ हस्त उद्योगो में महिला संघर्ष से सफलता तक :

महिलाओं के लिए हस्त उद्योग आत्मनिर्भर बनने का एक बेहतरीन जरिया है ,कपड़े ,जिसमें आभूषण , और सजावटी सामान जैसे कम निवेश वाले व्यवसाय शामिल हैं। यह क्षेत्र ,मोमबत्ती ,लकड़ी का काम %40 साथ घर बैठे-त्मकता को बढ़ावा देने के साथरचनातक मुनाफा कमा सकता है। सरकार इस क्षेत्र को प्रोत्साहन के लिए विभिन्न योजनाएं जैसे) राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रमप्रदान करती है। (

- **हस्तशिल्प और कलाकृतियां:** हस्तशिल्प उद्योग में 56% महिला कारीगर हैं। आप ज्वेलरी मेकिंग, पेपर क्राफ्ट, मिट्टी के बर्तन, या लकड़ी के सजावटी सामान का काम शुरू कर सकती हैं।
- **सिलाई और बुटीक:** कपड़े का काम फैशन उद्योग में लगातार लाभदायक बना हुआ है, जिसमें अच्छी कमाई की जा सकती है।
- **मोमबत्ती और साबुन बनाना:** यह घर से शुरू किया जाने वाला बहुत कम पूंजी वाला, पर्यावरण के अनुकूल और सुगंधित मोमबत्ती या हस्तनिर्मित साबुन का व्यवसाय है।
- **आचार और पापड़ उद्योग:** यह पारंपरिक और घरेलू मांग वाला उद्योग है, जिसे छोटे स्तर पर घर की महिलाओं द्वारा आसानी से शुरू किया जा सकता है।
- **टेराकोटा और कुम्हार कला:** मिट्टी के दीये, बर्तन, या पेंटिंग वाले सामान बनाना।

### .1अनीता डोंगरे (फैशन और हस्तशिल्प)

अनीता डोंगरे ने भारतीय पारंपरिक **हस्तशिल्प और बुनाई** को आधुनिक फैशन के साथ जोड़ा। उन्होंने ग्रामीण महिला कारीगरों को रोजगार देने के लिए 'ग्रासरूट' ब्रांड शुरू कियारह से जो पूरी त , हस्तकला पर आधारित है।

### .2शुभ्रा चड्ढा :-

इन्होंने भारतीय लोक कला और हस्तशिल्प को एक **फंकी और मॉडर्न** रूप दिया। 'चुंबक' की शुरुआत फ्रिज मैग्नेट और छोटे हस्तशिल्प सामानों से हुई थीजो आज एक करोड़ों का , लाइफस्टाइल ब्रांड बन चुका है।

### .3चाब्वी अनु :-

होम साइंस और टेक्सटाइल की समझ रखने वाली कई महिलाएं **सस्टेनेबल फैशन** में नाम कमा रही हैं। इन्होंने ब्लॉक प्रिंटिंग और प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके हस्तशिल्प को ग्लोबल मार्केट तक पहुँचाया।

**.4मीरा पांडे (आचार और खाद्य उद्योग)**

होम साइंस की पृष्ठभूमि का उपयोग करके कई महिलाओं ने **खाद्य प्रसंस्करण** में सफलता पाई है। घर के बने शुद्ध आचारपापड़ और ऑर्गेनिक मसा ,लों को जैसे बड़े ब्रांड्स की 'लिज्जत पापड़' तर्ज पर छोटे समूहों में सफल बनाया गया है।

**.5स्वाति पांडे :-**

इन्होंने हस्तनिर्मित **नेचुरल साबुन और स्किनकेयर** के क्षेत्र में सफलता हासिल की। रसोई के सामानों और जड़ीबूटियों के विज्ञान का उपयोग करके इन्होंने घर से एक- सफल ब्रांड खड़ा किया

**6.आत्राम पद्मा बाई :-**

तेलंगाना की इस महिला किसान ने 3 एकड़ के कपास खेत से शुरुआत की और एक सफल **एग्रीकल्चर टूल हायरिंग सेंटर** उन्होंने गरीब किसानों के लिए हल, कुदाल और अन्य कृषि उपकरणों को किराए पर देने का व्यवसाय शुरू किया, जिससे वे आज 8 गांवों की सरपंच के रूप में भी नेतृत्व कर रही हैं।

**7.सुप्रिया दास :-**

ओडिशा की सुप्रिया ने **मशीनीकृत बुवाई और खेती** में सफलता पाई है। उन्होंने पारंपरिक तरीकों को छोड़कर मशीनों के उपयोग से 20 एकड़ के क्षेत्र में 'मशीनीकृत पद्धति अपनाई, जिससे समय और लागत दोनों की बचत हुई।

**१.२ लिज्जत पापड़ से जुड़ी महिलाएँ**

महाराष्ट्र में अनेक महिलाएँ सहकारी मॉडल के माध्यम से पापड़ निर्माण जैसे घरेलू उद्योग से जुड़ी हैं। घर से कार्य करते हुए उन्होंने नियमित आय का स्रोत विकसित किया। यह मॉडल महिलाओं को सामूहिक शक्ति प्रदान करता है और कम पूंजी में भी व्यवसाय चलाने की क्षमता देता है।

**१.३ ग्रामीण बांस शिल्प उद्यमी (वर्धा जिला)**

वर्धा जिले की एक महिला ने बांस से घरेलू सजावटी वस्तुएँ और उपयोगी उत्पाद बनाना प्रारंभ किया। शुरुआत घरेलू स्तर पर हुई, परंतु प्रशिक्षण और स्वयं सहायता समूह के सहयोग से व्यवसाय का विस्तार हुआ। आज उनके उत्पाद स्थानीय मेलों और ऑनलाइन माध्यम से भी बेचे जाते हैं।

यह उदाहरण दर्शाता है कि स्थानीय संसाधनों का उचित उपयोग कर महिलाएँ सफल उद्यम स्थापित कर सकती हैं।

**१.४ शहरी घरेलू खाद्य उद्योग:-**

महाराष्ट्र के शहरी क्षेत्रों में कई महिलाओं ने घर से टिफिन सेवा, बेकरी, मसाला निर्माण और अचार व्यवसाय जैसे उद्योग शुरू किए। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म की सहायता से उन्होंने अपने उत्पादों को व्यापक बाजार तक पहुँचाया।

यह उदाहरण बताता है कि तकनीक और नवाचार के माध्यम से महिला नेतृत्व को नया आयाम मिल रहा है।

1. **कल्पना सरोज**:- विदर्भ, महाराष्ट्र)

कल्पना सरोज का जीवन संघर्ष और साहस का उदाहरण है। दलित परिवार में जन्म, बाल-विवाह और सामाजिक उपेक्षा जैसी कठिन परिस्थितियों का सामना करने के बाद उन्होंने छोटे स्तर पर सिलाई और फर्नीचर व्यवसाय शुरू किया। आगे चलकर उन्होंने एक बंद पड़ी कंपनी को पुनर्जीवित किया और उसे लाभकारी उद्योग में बदल दिया।

यह कहानी दर्शाती है कि सामाजिक बाधाएँ महिला नेतृत्व को रोक नहीं सकतीं। लघु उद्योग महिलाओं के लिए आत्मसम्मान और आर्थिक स्वतंत्रता का प्रभावी साधन बन सकता है।

2 **मेधा पाटकर** :- से प्रेरित ग्रामीण महिला समूह (महाराष्ट्र)

हालाँकि मेधा पाटकर मुख्यतः सामाजिक कार्यकर्ता हैं, परंतु उनके आंदोलनों से प्रेरित कई ग्रामीण महिलाओं ने सहकारी समूह बनाकर कृषि-आधारित लघु उद्योग (जैसे जैविक खेती, बीज उत्पादन, खाद्य प्रसंस्करण) शुरू किए।सामाजिक जागरूकता और सामूहिक नेतृत्व से महिलाएँ स्थानीय संसाधनों पर आधारित उद्योग खड़े कर सकती हैं।

4.**उज्जवला गोस्वामी** :-वर्धा की बांस शिल्प उद्यमी (स्थानीय उदाहरण) वर्धा जिले की एक महिला उद्यमी ने बांस से घरेलू सजावटी वस्तुएँ और उपयोगी सामान बनाना शुरू किया। प्रारंभ में यह कार्य घरेलू स्तर पर था, लेकिन बाद में स्वयं सहायता समूह और सरकारी प्रशिक्षण से व्यवसाय का विस्तार हुआ। आज उनके उत्पाद ऑनलाइन और मेलों में बिकते हैं।

4. **सामाजिक प्रभाव** :-

महाराष्ट्र की इन महिला उद्यमियों की सफलता से निम्नलिखित सामाजिक परिवर्तन देखे गए—

- परिवार की आय में वृद्धि
- बच्चों की बेहतर शिक्षा
- महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि
- समाज में सम्मान और पहचान
- अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा जब महिला आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती हैतो वह पूरे परिवार और समाज को आगे बढ़ाती है। ,

**.5चुनौतियाँ और संभावनाएँ:-**

हालाँकि सफलता की अनेक कहानियाँ हैं, फिर भी महिलाओं को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ता है—

- प्रारंभिक पूंजी की कमी
- सामाजिक पूर्वाग्रह
- बाजार तक सीमित पहुँच
- तकनीकी ज्ञान का अभाव

इन चुनौतियों के बावजूद महिलाओं ने अपने साहस और परिश्रम से सफलता प्राप्त की है।

**निष्कर्ष** :-

महाराष्ट्र की सफल महिला लघु उद्योग उद्यमियों की कहानियाँ यह प्रमाणित करती हैं कि लघु उद्योग महिलाओं के लिए सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम है। यह केवल आर्थिक लाभ का साधन नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, सामाजिक पहचान और नेतृत्व का प्रतीक है।यदि महिलाओं को उचित प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और सामाजिक सहयोग मिले, तो वे राज्य और राष्ट्र की आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

# कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासो मे स्त्री पुरुष पात्रों के विविध रूप

- शाधार्थी -

**शेख अली जाफर**

एम.ए., बी.एड (हिंदी)

- मार्गदर्शक -

**डॉ. मुरलीधर अच्युतराव लहाडे**

एम.ए., बी.एड., एम.फिल्., पीएच.डी.

प्रोफेसर एवम् हिन्दी विभागाध्यक्ष

जनविकास महाविद्यालय, बनसारोळा

ता. केज, जि. बीड

**प्रस्तावना :**

कृष्णा अग्निहोत्री आधुनिक युग की ऐसी सशक्त लेखिका हैं जिनके लेखन का केन्द्र-बिन्दु नारी है। उन्होंने अपने जीवन में जो देखा ओर एक नारी पात्रों के माध्यम से साहित्य में उतार दिया। इस अर्थ में उनके उपन्यासों को आत्मकथात्मक उपन्यास भी कहा जा सकता है। 'बात एक औरत की' शीर्षक उपन्यास उनके जीवन के सर्वाधिक निकट है। इसमें उन्होंने अपने जीवन की अधिकांश घटनाओं को प्रस्तुत किया है। जीवन में कदम-कदम पर अनेक विकट परिस्थितियाँ एवं बाधाएं आईं किन्तु उन्होंने जीवन में कभी हार नहीं मानी और उनका सामना करते हुए प्रत्येक क्षण अपने लक्ष्य में संलग्न रही। उन्होंने अपने जीवन संघर्ष को उपनासों के माध्यम में अभिव्यक्ति प्रदान की है। इसलिए उनका कथ्य इतना सजीव बन पड़ा है। उपन्यासों में नारी इनके उपन्यासों में नारी माँ, बहन, बेटी, सास, ननद, मौसी आदि विविध रूपों में दिखाई देती है। जिनकी अपनी-अपनी समस्याएं हैं। 'टेसू की टहनियाँ' में सीता की कुंवारी माँ की झलक दिखाई देती है। बहन और मौसेरी बहन एक ही वातावरण में पलकर भी एक-दूसरे से कितनी अलग हैं। इसका भी यथार्थ चित्रण रीमा के चरित्र के माध्यम से लेखिका ने किया है। कहीं- कहीं मामी, नानी, जेठानी, देवरानी के छुटपुट वर्णन इनके उपन्यासों में दिखते हैं। बेटियों में उम्मी, गुड्डी, अंशु, निम्मों की पीढ़ी के माध्यम से आधुनिक सभ्यता का पता चलता है। लेखिका ने प्रेमिकाओं के विभिन्न रूप अपने ढंग से प्रस्तुत किए हैं। कामकाजी नारी कहानियों की तुलना में उपन्यासों में अधिक दिखाई देती है। नारी - पुरुष के संबंधों पर तो उनके अधिकांश उपन्यासों की नींव है। पति द्वारा पत्नी का शारीरिक एवं मानसिक शोषण अधिकांश उपन्यासों की समस्या है। 'बात एक औरत की उपन्यास में कनु के पिता उसकी माँ के होते हुए किसी अन्य औरत सीमा से संबंध बनाये रखते हैं। घर के लोग सब कुछ जानते हुए भी कुछ नहीं कर सकते। कनु जब उनके संबंधों में अड़चन पैदा करने लगती है तब सीमा उसका विवाह करने पर जोर डालने लगती है। तब कनु के मन में

सवाल उठता है कि- "न यह स्त्री सुन्दर है, न योग्य, न विदुषी, न यह उनकी रिश्तेदार, न ही पिताजी की पत्नी, तब उसे क्यों देखे बिना पिताजी का मन ही नहीं मानता ? ऐसे ही बिना देखे पिताजी माँ के बिना क्यों रह जाते हैं ? क्या होता है किसी और विशेष में, जो पुरुष को इस तरह बांध लेता है ।"[1] उपन्यास में लेखिका ने पुरुष के पुरुषत्व को इतना महान दिखाने का प्रयास किया है कि पत्नी के होते हुए तथा दो जवान बेटियों के सामने पिता की अनैतिकता सभी हदों को पार करके रिश्तों में लाज, शर्म नैतिक-अनैतिक का भेद समाप्त कर देता है। जो आज भी समाज में प्रायः देखने को मिलती है।

कृष्णा अग्निहोत्री ने अपने अधिकांश उपन्यासों में युवतियों को आर्थिक विवशता से जुझते हुए दिखाया है। शिक्षित युवतियां इस समस्या का समाधान कामकाज के द्वारा करती हैं। वहीं अशिक्षित युवतियां घरेलू कार्य करके अपना जीवन यापन करती दिखाई देती हैं। कुछ युवतियों को मजबूरी में अनैतिक कार्यों को भी चुनना पड़ता है जो उनके पूरे जीवन को बर्बाद कर देता है। 'टपरेवाले' की पचिया को माँ की बीमारी के कारण घर का राशन- पानी जुटाने के लिए दुकान वाले बूढ़े से अवैध संबंध बनाने पड़ते हैं। जब भी घर में राशन खत्म होता है राशन के बदले में बूढ़ा उसका बलात्कार करता है। "बेटी की उम्र की लड़की का शील भंग करके उसे संतोष और दया उभर आयी और वह पचिया को गोद में बैठाकर उसे दुलारता रहा ।"[2] गरीबों की बस्ती में अनेकों पचिया जैसी युवतियां हैं जो अपने परिवार का पेट भरने के लिए अपना शील दांव पर लगा देती हैं। समाज न ही तो इनका उद्धार कर सकता है और न ही ठीक से जीने देता है।

अपने उपन्यास 'नीलोफर' में वे दिखाती हैं कि आदिवासी युवती नथनी से लेकर अमेरिका की नीलम (नैंसी) तक नारी के अपमान और उत्पीड़न की श्रृंखला एक ही है। इस सत्य को लेखिका ने अपने बृहत्तर परिवेश को देख-भाल कर तो अर्जित किया है, उनके स्वयं के अनुभवों और लम्बे जीवन-संघर्षों का निचोड़ भी यही है। 'निष्कृति' उपन्यास के माध्यम से मीरा व जोधा के चरित्र से समाज में शोषित व पीडित नारियों की आवाज उठाने का प्रयास किया गया है। नारी की नियति के विभिन्न पक्षों को न केवल प्रखर अभिव्यक्ति दे सकी है। अपितु नारी के आक्रोश और विद्रोह को अपना मुखर समर्थन भी देती है। इनके उपन्यासों के पुरुष पात्र पति रूप में बेहद कमजोर चारित्रिक स्खलन के शिकार हैं। अपनी दुर्बलता से कुंठित व अपनी पढ़ी-लिखी, सुन्दर पत्नी के प्रति ईर्ष्या व संदेह भाव दिखाई देते हैं। पति की इस प्रवृत्ति से पीड़ित पत्नी पहले तो हताश-निराश व टूटती दिखाई देती है, किन्तु एक सीमा के पश्चात् वह अपनी राह खुद बनाने निकल पड़ती है और स्वावलंबी बनकर स्वाधीन जीवन जीती दिखाई देती है। 'बात एक औरत की' कनु,

'टेसू की टहनियाँ' की सीता, 'मैं अपराधी हूँ' की उम्मी, 'नानी अम्मा मान जाओं' की कनु ये सभी नारियाँ नपुसंक पति द्वारा छली गई हैं।

पति का हीन एवं क्रूर व्यवहार इनके जीवन को नारकीय बना देता है। समाज के भय से तथा बच्चों के सिर पर पिता के संरक्षण के कारण पति के साथ रहना इनकी विवशता बन जाती है। यह चाहकर भी इस दलदल से बाहर निकलने का रास्ता नहीं खोज पाती। 'मैं अपराधी हूँ' उपन्यास में नपुसंक पति द्वारा छली गई उम्मी की पीड़ा को व्यक्त करते हुए स्वयं लेखिका कहती है- "क्या आज बिस्तर पर घटित उसके इस आहत तन व मन की कोई साक्षी समाज को सौंपी जा सकती है ? उसके इस घाव से रिसते रक्त को कोई देख सकता है, एक बन्द कमरे में बीते ऐसे कुलषित नकारे क्षणों का किसे निर्णायक होना चाहिए, भोक्ता या श्रोता को ?' [3]

कृष्णा अग्निहोत्री ने पाया कि बहुत सी नारियाँ पर पुरूषों की कुदृष्टि और पतियों के अत्याचार को मूक होकर सह लेती हैं। लेकिन बहुत सी नारियों में विद्रोह की चेतना का उन्मेष कथाकार को आश्वस्त करता है। इस विद्रोह के उन्होंने अपने उपन्यासों में दिखाए हैं।

कई रूप 'टेसू की टेसु कि कहानिया है' की सीता स्वाभिमानी प्रवृत्ति की होने से पति द्वारा आचरण पर लगाया गया झूठा आरोप सहन नहीं करती। वह बिना कुछ सुने रात में ही पति का घर छोड़ देती है। वह स्पष्ट कहती है- "मैं झूठ नहीं सह सकती। यदि सह भी लेती तो इस एक झूठ से जीवन भर अनेक झूठों का सिलसिला जारी न रहता क्या ? वे लोग मेरी सहिष्णुता को अपराधी घोषित करते नहीं थकते।"4 कृष्णा अग्निहोत्री ने अपने उपन्यासों में शिक्षा के द्वारा नारी को आत्मनिर्भर बनाया हैं। उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं अस्तित्व के निर्माण में सहायता की है। लेकिन इससे भी उनकी स्थिति में बहुत अधिक परिवर्तन नहीं आया है। शिक्षित एवं कामकाजी महिलाओं का शोषण आम बात हो गई है। 'मैं अपराधी हूँ की विमला, 'बौनी परछाइयाँ' की गुलबदन, 'कुमारिकाएं' की मारिया से उनके उच्चाधिकारी, उनका शारीरिक शोषण ही नहीं करते बल्कि उनका मानसिक शोषण भी लेखिका ने दर्शाया है। 'मैं अपराधी हूँ' की विमला को उसका बॉस डांटते हुए कहता है- "यदि विमला मेरे साथ खुशी से रहो तो तुम्हें धन भी मिलेगा और प्रमोशन भी। यदि मुंह खोलेगी तो तुम्हारे मुंह पर तेजाब फिंकवा दूंगा । "5 'कुमारिकाएं उपन्यास की मारिया सहकर्मी सुरेश द्वारा बलात्कार की शिकार होकर आत्मघात कर लेती है। उनके उपन्यासों में विवाहिता नारियों की पीड़ा अधिक दिखाई देती है। 'मैं अपराधी हूँ, 'नानी अम्मा मान जाओ', 'टेसू की टहनियाँ, 'कुमारिकाएं', 'बात एक औरत की' उपन्यासों में पति अपने निरंकुश अधिकारों के चलते पत्नी के साथ दुर्व्यवहार और अन्याय करते हैं।

पत्नी उनके लिए भोगने की वस्तु व उनकी दासी से अधिक कुछ नहीं है। उनकी इच्छाएं एवं भावनाएं उनके लिए कोई महत्व नहीं रखती। 'बात एक औरत की' कनु अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहती है - "संजय जैसे ही पति होते हैं क्या ? वहशी । जानवर। सुख-दुःख और अपनेपन के दो शब्द तक नहीं पूछते। परिचय-अपरिचय के बीच कोई सेतु नहीं ... वासना की कमजोर रस्सी । "[6] कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में 'टपरेवाले' की लीला, 'कुमारिकाएं' की रोज, 'निष्कृति की मीरा ये सभी नारियाँ प्रेमिका के रूप में हमारे सम्मुख उभर कर आयी हैं। प्रेम व आत्मसमर्पण की सजा नारी ने सदा लांछन से चुकाई है, वह चाहे उच्च कुल की हो या निम्न कुल की। 'टपरेवाले' उपन्यास में लीला बसोड़ निम्न जाति की युवतीऔर पन्ना निम्न मध्यमवर्गीय परिवार का युवक है। पन्ना और लीला का प्रेम लेखिका ने निश्च्छल दिखाया है। उनके रिश्ते में कहीं कपट नहीं दिखाई देता । पन्ना और लीला आजीवन विवाह नहीं करते। लीला पन्ना के बच्चे को जन्म देती है तथा उसकी परवरिश अकेले ही करती है किन्तु वह पन्ना पर कभी विवाह करने का दबाव नहीं डालती। लेखिका ने लीला के माध्यम से समर्पित प्रेमिका का वर्णन किया है। 'निष्कृति' उपन्यास में मीरा के माध्यम से ऐसी प्रेमिका को दर्शाया है जिसने अपना समर्पण गिरधर गोपाल के चरणों में कर दिया। सारे समाज की उपेक्षा मिलने पर भी मीरा अपने प्रेम के प्रति अडिंग खड़ी रही है। विधवा होने पर जब मायके और ससुराल वालों से उपेक्षित व्यवहार एवं निरादर मिलता है तब मीरा लिखती है, "मेरे तो गिरधर गोपल, दूसरा ने कोऊ, माता-पिता-तात- बन्धु, और न कोऊ ।"[7]

उस काल में नारी की स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने वाली मीरा आज भी अमर है। इसलिए कृष्णा अग्निहोत्री ने मीरा एवं जोधा के चरित्रों के माध्यम से समाज की सारी भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास भी किया है।

कृष्णा अग्निहोत्री के नारी सजग एवं जुझारू है जो गरीब है अनपढ़ है। 'मैं अपराधी हूँ' की शांति स्वाभिमानी, परम्परावादी, कर्मठ नारी है। वह निम्न वर्ग की अनपढ़ किन्तु मेहनत से जी चुराने वाली नहीं है। वह अपना काम ईमानदारी एवं मेहनत से करती है। "मेरे हाथ हुनर, मन में ईमानदारी है सब मालिक क़द्र करते हैं।"[8] इनके अनेक नारी पात्र आधुनिक व मार्डन है, 'कुमारिकाएं' की गुड्डी 'मैं अपराधी हूँ की अंशु, 'नानी अम्मा मान जाओ' की निम्मो इसी प्रकार के चरित्र है। माता-पिता के संरक्षण से वंचित एवं व्यस्तता के कारण समय से पहले उनमें उद्दण्डता एवं हीनता का भाव घर कर जाता है। वे माता- पिता से कटने लगते हैं, तथा अपना रास्ता स्वयं चुनते हैं। वह रास्ता कई बार उनके लिए अहितकारी व अनैतिक होता है। 'कुमारिकाएं की गुड्डी आधुनिकता की होड़ में इतनी आगे निकल जाती है कि वह चाहकर भी पीछे नहीं लौट

पाती। वह अपनी कामाग्नि को शांत करने के लिए अपने ही दोस्तों को खुला आमंत्रण देती है। उसके दोस्त मिलकर उसका जीवन बर्बाद कर देते हैं लेकिन वह आधुनिकता एवं फैशनपरस्ती दुनिया में इतनी लीन हो जाती है कि उसे सही व गलत का अहसास नहीं होता। गुड्डी के चरित्र के माध्यम से लेखिका आधुनिकता पर चोट करते हुए कहती है "जीने के लिए किसी संस्कृति, सभ्यता की उन्हें आवश्यकता नहीं । प्रतिष्ठा लूटने के लिए पैतृक पूंजी ही पर्याप्त है। मुझे तो तरस आता है उनके माता-पिता पर, जिन्होंने 'ब्लैक', स्मलिंग, बेईमानी से रूपये बचाए तो इसलिए कि उनके बच्चे इन बेतुके सुखों के लिए खर्च करें। [9]

**निष्कर्ष**

इस प्रकार उनके उपन्यासों में अधिकतर नारी पात्र केवल अपने आप में सीमित, कुंठित और यातनाग्रस्त नहीं हैं। व्यापक जीवन यथार्थ से उनका रिश्ता बना हुआ है। उनके नारी चित्रण की विशिष्टता है कि जितनी सूक्ष्मता से उन्होंने नारी पात्रों को अभिव्यक्त किया उतनी सहजता से पुरुष पात्रों को नहीं। दूसरी बात उन्होंने पात्रों में कल्पना की जगह यथार्थ एवं जीवंतता की खोज की है। इसलिए उनके नारी पात्र हमें अपने आस- पास ही जीवन से जूझते दिखाई देते हैं, जो प्रेरणा देते हैं कि जीवन हारने, टूटने व पलायन के लिए नहीं है, वरन् जीवन की सार्थकता प्रतिकूलताओं पर विजय प्राप्त करने में है।

**सन्दर्भ**


1 'बात एक औरत की,' कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.सं.- 35, पूनम पुस्तक भवन, दिल्ली, सं2013

2 **'टपरेवाले,' कृष्णा अग्निहोत्री**, पराग प्रकाशन, दिल्ली, सं 1976 पृ.सं.-37

3 'मैं अपराधी हूँ, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.सं.40, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, सं.2001

4 **'टेसू की टहनियाँ, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.सं**. 120, **नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर एवं दिल्ली, सं**.- 2014

5 **'मैं अपराधी हूँ, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.सं**. 250

6 'बात एक औरत की, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.सं. 37-38

7 'निष्कृति, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.सं. 75, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, सं 1987

8 ' **मैं अपराधी हूँ, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.सं**. 204

9 'कुमारिकाएं, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ. सं. 127, कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली, सं.- 2010

# हिंदी उपन्यासों में महिला उद्योजकता का चित्रण

**डॉ. अमोल पालकर**
प्रोफेसर,स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग ,
बलभीम महाविद्यालयबीड ,
इमेल:amolpalkar00@gmail.com

**सारांश**

हिंदी उपन्यासों ने भारतीय समाज की बदलती सामाजिक एवं आर्थिक संरचना को यथार्थवादी रूप में अभिव्यक्त किया है। स्त्री की आर्थिक चेतना और आत्मनिर्भरता का प्रश्न आधुनिक हिंदी उपन्यासों में विशेष महत्व रखता है। यद्यपि प्रारंभिक हिंदी उपन्यासों में 'महिला उद्योजक' का प्रत्यक्ष स्वरूप स्पष्ट नहीं मिलता, किंतु आर्थिक निर्णयक्षमता-, आत्मनिर्भरता और नेतृत्व के रूप में उद्यमिता के तत्त्व स्पष्ट रूप से विद्यमान हैं। यह शोध आलेख हिंदी उपन्यासों में महिला उद्योजकता के बीज रूप, चेतना रूप और विकसित रूप का क्रमिक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

## 1. प्रस्तावना

भारतीय समाज में स्त्री की भूमिका परंपरागत रूप से घरेलू दायित्वों तक सीमित रही है, किंतु आधुनिक युग में शिक्षा, औद्योगिकीकरण और सामाजिक जागरण ने उसकी स्थिति में व्यापक परिवर्तन किया। हिंदी उपन्यासों ने इस परिवर्तनशील यथार्थ को सशक्त अभिव्यक्ति दी है।

स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता ही उसकी सामाजिक स्वतंत्रता का आधार है। महिला उद्योजकता इसी स्वतंत्रता का व्यावहारिक स्वरूप है। हिंदी उपन्यासों में स्त्री पात्रों की संघर्षशीलता और आर्थिक आत्मनिर्भरता इस उद्यमी चेतना का संकेत देती है।

## 2. प्रारंभिक हिंदी उपन्यास और आर्थिक चेतना

### 2.1 यथार्थवाद और स्त्री का आर्थिक प्रबंधन

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास **गोदान** में धनिया का चरित्र आर्थिक संकटों के बीच परिवार का संचालन करने वाली सशक्त स्त्री के रूप में उभरता है। वह सीमित संसाधनों में भी संतुलन बनाए रखती है )1)। उपन्यास के उत्तरार्ध में उसका निर्णयात्मक व्यक्तित्व और अधिक सशक्त होकर सामने आता है )1)।

इसी प्रकार **सेवासदन** में सुमन का जीवन आर्थिक पराधीनता की त्रासदी को उद्घाटित करता है )2)। यहाँ स्त्री की आर्थिक निर्भरता उसके सामाजिक शोषण का कारण बनती है।

इन उपन्यासों में प्रत्यक्ष उद्यमिता नहीं है, परंतु आर्थिक प्रबंधन, जोखिम और आत्मसम्मान की चेतना उद्यमिता के बीज रूप को व्यक्त करती है।

## 3. प्रगतिवादी उपन्यासों में स्त्री की स्वतंत्र चेतना

### 3.1 सामाजिक रूढ़ियों से संघर्ष

यशपाल के उपन्यास **दिव्या** में नायिका सामाजिक संरचनाओं के विरुद्ध संघर्ष करती हुई आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होती है )3)। वह परिस्थितियों को स्वीकारने के बजाय उन्हें बदलने का साहस दिखाती है।

### 3.2 वैचारिक आधार

महादेवी वर्मा की कृति **श्रृंखला की कड़ियाँ** में स्त्री की स्वतंत्र पहचान और आत्मसम्मान को प्रमुखता दी गई है )4)। यह वैचारिक आधार आगे चलकर उपन्यास साहित्य में स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता के रूप में विकसित होता है।

## 4. समकालीन हिंदी उपन्यासों में महिला उद्योजकता

### 4.1 पारिवारिक और आर्थिक स्वायत्तता

मन्नू भंडारी के उपन्यास **आपका बंटी** में स्त्री पात्र अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेती है और आर्थिक स्वतंत्रता की ओर अग्रसर होती है )5)।

### 4.2 औद्योगिक परिवेश में स्त्री

चित्रा मुद्गल के उपन्यास **आवां** में औद्योगिक परिवेश और श्रमिक जीवन का यथार्थ चित्रण है। स्त्री यहाँ आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करती है )6)।

### 4.3 ग्रामीण स्त्री का स्वावलंबन

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास **इदन्नमम** में ग्रामीण स्त्री सामाजिक एवं आर्थिक बंधनों को तोड़ते हुए आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करती है )7)।

## 5. साहित्य और समकालीन महिला उद्यमिता

आधुनिक भारत में महिला उद्यमिता ने व्यापक रूप ग्रहण किया है। उदाहरणस्वरूप, किरण मजूमदारशॉ- ने Beacon की स्थापना कर वैश्विक स्तर पर पहचान बनाई। इसी प्रकार फाल्गुनी नायर ने Nykaa के माध्यम से डिजिटल उद्यमिता का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत किया।

ये उदाहरण दर्शाते हैं कि हिंदी उपन्यासों में विकसित स्त्रीचे-तना आज वास्तविक जीवन में उद्यमिता के रूप में साकार हो चुकी है )8)।

## 6. निष्कर्ष

हिंदी उपन्यासों में महिला उद्योजकता का चित्रण क्रमिक विकास की प्रक्रिया से गुजरता है -

- प्रारंभिक यथार्थवादी साहित्य में बीज रूप में महिला उद्योजकता का चित्रण दिखाई देता है।
- प्रगतिवाद में चेतना रूप में महिला उद्योजकता का चित्रण पाया जाता है तो,
- समकालीन उपन्यासों में विकसित रूप महिला उद्योजकता का चित्रण दिखाई देता है।

अतः स्पष्ट है कि हिंदी उपन्यासों में स्त्रीचेतना का विकास आधुनिक महिला उद्यमिता की - सांस्कृतिक एवं वैचारिक आधारशिला है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रेमचंद, मुंशी. *गोदान.* नई दिल्लीराजकमल प्रकाशन :, 1936, पृ .54-60, 312-318।

2. प्रेमचंद. *सेवासदन.* नई दिल्लीराजपाल एंड संस :, 1918, पृ .89-96।
3. यशपाल. *दिव्या.* नई दिल्लीराजकमल प्रकाशन :, 1958, पृ .132-140, 260-268।
4. वर्मा, महादेवी. *श्रृंखला की कड़ियाँ.* इलाहाबादलोकभारती प्रकाशन :, 1942, पृ .45-52।
5. भंडारी, मन्नू. *आपका बंटी.* नई दिल्लीराधाकृष्ण प्रकाशन :, 1971, पृ .45-52, 118-123।
6. मुद्गल, चित्रा. *आवां.* नई दिल्लीराजकमल प्रकाशन :, 1990, पृ .67-75, 210-218।
7. पुष्पा, मैत्रेयी. *इदन्नमम.* नई दिल्लीवाणी प्रकाशन :, 1995, पृ .101-110, 225-232।
8. भारत सरकार. *महिला उद्यमिता विकास रिपोर्ट.* नई दिल्लीसूक्ष्म :, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, 2022, पृ .15-28, 54-60।

# महिला नेतृत्व का आर्थिक और सामाजिक प्रभाव

**प्रा राजेंद्र वसंतराव जाधव . (सहा .प्राध्यापक)**
हिंदी विभाग, के.एच.एम.टी. महाविद्यालय, नाशिक
Email Id- rvjadhav71@gmail.com
Mo. No. – 8657102016

**प्रस्तावना :**

भारत देश की प्राचीन परंपराओं की बात करें तो अनेके महिलाओं ने सामाजिक,धार्मिक और आर्थिक गतिविधियों में अपना प्रभाव दिखाया है। यहां तक कि राजनीतिक क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा है। समाज की उन्नति के लिए भारतीय प्राचीन,सामाजिक परंपरा में योगदान देने वाली महिलाओं में गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा आदि, धार्मिक परंपरा में आंदाल, कात्यायनी, महादेवी, मीराबाई आदि, तो राजनीति में रजिया सुल्तान, रानी दुर्गावती, दुर्गा माता, पद्मावती जैसी अनेक महिलाएं थी; जिनकी प्रेरणा से भारत देश के संस्कृति की रक्षा होती रही। अतः देश निर्माण में महिला नेतृत्व का योगदान महत्वपूर्ण रहा है।

- **महिला नेतृत्व का आर्थिक प्रभाव**

(1 आर्थिक विकास नीति -

महिला नेतृत्व अपने कार्य कुशलता के दम पर मजबूत संगठन और कार्य क्षेत्र को अधिक भक्कम बनाती है। परिणामतदेश की अर्थव्यवस्था में वृद्धि होकर वह अधिक शक्तिशाली बनती है। महिला : किसी की कठपुतली होकर काम नहीं करती बल्कि एक सशक्त समाज का नेतृत्व बनकर जिम्मेदारी निभाती है।

(2सेवा सेक्टरों में नौकरी के अवसर -

देश के सेवा सेक्टरों में महिला जहांवहां नौकरी के अवसर बढते है। -जहां नेतृत्व करती है वहां-साथ देश की जिम्मेदारी को -जिम्मेदार महिला अपने पैरों पर खड़ी होकर परिवार की जिम्मेदारी के साथ सक्षमता से नि◌ाने का काम करती है।

(3परिवार के साथसाथ समाजोन्नति- -

सामाजिक समरसता और समानता के कारण महिलाएं अपने परिवार को अच्छी शिक्षा तथा संस्कार देती है। इन्हीं संस्कारों से सामाजिक उन्नति का मार्ग सुकर बनता है। जिससे समाज में आनंदमय शांति एवं सौहार्द की भावना बढ़ती है। महिला नेतृत्व का आर्थिक और सामाजिक जीवन पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। महिलाएं नीतिनिर्माण-, रोजगाराभिमुख व्यवसाय, शिक्षा, लोकतंत्र, प्रशासन, खेल , सामाजिक व्यवहार तथा राजनीतिक संस्थानों में कुशल एवं खंबीर नेतृत्व करती है। जिससे निर्णय ,संशोधन प्रक्रिय◌ा में सुसंगठित और सर्वसमावेशी बदलाव आता है।

(4सर्व समावेशक आर्थिक बदलाव -

वर्ल्ड बैंक और इंटरनेशनल मोनेटरी फंड के अनुसार जब महिलाओं की निर्णय क्षमता और श्रम भागीदारी में नेतृत्व बढ़ता है। तो राष्ट्रीय GDP में वृद्धि होती है। शिक्षित महिलाएं संसाधनों का समयानुरूप बेहतर उपयोग करती है; जिसके चलते उत्पादकता में वृद्धि की संभावनाएं और बढ़ती हैराष्ट्रीय बल्कि ; निर्माण में आय बढ़कर देश का विकास होता है।

(5कॉर्पोरेट प्रदर्शन में सुधार नीति -

Mckinsey & Compani के अनुसार जिन कंपनियों के बोर्ड में अधिक महिलाएं होती है, वह वित्तीय प्रदर्शन में बेहतर करती है। महिलाएं सूक्ष्म निर्णय। अतः महिलाओं के निर्माण में बेहतर होती है- सूक्ष्म नियोजन, निर्णय क्षमता तथा नवीन दृष्टिकोण की वजह से कॉरपोरेट प्रदर्शन और औद्योगिकता में सुधार होता है।

(6सामाजिक निवेश में बढ़ोतरी -

महिलाएं अक्सर शिक्षा, स्वास्थ्य, संगठन और सामाजिक निर्माण में अधिक ध्यान देखकर देश हित में दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता लाती है। भारत में लगभग के आसपास से अधिक कंपनियों के अध्ययन 800 से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि जहां महिलाओं का सर्वसमावेशी कार्यकारी नेतृत्व है, वहां लाभ अधिक है। साधारणतःएक अध्ययन से पाया गया है कि %63से %65कॉर्पोरेट कंपनियों में प्रमुख नेतृत्व में महिलाएं अभी भी उपस्थित नहीं है। हालांकि वहां उनकी उपस्थिति के लाभ स्पष्ट है। अनेक शोधों से यह पाया गया है कि महिला नेता और नेतृत्व वाले निर्वाचन क्षेत्र में वहां का आर्थिक विकास दर अधिक रहा है। The Times of India के अनुसार सकारात्मक निर्णय क्षमता के कारण स्थानीय विकास की गति और अधिक बढ़ रही है।

- **महिला नेतृत्व का सामाजिक प्रभाव**

(1स्थानीय निकायों में प्रतिनिधित्व -

भारतीय राज्य प्रणाली में ऐसी अनेक महिलाएं हैं जिन्होंने स्थानीय राजकारण में प्रतिनिधित्व करके माता एवं शिशु स्वास्थ्य, सेवा प्रणाली, माता पोषण कार्यक्रम, स्वच्छता और शिक्षा में सुधार लाने का भरकम प्रयास किया है। भारत में राजनीति और सामाजिक सुधार में काम करने वाली महिलाएं जैसे कि सरोजिनी नायडू, सुचेता कृपलानी, इंदिरा गांधी, मीरा कुमारी जैसी अनेक महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री और लोकसभा अध्यक्ष के रूप में भारत का नेतृत्व करके देश की प्रगति की है। सावित्रीबाई फुले, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, अहिल्याबाई होलकर, विजयालक्ष्मी पंडित, मृदुला साराभाई, अम्मू स्वामीनाथन जैसी अनेक महिलाओं ने सामाजिक सुधार का कार्य किया और महिला सशक्तिकरण की मजबूत नींव रखी।

वैश्विक दृष्टि से देखा जाए तो लगभग %26महिलाएं विश्व में सामाजिक कार्य निर्माण में सहभाग लेकर प्रतिनिधित्व कर रही है। जिससे विश्व निर्माण मे सहायता हो रही है।

(3ग्रामीण रोजगार एवं महिला सशक्तिकरण -

अनेक महिलाएं छोटेटे समूह के माध्यम से संगठित होकर बचत गटछो-, लघु उद्योग, पशुपालन, कृषि सहायक, हस्तकला शिल्प, पापड़ उद्योग, सिलाई उद्योग, प्रक्रिया उद्योग में सक्रिय सहभागी होकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने हेतु ग्रामीण रोजगार के अवसर निर्माण कर रही है।

इंडिया टाइम्स के अनुसार उत्तर प्रदेश जैसे राज्य में ग्रामीण रोजगार निधि कार्यक्रम से लगभग 23 लाख से अधिक ग्रामीण महिलाओं को रोजगार मिला। वह आत्मनिर्भर बनते हुए अपना सपना साकार कर रही है।

महिलाओं को समाज में उनके मूल अधिकारों को प्राप्त करने के लिए सक्षम बनाना ही महिला सशक्तिकरण है। स्वातंत्र्य, समता, बंधुता और न्याय जैसे अनेक मूल्यों के तहत महिलाओं ने पितृसत्ताक मानसिकता का हमेशा विरोध करते हुए समाज को जागृत करने का काम किया है। अगर उनके स्वच्छ मनसूबों को सही दिशा मिलेगी तो समाज की प्रगति निरंतर होती रहेगी।

(4सामाजिक विकास -

मलाला यूसुफजाई ने सामाजिक विकास को दिशा देते हुए शिक्षा के अधिकार के लिए वैश्विक आंदोलन की नींव रखी और समाज को प्रेरणा दी है। मिशेल ओबामा ने शिक्षा के साथ-साथ महिला स्वास्थ्य और उनके अधिकारों को मजबूत करने के लिए वैश्विक कार्य किया है। जेसिंडा जॉर्डर्न ने सामाजिक विकास के लिए न्यूजीलैंड में आंदोलन खड़ा करते हुए संवेदनशील और सर्व समावेशक विकास किया।

अंतिमतस्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर :, राष्ट्रीय स्तर से लेकर वैश्विक स्तर तक अनेक महिला नेतृत्व ने नई दिशा प्रदान की और आर्थिक एवं सामाजिक विकास का मार्ग सुकर किया है।

**निष्कर्ष** -

महिला नेतृत्व के आर्थिक और सामाजिक प्रभाव से आर्थिक समृद्धि, सामाजिक न्याय और सतत विकास का लक्ष्य रखने के कारण देश की GDP में हमेशा वृद्धि होती रही। आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव को नीतिगत अंतर्दृष्टि मिलती रही। लैंगिक समानता को बल मिला। पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर आर्थिक वृद्धि, सामाजिक समावेशकता और निरंतर विकास में संतुलन बनाने का काम किया। शिक्षा, स्वास्थ्य, विकास और सामाजिक परिवर्तन को बल देकर देश की प्रगति का मार्ग मजबूत किया।

**संदर्भ** -

(1लोक अर्थशास्त्र कुमार राजीव .डॉ :,अर्जुन पब्लिशिंग, दरियागंज (2009-प्रथम संस्करण)

(2भारतीय आणि जागतिक आर्थिक विकास कायंदे पाटील.गंगाधर वि .डॉ :,चैतन्य प्रकाशन नाशिक 13-(2001 प्रथम आवृत्ती जून)

(3महिला अधिकार ममता मेहरोत्रा :

(4आघाडीचे महिला नेतृत्व मेहता पब्लिशिंग :

(5भारतीय महिला नेतृत्व राजश्री घोष .संपा :

# सरकारी योजनाओं और नीतियों की भूमिका: महिलाओं के स्वरोजगार के लिए सहयोग या चुनौतियां?

* शोध छात्र *

**शेख तौफीक महंमद रफीक**

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, छत्रपती संभाजीनगर.

(अनुसंधान केंद्र :- बलभीम आर्टस् सायंस कॉमर्स कॉलेज, बीड)

प्रस्तावना :- एक महिला नानी है,दादी है, माँ है, बहन है,बीवी है, दोस्त है रीश्तो का हर स्वरूप महिला मे है l प्यार की जिती जागती मूरत महिला है l आज के समय मे महिलाओ का आर्थिक सशक्तिकरण किसी भी देश के समग्र विकास का महत्त्वपूर्ण आधार माना जाता है l

स्वरोजगार माहिलाओ को आत्मनिर्भर बनाने और उनके आत्मविश्वास को बढाने का एक प्रभावी माध्यम है इसी उद्येश्यसे सरकार ने विभिन्न योजनाओ और नितियों को लागू किया है l जिनका लक्ष्य महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रशिक्षण और अवसर प्रदान करना है l हालाकी इन योजना के बावजूद कई सामाजिक आर्थिक और प्रशासनिक चुनौतिया भी सामने आती है, जो माहिलाओ के स्वरोजगार की राह मे बाधा बनती है l इसलिये यह आवश्यक है की सरकारी प्रयासो की भूमिका और उनसे जुडी चुनौतियां का समग्र रूप से विश्लेषण किया जाए, ताकि महिलाओ के सशक्तिकरण की दिशा मे प्रभावी कदम उठाया जा सके जिससे माहिलाओ का आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक विकास हो l

सरकारी योजनाओं और नीतियों की भूमिका: महिलाओं के स्वरोजगार के लिए सहयोग या चुनौतियां?

हमारे भारत मे माहिलाओ का सशक्तिकरण केवल सामाजिक बदलाव तक सीमित नही है बल्की आर्थिक स्वतंत्रता भी इसका महत्वपूर्ण हिस्सा हैंl स्वरोजगार माहिलाओ को आत्मनिर्भर बनाने का प्रभावी माध्यम हैं l इस दिशा मे सरकार ने कई योजनाओ और नितीयो को लागू किया हैं जिनका उद्देश्य महिलाओ को शिक्षण और आर्थिक रूप से मजबूत बनाना हैं l महाराष्ट्र मे सरकार महिलाओ के सशक्तिकरण स्वस्थ और आर्थिक स्वातंत्रता के लिए कई योजनायें चलाती हैंl

* महाराष्ट्र सरकार की प्रमुख महिला योजनाएं :-

* मुख्यमंत्री - माझी लाडकी बहिन योजना : जो 21 से 65 वर्ष की आयु की महिलाओ को आर्थिक रूप से स्वातंत्र् बनाने के लिए प्रतिमाह ₹1500की सहायता l

*महाराष्ट्र लेक लडकी योजना : बेटीयों के जन्म के बाद विभिन्न चरणो मे वित्तीय सहायता l

* माझी कन्या भाग्यश्री योजना : बेटीयों को शिक्षा और स्वस्थ के लिए वित्तीय सहायता l

* सामर्थ्य (मिशन शक्ती): उज्ज्वलास्वाधार गृह और कामकाजी महिला छात्रावास जैसी योजनाएं जो महिलाओ सशक्त बनाती हैं l

* माता सुरक्षित तर घर सुरक्षित अभियान: 18 वर्ष से अधिक आयु की महिलाओ की स्वास्थ जाँच l* महिला समृद्धी योजना (सामाजिक न्याय विभाग ) चर्मकार समुदाय की महिलाओ को 4 प्रतिशत की कम ब्याज दर पर ₹2500 से ₹50000 तक ऋणl

* महिला किसान योजना : ग्रामीण क्षेत्रो में कृषी व्यवसाय के लिए सबसिडी और ऋण l

* सुकन्या समृद्धी योजना : (केंद्र सरकार के साथ मिलकर ) लडकियों के सूनहरें भविष्य के लिए बचत l

इन योजनाओ का उद्देश्य महिलाओ को समाज में समान अवसर और सुरक्षा प्रदान करना हैंl यह योजनाओ में समय - समय पर सरकार बदल भी कर सकती हैं या बंद कर सकती हैं l इनमे से कई योजनाओ का लाभ वर्तमान काल में महिलाओ को होता हैं l जिनमे से प्रमुख योजना जो ' मुख्यमंत्री माझी लाडकी बहिणी योजना' हैं l जिसके तहत महिलाओ को जो 21 से लेकर 65 वर्ष आयु की हैl जिस-जिस ने इस योजना का लाभ लिया है उन्ही के बँक खाते में ₹1500 प्रतिमाह आते है l जिससे ऊन महिलाओ को थोडा आर्थिक आधार मिलता है l वे उन पैसो से अपनी जरुरते पुरी करते हैl हालाकी यह रकम बहुत ज्यादा नही है ; मगर फिर भी यह महिलाओ को आर्थिक सहायता प्रदान करते है इन पैसो को पाकर महिला बहुत आनंदीत होती है l जो के पैसे सीधे उनके बँक खाते में जमा होते हैl कुछ महिलांये पैसे को अपने घर खर्च में उपयोग कर लेती है l जिससे घर खर्च मे आर्थिक सहायता मिलती है l जिन महिलाओ की आर्थिक परिस्थिती दुर्बल है उन महिलाओ को ' मुख्यमंत्री माझी लाडकी बहिणी योजना ' के ₹ 1500 बहुत मायने रखते है l जैसे वह कहेते है ना "फुल नही फुल की पत्ती सही"

इसी तरह 'महाराष्ट्र राज्य मार्ग परिवहन महामंडळ' (MSRTC) जो महाराष्ट्र राज्य की बस सेवा है इन मे भी महिलाओ को 50 प्रतिशत छुट दि गयी है महामंडल के सभी प्रकार के बसो मे जैसे:- शिवाई, शिवशाही, निम-आराम, साधी लालपरी आदि बसेस मे तिकीट सुविधा मे 50 प्रतिशत की छुट दि गयी है l जिससे महिलाओ की आधे पैसो की बचत होती है और उन्हे इस से सहायता मिलती है l वैसे तो 70 वर्ष के आयु के उपर वरिष्ठ नागरिक को बस के आवा-जावी मे बिलकुल मुफ्त सुविधा प्रदान है l इन सुविधाओ मे हाल ही मे कुछ बदलाव किए गए है l इन सभी सरकारी योजनाओ और नितीयों की महिलाओ को अच्छि सहुलियत मिलती है l जिस से महिलाओ को स्वरोजगार के लिए आर्थिक सहायता भी मिल पाती है l

सरकारी योजनायें महिलाओ के लिए लाभदायक है ; लेकिन इन मे कई बार चूनौतियां आति है l जैसे ग्रामीण क्षेत्रो मे कई महिलाओ तक इन योजनाओ की जानकारी नही मिल पाती, इसके अलावा बँक से ऋण/कर्ज लेने की प्रक्रिया जटिल होती हैl जिससे महिला आसनी से लाभ नही उठा पाती l सामाजिक बाधाएं, शिक्षा की कमी, और पारिवारिक जिम्मेदारीयां भी महिलाओ को स्वरोजगार मे बाधा बनती है l और कई बार प्रशिक्षण और बाजार की उचित सुविधा भी उपलब्ध नही हो पाती l

निष्कर्ष:- अंतत: यह कहा जा सकता है की सरकारी योजनायें और नितीयां महिलाओ के स्वरोजगार को बढावा देने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है l अगर इन योजनाओ का सही ढंग से प्रचार और प्रसार किया जाए तो महिलाए अधिक संख्या मे स्वरोजगार की ओर बढ सकती है l साथ ही समाज और परिवार का सहयोग भी जरुरी है l जब महिलाए आर्थिक रूप से सशक्त होंगी तब समाज और देश का विकास भी तेजी से होंगा l

* संदर्भ

1) महिला व बालविकास विभाग, महाराष्ट्र.

1) MSRTC वेबसाईट.

# कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योगों में महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व

शोध छात्रा
**प्रियंका अशोक राऊत**
बलभीम महाविद्यालय, बीड

शोध निर्देशक
**प्रो.डॉ. ललिता राठोड**
बलभीम महाविद्यालय , बीड

❖ **प्रस्तावना :**

भारत एक सांस्कृतिक और पारंपरिक विविधता वाला देश है और प्राचीन काल से ही अपनी कला और संस्कृति के लिए प्रसिद्ध रहा है। भारत में विभिन्न प्रदेशों की अपनी विशिष्ट शैली एवं लोककला ही उनकी पहचान होती है।

ग्रामीण भारत की सांस्कृतिक विविधता और पारंपरिक कौशल का सबसे सुंदर और जीवंत स्वरूप हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों में देखने को मिलता है। ये उद्योग न केवल ग्रामीण रोजगार का प्रमुख स्रोत हैं, बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपरा के संवाहक भी हैं। भारत में हस्तशिल्प का कारोबार भी बहुत प्रसिद्ध है। मोहेनजोदड़ो, हड़प्पा आदि समय की कलाकृतियों, आभूषणों, बर्तनों आदि में भी भारतीय हस्तशिल्प का बेजोड़ नमूना देखने को मिलता है। यह क्षेत्र विशेष रूप से आदिवासी और पहाड़ी क्षेत्रों में अधिक सक्रिय रहता है, जहाँ पारंपरिक शिल्प पीढ़ियों से संजोए जा रहे हैं। इन कुटीर उद्योग में काम करने वालों को न केवल आर्थिक लाभ होता है, बल्कि वे अपनी सांस्कृतिक विरासत को भी संरक्षित रखते हैं। महिलाओं की भागीदारी इन उद्योगों में विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिससे उन्हें आत्मनिर्भरता और सामाजिक सम्मान भी प्राप्त होता है।

स्वतंत्रता पूर्व भारत में लगभग सभी गाँवों में कोई न कोई कुटीर उद्योग अवश्य होता था। उनमें पुरुषों के साथ साथ महिलाओं का भी काफी योगदान रहता था। भारतीय अर्थव्यवस्था में कुटीर एवं -ल्प उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान है। यह कृषि के बाद रोजगार प्राप्त करने वाला दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र हस्तशि है। गांधीजी कहते थे कि, "लघु उद्यम और कुटीर उद्योग के बिना किसान की आर्थिक तरक्की होना थोड़ासा असंभव सा लगता है -, किसान केवल खेत की फसल से अपनी आजीविका नहीं चला सकता। उसे किसानी के साथ सहायक आय के लिए सहायक उद्योग चाहिए ही।"[1]

भारत में कुटीर उद्योग राष्ट्रीय स्तर में सामाजिक एवं आर्थिक विकास में अपना साथ रखते हैं। इस उद्योग को भारत की औद्योगिकरण नीति में शामिल करने पर MSME (Micro Small & Medium

Enterprises) में शामिल करने पर बल दिया जा रहा है। इस प्रकार कुटीर उद्योग के व्यवसाय के साथ - साथ देश की अर्थव्यवस्था में भी सकारात्मकता आएगी।

❖ **कुटीर उद्योग का स्वरूप**

- **परिभाषा :**

प्रशुल्क आयोग के अनुसार कुटीर उद्योग वह उद्योग है जो पूर्ण रूप" से या आंशिक रूप से परिवार के सदस्यों की सहायता से एक कालीन या अंशकालीन व्यवसाय के रूप में चलाया जा सकता है।"[2]

कुटीर उद्योग वे उद्योग हैं जो घर या छोटे स्तर पर परिवार के सदस्यों द्वारा पारंपरिक तरीकों से चलाए जाते हैं।

धर एवं लिडाल के अनुसार कुटीर उद्योग पूर्णतः घरेलु उद्योग होते हैं", जिनमें किराए के मजदूर बहुत कम या नहीं लगाए जाते हैं।"[3]

- **कुटीर उद्योग के उदाहरण :**

1. बुनाई। (हथकरघा)
2. अगरबत्ती बनाना।
3. मधुमक्खी पालन।
4. रेशम उत्पादन।
5. गुड और खांडसारी।
6. आचार। पापड बनाना ,

❖ **कुटीर उद्योग की विशेषताएं :**

(1ये व्यक्तियों द्वारा निजी संसाधनों से संचालित किये जाते हैं।

(2ये साधारणतः पारिवारिक या स्थानिक श्रमिकों का प्रयोग करते हैं।

(3इनके द्वारा प्रयोग किए जाने वाले उपकरण साधारण होते हैं।

(4इनमें पूंजी निवेश कम होता है।

(5ये साधारणतः अपने भवन में वस्तुओं का उत्पादन करते हैं।

(6ये देशी प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके वस्तुओं का उत्पादन करते हैं।

(7ये उद्योग प्रायः स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

(8ये स्वदेशी प्रौद्योगिकी )Indigenous Technology) का प्रयोग करके वस्तुओं का उत्पादन करते हैं।

ग्रामविकास में लघु एवं कुटीर उद्योग की भूमिका को स्पष्ट करते हुए महात्मा गांधीजी कहते थे कि जब " तक हम ग्रामीण जीवन को पुराने हस्तशिल्प के संबंध में पुनरुज्जागृत नहीं करते, हम ग्राम्यांचलों का विकास और पुनर्निर्माण नहीं कर पाएँगे। भारत का किसान तभी उन्नति कर सकता है, जब वो अपनी आवश्यकताओं के लिए शहरों पर निर्भर न होकर गाँवों को स्वावलंबी बनाए।"[4]

❖ **हस्तशिल्प उद्योग का स्वरूप**

- **परिभाषा :**

हस्तशिल्प उद्योग उन रचनात्मक कार्यों और उत्पादों का एक समूह है, जिन्हें मुख्य रूप से हाथ या साधारण औजारों की सहायता से बनाया जाता है, जिसमें मशीनों का उपयोग न्यूनतम या न के बराबर होता है।

- **हस्तशिल्प उद्योग के उदाहरण :**

1. मिट्टी के बर्तन
2. कशीदाकारी वाले कपड़े )Embroidery)
3. लकड़ी के फर्निचर
4. धातु के सामान
5. हाथ से बने गहने

❖ **हस्तशिल्प उद्योग की विशेषताएँ :**

1) इसमें लकड़ी, धातु, कपड़े, मिट्टी, पत्थर और बेंत जैसी प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग किया जाता है।

2) इसमें भारी मशीनरों के बजाय मानवीय कौशल और शारीरिक श्रम का प्रयोग होता है।

(3ये उत्पाद सजावटी और उपयोग दोनों तरह के होते हैं।

(4हर उत्पाद अपने आप में अनोखा होता है क्योंकि यह कारीगर की कल्पनाशीलता से बनता है।

(5ये शिल्प अधिकतर पारंपरिक और टिकाऊ सामग्रियों से बनते हैं।

(6यह भारतीय संस्कृति और स्थानीय पारंपरिक कला को प्रदर्शित करता है।

शिल्पकला भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है", हमारी जीवंत विरासत है। देश के दूरदराज क्षेत्रों में पनपने वाले अधिकांश शिल्प परिवार और अतीत की विरासत के रूप में प्रचलित हैं। शिल्पकारों को शिल्प अपने पूर्वजों से विरासत में मिला है। सदियों से इस परंपरा का पालन किया जा रहा है। हमारे उत्कृष्ट शिल्पकार भारत की सांस्कृतिक विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं।"[5]

राष्ट्रीय हस्तशिल्प सप्ताह 14-8)दिसंबर मनाया जाता है जिसमें भारत के कारीगरों का प्रतिवर्ष ( सम्मान एवं प्रोत्साहन हेतु पर कार्य किया जाता है।

❖ **कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योगों में महिलाओं की भागीदारी एवं नेतृत्व :**

भारतीय जीवन दर्शन में महिलाओं का स्थान हमेशा से ही केंद्र में रहा है", क्योंकि स्त्री ही परिवार में धुरी का कार्य करती आई है। इसके इर्दगिर्द ही परिवार और समाज व्यवस्था की आर्थिक व्यवस्था घूमती है।"[6] कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योग में महिलाओं का नेतृत्व भारत की ग्रामीण और पारंपरिक अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानी जाती है। यह क्षेत्र न केवल रोजगार सृजन करता है बल्कि महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी सशक्त बनाता है।

भारत में कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने में महात्मा गांधीजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने स्वदेशी और चरखा आंदोलन के माध्यम से महिलाओं को घर आधारित उद्योगों से जोड़ने पर बल दिया। स्वतंत्रता के बाद सरकार ने इन उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए सन ) में कुटीर उद्योग बोर्ड 1948Cottage Industry Board) की स्थापना की। साथ ही सन ) में खादी और ग्रामोद्योग आयोग 1957KVIC) का गठन किया।

वर्तमान में कुटीर उद्योग एक ग्रामीण अंचल की महिलाओं को जोड़ने का एक उपयुक्त माध्यम बनता जा रहा है। इसमें सभी वर्ग की महिलाएँ चाहे वे शिक्षित अशिक्षित हो -, उन्हें आर्थिक रूप से सक्षम बनाने में कुटीर उद्योग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योग को बढ़ावा देने का उचित प्रयास महिलाओं द्वारा किया जा रहा है। क्योंकि, वह सिर्फ रसोई या घर तक सीमित न रह कर अपने सपनों को नई उड़ान देकर आत्मनिर्भर बनना चाहती है। ये उद्योग महिलाओं को स्वयं की शक्तियों, योग्यता, हुनर को पहचानने, आर्थिक रूप से समृद्ध करने के अवसर प्रदान कराता है। कोरोना काल के दौरान प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ऐसे में कुटीर उद्योग एक सीमित क्षेत्र में भी स्वयं को संभाले रखा और आर्थिक क्षति को काफी हद तक नियंत्रित किया। इस उद्योग के तहत महिलाओं ने लॉक डाउन में मास्क आदि बनाकर अपनी आर्थिक स्थिति संभाली।

कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योग के माध्यम से महिलाएँ संगठित होकर खाने की वस्तुओं के अतिरिक्त दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाली वस्तुओं का उत्पादन भी कर रही है। यहाँ तक की बाजार में वस्तुओं की माँग के अनुरूप त्योहारों को ध्यान में रखते हुए स्थानीय उपलब्ध साधनों से राखियाँ, दिए एवं रंग गुलाल आदि का उत्पादन कर रही हैं। अध्ययन क्षेत्र से यह तथ्य उभरकर आया है, कि महिलाएँ मोमबत्ती, अगरबत्ती, पापड़, आचार, बच्चों के खिलौने, विभिन्न प्रकार के मसाले आदि कार्य कुटीर उद्योगों से उत्पादन पैकिंग कर आसपास के बाजारों में विक्रय कर आमदनी प्राप्त कर रही हैं। उत्पादों के विक्रय से प्राप्त राशि का प्रयोग कर महिलाएँ स्वयं व परिवार के आर्थिक विकास में योगदान दे रही हैं।

ईरान के बलूचिस्तान में महिलाएँ आज भी बिंदीदार अलंकारों से सजे लाल रंग के हस्तनिर्मित मिट्टी के बर्तन बनाती हैं, जो गाँव के पास स्थित पुरातात्विक स्थल कलपुरेगान की साल पुरानी मिट्टी के 4000 जुलती - बर्तन बनाने की परंपरा से काफी मिलती है।

सफल महिला उद्यमी नई पीढ़ी की लड़कियों को शिक्षा और गतिविधियों के लिए प्रेरित कर रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ SHGs के माध्यम से नेतृत्व की भूमिका निभा रही हैं, जिससे उनमें निर्णय लेने की क्षमता विकसित हो रही है। भारत में लगभग %20 MSME इकाइयां महिलाओं के स्वामित्व में हैं, जो 22 लाख कारीगर कार्यरत हैं 64.66 हस्तशिल्प उद्योग में " मिलियन लोगों को रोजगार प्रदान करती हैं। 27 से, कुल कारीगरों में महिलाओं की हिस्सेदारी %64की और हथकरघा बुनकरों में %71की है। महिलाओं की इतनी मजबूत भागीदारी ग्रामीण तथा अर्ध शहरी समुदायों में महिलाओं के रोजगार तथा सशक्तिकरण में -

में हस्तशिल्प निर्यात 25-2024 इस क्षेत्र के योगदान को दर्शाती है। सनर तक पहुंच करोड़ 33,122.79 गया है, जो वैश्विक मांग के वृद्धि को दर्शाता है।"[7]

वर्तमान परिदृश्य में महिलाएँ न केवल कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योग अपितु हर क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित करती जा रही है।आज की 'आत्मनिर्भर भारत' पहले के तहत इन उद्योगों को पुनर्जीवित करने और स्थानीय उत्पादों को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं।

❖ **निष्कर्ष :**

1. कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योग में महिलाओं का नेतृत्व ग्रामीण विकास और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। यदि उचित प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और बाजार से जुड़ाव बढ़ाया जाए तो यह क्षेत्र महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक सम्मान को अधिक मजबूत कर सकता है।

2. हस्तशिल्प उद्योग के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना लैंगिक समानता और सतत विकास को बढ़ावा देने का शक्तिशाली साधन है।

3. कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योगों में महिलाओं की भागीदारी भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल रोजगार सृजन का माध्यम है, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण का भी आधार है। यदि सरकार निजी क्षेत्र एवं समाज मिलकर सहयोग करें तो महिलाएँ इन उद्योगों में नेतृत्व की उँचाइयाँ प्राप्त कर सकती है।

4. हस्तशिल्प और कुटीर उद्योग केवल एक आय का साधन नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत की रचनात्मकता, परंपरा और आत्मनिर्भरता का प्रतीक भी है। यदि इन्हें उचित संसाधन, प्रशिक्षण, विपणन समर्थन मिले तो यह क्षेत्र ग्रामीण विकास, महिला सशक्तीकरण और सांस्कृतिक पुनर्जागरण में बड़ी भूमिका निभा सकता है ।

**संदर्भ :**


1) डॉराधाकृष्णन .एस ., भारतीय संस्कृति, कला की विरासत, प्रभात प्रकाशन।

2) डॉसिंह .यू .आर ., व्यावसायिक अध्ययन, एसपब्लिकेशन। .डी .पी .बी .

3) डॉसिंह .यू .आर ., व्यावसायिक अध्ययन, एसपब्लिकेशन। .डी .पी .बी .

4) एसष्णनराधाकृ ., भारतीय संस्कृति, कला की विरासत, प्रभात प्रकाशन

5) कुरुक्षेत्र पत्रिका, मई ।2003

6) डॉराधाकृष्णन .एस ., भारतीय संस्कृति, कला की विरासत, प्रभात प्रकाशन।

7) BACKGROUNDERS -Press Bereau, Government of India - .2025 दिसंबर 9

# चित्रा मुद्गल के साहित्य में उद्यमी महिला

**डॉ. शिकलकर सुलताना गफूर**
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग,के..एन.भिसे आर्ट्स, कॉमर्स और विनायकराव पाटील सायन्स महाविद्यालय,
कुर्डूवाडी जिला - सोलापुर।

समाज में नारी के विभिन्न रूप है, जैसे की कन्या, बालिका, महिला और वृद्धा । उसे त्याग, सहनशीलता और ममता के रूप में देवी भी कहा जाता है। नारी की इन विशेषताओं को समाज में आदर्श माना जाता है लेकिन उसे अबला और त्यागमयी के रूप में भी देखा जाता है। उसकी प्रगति के वास्तविक रूप को समझने में विफलता होती है।

स्वतंत्रता के बाद हमारे भारत देश में महिलाओं ने शिक्षा क्षेत्र में उन्नति कर अपने सामाजिक स्थिति में सुधार किया है। उन्हें यहां तक पहुंचने के लिए पुराने संस्कारों और आधुनिक परिस्थितियों के बीच संघर्ष करना पड़ा। फिर भी वह मानसिक रूप से सक्षम होकर ऊंचे पद पर अधिनस्थ हुई। आज सभी क्षेत्रों में महिलाएं ऊंचे पद पर काम करती हुई आर्थिक स्वतंत्र हुई हैं। फिर भी उन्हें अपने जीवन में संघर्ष, असंतोष और मानसिक घुटन का सामना करना पड़ता है। कामकाजी महिलाओं को घर और बाहर दोनों जगह संतुलन रखने में दिक्कत आती है। उन्हें सामाजिक दबाव, असहयोग और असंतोष का सामना करना पड़ता है। यह स्थिति विधवा, विवाहिता और अविवाहित कामकाजी महिलाओं में दिखाई देती है। उन्हें हर जगह अपमान, दया, सहानुभूति, शोषण और प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है। समाज और परिवार के बीच प्रेम की कड़ी बनी आज की नारी का वास्तविक कामकाजी जीवन दुखों से घिरा हुआ दिखाई देता है। फिर भी आज की नारी अपने अस्तित्व को प्रमाणित कर पुरुष के साथ समानता से आगे कदम बढ़ा रही है। आज समकालीन हिंदी साहित्य आधुनिक कामकाजी महिलाओं का जीवन और उनकी समस्याओं को चित्रित करता हुआ उसके संघर्ष और प्रगति को भी उजागर कर रहा है। आधुनिक हिंदी लेखिकाओं में चित्रा मुद्गल का नाम महत्वपूर्ण है। समाज सेवा के साथ जीवन में प्राप्त अनुभव से रचा उनका साहित्य बहुचर्चित है। चित्रा जी ने प्रमुखतः उपन्यास और कहानी विधा में साहित्य की रचना की है। उनका संपूर्ण साहित्य सामाजिक सरोकारों का साहित्य कहलाता है। उन्होंने अपनी कहानियों में सामाजिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत जीवन के कई पहलुओं और समस्याओं को उजागर किया है। इसके साथ ही कामकाजी महिलाओं की जिम्मेदारियां और समस्याओं को भी अपने साहित्य का विषय बनाया है। उनके कहानी साहित्य में कामकाजी महिलाओं के जीवन के निम्नलिखित पहलू और समस्याएं चित्रित हुई हैं।

आज सामाजिक विचारधाराएँ बदल रही है। घर से बाहर निकल कर आज की महिलाएं सभी क्षेत्रों में कार्य कर रही है ।उसमें चुनौतियों से सामना करने का आत्मविश्वास जागृत हुआ है। वह सभी क्षेत्रों में कार्यरत होने के कारण आर्थिक निर्भर हुई है। उसकी जिम्मेदारियां भी बढ़ गई है। डॉ. घनश्यामदास भूतड़ा कहते हैं कि, "नारी नौकरी करती हुई आर्थिक निर्भरता से संतोष प्राप्त करने की एक सीमा तक सफल हुई है। तथापि उसकी यह स्थिति उत्साह जनक नहीं। सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन में समायोजन न कर

पाने के फलस्वरुप वह व्यर्थताबोध से भर जाती है। घर और बाहर के जीवन में समन्वय स्थापित न कर पाने से उसे नौकरी छोड़नी पड़ती है या तनाव की स्थिति के चलते हुए अनचाहा जीवन व्यतीत करना पड़ता है।"

चित्रा मुद्गल की कहानियों में चित्रित विविध नारियां दफ्तरों में काम करती है उनके कामकाजी जीवन में दफ्तरों में अनेक समस्याएं निर्माण होती है। इसमें प्रमुखत: पुरुष वर्ग महिला सहयोगियों से अश्लील बातें करता हुआ दिखाई देता है। कहानी की नायिका शुभा है। वह दफ्तर में टाइपिस्ट है। दफ्तर 'ट्रेन छूटने तक' में वह प्रवेश करती ह ै तो सभी पुरुष वर्ग चारों ओर से उसे घेर कर देखते हैं और उसके मेकअप पर व्यंग्य करते हैं, "कितनी छिछोरी औरत है। इसका बस चले तो दफ्तर में मेकअप के साथसाथ ड्रेस भी बदलने से - "ना चुके। रंभा समझती है अपने को। दफ्तर के बॉस किसी भी औरत को छोड़ते नहीं है। दफ्तरों में स्त्रियों के दैहिक शोषण बॉस द्वारा होते रहते हैं। शुभा के काम को देखकर मिस लालचंदानी की आंखें डोलती हैं , "वह जो तुम्हारा बॉस मिस्टर साहनी है न बूढ़ा, पिलपीला कोकिला को देख अपना चश्मा साफ करने लगता है। मेरे हाथ में गुलेल हो तो दोनों आंखें साफ कर दूं, बूढ़े - खूसर की।" कोकिला शोभा से कहती है कि तुमसे पहले मारिया नाम की स्त्री काम करती थी। उसे इसी साहनी ने एक्सप्लेनेशन कॉल कर-कर के उसका जीवन हराम कर दिया था। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में दफ्तर में काम करने वाली महिलाओं को तरहतरह - के नाम से और काम से बॉस लोग सताते हैं। 'त्रिशंक','बावजूद' ,'शून्य' ,आदि कहानियों में 'ताशमहल' कामकाजी महिलाएं घर हो या दफ्तर वह पति या बॉस से पीड़ित होती है। मानसिक घुटन और तनाव का कहानी की नायिका सुन्नी चालीस वर्षीय अविवाहिता है। बदसुरती 'लाक्षागृह' सामना करती नजर आती है। की वजह से उसकी शादी नहीं हुई। वह काम करती है। उसके विभाग में सिंन्हा का प्रवेश होता है। दोनों का परिचय बढ़ता है। सिंन्हा उससे शादी करना चाहता है। सिंन्हा उससे कहता है," आठ सौ रूपए महीने कमाने वाली कहां मिलेगी सौदे की कोई बात शक्ल ?- सूरत से नहीं होती।" सिंन्हा की यह बातें सुनकर सुन्नी के आत्मसम्मान पर चोट पहुंचती है। वह उसके साथ विवाह न करने का निर्णय लेती है। वह मानव बनकर जीना चाहती है न की साधन बनकर। सिंन्हा के लाक्षागृह रूपी चंगुल से वह सुरक्षित बाहर निकलती है। इस प्रकार नारी का वेतन उसके लिए बहुत बड़ा अभिशाप होता है। इसी दास्ता को यहां चित्र जी ने मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया है।

'ताशमहलकहानी में कामकाजी महिलाओं के यातायात की समस्या प्रस्तुत की है। कहानी की ' नायिका शोभना को दफ्तर जाने के लिए यातायात की समस्या से जूझना पड़ता है। शोभना केपास न वक्त है न दफ्तर से छुट्टी ले सकती है। उसका बेटा बीमार है। उसे डिग्री बुखार है। डॉक्टर उसे नर्सिंग होम 104 8 रखना चाहते हैं लेकिन शोभना के पास वक्त नहीं है। इस दौरान उसकी.की बस छूट जाती है। रिक्शा 20 भी नहीं मिलता है। कामकाजी होने के कारण उसे अपने बेट े रेणु को क्रेच में छोड़ना पड़ता है। इस बारे में डॉ. चौधरी वेदवती कहती है," बस में स्थान मिलना कठिन, यदि कोई दे भी दे तो उसकी हरकतें बर्दाश्त करना हर महिला के लिए मुश्किल काम है।" इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में कामकाजी नारी की यातायात समस्या का चित्रा जी ने यथार्थ वर्णन किया है।

'प्रमोशनकहानी में नायिका ललिता अपनी मेहनत ', लगन और तत्परता के कारण इंचार्ज पद पर नियुक्त होती है। उसका पति इस आनंद में उसके साथ नहीं होता। क्योंकि उसे लगता है उसका प्रमोशन वैसे नहीं हुआ है। उसने अपने बॉस डॉ. कोठारी के साथ संबंध बनाए होंगे। वह कहता है," डॉ. कोठारी जी की

अनुकंपा है और बीच में शरीर आए बिना यह संभव नहीं है।" इस प्रकार सुभाष अपनी पत्नी के प्रमोशन पर संशय व्यक्त करता है और उसे नौकरी छोड़कर घर बैठने का हुक्म देता है। इस प्रकार चित्रा जी ने प्रस्तुत कहानी में कामकाजी महिलाओं के दफ्तरी जीवन की समस्याओं को बखूबी से चित्रित किया है।

चित्रा जी की कहानियों का केंद्र बिंदु मानवी रिश्तो को जोड़ने वाला रहा है। प्रेम 'परिवार', विश्वास और मानवता के साथ पारिवारिक रिश्तों में कामकाजी जीवन के कारण उठने वाली अनेक समस्याओं को लेखिका ने अपनी कहानियों में उजागर किया है। कहानी में नायिका शोभा अपनी आमदनी 'ट्रेन छूटने तक' बढ़ाने के लिए बाहर काम करती है। उसके परिवार में मां और भाई रहते हैं। इन दोनों का खर्चा शुभा की नौकरी से चलता है। शुभा की नौकरी की आधी आमदनी अपने भाई को देने का रिवाज उसकी मां रखती है। वह कहती है, " नौकरी का जुआ उसके कंधों पर से शायद कभी नहीं हट सकेगा। शायद मां नहीं चाहती कि वह अन्य लड़कियों की भांति अपना घोंसला बनाएं। पिता की मृत्यु के बाद घर का खर्चा पूरा करने के लिए उसे पैकिंग में सर्विस करनी पड़ती थी। किंतु इंटर में चार बार फेल हो जाने के बाद भी मां ने सुरेश की पढ़ाई नहीं छुड़ाई थी।" मां अपने बेटे की शादी करती है लेकिन शुभा की शादी के बारे में वह नहीं सोचती। प्रस्तुत कामकाजी नायिका की इस पारिवारिक समस्या को चित्रा जी ने उजागर किया है। 'त्रिशंकुकहानी में ' निम्नपरिवार के सीताबाई घरसफाई का काम करती है। दिनभर काम -घर जाकर बर्तन मांजकर साफ- करना और घर में शराबी पति द्वारा जानवरों की तरह पीटा जाना यही उसका जीवन होता है। वह अपनी बेटी को पिता के इस दुर्व्यवहार से बचाना चाहती है। इसलिए उसे जोशी बाई के घर में भेजती है जिससे उसका पेट भी भर जाए। लेकिन बेटी वापस मां के पास आने के लिए इंकार करती है। बेटा बंडू पढ़ाई को छोड़कर परिवार के भरण-पोषण के लिए काम करना चाहता है। सीताबाई की पारिवारिक विडंबना का यथार्थ चित्रण चित्रा जी ने प्रस्तुत कहानी में अभिव्यक्त किया है।

परिवार की दीवार प्रेम और विश्वास पर टिकी होती है। पतिपत्नी के रिश्तों में प्रेम विश्वास हो तो वह - रिश्ता फूलों की तरह महकता है। लेकिन प्रेम और विश्वास के न होने पर परिवार टूट कर बिखर जाता है। कहानी में लल 'प्रमोशन' इससे दांपत्य जीवन हमेशा बिखरता है। चित्रा जी कीिता को नौकरी में प्रमोशन प्राप्त होता है तो पति सुभाष अपनी पत्नी और उसके बॉस के साथ अनैतिक संबंधों पर संदेह उत्पन्न करता है। उसकी धारणा यह होती है कि प्रमोशन के लिए पत्नी ने अपने बॉस के साथ संबंध बनाए होंगे। इसी मानसिकता से वह अपनी पत्नी के प्रमोशन को शक की नजर से देखता है। इस प्रकार नौकरी में प्रमोशन मिलना पतिपत्नी के दांपत्य जीवन में कलह का कारण बन जाता है।-

'मुआवजा कहानी में शैलू सुमित की पत्नी है। वह विमान परिचारिका की नौकरी करती है। सुमित से ' वह प्रेम विवाह करती है। उनका दांपत्य जीवन प्रेम से भराहोता है। शैलू मॉडलिंग करना चाहती है लेकिन सुमित उसे मॉडलिंग करने से इन्कार करता है। विमान परिचारिका होने के कारण उसे अनेक देशों में काम पर जाना पड़ता था। पति उस पर संदेह व्यक्त करता है। पति को उसके पैसे और उसकी आधुनिकता सहन नहीं होती है। उसे सहयोग देने के बावजूद सुमित उसे सताने लगता है। दोनों के बीच दरारे पड़ती है। इस प्रकार उनके दांपत्य जीवन पर नौकरी का प्रभाव पड़ने से दोनों के जीवन में प्रेम और विश्वास टूट जाता है और वे दोनों अलगअलग रहने लगते हैं।- कहानी की नायिका आभा है। उसका पति विनोद है। 'स्टेपनी' घरकी नौकरानी का नाम बताशा है। आभा की पड़ोसन कहती है कि तुम्हारे काम पर जाने के बाद नौकरानी

बताशा और तुम्हारे पति में अफेयर शुरू हुआ है। आभा अपने पति से यह बात पूछती है। विनोद कहता है कि बताशा के अन्य घरों के काम छूट गए हैं। अगर तुमने उसे काम से निकाल दिया तो दूसरे कोई भी उसे मुंह मांगी आमदनी देकर काम पर रखवा देंगे। हमारे यहां काम करके तो वह हम पर उपकार ही कर रही है। तुम मुझ पर नौकरी के नाम पर औरतबाजी करने का लांछन लगा रही हो। डॉ. गोरक्ष थोरात इस बारे में लिखते हैं," कामकाजी बताशा का समुचित विकल्प न होने आर्थिक कारणों से नौकरी न छोड़ने की बाध्यता आदि को देखते हुए आभा चुप रह जाती है। आभा के मन में यह भी संशय घर कर गया है कि विनोद चाहे नौकरानी से न सही किसी और के साथ ऐसा संबंध कर सकता है।" चित्रा जी ने प्रस्तुत कहानी में कामकाजी नारी के दांपत्य जीवन की समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।

चित्रा जी की कहानियों में कामकाजी महिलाओं के जीवन का खुला चित्रण हुआ है। उसमें पारिवारिक समस्याओं के साथ संतान की समस्याओं का भी वर्णन किया गया है। आधुनिक कामकाजी महिलाओं के संतान न होने की समस्या, उनके पालन-पोषण करने के लिए आर्थिक समस्या और संतान के परवरिश की समस्या को प्रस्तुत कहानियों में उजागर किया गया है। वह इस प्रकार है-

' ट्रेन छूटने तककहानी में नायिका शुभा का भाई रवि है। उसकी शादी एक गोवन स्त्री से होती है। उन्हें ' एक बेटा होता है। गोवन स्त्री रवि को छोड़कर दूसरे के साथ शादी कर लेती है। तब उसे संतान के देखभाल की समस्या निर्माण होती है। रवि अपनी बहन शुभा की नौकरी के पैसों पर निर्भर होने के कारण बेटे का पपालकहानी में बंडू के 'त्रिशंकु' पोषण नहीं कर सकता था। इसलिए वह अपनी संतान को छोड़ देता है।- बाप एक दूसरे क-मांे साथ लड़ते-झगड़ते रहते हैं। इससे तंग आकर बंडू की मां अपने बेटे का पालन करती है। लेकिन पिता के प्रभाव के कारण बंडू अपनी मां की बात सुनता नहीं है और मां के बारे में वह सोचता भी नहीं। वह परिवार से दूर जाने लगता है। 'बावजूद इस कहानी में प्रीति अपने पति गोयल 'की प्रताड़ना सहती रहती है। गोयल की लापरवाही के कारण अस्पताल में उसकी बेटी मोना की मृत्यु होती है। इस हादसे के बाद प्रीति अपने पति से दूर होती है और जीने के लिए फाइव स्टार होटल में नौकरी करती है। बेटी की मृत्यु का दु:ख उसे काम पर होते रहता है। 'लाक्षागृह'कहानी की सुन्नी वर्षीय अविवाहिता 40 कामकाजी स्त्री है। बदसूरती के कारण उसकी शादी नहीं होती है। उसे बच्चों से बहुत प्यार होता है। बच्चे उसे बहुत पसंद है। उसकी कोई संतान न होने से वह सोचती है कि शादी न करके अनाथालय से एक बच्चे को गोद लिया जा सकता है। इस तरहवह अपना संपूर्ण जीवन उसके साथ मजे में बिताना चाहती है।

कहानी में आकांक्षा दफ्तर में काम करती है। उसे एक बेटी है। बेटी और नौकरी के लिए वह 'दरमियान' कई समझौते करती है। एक दिन मासिक वेतन लेने की वजह से बेटी को लेने वह देर से पहुंचती है। तब बेटी की मासिकधर्म की स्थिति देखकर वह स्वयं को कोसती है। वह दुखी होती है कि एक बेटी की देखभाल वह अच्छे से कर नहीं सकती और दूसरी ओर नौकरी छोड़ नहीं सकती। इस दौरान बेटी मां की बात सुनती नहीं है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में नौकरी के कारण मां-बेटी दोनों एक दूसरे को सुख नहीं दे पाते। संतान होकर भी मां अपने बेटी को प्यार नहीं दे पाती। कहानी में आभा आर्थिक समस्या के कारण नौकरी करती 'स्टेपनी' है लेकिन वह अभी अपने बच्चे मिनी की देखभाल ठीक तरह से नहीं कर पाती। समय के अभाव के कारण आभा अपने बेटी का पालन-पोषण ठीक से नहीं कर सकती। इस कारण से मिनी की आदतें बिगड़ने लगती है।

**निष्कर्ष** :- चित्रा मुद्गल के संपूर्ण कहानी साहित्य में कामकाजी नारी जीवन का यथार्थ व्यक्त हुआ है। प्रस्तुत कहानियों में नौकरी करने वाली कामकाजी नारियों के जीवन में उत्पन्न विविध पहलू और समस्याओं का चित्रण बखूबी से हुआ है। कहानियों के सभी नारी पात्र संघर्षशील है। कामकाजी नारी का प्रमोशन हो तो समाज और पति की मानसिकता उसे देखने की कैसे बदलती है यह बात प्रस्तुत कहानी में चित्रित है। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि कामकाजी महिलाएं नौकरी के कारण संतान होते हुए भी एक मां अपने बच्चों को प्यार-दुलार के लिए समय नहीं दे सकती। बच्चों का पालन-पोषण व ठीक से नहीं कर सकती। घर से दफ्तर जाने के लिए यातायात की अनेक समस्याओं का सामना वह करती है। घर परिवार पति दफ्तर के सहयोगी और बॉस लोगों की प्रताड़ना को सहन करती आर्थिकता का बोझ अपने कंधे पर उठाती हुई आज की नारी उपेक्षित जीवन-यापन करती नजर आती है। इस प्रकार हर जगह उसके साथ होने वाली शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक समस्याओं को लेखिका ने अपने कहानी साहित्य में यथार्थ रूप से प्रस्तुत किया है।

**संदर्भ** :-


१. डॉ. घनश्यामदास भूतड़ा - समकालीन हिंदी कहानियों में नारी के विविध रूप, पृ. सं. ११२
२. चित्रा मुद्गल - ट्रेन छूटने तक, आदि-अनादि भाग१-, पृ. सं. ४२
३. वहीं - पृ. स. ४२
४. वहीं - पृ. सं. ९१
५. डॉ. चौधरी वेदवती - नवम दशक की कहानियों में कामकाजी नारी की भूमिका, पृ. सं. १४५
६. चित्रा मुद्गल - जगदंबा बाबू गांव आ रहे हैं, पृ. सं. ७३
७. चित्रा मुद्गल - ट्रेन छूटने तक, आदि-अनादि भाग-१, पृ. सं. ४५
८. डॉ. गोरक्ष थोरात - चित्रा मुद्गल का कथा साहित्य का अनुशीलन, पृ. सं. ६२

# डिजिटल युग में महिला उद्यमिता: ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और विपणन रणनीतियाँ

**सविता जगन्नाथ धुमाळ**
शोध छात्रा
डॉ.बाबासाहेबआंबेडकरमराठवाड़ा विश्वविद्यालय,
छ. संभाजीनगर.

**डॉ. विनोद श्रीराम जाधव**
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग प्रमुख तथा शोध निर्देशक, मत्स्योदरी शिक्षण संस्था संचालित, कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय
अंबड जि. जालना महाराष्ट्र

सारांश

इक्कीसवीं सदी में डिजिटल क्रांति ने वैश्विक आर्थिक संरचना, उत्पादन प्रणाली तथा उद्यमिता के स्वरूप में मौलिक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT), इंटरनेट, स्मार्टफोन तथा डिजिटल वित्तीय प्रणालियों के तीव्र विस्तार ने व्यवसाय के पारंपरिक मॉडल को पुनर्परिभाषित किया है। इस परिवर्तन का सर्वाधिक सकारात्मक प्रभाव महिला उद्यमिता के क्षेत्र में देखने को मिला है, जहाँ लंबे समय से महिलाएँ सामाजिक संरचनात्मक सीमाओं, पूंजी की कमी, गतिशीलता की बाधाओं तथा अवसरों के अभाव से जूझती रही हैं।

डिजिटल प्लेटफॉर्म के उदय ने महिलाओं के लिए उद्यमिता के नए मार्ग खोल दिए हैं। ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया नेटवर्क, डिजिटल भुगतान प्रणालियाँ तथा ऑनलाइन मार्केटिंग टूल्स ने महिलाओं को भौगोलिक सीमाओं से मुक्त होकर वैश्विक बाजार से जुड़ने का अवसर प्रदान किया है। अब महिलाएँ बिना किसी भौतिक अवसंरचना या बड़े निवेश के घर-आधारित व्यवसाय स्थापित कर सकती हैं, उनका संचालन कर सकती हैं तथा उन्हें डिजिटल माध्यम से विस्तार दे सकती हैं।

यह शोध-पत्र डिजिटल युग में महिला उद्यमिता के विकास की प्रकृति, स्वरूप एवं संभावनाओं का विश्लेषण करता है। विशेष रूप से यह अध्ययन इस बात पर केंद्रित है कि किस प्रकार ऑनलाइन प्लेटफॉर्म महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक पहचान निर्माण के प्रभावी साधन बन रहे हैं। इसके अंतर्गत यह स्पष्ट किया गया है कि डिजिटल माध्यम न केवल व्यवसाय प्रारंभ करने की प्रक्रिया को सरल बनाते हैं, बल्कि विपणन, ग्राहक संचार, ब्रांड निर्माण तथा वित्तीय प्रबंधन को भी अधिक सुलभ एवं प्रभावी बनाते हैं।

अध्ययन में आधुनिक डिजिटल विपणन रणनीतियों जैसे—

- सोशल मीडिया मार्केटिंग
- कंटेंट मार्केटिंग
- इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग
- डिजिटल ब्रांडिंग
- ग्राहक-केंद्रित ऑनलाइन संचार

की भूमिका का विश्लेषण किया गया है, जो महिला उद्यमियों को प्रतिस्पर्धात्मक बाजार में अपनी पहचान स्थापित करने में सहायता प्रदान करती हैं। विशेष रूप से सोशल मीडिया ने महिलाओं के लिए "लो-कॉस्ट हाई-इम्पैक्ट" मार्केटिंग का मार्ग प्रशस्त किया है, जिससे वे सीमित संसाधनों के बावजूद व्यापक ग्राहक वर्ग तक पहुँचने में सक्षम हो रही हैं।

इसके अतिरिक्त, यह शोध डिजिटल उद्यमिता के माध्यम से महिलाओं में आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता, वित्तीय स्वतंत्रता तथा सामाजिक सहभागिता में होने वाले सकारात्मक परिवर्तनों की भी समीक्षा

करता है। साथ ही, डिजिटल साक्षरता की कमी, साइबर सुरक्षा जोखिम, तकनीकी संसाधनों की असमान उपलब्धता तथा ऑनलाइन प्रतिस्पर्धा जैसी चुनौतियों का भी समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

समग्रतः यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि डिजिटल युग महिला उद्यमिता के लिए केवल एक अवसर नहीं, बल्कि एक परिवर्तनकारी मंच सिद्ध हो रहा है, जो महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ-साथ उन्हें सामाजिक रूप से भी अधिक स्वायत्त एवं आत्मनिर्भर बना रहा है।

**प्रमुख शब्द :** महिला उद्यमिता, डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया मार्केटिंग, ई-कॉमर्स, डिजिटल विपणन, आर्थिक सशक्तिकरण

## प्रस्तावना

डिजिटल युग ने उद्यमिता की पारंपरिक परिभाषा को बदल दिया है। पहले जहाँ व्यवसाय शुरू करने के लिए पूंजी, स्थान और संसाधनों की आवश्यकता होती थी, वहीं आज इंटरनेट और स्मार्टफोन के माध्यम से कोई भी व्यक्ति वैश्विक बाजार तक पहुँच सकता है।

महिला उद्यमिता लंबे समय तक सामाजिक संरचनाओं, वित्तीय सीमाओं और अवसरों की कमी से प्रभावित रही है। किंतु डिजिटल तकनीकों के आगमन ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का नया मार्ग प्रदान किया है।

आज महिलाएँ निम्न क्षेत्रों में सफलतापूर्वक डिजिटल उद्यमिता कर रही हैं:

- ऑनलाइन हस्तशिल्प व्यवसाय
- होम-बेस्ड फूड स्टार्टअप
- फैशन एवं बुटीक
- डिजिटल सेवाएँ (कंटेंट राइटिंग, डिजाइनिंग आदि)
- ऑनलाइन शिक्षण

## डिजिटल प्लेटफॉर्म की भूमिका

### ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म

डिजिटल युग में ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म महिला उद्यमिता के लिए एक परिवर्तनकारी माध्यम के रूप में उभरे हैं। पारंपरिक व्यवसाय मॉडल में जहाँ भौतिक दुकान, पूंजी निवेश, परिवहन, बाजार पहुँच तथा सामाजिक गतिशीलता जैसी अनेक बाधाएँ महिलाओं के सामने उपस्थित रहती थीं, वहीं ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म ने इन सभी अवरोधों को काफी हद तक कम कर दिया है। ऑनलाइन मार्केटप्लेस ने महिलाओं को बिना किसी स्थायी व्यावसायिक स्थान के अपने उत्पादों और सेवाओं को राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया है।

ई-कॉमर्स के माध्यम से व्यवसाय संचालन की सबसे बड़ी विशेषता इसकी "लो-एंट्री बैरियर" प्रकृति है। अर्थात, अब उद्यमिता केवल संसाधन सम्पन्न वर्ग तक सीमित नहीं रही, बल्कि सीमित आर्थिक साधनों वाली महिलाएँ भी डिजिटल माध्यम से उद्यमिता के क्षेत्र में प्रवेश कर सकती हैं। यह विशेष रूप से गृहिणियों, ग्रामीण महिलाओं तथा अंशकालिक उद्यमियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है।

### घर से व्यवसाय संचालन

ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म महिलाओं को घर से ही व्यवसाय स्थापित करने और संचालित करने की सुविधा प्रदान करते हैं। इससे कार्यस्थल और घरेलू दायित्वों के बीच संतुलन स्थापित करना संभव हो जाता है।

इसके प्रमुख लाभ निम्न हैं:

- भौतिक दुकान की आवश्यकता समाप्त हो जाती है
- किराया, बिजली, सजावट आदि का खर्च बचता है
- समय की लचीलापन उपलब्ध होता है
- पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ व्यवसाय संचालित करना संभव होता है

विशेष रूप से मातृत्व, सामाजिक प्रतिबंधों या गतिशीलता की सीमाओं के कारण जो महिलाएँ पारंपरिक व्यवसाय नहीं कर पाती थीं, वे अब डिजिटल माध्यम से आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी कर पा रही हैं।

**वैश्विक ग्राहक तक पहुँच**

ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म भौगोलिक सीमाओं को समाप्त कर देते हैं। पारंपरिक व्यवसाय जहाँ स्थानीय बाजार तक सीमित रहता है, वहीं डिजिटल प्लेटफॉर्म महिलाओं को राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों तक पहुँचने का अवसर प्रदान करते हैं।

इससे निम्न परिवर्तन संभव हुए हैं:

- स्थानीय उत्पादों का वैश्विक स्तर पर विपणन
- हस्तशिल्प, पारंपरिक वस्त्र, घरेलू खाद्य उत्पादों की मांग में वृद्धि
- सांस्कृतिक उत्पादों का अंतरराष्ट्रीय पहचान निर्माण
- ग्राहक आधार का विस्तार

इस प्रकार, ई-कॉमर्स महिला उद्यमियों को "लोकल टू ग्लोबल" मॉडल अपनाने में सक्षम बनाता है।

**कम निवेश में स्टार्टअप**

ई-कॉमर्स व्यवसाय प्रारंभ करने के लिए अत्यधिक पूंजी निवेश की आवश्यकता नहीं होती। यह विशेषता महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कम निवेश के कारण:

- प्रवेश जोखिम कम होता है
- छोटे स्तर पर व्यवसाय शुरू किया जा सकता है
- धीरे-धीरे विस्तार की संभावना रहती है
- वित्तीय निर्भरता कम होती है

यह मॉडल विशेष रूप से उन महिलाओं के लिए उपयोगी है जो स्वयं की बचत या सूक्ष्म वित्त के माध्यम से व्यवसाय प्रारंभ करना चाहती हैं।

**डिजिटल उपकरणों के माध्यम से व्यवसाय प्रबंधन**

ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म केवल बिक्री का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे संपूर्ण व्यवसाय प्रबंधन प्रणाली प्रदान करते हैं:

- ऑर्डर प्रबंधन
- ग्राहक संचार
- इन्वेंट्री नियंत्रण
- भुगतान ट्रैकिंग

- ग्राहक प्रतिक्रिया विश्लेषण

इन सुविधाओं के कारण महिलाएँ बिना औपचारिक व्यावसायिक प्रशिक्षण के भी व्यवसाय संचालन में दक्ष हो सकती हैं।

**सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण**

ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म महिलाओं के लिए केवल आय का स्रोत नहीं हैं, बल्कि यह उनके आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता तथा सामाजिक पहचान को भी सुदृढ़ करते हैं।

इसके परिणामस्वरूप:

- आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ती है
- परिवार में निर्णय लेने की भूमिका मजबूत होती है
- सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है
- उद्यमिता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है

ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म महिला उद्यमिता के लिए एक सक्षम, लचीला और समावेशी मंच प्रदान करते हैं। यह न केवल व्यवसाय प्रारंभ करने की प्रक्रिया को सरल बनाते हैं, बल्कि महिलाओं को वैश्विक आर्थिक संरचना का सक्रिय भागीदार बनने का अवसर भी प्रदान करते हैं। इस प्रकार, डिजिटल अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमिता के विस्तार में ई-कॉमर्स की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी है।

**सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म**

डिजिटल युग में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म महिला उद्यमियों के लिए केवल संचार का माध्यम नहीं रह गए हैं, बल्कि वे एक प्रभावी "डिजिटल दुकान" (Virtual Storefront) के रूप में विकसित हो चुके हैं। पारंपरिक व्यवसायों में जहाँ उत्पादों के प्रचार, ग्राहक संपर्क तथा ब्रांड निर्माण के लिए भारी वित्तीय निवेश की आवश्यकता होती थी, वहीं सोशल मीडिया ने इन सभी प्रक्रियाओं को सरल, सुलभ और किफायती बना दिया है।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म महिला उद्यमियों को अपने उत्पादों और सेवाओं को प्रदर्शित करने, ग्राहकों से संवाद स्थापित करने, बाजार की मांग को समझने तथा अपने व्यवसाय की विशिष्ट पहचान निर्मित करने का अवसर प्रदान करते हैं। विशेष रूप से यह माध्यम उन महिलाओं के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है जो सीमित संसाधनों के साथ उद्यमिता की शुरुआत करना चाहती हैं।

**कम लागत में प्रचार**

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पारंपरिक विज्ञापन माध्यमों की तुलना में अत्यंत किफायती प्रचार विकल्प प्रदान करते हैं।

इसके प्रमुख लाभ:

- विज्ञापन के लिए बड़े बजट की आवश्यकता नहीं होती
- स्वयं-निर्मित कंटेंट के माध्यम से उत्पाद प्रचार संभव होता है
- छोटे स्तर से प्रचार प्रारंभ किया जा सकता है
- लक्षित ग्राहक वर्ग तक सीधे पहुँच संभव होती है

महिला उद्यमी अपनी रचनात्मकता का उपयोग करते हुए उत्पादों की तस्वीरें, वीडियो, लाइव डेमो तथा ग्राहक अनुभव साझा कर सकती हैं, जिससे बिना अधिक खर्च के प्रभावी विपणन संभव होता है।

**सीधे ग्राहक से संवाद**

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म महिला उद्यमियों और ग्राहकों के बीच प्रत्यक्ष संवाद की सुविधा प्रदान करते हैं, जो पारंपरिक व्यवसाय में संभव नहीं होता।

इससे निम्न लाभ प्राप्त होते हैं:

- ग्राहकों की आवश्यकताओं को समझना आसान होता है
- तुरंत प्रतिक्रिया प्राप्त होती है
- ग्राहक संतुष्टि में वृद्धि होती है
- विश्वास निर्माण की प्रक्रिया मजबूत होती है

प्रत्यक्ष संवाद से उद्यमी अपने उत्पादों में सुधार कर सकती हैं तथा ग्राहकों के साथ दीर्घकालिक संबंध स्थापित कर सकती हैं।

**ब्रांड पहचान निर्माण**

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म महिला उद्यमियों को अपनी विशिष्ट ब्रांड पहचान विकसित करने का अवसर प्रदान करते हैं।

इसके माध्यम से:

- व्यवसाय की विशिष्टता प्रदर्शित की जा सकती है
- उत्पादों की कहानी प्रस्तुत की जा सकती है
- निरंतर ऑनलाइन उपस्थिति बनाए रखी जा सकती है
- ग्राहकों के साथ भावनात्मक जुड़ाव स्थापित किया जा सकता है

ब्रांड निर्माण की यह प्रक्रिया दीर्घकालिक व्यावसायिक सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

**ग्राहक समुदाय का निर्माण**

सोशल मीडिया केवल बिक्री का माध्यम नहीं है, बल्कि यह ग्राहक समुदाय (Customer Community) निर्माण का भी प्रभावी साधन है।

इससे:

- नियमित ग्राहक विकसित होते हैं
- ग्राहकों में निष्ठा (Loyalty) बढ़ती है
- उत्पादों का स्वाभाविक प्रचार होता है
- नेटवर्क आधारित विपणन को बढ़ावा मिलता है

**उद्यमिता में आत्मविश्वास की वृद्धि**

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म महिला उद्यमियों को अपनी रचनात्मकता, विचारों और कौशल को प्रदर्शित करने का मंच प्रदान करते हैं।

इसके परिणामस्वरूप:

- आत्मविश्वास में वृद्धि होती है
- निर्णय क्षमता विकसित होती है
- सामाजिक सहभागिता बढ़ती है
- आर्थिक आत्मनिर्भरता सुदृढ़ होती है

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म महिला उद्यमिता के लिए एक शक्तिशाली और समावेशी साधन बन चुके हैं। ये न केवल कम लागत में विपणन की सुविधा प्रदान करते हैं, बल्कि ग्राहकों के साथ प्रत्यक्ष संबंध स्थापित कर व्यवसाय की स्थिरता और विकास को भी सुनिश्चित करते हैं। इस प्रकार, डिजिटल युग में

सोशल मीडिया महिला उद्यमियों के लिए व्यवसाय विस्तार, ब्रांड निर्माण तथा आर्थिक सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध हो रहा है।

**महिला उद्यमियों के समक्ष चुनौतियाँ**

यद्यपि डिजिटल युग ने महिला उद्यमिता के लिए अनेक अवसर प्रदान किए हैं, तथापि इसके साथ कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म तक पहुँच और उनके प्रभावी उपयोग की क्षमता सभी महिलाओं के लिए समान रूप से उपलब्ध नहीं है। सामाजिक, तकनीकी तथा आर्थिक कारक महिला उद्यमियों के डिजिटल उद्यमिता में पूर्ण सहभागिता को प्रभावित करते हैं। इन चुनौतियों का विश्लेषण महिला उद्यमिता के सतत विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

**डिजिटल साक्षरता की कमी**

डिजिटल उद्यमिता के लिए तकनीकी ज्ञान और डिजिटल कौशल अत्यंत आवश्यक होते हैं। अनेक महिलाएँ, विशेषकर ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में, डिजिटल उपकरणों एवं ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के उपयोग में दक्ष नहीं होतीं।

इस कमी के कारण:

- ऑनलाइन व्यवसाय प्रारंभ करने में संकोच उत्पन्न होता है
- डिजिटल विपणन रणनीतियों का प्रभावी उपयोग नहीं हो पाता
- ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म का संचालन कठिन प्रतीत होता है
- तकनीकी त्रुटियों के प्रति निर्भरता बढ़ती है

डिजिटल साक्षरता का अभाव महिलाओं की उद्यमिता क्षमता को सीमित कर सकता है।

**साइबर सुरक्षा जोखिम**

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के उपयोग के साथ साइबर सुरक्षा से संबंधित जोखिम भी बढ़ जाते हैं। महिला उद्यमियों को निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है:

- ऑनलाइन धोखाधड़ी
- डेटा चोरी
- फर्जी ग्राहक या भुगतान जोखिम
- डिजिटल उत्पीड़न

साइबर सुरक्षा जागरूकता की कमी इन जोखिमों को और अधिक गंभीर बना देती है, जिससे व्यवसाय संचालन में असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो सकती है।

**पारिवारिक जिम्मेदारियाँ**

महिला उद्यमियों को व्यवसाय के साथ-साथ पारिवारिक दायित्वों का भी निर्वहन करना पड़ता है। इससे:

- समय प्रबंधन में कठिनाई होती है
- व्यवसाय विस्तार के अवसर सीमित हो सकते हैं
- निरंतर ऑनलाइन उपस्थिति बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो जाता है

घरेलू जिम्मेदारियाँ कई बार व्यवसायिक निर्णयों और विकास की गति को प्रभावित करती हैं।

**वित्तीय निवेश की सीमाएँ**

यद्यपि डिजिटल व्यवसाय अपेक्षाकृत कम निवेश में प्रारंभ किया जा सकता है, फिर भी प्रारंभिक पूंजी, तकनीकी संसाधन, विपणन खर्च तथा उत्पाद विकास के लिए वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है।

महिलाओं को निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है:

- वित्तीय सहायता तक सीमित पहुँच
- ऋण प्राप्त करने में कठिनाई
- निवेश के प्रति सामाजिक संकोच
- जोखिम उठाने की सीमित क्षमता

वित्तीय सीमाएँ व्यवसाय के विस्तार और प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रभावित कर सकती हैं।

**ऑनलाइन प्रतिस्पर्धा**

डिजिटल बाजार अत्यंत प्रतिस्पर्धात्मक होता है। महिला उद्यमियों को बड़े ब्रांड, स्थापित कंपनियों तथा अनुभवी विक्रेताओं के साथ प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है।

इसके परिणामस्वरूप:

- बाजार में पहचान बनाना कठिन हो सकता है
- ग्राहक आकर्षित करने में समय लगता है
- मूल्य निर्धारण में दबाव उत्पन्न होता है
- निरंतर नवाचार की आवश्यकता रहती है

प्रतिस्पर्धा के इस वातावरण में टिके रहने के लिए निरंतर सीखना और रणनीतिक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक हो जाता है। महिला उद्यमियों के समक्ष उपस्थित ये चुनौतियाँ डिजिटल उद्यमिता की संभावनाओं को सीमित कर सकती हैं, यदि उनका समय पर समाधान न किया जाए। अतः डिजिटल प्रशिक्षण, साइबर सुरक्षा जागरूकता, वित्तीय समर्थन तथा सामाजिक सहयोग जैसे उपाय महिला उद्यमिता के सुदृढ़ विकास के लिए आवश्यक हैं।

**निष्कर्ष**

डिजिटल युग महिला उद्यमिता के लिए परिवर्तनकारी सिद्ध हुआ है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक पहचान प्रदान की है। प्रभावी डिजिटल विपणन रणनीतियाँ अपनाकर महिलाएँ न केवल अपने व्यवसाय को विकसित कर सकती हैं, बल्कि राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने हेतु डिजिटल प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता तथा नीति-समर्थन आवश्यक है।

**संदर्भ**

1. भारत सरकार। (2020). *डिजिटल इंडिया कार्यक्रम: महिला सशक्तिकरण की दिशा में पहल.* नई दिल्ली: इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय।
2. नीति आयोग। (2021). *भारत में महिला उद्यमिता की स्थिति और अवसर.* नई दिल्ली: नीति आयोग प्रकाशन।
3. विश्व बैंक। (2020). *डिजिटल अर्थव्यवस्था और महिला सहभागिता पर रिपोर्ट.* वाशिंगटन डी.सी.: विश्व बैंक समूह।
4. संयुक्त राष्ट्र महिला संगठन (UN Women)। (2021). *महिला उद्यमिता और डिजिटल समावेशन.* न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र प्रकाशन।
5. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय (MSME)। (2019). *महिला उद्यमिता विकास कार्यक्रम रिपोर्ट.* नई दिल्ली: भारत सरकार।

6. ओईसीडी (OECD)। (2020). *डिजिटल प्लेटफॉर्म और महिला उद्यमिता.* पेरिस: आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन।
7. शर्मा, आर. (2018). *महिला सशक्तिकरण और उद्यमिता.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
8. सिंह, पी. (2019). *डिजिटल मार्केटिंग का परिचय.* नई दिल्ली: ज्ञान प्रकाशन।
9. गुप्ता, एम. (2021). *ई-कॉमर्स और भारतीय महिला उद्यमिता.* नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
10. भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI)। (2020). *महिला उद्यमियों के लिए वित्तीय सहायता योजनाएँ.* लखनऊ: SIDBI प्रकाशन।
11. कुमार, एस. (2022). *सोशल मीडिया और व्यवसाय विकास.* नई दिल्ली: साहित्य भवन।
12. यूनेस्को (UNESCO)। (2021). *डिजिटल साक्षरता और लैंगिक समानता.* पेरिस: यूनेस्को।

# नई शिक्षा नीति 2020 और व्यावसायिक शिक्षा : लड़कियों के लिए अवसर एवं दिशाएँ

**राणुबाई सुभाष कोरे**

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ छत्रपति संभाजीनगर

E-MAIL : ranichilwant34223@gmail,com

**प्रस्तावना :**

भारत की शिक्षा व्यवस्था को अधिक समावेशी, व्यावहारिक और रोजगारोन्मुख बनाने के उद्देश्य से नई शिक्षा नीति 2020 लागू की गई है। इस नीति का मुख्य लक्ष्य शिक्षा को केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रखकर उसे कौशल आधारित और जीवनोपयोगी बनाना है। विशेष रूप से लड़कियों की शिक्षा और उनके सशक्तिकरण को ध्यान में रखते हुए इस नीति में कई महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं।भारतीय समाज में लंबे समय तक लड़कियों की शिक्षा विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाओं से प्रभावित रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी कई लड़कियाँ उच्च शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण से वंचित रह जाती हैं। ऐसी स्थिति में नई शिक्षा नीति 2020 लड़कियों के लिए शिक्षा के नए द्वार खोलती है, विशेषकर व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education) के माध्यम से।

इस नीति के अंतर्गत विद्यालय स्तर से ही विद्यार्थियों को विभिन्न व्यावसायिक कौशलों—जैसे हस्तकला, तकनीकी कार्य, उद्यमिता, डिजिटल कौशल आदि—का प्रशिक्षण देने पर जोर दिया गया है। इससे लड़कियाँ न केवल आत्मनिर्भर बन सकती हैं, बल्कि रोजगार और स्वरोजगार के नए अवसर भी प्राप्त कर सकती हैं।

नई शिक्षा नीति का उद्देश्य 2025 तक कम से कम 50% विद्यार्थियों को किसी न किसी प्रकार की व्यावसायिक शिक्षा से जोड़ना है। यह पहल लड़कियों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे वे पारंपरिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक कौशल भी प्राप्त कर सकेंगी और समाज में आत्मविश्वास के साथ अपनी भूमिका निभा सकेंगी।

इस प्रकार नई शिक्षा नीति 2020 लड़कियों की शिक्षा को सशक्त बनाने, उन्हें कौशलयुक्त बनाने तथा समाज और राष्ट्र के विकास में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।भारतीय शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए Ministry of Education द्वारा प्रस्तुत National Education Policy 2020 (NEP 2020) शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी दस्तावेज

सिद्ध हुई है। इस नीति का उद्देश्य शिक्षा को केवल डिग्री प्राप्ति तक सीमित न रखकर उसे कौशल, रोजगार और आत्मनिर्भरता से जोड़ना है। विशेषतः लड़कियों के लिए यह नीति सामाजिक सशक्तिकरण, आर्थिक स्वतंत्रता और लैंगिक समानता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारत में शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक बदलावों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो समाज के सभी वर्गों, विशेष रूप से महिलाओं को सशक्त बनाने का प्रयास करती है। महिला सशक्तिकरण की दिशा में NEP 2020 महिलाओं और लड़कियों के लिए शिक्षा में समानता, सुरक्षा और अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से कई प्रमुख पहलें प्रस्तुत करती है। यह नीति महिला शिक्षा को बढ़ावा देने, लैंगिक असमानताओं को समाप्त करने और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए समर्पित है। भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को लागू की गई **नई शिक्षा नीति (NEP-2020)** भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन लाने का प्रयास है। इसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक **समावेशी, कौशल-आधारित और रोजगारोन्मुख** बनाना है। इस नीति में विशेष रूप से लड़कियों और महिलाओं को शिक्षा के माध्यम से सशक्त बनाने पर बल दिया गया I

## 2. **नई शिक्षा नीति 2020 : एक संक्षिप्त परिचय**

नई शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य है—

1.2030 तक सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

२., 50% छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा से जोड़ना

3.लचीला पाठ्यक्रम और बहुविषयक अध्ययन

४.कौशल एवं उद्यमिता विकास

यह नीति "सबके लिए शिक्षा" के साथ "सबके लिए कौशल" की अवधारणा को भी आगे बढ़ाती है।नई शिक्षा नीति में स्कूली स्तर से ही **कौशल आधारित शिक्षा (Vocational Education)** को जोड़ने पर जोर दिया गया है।

- कक्षा 6 से ही विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण से जोड़ने का प्रावधान।
- विभिन्न **इंटर्नशिप और स्थानीय कौशल** सीखने की व्यवस्था।
- वर्ष 2026 तक लगभग 50% **विद्यार्थियों को व्यावसायिक प्रशिक्षण** से जोड़ने का लक्ष्य।

इससे छात्र केवल डिग्री प्राप्त करने तक सीमित नहीं रहेंगे बल्कि रोजगार योग्य कौशल भी सीखेंगे।

## 3. **लड़कियों के लिए अवसर**

**नई शिक्षा नीति लड़कियों के लिए कई नए अवसर प्रदान करती है।**

(1) **शिक्षा में समान अवसर**

- नीति का उद्देश्य लैंगिक असमानता को कम करना और सभी स्तरों पर लड़कियों की भागीदारी बढ़ाना है।
- महिला शिक्षा को बढ़ावा देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

(2) **कौशल आधारित रोजगार**

व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से लड़कियां निम्न क्षेत्रों में कौशल प्राप्त कर सकती हैं –

- सूचना प्रौद्योगिकी (IT)
- स्वास्थ्य सेवा
- फैशन डिजाइन
- कृषि आधारित उद्योग
- हस्तकला और लघु उद्योग
- डिजिटल उद्यमिता

इससे वे स्वरोजगार और रोजगार दोनों प्राप्त कर सकती हैं।

(3) डिजिटल शिक्षा के अवसर

नई शिक्षा नीति में डिजिटल प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है, जिससे दूरदराज़ क्षेत्रों की लड़कियां भी आसानी से शिक्षा प्राप्त कर सकती हैं।

(4) उद्यमिता (Entrepreneurship)

कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से लड़कियां

- लघु उद्योग
- स्टार्ट-अप
- घरेलू उद्योग
- ऑनलाइन व्यवसाय शुरू कर सकती हैं।

व्यावसायिक शिक्षा वह शिक्षा है जो विद्यार्थियों को किसी विशेष कार्य, व्यवसाय या उद्योग के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करती है। इसका उद्देश्य रोजगार सृजन और स्वरोजगार को बढ़ावा देना है।

NEP 2020 के अंतर्गत—

कक्षा 6 से इंटर्नशिप

स्थानीय उद्योगों से प्रशिक्षण

स्किल-आधारित मॉड्यूल

पारंपरिक एवं आधुनिक कौशलों का समावेश

(क) आर्थिक आत्मनिर्भरता

व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से लड़कियाँ स्वरोजगार एवं लघुउद्योग स्थापित कर सकती हैं।

(ख) STEM क्षेत्रों में प्रवेश

विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (STEM) में लड़कियों की भागीदारी बढ़ाने पर विशेष बल।

(ग) **डिजिटल सशक्तिकरण**

ऑनलाइन शिक्षा, कोडिंग, डिजिटल मार्केटिंग और ई-कॉमर्स जैसे क्षेत्रों में अवसर।

(घ) सामाजिक सशक्तिकरण

शिक्षित और कुशल बालिकाएँ परिवार एवं समाज में निर्णय लेने की भूमिका निभा सकती हैं।

## 4. लड़कियों के लिए संभावित दिशाएँ

नई शिक्षा नीति के आधार पर लड़कियों के लिए निम्न दिशाएँ उभरती हैं:

1. कौशल विकास

स्कूल स्तर से ही कौशल आधारित पाठ्यक्रम अपनाकर रोजगार की तैयारी।

2. तकनीकी शिक्षा

आईटी, डिजिटल तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण।

3. उद्यमिता विकास

महिला स्वयं सहायता समूह, स्टार्ट-अप और लघु उद्योगों के माध्यम से आर्थिक आत्मनिर्भरता।

4. ग्रामीण विकास

ग्रामीण क्षेत्रों में

- कृषि आधारित उद्योग
- हस्तकला

- खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में रोजगार के अवसर।

### 5. सामाजिक सशक्तिकरण

**शिक्षा के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार और निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है।**

1.ग्रामीण कौशल केंद्रों की स्थापना

2.लड़कियों हेतु छात्रवृत्ति योजनाएँ

3.इंडस्ट्री–इंस्टीट्यूट साझेदारी

4.सुरक्षित और लैंगिक-संवेदनशील वातावरण

5.डिजिटल अवसंरचना का विस्तार

### 6. चुनौतियाँ

हालाँकि कई अवसर हैं, फिर भी कुछ चुनौतियाँ भी मौजूद हैं:

- ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा संसाधनों की कमी
- डिजिटल विभाजन
- सामाजिक रूढ़ियाँ
- व्यावसायिक शिक्षा के प्रति कम जागरूकता
- आर्थिक असमानता
    - बाल विवाह एवं पारिवारिक बाधाएँ

इन समस्याओं के समाधान के लिए सरकारी नीतियों के साथ सामाजिक जागरूकता आवश्यक है।

### 7. निष्कर्ष

नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षा व्यवस्था को अधिक समावेशी, लचीला और कौशल-आधारित बनाने का प्रयास किया गया है। इस नीति में व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा की शिक्षा से जोड़कर विशेष रूप से लड़कियों के लिए नए अवसरों का मार्ग प्रशस्त किया गया है। पहले जहाँ व्यावसायिक शिक्षा को सीमित दृष्टि से देखा जाता था, वहीं अब इसे विद्यालय स्तर से ही लागू कर छात्राओं को आत्मनिर्भर और कौशल-सम्पन्न बनाने पर बल दिया गया है।नई शिक्षा नीति 2020 में लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी गई है। इसके माध्यम से लड़कियों को विज्ञान, तकनीक, उद्यमिता, कृषि, उद्योग तथा अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों में भागीदारी के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। विद्यालयों में कौशल प्रशिक्षण, इंटर्नशिप, स्थानीय शिल्प और उद्योगों से जुड़ाव जैसी व्यवस्थाएँ छात्राओं को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करती हैं, जिससे वे रोजगार और स्वरोजगार दोनों के लिए तैयार हो सकें। इसके साथ ही

छात्रवृत्ति, सुरक्षित शिक्षण वातावरण, डिजिटल शिक्षा और करियर मार्गदर्शन जैसी सुविधाएँ लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करती हैं। इन पहलों के माध्यम से ग्रामीण तथा पिछड़े क्षेत्रों की छात्राओं को भी शिक्षा और कौशल विकास के समान अवसर उपलब्ध हो सकते हैं।

अतः कहा जा सकता है कि नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा का विस्तार लड़कियों के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यदि इस नीति का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए, तो यह न केवल लड़कियों की शिक्षा को नई दिशा देगा, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनाकर राष्ट्र के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम बनाएगा। नई शिक्षा नीति 2020 ने व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा में लाकर लड़कियों के लिए सशक्त भविष्य की नींव रखी है। यह नीति न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाती है, बल्कि आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महिला सहभागिता को भी सुनिश्चित करती है। यदि नीति का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए तो भारत में लैंगिक समानता और आर्थिक विकास की दिशा में महत्वपूर्ण परिवर्तन संभव है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

Ministry of Education (2020). National Education Policy 2020. नई दिल्ली: भारत सरकार।

कुमार, के. (2021). भारतीय शिक्षा प्रणाली और नई शिक्षा नीति. नई दिल्ली: रावत प्रकाशन।

शर्मा, आर. (2022). व्यावसायिक शिक्षा और महिला सशक्तिकरण. जयपुर: साहित्यागार।

University Grants Commission (2021). Skill Development Initiatives in Higher Education. नई दिल्ली।

National Skill Development Corporation (2022). Skill India Report. नई दिल्ली।

# नवसमाज निर्माण में हिंदी महिला लेखिकाओं की भूमिका: सामाजिक-आर्थिक चेतना का अध्ययन

**डॉ.सुजाता सुर्यकांत हजारे**
बलभीम महाविध्यालय बीड
sujatahajared@gmail.com

**सारांश—**

हिंदी साहित्य का इतिहास केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति का इतिहास नहीं है, बल्कि भारतीय समाज की चेतना, संघर्ष और परिवर्तन का भी दस्तावेज है। विशेषतः हिंदी महिला लेखिकाओं ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता, आर्थिक विषमता, जाति-वर्ग आधारित शोषण और सांस्कृतिक रूढ़ियों को चुनौती दी है। उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक सुधार आंदोलनों से लेकर समकालीन वैश्वीकरण के दौर तक महिला लेखिकाओं का साहित्य सामाजिक-आर्थिक चेतना के विकास में निरंतर सक्रिय रहा है। प्रारंभिक दौर में स्त्री शिक्षा, विधवा-पुनर्विवाह, पर्दा-प्रथा और बाल विवाह जैसे मुद्दे प्रमुख रहे, जबकि आधुनिक काल में स्त्री-स्वायत्तता, आर्थिक स्वतंत्रता, लैंगिक समानता, श्रम अधिकार और पहचान की राजनीति जैसे विषयों को व्यापक रूप से उठाया गया। इस प्रकार महिला लेखिकाओं का साहित्य केवल व्यक्तिगत अनुभवों का चित्रण नहीं है, बल्कि व्यापक सामाजिक आर्थिक, विमर्श का निर्माण भी है।

मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुष्पा और उषा प्रियंवदा जैसी लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों और कहानियों में मध्यमवर्गीय समाज की संरचना, स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलता और आर्थिक निर्भरता की समस्याओं को यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया। इन लेखिकाओं के साहित्य में स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता को सामाजिक सम्मान और आत्मनिर्णय का आधार माना गया है। परिणामस्वरूप हिंदी महिला लेखन ने पाठकों के भीतर सामाजिक संवेदनशीलता और परिवर्तन की चेतना को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान शोध-पत्र का उद्देश्य हिंदी महिला लेखिकाओं के साहित्य का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करना है कि उनके लेखन ने किस प्रकार सामाजिक-आर्थिक चेतना को विकसित किया और नवसमाज निर्माण की प्रक्रिया को प्रभावित किया। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि हिंदी महिला लेखिकाओं का साहित्य भारतीय समाज के नव निर्माण की वैचारिक भूमि तैयार करता है। उनके लेखन में प्रस्तुत संघर्ष, प्रतिरोध और आत्मसम्मान की चेतना सामाजिक परिवर्तन की दिशा को निर्धारित करती है और आधुनिक समाज को अधिक समतामूलक और मानवीय बनाने की प्रेरणा देती है।

**मुख्य शब्द:** स्त्री-विमर्श, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक चेतना, नवसमाज निर्माण ,

**प्रस्तावना—**

हिंदी साहित्य में महिला लेखन का उदय भारतीय समाज के आधुनिकीकरण और सामाजिक सुधार आंदोलनों के साथ जुड़ा हुआ है। प्रारंभिक काल में स्त्री की आवाज साहित्य में सीमित थी, परंतु शिक्षा के

प्रसार और सामाजिक जागृति के साथ महिलाओं ने लेखन के माध्यम से अपनी समस्याओं और अनुभवों को अभिव्यक्त करना शुरू किया। परिणामस्वरूप हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श एक महत्वपूर्ण धारा के रूप में विकसित हुआ। महिला लेखिकाओं ने अपने साहित्य में केवल भावनात्मक विषयों को नहीं उठाया, बल्कि सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं की आलोचना भी की। उन्होंने पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कारण उत्पन्न असमानताओं, घरेलू हिंसा, आर्थिक निर्भरता और सामाजिक प्रतिबंधों को उजागर किया। इससे समाज में स्त्री की स्थिति पर गंभीर चर्चा प्रारंभ हुई और परिवर्तन की चेतना विकसित हुई।

आधुनिक हिंदी साहित्य में महिला लेखन ने सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाओं को चुनौती देने वाला वैकल्पिक विमर्श प्रस्तुत किया, जिसमें स्त्री की आत्मनिर्णय क्षमता, स्वतंत्रता और सामाजिक भागीदारी पर विशेष जोर दिया गया। इस प्रकार महिला लेखिकाओं का साहित्य केवल साहित्यिक परंपरा का विस्तार नहीं है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का सक्रिय अंग भी है। उनके लेखन ने पाठकों को सामाजिक असमानताओं के प्रति जागरूक किया और लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत किया। वर्तमान शोध-पत्र का उद्देश्य हिंदी महिला लेखिकाओं के साहित्य का अध्ययन करते हुए यह विश्लेषण करना है कि उनके लेखन ने सामाजिक-आर्थिक चेतना को किस प्रकार प्रभावित किया और नवसमाज निर्माण की प्रक्रिया में उनकी क्या भूमिका रही।

**उद्देश्य**

१. हिंदी महिला लेखिकाओं के साहित्य का सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण करना।
२. महिला लेखन में प्रस्तुत सामाजिक चेतना का अध्ययन करना।
३. नवसमाज निर्माण में महिला लेखन की भूमिका का मूल्यांकन करना।
४. स्त्री-विमर्श और आर्थिक स्वतंत्रता के संबंध को स्पष्ट करना।

**महिला लेखन और सामाजिक परिवर्तन**

महिला लेखन ने स्त्री-विमर्श को एक वैचारिक आधार प्रदान किया, जिसमें स्त्री की शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय की क्षमता को सामाजिक विकास का आवश्यक तत्व माना गया। महादेवी वर्मा ने अपने निबंधों में स्त्री की दासता और सामाजिक बंधनों पर गहरी चिंता व्यक्त की तथा शिक्षा को मुक्ति का साधन बताया। उनके विचारों ने समाज में स्त्री अधिकारों के प्रति जागरूकता को बढ़ावा दिया हैं। आधुनिक हिंदी महिला लेखन में आर्थिक सरोकार भी विशेष रूप से उभरकर सामने आए हैं। चित्रा मुद्गल के उपन्यास आवां में श्रमिक वर्ग और स्त्री श्रम की समस्याओं को यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि महिला लेखन केवल लैंगिक प्रश्नों तक सीमित नहीं है, बल्कि वर्ग और श्रम की समस्याओं को भी संबोधित करता है। सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से महिला लेखन का प्रभाव व्यापक रहा है। इसने पाठकों को समाज में व्याप्त असमानताओं के प्रति संवेदनशील बनाया और लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ किया। महिला लेखिकाओं के साहित्य ने यह सिद्ध किया कि साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं, बल्कि उसका मार्गदर्शक भी हो सकता है। उनके लेखन ने स्त्री को 'विषय' से 'वक्ता' बनने की प्रक्रिया को संभव बनायाअतः, कहा जा सकता है कि महिला लेखन सामाजिक परिवर्तन की एक सशक्त वैचारिक धारा है, जिसने भारतीय समाज में समानता, न्याय और मानवीय गरिमा के मूल्यों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

**आर्थिक स्वतंत्रता और स्त्री चेतना**

आर्थिक स्वतंत्रता स्त्री सशक्तिकरण की सबसे महत्वपूर्ण आधारशिलाओं में से एक है। जब स्त्री आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होती है, तब वह केवल परिवार या समाज पर निर्भर रहने के बजाय अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने में सक्षम होती है। इस प्रकार आर्थिक स्वतंत्रता स्त्री चेतना को विकसित करने का प्रमुख माध्यम बनती है। हिंदी साहित्य में अनेक महिला लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से इस तथ्य को स्पष्ट किया है कि आर्थिक निर्भरता स्त्री के सामाजिक शोषण और असमानता का एक प्रमुख कारण रही है। हिंदी कथा-साहित्य में स्त्री की आर्थिक स्थिति को विशेष रूप से चित्रित किया गया है। मन्नू भंडारी के उपन्यास आपका बंटी में पारिवारिक विघटन और स्त्री की असुरक्षा के पीछे आर्थिक निर्भरता का प्रश्न स्पष्ट रूप से सामने आता है। इसी प्रकार उषा प्रियंवदा की रचनाओं में कामकाजी स्त्री के मानसिक संघर्ष और आत्मनिर्भरता की आकांक्षा का यथार्थ चित्रण मिलता है। इन लेखिकाओं ने यह दर्शाया कि आर्थिक स्वतंत्रता स्त्री के आत्मसम्मान और सामाजिक प्रतिष्ठा से गहराई से जुड़ी हुई है। स्त्री चेतना का विकास केवल आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता से नहीं, बल्कि उस आत्मविश्वास से भी जुड़ा है जो आर्थिक स्वतंत्रता से उत्पन्न होता है। जब स्त्री अपने श्रम और क्षमता के आधार पर आर्थिक रूप से सक्षम बनती है, तब वह पारंपरिक बंधनों और रूढ़ियों को चुनौती देने का साहस प्राप्त करती है। इस संदर्भ में महादेवी वर्मा ने अपने निबंधों में स्पष्ट किया है कि स्त्री की वास्तविक मुक्ति शिक्षा और आर्थिक स्वावलंबन से ही संभव है। उन्होंने स्त्री की सामाजिक स्थिति को सुधारने के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता को आवश्यक माना।

आधुनिक हिंदी साहित्य में आर्थिक सरोकारों को व्यापक सामाजिक संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। चित्रा मुद्गल के उपन्यास आवां में श्रमिक वर्ग की महिलाओं की समस्याओं, श्रम शोषण और आर्थिक संघर्ष को अत्यंत यथार्थवादी ढंग से चित्रित किया गया है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक स्वतंत्रता केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी परिवर्तन का कारण बनती है।

आर्थिक स्वतंत्रता के परिणामस्वरूप स्त्रियों में अधिकार-चेतना का विकास होता है, जिससे वे शिक्षा, रोजगार और सामाजिक भागीदारी के अवसरों का लाभ उठाने लगती हैं। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे समाज की संरचना को भी प्रभावित करती है और लैंगिक समानता की दिशा को मजबूत करती है। इसलिए आर्थिक स्वतंत्रता को स्त्री चेतना के विकास का केंद्रीय तत्व माना जा सकता है।अतः आर्थिक स्वतंत्रता और स्त्री चेतना एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। जब स्त्री आर्थिक रूप से सक्षम बनती है, तब वह न केवल अपने जीवन को बेहतर बनाती है, बल्कि समाज में समानता, न्याय और प्रगतिशील मूल्यों की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता ने भी पारिवारिक संरचना को प्रभावित किया है। जब स्त्रियाँ रोजगार और सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगीं, तब परिवार में उनकी भूमिका केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं रही। उषा प्रियंवदा की कहानियों और उपन्यासों में कामकाजी स्त्री के जीवन, उसके संघर्षों और पारिवारिक संबंधों में उत्पन्न नए संतुलन को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है। उनके साहित्य से स्पष्ट होता है कि आधुनिक परिवार में स्त्री-पुरुष संबंध अधिक सहयोगात्मक और संवादात्मक होते जा रहे हैं। पारिवारिक संरचना में यह बदलाव केवल संबंधों की प्रकृति तक सीमित नहीं है,

बल्कि मूल्य-व्यवस्था में भी परिवर्तन लाया है। आज परिवारों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समान अधिकार और आत्मनिर्णय को अधिक महत्व दिया जाने लगा है। संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवारों की संख्या बढ़ी है, जिससे पारिवारिक भूमिकाओं और जिम्मेदारियों का स्वरूप भी बदल गया है। अतः कहा जा सकता है कि पारिवारिक संरचना में हो रहे परिवर्तन सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का परिणाम हैं। हिंदी महिला लेखिकाओं के साहित्य ने इन परिवर्तनों को गहराई से अभिव्यक्त करते हुए यह स्पष्ट किया है कि आधुनिक परिवार पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक चेतना के बीच संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया से गुजर रहा है। यह परिवर्तन नवसमाज निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है, क्योंकि इससे समानता, संवाद और पारस्परिक सम्मान पर आधारित पारिवारिक संबंधों को प्रोत्साहन मिलता है।

## निष्कर्ष

हिंदी महिला लेखिकाओं का साहित्य भारतीय समाज के नव निर्माण की प्रक्रिया में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनके लेखन ने न केवल स्त्री जीवन की वास्तविकताओं को सामने रखा, बल्कि सामाजिक-आर्थिक असमानताओं, पितृसत्तात्मक संरचनाओं और सांस्कृतिक रूढ़ियों की गहन आलोचना भी की। इस प्रकार महिला लेखन ने समाज को आत्ममंथन के लिए प्रेरित किया और परिवर्तन की दिशा में नई वैचारिक संभावनाएँ प्रस्तुत कीं। महिला लेखिकाओं की रचनाओं में स्त्री की शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, आत्मनिर्णय और सामाजिक सहभागिता को विशेष महत्व दिया गया है। इन विषयों ने समाज में स्त्री अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाई और यह संदेश दिया कि किसी भी प्रगतिशील समाज की स्थापना स्त्री-पुरुष समानता के बिना संभव नहीं है। उनके साहित्य ने यह स्पष्ट किया कि सामाजिक परिवर्तन केवल नीतियों और योजनाओं से नहीं, बल्कि मानसिकता में परिवर्तन से संभव होता है, और साहित्य इस परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

## संदर्भ सूची

खैरनार, अनीता. "आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन."

गर्ग, मृदुला. उसके हिस्से की धूप. राजकमल प्रकाशन.

पुष्पा, मैत्रेयी. अल्मा कबूतरी. वाणी प्रकाशन.

प्रियंवदा, उषा. रुकोगी नहीं राधिका. राजकमल प्रकाशन.

भंडारी, मन्नू. आपका बंटी. राजकमल प्रकाशन, 1971.

महेश्वरी, सुनीता. "हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श."

मुद्गल, चित्रा. आवां. राजकमल प्रकाशन, 1991.

वर्मा, महादेवी. श्रृंखला की कड़ियाँ. लोकभारती प्रकाशन, 1942.

सोबती, कृष्णा. ज़िंदगीनामा. राजकमल प्रकाशन, 1979.

# पर्यावरणपूरक खेती में महिलाओं की भूमिका

शोधार्थी
**औदुंबर बबनराव मोरे, हिंदी विभाग, बलभीम महाविद्यालय बीड**
ई-मेल- audumbarhindi@gmail.com. मो.न.९७६३०६४३७७

**प्रस्तावना :**

'विकास' शब्द का अर्थ सुख-समृद्धि की ओर, शोषण से मुक्ति की ओर जाने वाला मार्ग है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी एक दूसरे की पूरक है। जीवन को बेहतर बनाने के लिए इसका उपयोग हम करते हैं। उसे हम विकास कहते हैं। मानव ने अपना जीवन सुखमय किया, अपना विकास किया, लेकिन सही मायने में मानव का विकास हुआ है क्या? यह सोचने की बात है। जैसे-जैसे मानव अपने आप को प्रगत समझता जा रहा है, वैसे-वैसे वह 'एक बार उपयोग करो और फेक दो' इस भौतिकवादी संस्कृति का गुलाम बनता जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरुप हम आज पर्यावरण की गंभीर समस्या का सामना कर रहे हैं। जिसके चलते प्राकृतिक संसाधनों की बर्बादी, भोजन की बर्बादी, भूमि की स्थिरता की चिंता किए बिना खेती की अस्थिर विधि, मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव, महिलाओं का शोषण, बिगड़ता प्राकृतिक संतुलन हमारे सामने यह प्रमुख चुनौतियां हैं।

पिछले चार से साढे चार दशकों से कई पर्यावरणीय मुद्दों ने पूरी दुनिया को अपने चपेट में ले लिया है। भारत जैसे विकसित देश में जनसंख्या विस्फोट, गरीबी, बेरोजगारी और पर्यावरण के प्रति राजनीतिक उदासीनता जैसे कई कारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े पर्यावरणीय मुद्दों को अधिक जटिल और गंभीर बना रहे हैं। इसीलिए इन मुद्दों पर विचार करते समय महिलाएं,पर्यावरण और खेती इनके बीच के संबंधों पर भी विचार करना महत्वपूर्ण हैं। हमारे विकासशील भारत देश में खेती, पर्यावरण इन में महिलाओं की भूमिका। इसे समझने के लिए हमें सबसे पहले महिला और पर्यावरण के बीच के पारंपरिक संबंधों पर विचार करना होगा। क्योंकि मानव सभ्यता के आरंभ में जिस प्रकार से महिलाएं प्रकृति से जुड़ी थी। उस संबंध के निशान 21वीं सदी में भी जीवित प्रतीत होते हैं। विशेष कर ग्रामीण महिलाओं के मामले में। इसलिए हमें इस संबंध की उत्पत्ति और अब तक की यात्रा को समझने के लिए थोड़ा पीछे मुड़कर देखना होगा।

'पृथ्वी' यह प्राथमिक उत्पादक है। जो मनुष्य सहित सभी जीवित प्राणियों का पोषण करती है। विश्व भर के अधिकांश आदिम समूह पृथ्वी को 'सृजन' का वरदान प्राप्त 'आदिम माता' के रूप में देखते थे। "यूनानियों ने उसे 'गाइया' कहा। जिसका अर्थ 'धरती माता' होता है"।१ इन आदिम समूह का जीवन पूरी तरह से प्रकृति से जुड़ा हुआ था। भोजन इनकी मुख्य आवश्यकता और जीवन रक्षा का आधार था। यह भोजन वे अपने परिवेश से प्राप्त करते थे। ऐसे समय में तब सारा जीवन भोजन पर केंद्रित था। यह आश्चर्यजनक बात नहीं थी कि, पृथ्वी जिसने विभिन्न वृक्ष और पौधों को जन्म दिया। वह मानव के लिए श्रद्धा का स्थान बनी हुई थी।

प्राचीन काल में जब औपचारिक शिक्षा या वैज्ञानिक विकास हुआ नहीं था। तब मानव अवलोकन से सीखता था। उसे सृष्टि के पीछे के विज्ञान का ज्ञान नहीं था। वह केवल अंकुरों को जमीन से निकलते हुए

देखकर कृतज्ञता का अनुभव करता था। उसी प्रकार स्त्रियों की सृजनात्मक शक्ति को महसूस करता था। उसने तर्क किया की भूमि की उत्पादकता और स्त्रियों की वंश वृद्धि दोनों के पीछे एक ही रहस्यमय शक्ति होनी चाहिए। वह हमें पोषण देने वाली भूमि और मानव जाति को जन्म देने वाली स्त्री के बीच की शक्ति और समानता इन दोनों से परिचित हो गया। स्वाभाविक रूप से उसके देखने में स्त्री और भूमि एक ही है। यही कारण है की, भूमि की उर्वरता और सृष्टि के समग्र संतुलन को बनाए रखते हुए,उस मातृसत्ताक व्यवस्था में महिलाओं की सामाजिक स्थिति और आत्मसम्मान में निरंतर वृद्धि होती रही। अपने-अपने समूह का प्रबंधन करते समय निर्णय लेने की उनकी स्वतंत्रता भी बरकरार थी। मानव सभ्यता समय के साथ-साथ विकसित होती रही। भोजन इकट्ठा करने और शिकार करके जीविका चलाने के चरणों के बाद आदिम कृषि का उदय हुआ। नि:संदेह खेती शुरू करने का श्रेय भी महिलाओं को ही जाता है। यदि पी कृषि का आविष्कार किसने किया इसका कोई पुख्ता प्रमाण नहीं है। लेकिन कई अध्ययनों से पता चलता है कि, महिला ही पहले किसान थी। महिलाएं कुदल-फावड़े जैसे अवजारों का उपयोग करके खेती करती थी। बीज चुनना, जमीन को धीरे-धीरे खोदना, बीज बोना और पौधों की देखभाल करना जैसे सभी कृषि कार्य महिलाएं ही करती थी।

जब कृषि में बैल और हल का उपयोग शुरू हुआ, तब महिलाओं पर अपनी साझा भूमि की देखभाल करने की जिम्मेदारी थी। उसके मूल स्वरूप को प्रभावित किए बिना। जब हल का आविष्कार हुआ, कृषि का विकास शुरू हुआ और धीरे-धीरे पुरुषों के अधिकार महिलाओं के बराबर हो गए। इस कारण मातृसत्ताक व्यवस्था का प्रभाव कम हुआ। पुरुष प्रधान व्यवस्था में 'आवश्यकताओं के लिए उत्पादन' का दृष्टिकोण पीछे छूट गया और भूमि की उत्पादकता और उसके स्थिति पर विचार किए बिना जितना संभव हो उतना उत्पादन करने की प्रवृत्ति बढ़ती चली गई। 'अधिक उत्पाद करो और अधिक लाभ पांवों' इस प्रवृत्ति ने प्रकृति के संतुलन पर विचार किए बिना धन कमाने पर ध्यान केंद्रित करने की प्रवृत्ति प्रबल हो गई। विकास का यह दृष्टिकोण, आर्थिक समृद्धि का लक्ष्य अधिकाधिक शक्तिशाली होता गया। इसमें महिलाओं और पर्यावरण दोनों को भारी नुकसान पहुंचाया है। इस विकास की प्रमुख विशेषताएं यह है कि, पर्यावरण संतुलन बनाए रखने वाले पारंपरिक कृषि ज्ञान का उपयोग नहीं किया जाता। महिलाएं जो भविष्य की सबसे महत्वपूर्ण गैर-उत्पादक है। इस स्वस्थ पर्यावरण पर निर्भर है। महिलाएं इस निर्भरता और अपने प्राकृतिक पर्यावरण, अपनी मिट्टी और फसलों की रक्षा करने की अपनी जिम्मेदारी के प्रति भली-भांति जागरुक है। झिबॉबे की एक ग्रामीण महिला के शब्द इस संदर्भ में स्पष्ट है। वह कहती है "मेरा पर्यावरण मेरी अर्थव्यवस्था और मेरे संपूर्ण अस्तित्व का आधार है। मुझे अपना भोजन इसी भूमि से मिलता है"।२

भारत में पारंपरिक कृषि पद्धतियां जिनका अभ्यास लगभग कई सालों से किया जा रहा है। जिन्हें मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा विकसित किया गया है।जो पर्यावरण के अनुकूल है। भूमि को कोई दीर्घकालीन नुकसान पहुंचाए बिना स्थाई आय अर्जीत की जाती है। इसके अलावा विविधता महिलाओं के कार्य और ज्ञान का एक मूलभूत सिद्धांत है। पारंपरिक कृषि में एक ही भूमि पर बहु-फसली प्रणाली में विभिन्न फसली उगाई जाती है। उसमें केरल का 'कलिंगल पैटर्न' है, जो आज के समय में काफी प्रचलित है। त्रिशूर की रहने वाली सपना कलिंगल द्वारा शुरू की गई कृषि परियोजना की सफलता ने इसे 'कलिंगल पैटर्न' का नाम दिया है। केरल मसालों की खेती के लिए प्रसिद्ध है। कलिंगल के खेतों में जायफल की मुख्य मसाला फसल

है। उन्होंने नारियल, सुपारी और काली मिर्च को अंतर-फसल के रूप में उगाया है। उन्होंने न केवल खेत का उचित उपयोग करके उत्पादन बढ़ाया है बल्कि, विभिन्न फसले उगाकर भूमि की उर्वरता बनाए रखने का भी पूरा ध्यान रखा है। इसके अलावा इन्होंने अपने खेत में मारवाड़ी घोड़े, देसी गाय, खरगोश, मुर्गियां, बकरियां, कबूतर और मछली जैसे पशुधन भी पाले हैं। बहु-फसली खेती और पशुपालन उनकी कृषि पद्धति का हिस्सा है। इन दोनों के संयोजन से जैव-विविधता को सुरक्षित करते हुए, पर्यावरणीय संतुलन और उत्पादन में वृद्धि एक साथ संभव हो पाई है।

जैविक खेती एक ऐसी कृषि पद्धति है जिसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग बिलकुल नहीं किया जाता। इसका मुख्य उद्देश्य मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखना और पर्यावरण का प्रदूषण किए बिना शुद्ध उपज प्राप्त करना। महाराष्ट्र की राहीबाई पोपेरे ने जैविक खेती और देसी बीजों के संरक्षण के क्षेत्र में काम किया है। कि उन्हें 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया है। उन्होंने सैकड़ो देसी किस्म के बीजों को बचाया और हजारों महिलाओं को जैविक खेती से जोड़ा है। इनका कहना है कि, "आने वाली पीढ़ियों को अस्पताल से बचाने के लिए हमें अपनी जमीन और अपने बीजों को बचाना होगा"।३ ऐसी कई महिलाएं हैं जो अपने परिवार के साथ-साथ पर्यावरण के परिवार का संरक्षण करती हुई दिखाई देती है। इसलिए इस साल २०२६ को संयुक्त राष्ट्रसंघ ने 'अंतर्राष्ट्रीय महिला किसान वर्ष' घोषित किया है।

पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास की संभावनाएं संयुक्त राष्ट्र द्वारा २०३० तक घोषित १७ सतत विकास लक्ष्यों में लिंग समानता और महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है। इसे ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय नीतियों में सकारात्मक बदलाव लाना, उनका प्रभावी कार्यान्वय ग्राम स्तर पर करना आवश्यक है। जनसंख्या की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली महिलाओं की पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान में वास्तविक भागीदारी तभी संभव हो सकती है।

**संदर्भ :**


१. स्त्रिया आणि पर्यावरण : काल आणि आज - वर्षा गजेंद्रगडकर, साप्ताहिक साधना,पृ.सं-२७, सं-विनोद शिरसाट, ४३१ शनिवार पेठ, पुणे-४११०३०.
२. वही...पृ.सं.२९.
३. https://wikipedia.org- date-03/02/2026.

# भारत सरकार की योजनाएँ: अवसर एवं चुनौतियों से भरी ग्रामीण महिला उद्यमिता

**पवार ज्ञानेश्वर राधाकिसन**
पीएच.डी.शोधछात्र, डॉ. बा.आं.म. विश्वविद्यालय, छ.संभाजीनगर

**सारांश**

किसी भी राष्ट्र के हित और विकास के लिए महिला एवं पुरुष की समान भागीदारी आवश्यक होती है। भारत ग्रामीण एवं अनगिनत गावों के देश के रुप में जाना जाता है। देश की लगभग सत्तर प्रतिशत आबादी गावों में निवास करती है। वह अपनी आजीविका के लिए कृषि तथा कृषि से सबंधित अन्य छोटे-मोटे व्यवसायों पर निर्भर हैं। यह बातनिश्चित रुप से कह सकते हैंकि किसी भी देश की आर्थिक प्रगति , मुख्य रुप से इसके ग्रामीण इलाकों में निवास करने वाली आबादी के मानक पर तथा साथ ही साथ ग्रामीण भर करती है। ग्रामीण महिला उद्यमिता को देश के आर्थिक विकास इलाकों में घटित विकास के स्तर पर नि में बढ़ोत्तरी करने के एक उपकरण के रुप में देखा जा सकता है। वह प्रारंभ में ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए रोजगार अवसर उपलब्ध कराने में तथा बेरोजगारी की समस्या से जूझ रहे लोगों के जीवन-र को ऊँचा उठाने में कारगर साबित हो रही है। महिला उद्यमिता के द्वारास्त महिलाओं की आर्थिक व सामाजिक स्थिति मजबूत करके क्षेत्रीय विकास को बल दिया जा सकता है। भारत में सूक्ष्मलघु एवं मध्यम , त्रों में अपना बहुत अच्छा प्रदर्शन कर उद्यम और क्षेत्रों में महिलाएँ बहुत पुराने समय से संलग्न हैं। वह इन क्षे रही है।

**मूल शब्द:** ग्रामीण महिलाअवसर एवं ,सरकारी योजनाएँ ,आर्थिक विकास ,महिला उद्यमिता की समस्याएं , चुनौतियां।

**प्रस्तावना:**

वीं शताब्दी में 21 महिला उद्यमिता आज के युग की सबसे महत्वपूर्ण एवं क्रांतिकारी घटना है। आत्मनिर्भर एवं अधिकार संपन्न महिला के रूप में बड़ी ,ला एक शिक्षितमहिसंख्या में परिलक्षित हो रही हैं तथा सामाजिकराजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण सहभागिता प्रदान कर रही हैं। एक समय , न दशकों से हुए सामाजिक एवं लेकिन विगत ती ,तक वह घर के चार दिवारी के अंदर बंद हुआ करती थी आर्थिक क्रियाओं तथा राजनीतिक परिवर्तनोंं के फलस्वरूप उद्यमिता के क्षेत्र में महिलाओं का तेजी से आगमन हुआ है। वर्तमान समय में महिला उद्यमी वे महिलाएँ हैंजो अपने व्यक्तिगत जरुरतों को पूरा करने , चुनौतिपूर्ण जीवन स्वीकार करती हुई दिखाई पड़ती हैं। इस एवं आर्थिक रुप से संपन्न बनने के लिए चुनौतिपूर्ण सफ़र का सामना करने के बाद ही एक महिला उद्यमी आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर बनती है। साथ ही वह न केवल खूद को आत्मनिर्भर बनाती हैबल्कि दूसरों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाती हैं। ,

आज भारत को वैश्विक महाशक्ति बनाने में महिला उद्यमी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं , लेकिन अन्य देशों की तुलना में भारत के ग्रामीण क्षेत्रों की महिला उद्यमिता का विकास काफ़ी कम दिखाई देता हैंहिलाएँ वहीं देश के शहरी भागों में महिला उद्यमिता की प्रगति अधिक दिखाई पड़ती हैं। ग्रामीण म ,

परिवार का सृजन करके समाज एवं राष्ट्र का नेतृत्व करती हैं। इसलिए देश के समग्र आर्थिक विकास के लिए महिलाओं का सामाजिक एवं आर्थिक विकास आवश्यक हैं।

**भारत में ग्रामीण उद्यमिता एवं महिला उद्यमिता**

उद्यमी शब्द की उत्पत्ति 'एंट्रेप्रेन्ड्रे' से हुई है वीं शताब्दी का फ्रांसीसी शब्द है जिसका अर्थ है 13 जो , 'कुछ करना' तथा 'शुरू करना' हैं। में 1730'रिचर्ड कैन्टिलन' ने एक व्यावसायिक उद्यम के वित्तीय जोखिम को उठाने की तत्परता को एक उद्यमी की विशिष्ट विशेषता बताई है। वीं शताब्दी के 18'जीन-बैप्टिस्ट' और 'जॉन स्टुअर्ट मिल' ने उद्यमी शब्द को शिक्षा जगत में लाने का कार्य किया है। प्रो .एल .एम . -झिंगल के अनुसार"अर्थशास्त्र में उद्यमी का अर्थ है ऐसा आर्थिक नेता जो नई वस्तुओंनई तकनीकी तथा , खता हो और पूर्ति के नये स्त्रोतों को सफलतापूर्वक संचालन करने के सुअवसर पहचानने की योग्यता र शक्ति को एकत्र-प्रबन्ध और श्रम ,आवश्यक सयंत्र तथा साधनित करने और उन्हें संगठित कर कारोबार चलाने की क्षमता रखता हो।" ग्रामीण उद्यमिता का सीधा अर्थ ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानिक संसाधनोंज्ञान एवं , विकसित करने एवं प्रबंधन करने से हैं। इसका मूल श्रम का उपयोग करके लघु उद्योग शुरू करने तथा उन्हें उद्देश्य स्थानिकस्तर पर रोजगार पैदा करनागरीबी कम करना और शहरी प्रवास को रोकना हैं। इसमें कृषि , जो ,कुटीर उद्योग एवं सेवा क्षेत्र के विभिन्न उद्यम शामिल हैं ,हस्तशिल्प ,तथा कृषि से जुड़े छोटे व्यवसाय विकास को बढ़ावा देते हैं। ग्रामीण उद्यमिता को देश के आर्थिक विका ग्रामीणस में बढ़ोत्तरी करने के एक उपकरण के रुप में देखा जा सकता है। शुरुआत मेंयह ग्रामीण भागों में रहने वाले लोगों के लिए रोजगार , मिका अदा करती हैं।स्तर को उँचा उठाने में महत्वपूर्ण भू-अवसर उपलब्ध कराने एवं उनके जीवन

ग्रामीण महिला उद्यमिता देश के ग्रामीण विकासएवं आर्थिक आत्मनिर्भरता का आधार हैं। ग्रामीण महिलाएं कृषिपशुपालन एवं दुग्ध व्यवसाय जैसे कम जोखिम वाले उद्यमों के ,हस्तशिल्प ,पापड़ ,अचार , वित्तीय बाधाओं एवं विपणन की चुनौतियों का ,लेकिन शिक्षा की कमी ,माध्यम से आत्मनिर्भर बन रही हैं सामना करती हैं। विकसित देशों का इतिहास यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक तथा आर्थिक विकास के लिए किसी भी देश में महिला उद्यमिता की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण होती है। महिला उद्यमिता के संदर्भ में 'नाँरमन लाँग' का मत है -कि ,"महिला उद्यमिता का अर्थ एक ऐसी जटिल प्रक्रिया से हैजिसका उद्द ,ेश्य किसी आर्थिक क्रिया अथवा इकाई का प्रसार करना होता हैअर्थात् भारत में महिला उद्यमिता का अर्थ , जितना कि उत्पादन के साधनों को संगठित करने ,किसी नवाचार का प्रसार करने से उतना अधिक नहीं है से।" संक्षेप में कह सकते हैंकि भारत में महिला उद्यमिता का तात्पर् ,य मुख्यतः किसी नए उद्योग के संचालन तथा उसकी व्यवस्था करने से ही है।

**महिला उद्यमिता के लिए सरकार द्वारा संचालित योजनाये:-**

- **अन्नपूर्णा योजना**

  भारत सरकार द्वारा अन्नपूर्णा योजना को को जयपुर जिले के बमोरी गांव से 2015 अक्टूबर 31 प्रारंभ किया गया। इस योजना के भीतर 'स्टेट बैंक ऑफ मैसूर' द्वारा खाद्य उद्योग में कार्य करने वाली इच्छुक महिलाओं को हजार तक का ऋण उपलब्ध कराया जाता हैं। जिसका भुगतान 50 स्नेक्स ,अन्नपूर्णा योजना में भोजन माह में आसान किस्तों द्वारा कर सकती हैं। 36 महिलाएं अगले

के व्यापार आदि हेतु रसोई के बर्तन एवं उपकरणों को खरीदने के लिए बैंक द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की जाती हैं।

- **सोलर चरखा योजना**

ग्रामीण महिलाओं को रोजगार प्रदान कराने के लिए सरकार द्वारा सोलर चरखा योजना चलाई जा रही है। इस योजना में वर्ष तक देश के प्रत्येक जिले के अंतर्गत एक लाख लोग 2022ोंं को रोजगार से जोड़ने का प्रयास किया गया हैं। इस योजना के तहत काफ़ी महिलाओं को रोजगार मिल रहा हैं।

- **मुद्रा योजना**

भारत सरकार द्वारा इस योजना के अंतर्गत महिलाओं को ब्यूटी पार्लरवं ट्यूशन सेंटर सिलाई केंद्र ए , लाख तक का 10 हजार से लेकर 50 आदि को खोलने के लिए ऋण दिया जाता हैं। इस योजना के तहत ऋण प्रदान करते समय महिलाओं को एक मुद्रा कार्ड भी दिया जाता है। यह मुद्रा कार्ड आपके क्रेडित कार्ड के समान ही कार्य करता है। इस योजना को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया हैं , -जो कि इस प्रकार हैं

  - शिशु ऋण:तक ही सीमित हैं। 50000 इसमें ऋण राशि -
  - किशोर ऋण:लाख रुपए तक ऋण दिया जाता हैं। इसका 5 से लेकर 50000 इसमें - लाभ स्थापित उद्यम वाले लोगों द्वारा उठाया जा सकता है।
  - तरुण ऋण: ।लाख रुपए तक ऋण दिया जाता हैं 10 इसमें -

    इन तीन चरणों के तहत महिला उद्यमी इस योजना का लाभ आसानी से उठा सकती हैं और ऋण लेकर अपना व्यवसाय प्रारंभ करके अन्य लोगों को भी रोजगार के अवसर प्रदान कर सकती हैं।

- **महिला उद्यम निधि स्कीम**

'पंजाब नेशनल बैंक' भी महिला उद्यमियों को र ऋण उपलब्ध वर्ष के लिए रियायती दर प 10 कराता हैं। इस योजना के तहत महिलाएं ब्यूटी पार्लर खोलनेऑटो रिक्शा तथा दुपहिया वाहन , लाख तक की राशी दी जा सकती हैं। 10 खरीदने के लिए

- **सेंट कल्याणी स्कीम**

'सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया' द्वारा महिला उद्यमियों के लिए अपने उद्यम के विस्तारीकरण एवं पुनरुत्थान हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जाती हैं। इस योजना के अंतर्गत ग्रामीण एवं कुटीर उद्योगोंखुदरा व्यापार हेतु ,कृषि एवं संबध्द कार्यों ,स्वरोजगार में संलग्न महिलाओं ,लघु लद्योगों , ऋण उपलब्ध कराया महिला उद्यमियों को बिना किसी सुरक्षा गारंटी के उद्योग लगाने हेतु बैंक द्वारा जाता हैं।

- **स्त्री शक्ति योजना उद्योग**

इसमें तो ऐसे उद्योगों को ,प्रतिशत से अधिक महिलाओं की भागीदारी एवं मालिकाना हक हो 50 'भारतीय स्टेट बैंक'लाख से 2 द्वारा ऋण प्रदान किया जाता हैं। इस योजना के तहत (एसबीआई) त की छूट दी जाती हैं।प्रतिश 0.5 अधिक ऋण पर ब्याज दर में

- **सिंडिकेट बैंक महिला शक्ति योजना**

'सिंडिकेट बैंक' महिला उद्यमी के लिए साल की अवधि पर ऋण देता हैं। हालांकि यह बैंक भी 10 प्रतिशत से अधिक मालिकाना हक वाले उद्यमी को ही ऋण देता हैं। इस योजना 50 किसी उद्यम में को समर्थन देना एवं प्रगतिशील बनाना हैं। का मूल उद्देश्य महिला उद्यमियों

- **उद्योगिनी स्कीम**

साल तक की महिला उद्यमियों को 45 से 18'पंजाब एंड सिंध बैंक' द्वारा आसान किस्तों और रियायती ब्याज दर पर लाख तक का ऋण उपलब्ध कराया जाता हैं। साथ ही इसमें पारिवारिक 1 हजार तक का ऋण 45 नजाति की महिलाओं कोआय की स्थिति के अनुसार अनुसूचित ज उपलब्ध कराने का प्रावधान हैं।

- **देना शक्ति योजना**

जो महिला उद्यमी कृषिखुदरा स्टोर तथा सूक्ष्म उद्यमों के क्षेत्र में अपना व्यवसाय ,ऋण-सूक्ष्म , ना शक्ति योजना साथ ही जिन्हें वित्तीय सहायता की आवश्यकता होती हैं उन्हें दे ,बढ़ाना चाहती हैं ज ,दी जाती हैं 2000000 के तहत ऋण राशि◌ि◌स पर ब्याज दर 0.25% होता हैं। इस राशि को महिला उद्यमी बैंक को किस्तों के मासिक भुगतान के द्वारा बड़ी ही आसानी से चुका सकता हैं।

- **प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम**

प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम अंतर्गत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महिलाओं के लिए 5000 अतिरिक्त नौकरियां सृजित की हैं। इस योजना के तहत खादी और ग्रामोद्योग आयोग द्वारा महिलाओं को आधुनिक चरखा चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता हैं तथा उन्हें ऋण उपलब्ध करा कर स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया जाता हैं। इस कार्यक्रम द्वारा महिलाएं अपने घर पर ही काम करके रू प्रति दिन कमा सकती हैं। नीति आयोग द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार के साथ 200 (2017) वें वार्षिक वैश्विक उद्यमिता शिखर सम्मेलन8 संयुक्त रूप से हैदराबाद शहर में आयोजित ला उद्यमियों को बढ़ावा एवं समर्थन देने के लिए महिलामें प्रतिष्ठित और आकांक्षी महिउद्यम मंच की स्थापना के विचार ने आकार लिया हैं। इस मंच का प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर को औपचारिक रूप से शुभारंभ किया गया 2018 मार्च 8 ए अपनी तरह का पहला सुविधा मंच है जिसे सार्वजनिक एवंहै। यह महिलाओं के लिनिजी क्षेत्र के विभिन्न संगठनों के साथ मिलकर काम करने और डब्ल्यूईपी वेबसाइट पर उनकी महिलाओं पर केंद्रित उद्यमिताकार्यक्रमों एवं पहलों को सूचीबध्द करके उन्हें एक मंच पर लाने के ,योजनाओं , का महत्वपूर्ण कार्य किया गया हैं। डब्ल्यूईपी अपने स लिए अधिदेशित करनेहयोगियों के माध्यम से विभिन्न सहायता क्षेत्रों के तहत सदस्यों को सेवाएं देने की पेशकश करता है:-

- उद्यमिता कौशल
- प्रोत्साहन एवं त्वरण
- विपणन सहायता
- अनुपालन सहायता
- वित्त पोषण और वित्तीय सहायता
- सामाजिक उद्यमिता

**ग्रामीण महिला उद्यमियों की चुनौतियाँ**

पिछले कुछ दशकों में देश में नए छोटेअप की संख्या में वृध्दि होने के -मोटे व्यवसायों एवं स्टार्ट-कारण भारतीय अर्थव्यवस्था ने स्थिर वृध्दि की हैं। इसमें से बहुसंख्यक व्यवसायों की स्थापना पुरुषों द्वारा उद्यमिता को लेकर भारतीय महिलाओं के पा ,की गई हैं। हालाँकिस अनेक महत्वकांक्षाएँ मौजूद हैं। उनको अपना व्यवसाय उभारने एवं बनाये रखने के लिए निम्नलिखित चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैं -

**शिक्षा की कमी**

शिक्षा सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए काफ़ी महत्वपूर्ण होती है ,जागरुकता ,जो स्वास्थ , परिवार का कल्याण एवं सशक्तिकरण में सुधार लाती हैं। हालाँकि गरीबीसुरक्षा और पुरानी रुढ़ियों के , 50 कारण देश में महिला साक्षरता दर काफ़ी कम देखने को मिलता है। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग% से अधिक महिलाएं निरक्षर हैं। इसलिए महिलाओं को अपने उद्यम में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं।

**कच्ची सामग्री की कमी**

रस्ते ,उद्यम के लिए कच्चे माल की उपलब्धता एक अनिवार्य घटक है। ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात एवं रेल का अभाव होने के कारण ग्रामीण महिला उद्यमियों को कच्चे माल की उपलब्धता करना बहुत ता हैं। महिला उद्यमियों के लिए कच्चे ममुश्किल होाल की कमी एक गंभीर चुनौती हैजो उत्पादन को , रोक सकती है और लागत को बढ़ा सकती है।

**वित्त की समस्या**

किसी भी कार्य को सफल बनाने के लिए वित्त का होना आवश्यक होता है। बिना वित्त के हम कोई भी कार्य नहीं कर सकते हैं। समाज में पुरुषों को अपने व्यवसाय के लिए विभिन्न बैंक एवं वित्तीय संस्था द्वारा वित्त के कई स्त्रोत प्राप्त हो जाते हैंलेकिन महिलाओं के लिए ऐसा नहीं होता है। उन्हें अपने व्यवसाय , था महिला में सफल होने की अशंका के कारण निवेशक इनके उद्यम में निवेश करने में संकोच करते हैं त और पुरुषों में भेदभाव कारवैया अपनाते हैं। इसलिए महिला उद्यमी को वित्त प्राप्त करने के लिए कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता हैं।

**योग्यता का अभाव**

महिला उद्यमियों के सामने योग्यता का अभाव एक बड़ी बाधा एवं चिंता का विषय हैं। शिक्षा एवं कौशल के अभाव के कारण महिलाएं नए विचारों को लागू करने में असमर्थ हो जाती हैंजिससे वे रूढ़िवादी , वितरण और वित्तीय प्रबंधन की कमी एवं समझ न होने के ,तरीके से काम करती हैं। इसके अलावा विपणन द्यम छोटे स्तर कारण महिला उद्यमियों को बिचौलियों पर निर्भर रहना पड़ता हैं। इसलिए अधिकांश महिला उ पर ही सीमित हो जाते हैं।

**पुरुष प्रधान समाज**

भारतीय संविधान ने स्त्री और पुरुष को समान अधिकार दिए हैंलेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में इसके , विपरित देखने को मिलता है। महिलाओं को पुरुषों के समान नहीं माना जाता है। उन्हें केवल घरेलु स्त रखा जाता हैं। किसी ग्रामीण महिकामकाजों में व्यला को व्यवसाय करने की इच्छा प्रकट होती हैतो उसे , कहीं पुरुष -न-अपने परिवार के मुखिया की अनुमति एवं मंजुरी लेनी पड़ती है। इस प्रकार देखा जाए तो कहीं ।प्रधान समाज ग्रामीण महिला उद्यमी के लिए बाधा निर्माण करता हुआ दिखाई देता है

**जानकारी का अभाव**

ग्रामीण एवं शहरी महिला उद्यमियों को सरकार द्वारा विशिष्ट योजनाएँविभिन्न बैंकों द्वारा ऋण एवं , लेकिन कई महिला उद्यमी को सबंधित योजनाओं के बारे में जानकारी न होने के कारण ,सब्सिड़ी दी जाती हैं चौलियों से ऋण लेकर फ़ंस जाती हैं।वंचित रह जाती हैं। इसलिए वह साहूकारों एवं बि कुछ महिला उद्यमी को मार्केटिंग की सही जानकारी नहीं होती हैं। वह अपना उत्पाद तो बना लेती हैलेकिन उसको सही दामों , पर नहीं बेच पाती हैं।

**निष्कर्ष**

न स्थापित कि भारतीय महिला उद्यमी ने समाज में अपना एक विशिष्ट स्था ,निष्कर्षतः कह सकते हैं किया है। वह अपने व्यवसाय को न सिर्फ समृध्द कर रही हैबल्कि दूसरों को रोजगार देकर सराहनीय कार्य , कर रही है। भारत सरकार द्वारा महिला उद्यमी को विकसित करने के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएं एवं पर केंद्रित हैं। महिला उद्यमी को जो सिर्फ महिला उद्यमी ,कार्यक्रमों का आयोजन कर रही हैअपने व्यवसाय संचालन में वित्तविपणन एवं पारिवारिक समस्याओं जैसी अनेक समस्याओं का सामना करना ,स्वास्थ्य , पड़ता है। भारत में महिला उद्यमियों को विभिन्न सरकारी संस्थाओं एवं बैंकों द्वारा व्यापक स्तर पर रियायती ण की सुविधाएँ प्रदान की जा रही है।ब्याज दरों पर ऋ इसी के परिणाम स्वरुप आज महिला उद्यमिता की संख्या तेजी से बढ़ रही है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**


1. एम ,दिल्ली ,लि .कोणार्क पब्लिशर्स प्रा ,विकास का अर्थशास्त्र एवं आयोजन ,झिंगल .एल . 308.पृ ,1988
2. Norman Long, Introducation of the Sociology of Rural Devlopment, Pg.128
3. अविनाश2017 ,नई दिल्ली ,पब्लिकेशन.ई.जी.ए.एस ,महिला उद्यमी ,कृपाल .
4. किरणनई ,पब्लिकेशन.ई.जी.ए.एस ,ग्रामीण महिला सशक्तीकरण ,कोरेथ .बड़ेहरा एवं ज़ॉर्ज . 2017 ,दिल्ली
5. डॉ2010 ,मुंबई ,उसहिमालया पब्लिशिंग हा ,भारत में उद्यमिता विकास ,माथुर.पी.एस.
6. डॉ2016,नई दिल्ली ,रमेश बुक्स डिपो जयपुर ,उद्यमिता विकास ,कोठारी .मिलिंद .
7. www.google.com

# सामाजिकमहिला उद्यमियों के अनुभवों : सांस्कृतिक बाधाएँ और उनके समाधान- का संशोधन पर अध्ययन

**शोध निर्देशक**
प्रा ,नळे भाऊसाहेब राजेंद्र .डॉ .
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग ,
सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय,
ता,माजलगाव . जि.बीड .

**शोध छात्रा**
मंगल रामदास नेहरकर
हिंदी विभाग
Email - mangalneharkar9@gmail. Com
**Mo.** 8459740448

## भूमिका

भारतीय समाज की सामाजिक संरचना ऐतिहासिक रूप से पुरुषप्रधान रही है, जहाँ स्त्री की भूमिका मुख्यतः घरेलू दायित्वों तक सीमित मानी जाती रही है। आर्थिक गतिविधियों, विशेषतः उद्यमिता के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी लंबे समय तक गौण रही। किंतु इक्कीसवीं सदी में शिक्षा, वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और नीतिगत पहलों के परिणामस्वरूप महिला उद्यमिता एक सशक्त सामाजिकआर्थिक आंदोलन - के रूप में उभर रही है। इसके बावजूद यह तथ्य नकारा नहीं जा सकता कि महिला उद्यमियों को आज भी सांस्कृतिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है-अनेक सामाजिक, जो उनके उद्यमशील विकास की गति को धीमा करती हैं। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य मह-िला उद्यमियों के अनुभवों के आलोक में उन सामाजिकसांस्कृतिक बाधाओं का गहन विश्लेषण करना तथा उनके व्यावहारिक और संरचनात्मक - समाधानों की खोज करना है।

## भारतीय समाज में नारी

भारतीय समाज में नारी की पहचान पारंपरिक रूप से त्याग, सेवा और सहनशीलता से जोड़कर देखी जाती रही है। सामाजिक संस्कारों के माध्यम से बाल्यावस्था से ही लड़कियों को यह सिखाया जाता है कि उनका प्रमुख दायित्व परिवार और घर की देखभाल है। ऐसे सामाजिक परिवेश में जब कोई महिला उद्यम स्थापित करने का निर्णय लेती है, तो वह केवल एक आर्थिक गतिविधि आरंभ नहीं करती, बल्कि वह सामाजिक मान्यताओं और सांस्कृतिक रूढ़ियों को भी चुनौती देती है। महिला उद्यमियों के अनुभव इस तथ्य को उजागर करते हैं कि उद्यमिता की राह उनके लिए आत्मनिर्भरता का मार्ग होने के साथसाथ सामाजिक - न जाती है। महिला उद्यमिता की अवधासंघर्ष का मार्ग भी बरणा को यदि व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए, तो यह केवल स्वरोजगार या व्यवसाय तक सीमित नहीं है। यह महिला सशक्तिकरण, सामाजिक न्याय और लैंगिक समानता से गहराई से जुड़ी हुई प्रक्रिया है। महिला उद्यमिता के माध्यम से महिलाएँ न केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती हैं, बल्कि सामाजिक निर्णयप्रक्रिया में भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित करती हैं। - के रूप में 'अपवाद' इसके बावजूद महिला उद्यमियों के अनुभव बताते हैं कि समाज उन्हें अभी भी एक देखता है, न कि एक सामान्य सामाजिक भूमिका के रूप में।

## महिला उद्यमियों की विविध बाधाए

महिला उद्यमियों के समक्ष उपस्थित सबसे प्रमुख सामाजिकसांस्कृतिक बाधा पितृसत्तात्मक सोच है। - पितृसत्ता केवल एक सामाजिक संरचना नहीं, बल्कि एक मानसिकता है, जो पुरुष को स्वाभाविक

नेतृत्वकर्ता और महिला को आश्रित मानती है। अनेक महिला उद्यमियों ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया है कि जब उन्होंने व्यवसाय आरंभ करने की इच्छा व्यक्त की, तो परिवार और समाज ने उनके निर्णय पर संदेह किया। उन्हें यह सुनने को मिला कि व्यवसाय है 'पुरुषों का काम', महिलाएँ इसे संभाल नहीं सकतीं, या इससे पारिवारिक संतुलन बिगड़ जाएगा। यह मानसिकता महिलाओं के आत्मविश्वास को कमजोर करती है और उनके निर्णयनिर्माण की क्षमता को प्रभावित करती है। पारिवारिक दायित्व भी - महिला उद्यमियों के लिए एक गंभीर सामाजिक बाधा के रूप में सामने आते हैं। भारतीय समाज में घरेलू खभाल संबंधी जिम्मेदारियों का असमकार्यों और देान विभाजन आज भी विद्यमान है। महिला उद्यमियों के अनुभव बताते हैं कि व्यवसाय के साथसाथ उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे घर-, बच्चों और बुजुर्गों की संपूर्ण जिम्मेदारी भी निभाएँ। इस अभाव-के कारण महिलाओं को समय 'दोहरी भूमिका', मानसिक तनाव और शारीरिक थकान का सामना करना पड़ता है, जिसका सीधा प्रभाव उनके उद्यम की प्रगति पर पड़ता है। सामाजिक स्वीकृति की कमी भी महिला उद्यमिता के मार्ग में एक महत्वपूर्ण बाधा है। विशेषकर ग्रामीण और अर्धपार करना सामाजिक दृष्टि से संदेशहरी क्षेत्रों में महिलाओं का घर से बाहर निकलकर व्या-हास्पद माना जाता है। कई महिला उद्यमियों ने अपने अनुभवों में यह उल्लेख किया है कि उन्हें अपने ही समुदाय में आलोचना, अफवाहों और चरित्र पर प्रश्नचिह्न जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा। सामाजिक दबाव के कारण कई महिलाएँ अपने व्यवसाय को सीमित स्तर तक ही संचालित करती हैं या उसे पूर्णतः छोड़ने पर विवश हो जाती हैं। शिक्षा और प्रशिक्षण की असमानता भी सामाजिकसांस्कृतिक बाधाओं का एक - महत्वपूर्ण आयाम है। यद्यपि शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है, फिर भी व्यवसाय, वित्तीय प्रबंधन, तकनीकी ज्ञान और विपणन से संबंधित प्रशिक्षण तक महिलाओं की पहुँच सीमित है। अनेक महिला उद्यमियों के अनुभव यह दर्शाते हैं कि उन्हें उद्यम आरंभ करते समय उचित मार्गदर्शन और परामर्श का अभाव महसूस हुआ। सामाजिक मान्यताओं के कारण महिलाओं को जोखिम उठाने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता, जिससे उनका नवाचार और उद्यमशीलता सीमित रह जाती है। इसी के साथ मानसिक और मनोवैज्ञानिक बाधाएँ भी महिला उद्यमियों के अनुभवों में प्रमुखता से उभरकर सामने आती हैं। सामाजिक संस्कार महिलाओं में आत्मसंशय, असफलता का भय और निर्णयन्म देते हैं। कई हीनता को ज- महिला उद्यमियों ने स्वीकार किया है कि वे सामाजिक आलोचना और पारिवारिक असहमति के भय से बड़े निर्णय लेने से कतराती रहीं। यह मानसिक अवरोध उनके व्यवसाय के विस्तार और स्थायित्व में बाधक बनता है।

इन सामाजिकव्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहत सांस्कृतिक बाधाओं का प्रभाव केवल-ा, बल्कि इसका व्यापक सामाजिक और आर्थिक प्रभाव भी पड़ता है। महिला उद्यमिता की धीमी प्रगति से रोजगार सृजन की संभावनाएँ सीमित होती हैं और समाज आर्थिक विकास के एक महत्वपूर्ण संसाधन से वंचित रह जाता है। इसके अतिरिक्त, जब महिलाएँ उद्यमिता के क्षेत्र में सफल नहीं हो पातीं, तो लैंगिक असमानता की खाई और गहरी हो जाती है।

**उद्यमिता की बाधाओ के समाधान**

इन बाधाओं के समाधान हेतु बहुआयामी प्रयासों की आवश्यकता है। सर्वप्रथम सामाजिक सोच में परिवर्तन अनिवार्य है। महिला उद्यमिता को अपवाद के रूप में नहीं, बल्कि समाज की सामान्य और

आवश्यक भूमिका के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। इसके लिए शिक्षाप्रणाली में लैंगिक समानता-, आत्मनिर्भरता और उद्यमशीलता से जुड़े मूल्यों को समाहित करना आवश्यक है। मीडिया की भूमिका भी इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि मीडिया में सफल महिला उद्यमियों के सकारात्मक और प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किए जाएँ, तो सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन संभव है। पारिवारिक सहयोग महिला उद्यमियों की सफलता का एक निर्णायक तत्व है। महिला उद्यमियों के अनुभव स्पष्ट रूप से यह संकेत देते हैं कि जहाँ परिवार का सहयोग प्राप्त होता है, वहाँ महिलाएँ अधिक आत्मविश्वास के साथ अपने उद्यम का संचालन कर पाती हैं। घरेलू कार्यों में समान भागीदारी, बच्चों की देखभाल में सहयोग और महिलाओं के निर्णयों का सम्मान, उद्यमिता को सशक्त बना सकता है। प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के क्षेत्र में विशेष प्रयास आवश्यक हैं। महिलाओं के लिए उद्यमिता विकास कार्यक्रम, वित्तीय साक्षरता, डिजिटल कौशल और नेतृत्व प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए। ये कार्यक्रम केवल तकनीकी ज्ञान तक सीमित न होकर महिलाओं के मानसिक सशक्तिकरण पर भी केंद्रित होने चाहिए, ताकि वे जोखिम उठाने और नवाचार के लिए प्रेरित हों।

नीतिगत और संस्थागत समर्थन भी महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। सरकारी योजनाओं को केवल कागज़ी स्तर पर नहीं, बल्कि जमीनी स्तर पर प्रभावी रूप से लागू किया जाना चाहिए। महिलाकेन्द्रित ऋण- व्यवस्था, परामर्श केंद्र, सहकारी नेटवर्क और बाज़ार तक पहुँच को सुलभ बनाना आवश्यक है। इसी के साथ मानसिक सशक्तिकरण महिला उद्यमिता का एक अनिवार्य पहलू है। महिला उद्यमियों के अनुभव यह दर्शाते हैं कि आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और निर्णयक्षमता के - विकास से वेसामाजिकसांस्कृतिक बाधाओं का अधिक प्रभावी ढंग से सामना कर सकती हैं। इसके लिए - परामर्श, प्रेरणात्मक कार्यक्रम और महिला उद्यमियों के आपसी नेटवर्क अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

## निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि महिला उद्यमिता के मार्ग में सामाजिकसां-स्कृतिक बाधाएँ आज भी एक जटिल और बहुआयामी चुनौती बनी हुई हैं। महिला उद्यमियों के अनुभव इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं कि समस्या केवल आर्थिक संसाधनों की नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना और मानसिकता की भी है। यदि समाज, परिवार, शिक्षाणाली और नीतिगत ढाँचा मिलकर सकाराप्र-त्मक परिवर्तन की दिशा में कार्य करें, तो महिला उद्यमिता न केवल महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाएगी, बल्कि समग्र सामाजिक और आर्थिक विकास को भी नई दिशा प्रदान करेगी। महिला उद्यमिता का सशक्तिकरण वास्तव में एक समतामूलक और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

## संदर्भ सूची

१शर्मा (, मीनारावत पब्लिकेशन्स। : नई दिल्ली .सामाजिक परिप्रेक्ष्य : नारी सशक्तिकरण .

२बोस (, सुनीताराजकमल प्रकाशन। : नई दिल्ली .भारत में महिला उद्यमिता .

३सेन (, अमर्त्य ऑक्सफोर्ड : नई दिल्ली .ताविकास के रूप में स्वतंत्र .यूनिवर्सिटी प्रेस।

४एमएसएमई मंत्रालय। : नई दिल्ली .महिला उद्यमिता विकास रिपोर्ट .भारत सरकार (

५नायक (, रेखा“ .महिला उद्यमिता और सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ ”.भारतीय समाजशास्त्र पत्रिका, अंक 15।

६ (Deshpande, S. Women Entrepreneurship in India. New Delhi : Sage Publications.

७ (Singh, A. “Socio-Cultural Constraints of Women Entrepreneurs in India.” Journal of Social

Research.

# महिला सशक्तिकरण : सरकारी योजनाओं की भूमिका

शोधछात्रा
**प्राजक्ता नानासाहेब देशमुख**
बलभीम महाविद्यालय बीड ,

शोधनिर्देशक
**प्रो.डॉ.ललिता राठोड**
बलभीम महाविद्यालयबीड ,

➢ **शोध आलेख सार-**

महिलाओं को आत्मनिर्भर और आर्थिक स्वतंत्रता के लिए महिला सशक्तिकरण तथा आर्थिक सशक्तिकरण आवश्यक है। सशक्तिकरण का आशय केवल शक्ति का अधिग्रहण नहीं है बल्कि कानून तथा नीति निर्माण की प्रक्रिया की क्रियान्विति में सहभागितानियंत्रण , शक्ति का परिवर्तनशील कार्यों तथा जागरूकता निर्माण की एक प्रक्रिया है। भारत जैसे विकसनसशील देशों में, महिलाएँ लंबे समय से सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाओं का सामना कर रही हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने, आय के स्रोत बढ़ाने तथा सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी को बढ़ावा देने में स्वरोजगार समूहों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सरकार, बैंक स्टार्टअप इंडिया, महिला उद्यमियों के लिए मुद्रा योजना, अन्नपूर्णा योजना, स्त्री शक्ति पैकेज, व्यवसाय ऋण तथा महिला उद्यमी निधि योजना आदि जैसे उपक्रमों के माध्यम से युवाओं, महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान कर रही है।

➢ **बीज शब्द-** महिला सशक्तिकरण, महिला उद्यमी, स्त्री शक्ति, सरकारी योजनाएँ, ऋण, आधुनिकीकरण, आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, आर्थिक विकास, ब्याज दर।

➢ **शोधालेख विश्लेषण-**

सशक्तिकरण एक बहुआयामी अवधारणा है जो व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र तथा कार्यों में पूर्ण अस्मिता तथा शक्तियों को प्राप्त करने योग्य बनाता है। प्रारंभिक काल में भारतीय समाज में स्त्रियों को समान अधिकार प्राप्त थे। वैदिक काल और उत्तर वैदिक काल के पश्चात समाज की मौलिक अवस्थाओं का स्थान रूढ़ियों ने ले लिया, जिसका परिणाम समाज में स्त्रियों का अधिकार तथा सम्मान कम हो गया। पुरुष प्रधान समाज स्त्रियों के अधिकारों का हनन करता गया तथा कर्म सांस्कृतिक मूल्यों तथा परंपराओं के नाम पर शोषण करते हैं, जिसका परिणाम स्त्री की स्थिति दिन-ब-दिन दयनीय बन गयी। "देश की लगभग आधी आबादी महिलाएँ हैं, लेकिन आज भी बड़ी संख्या में महिलाएँ बेरोजगार है और आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भर है। परिवार, समाज और राष्ट्र के बेहतर भविष्य के लिए महिलाओं का सशक्तिकरण बेहद आवश्यक है। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना आर्थिक रूप से मजबूत करना, आत्मसम्मान और आत्मविश्वास बढ़ाना तथा सामाजिक राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना, यह सभी पहलू महिला सशक्तिकरण का हिस्सा माने जाते हैं।"[1] राष्ट्र का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विकास शासन की गुणवत्ता एवं महिलाओं की सक्षमता दोनों पर निर्भर करता है। महिला उद्यमियों की बढ़ती भागीदारी से महत्वपूर्ण आर्थिक विकास हुआ है। भारत सरकार महिला उद्यमियों को विभिन्न योजनाओं द्वारा वित्तीय सहायता कर रही है। "'सशक्तिकरण महिलाओं की पारंपरिक भूमिका में एक मौलिक परिवर्तन है और सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उनकी भागीदारी में वृद्धि है।"[2]

परंपरागत सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं के साथ व्यवहार और उनकी स्थिति में गुणात्मक सुधार हुआ है तथा उन्हें सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों और समूहों में शामिल किया जा रहा है।

➢ **महिलाओं के लिए सरकारी योजनाएँ-**

महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित करने तथा उनका आर्थिक विकास सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार ने शुरू की गयी प्रमुख योजनाएँ इस प्रकार है -

1) **मुद्रा योजना**- मुद्रा योजना (PMMY) एक शासकीय परियोजना 8 **अप्रैल** 2015 को शुरू हुईजो, "महिला उद्यमियों को नवनिर्माण, व्यापार और सेवा क्षेत्रों में छोटा व्यवसाय (बुटीक, ब्यूटी पार्लर, ट्यूशन सेंटर, सिलाई, छोटा उद्योग आदि) शुरू करने या बढ़ाने के लिए को बिना किसी गारंटी के ₹50,000 से ₹10 लाख तक का लोन प्रदान करती है।"[3] यह योजना महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कम ब्याज दरों पर ऋण देती है। Udyami Mitra पोर्टल या किसी भी बैंक, एनबीएफसी, या एमएफआई के माध्यम से आवेदन किया जा सकता है।

2) **स्टैंड-अप इंडिया योजना**- भारत सरकार की यह योजना 5 अप्रैल 2016 को महिलाओं, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों के बीच उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए की गई थी। "महिला उद्यमियों को ग्रीनफील्ड उद्यम (विनिर्माण, सेवा, या व्यापार क्षेत्र में पहली बार उद्यम) स्थापित करने के लिए ₹10 लाख से ₹1 करोड़ तक का बैंक ऋण प्रदान करना है।"[4] यह योजना प्रत्येक बैंक शाखा से कम से कम 18 वर्ष से अधिक उम्र के SC, ST या महिला उद्यमी को ऋण सुनिश्चित करती है, जिसका ब्याज दर सबसे कम दर होता है। पुनर्भुगतान 18 महीने की मोरेटोरियम अवधि के साथ अधिकतम 7 वर्षों में करना आवश्यक है। Stand-Up India पोर्टल (standupmitra.in) के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है। यह योजना गैर-वैयक्तिक उद्यमों के मामले में, आयोजक के रूप में 51% शेयरधारिता प्रदान करती है।

3) **अन्नपूर्णा योजना**- "अन्नपूर्णा योजना मुख्य रूप से खाद्य-आधारित व्यवसायों (जैसे खान-पान, टिफिन सेवा, कैटरिंग) को शुरू या विस्तार करने के लिए ₹50,000 तक का ऋण प्रदान करती है। 1 अप्रैल 2000 को प्रारंभ हुई यह योजना भारतीय स्टेट बैंक (SBI) (और अन्य बैंक) द्वारा पेश की जाती है, जिसके तहत बहुत कम ब्याज दर पर 36 महीनों (3 वर्ष) में ऋण चुकाने की सुविधा मिलती है।"[5] इस योजना के लिए केवल भारतीय महिला उद्यमी ही इसके लिए पात्र हैं। इच्छुक महिलाएँ अपने नजदीकी भारतीय स्टेट बैंक (SBI) शाखा में जाकर या इसके वेबसाइट के माध्यम से सीधे आवेदन कर सकती हैं।

4) **स्त्री शक्ति योजना**- "स्त्री शक्ति पैकेज महिलाओं के लिए अक्टूबर 2000 में शुरू की गई एक अनोखी सरकारी योजना है। कुछ रियायतें देकर उद्यमिता का समर्थन करती है। यह महिला लोन योजना उन महिलाओं के लिए पात्र है, जिनके पास व्यवसाय में अधिकांश स्वामित्व है तथा इन महिला उद्यमियों को उनकी संबंधित राज्य एजेंसियों द्वारा आयोजित उद्यमिता विकास कार्यक्रम के तहत नामांकित किया जाना चाहिए। महिलाओं को ₹2 लाख से अधिक के लोन पर 0.05% की ब्याज रियायत का लाभ मिलता है।

5) **देना शक्ति योजना**- देना शक्ति योजना कृषि, विनिर्माण, माइक्रो-क्रेडिट, रिटेल स्टोर या छोटे उद्यमों में महिलाओं को ₹20 लाख तक का लोन मिलता हैं तथा इंटरेस्ट रेट पर 0.25% की रियायत भी प्रदान करती है। महिला उद्यमी माइक्रो क्रेडिट श्रेणी के तहत ₹50,000 तक के लोन का लाभ उठा सकती हैं।

6) **महिला उद्यम निधि योजना**- सबसे लोकप्रिय सरकारी योजनाओं में से एक, महिला उद्यम निधि योजना, पंजाब नेशनल बैंक और भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) द्वारा पेश की जाती है। महिला उद्यमियों को 10 वर्षों में चुकाने के लिए ₹10 लाख तक का लोन देकर एक नया लघु उद्यम स्थापित करने में सहायता करती है। ब्याज दर शुल्क बाजार दरों पर निर्भर करता है।

7) **ओरिएंट महिला विकास योजना**- ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स ने यह योजना शुरू की, जिसमें व्यक्तिगत रूप से या किसी मालिकाना संस्था में संयुक्त रूप से 51 प्रतिशत शेयर पूँजी की स्वामित्व वाली महिलाएँ ओरिएंट महिला विकास योजना के माध्यम से लोन का लाभ उठा सकती हैं। ₹ 10 लाख से ₹ 25 लाख के बीच के लोन के लिए गारंटी की आवश्यकता होती है। लोन 2 प्रतिशत ब्याज दर पर 7 साल का पुनर्भुगतान है।

8) **सेंट कल्याणी स्कीम**- इस योजना का लाभ मौजूदा और नए उद्यमी तथा स्व-नियोजित महिलाएँ दोनों उठा सकती हैं। कृषि, कुटीर उद्योग और खुदरा व्यापार जैसे सूक्ष्म/लघु उद्यम सभी आवेदन करने के पात्र हैं। इसके लिए किसी गारंटर की आवश्यकता नहीं होती। लोन का ब्याज दर बाज़ार की दरों पर निर्भर करता है तथा पुनर्भुगतान कार्यकाल 7 साल का होता है।

9) **उद्योगिनी योजना**- महिला विकास निगम ने भारत सरकार के तहत उद्योगिनी योजना लागू की है। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में रहने वाली अनपढ़ महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करके उद्यमिता को बढ़ावा देती है तथा प्रेरित करती है।"[6]

10) **प्रधानमंत्री रोजगार योजना**- "देश के शिक्षित युवाओं को स्व-रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए 1993 में शुरू की गई यह योजना युवाओं को अपनी व्यक्तिगत व्यावसायिक परियोजना शुरू करने और बाद में दूसरों के लिए रोजगार की गुंजाइश पैदा करने के लिए एक लोन राशि प्रदान करती है। विनिर्माण, व्यापार, सेवाएँ आदि उद्योगों के लिए बिना कोई गारंटी के ₹1 लाख तक के लोन मिलता हैं। पुनर्भुगतान कार्यकाल 3 से 7 साल तक का होता है।"[7]

सरकारी योजना का उद्देश्य महिलाओं की आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है, ताकि व्यवसाय के विस्तार के साथ-साथ उसका आधुनिकीकरण भी कर सकते हैं। यह योजनाएँ न केवल वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देते हैं, बल्कि महिलाओं को नेतृत्व और सामुदायिक विकास में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर भी प्रदान करते हैं। महिला उद्यमियों के लिए सरकारी योजनाओं के मुख्य लाभ:

- **आसान और किफायती ऋण का प्रबंध**- विभिन्न योजनाओं के तहत, महिला उद्यमी कम ब्याज दरों पर व्यवसाय शुरू करने या बढ़ाने के लिए ऋण प्राप्त कर सकती हैं।

- **सुरक्षित ऋण**- कई सरकारी योजनाएँ (जैसे स्त्री शक्ति पैकेज, मुद्रा) बिना किसी सुरक्षा या गिरवी के 5 लाख से 10 लाख रुपये तक का लोन प्रदान करती हैं।
- **कम ब्याज दरें**- बैंक महिला उद्यमियों को ऋण पर रियायती ब्याज दरें प्रदान करते हैं।
- **अनुदान और वित्तीय सहायता**- महिला कॉयर योजना जैसी योजनाओं में मशीनरी की लागत पर 75% तक अनुदान मिलता है। वहीं, महिला उद्यम निधि के तहत 10 लाख रुपये तक के आसान ऋण उपलब्ध हैं।
- **तकनीकि और कौशल प्रशिक्षण**- सरकारी योजनाएँ व्यवसाय के लिए तकनीकी सहायता, कौशल विकास कार्यक्रम, और प्रशिक्षण प्रदान करती हैं।
- **सरलीकृत प्रक्रिया**- ये योजनाएँ महिलाओं को बिना अधिक कागजी कार्रवाई के ऋण प्राप्त करने में मदद करती हैं, जिससे उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने में प्रोत्साहन मिलता है।

महिला उद्यमियों को व्यवसाय शुरू करने से उनकी आत्मविश्वास में बढ़ोतरी हो रही है। विश्व बैंक की रिपोर्ट यह बताती है कि अगर 50 प्रतिशत महिला आबादी कार्यबल में शामिल हो जाती है, तो भारत का सकल घरेलू उत्पाद प्रति वर्ष 1.5 प्रतिशत अंकों से बढ़कर 9 प्रतिशत हो सकता है। लेकिन उसे बढ़ाने में अक्सर बाधाएँ तथा चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैं। प्रमुख रूप से जो बाधाएँ आती है वह इस प्रकार हैं-

- **वित्तीय संकट और ऋण में कमी**- महिला उद्यमियों को बैंकों से ऋण प्राप्त करने में अक्सर मुश्किल होती है, क्योंकि उनके पास संपत्ति या जमानत के रूप में गिरवी रखने के लिए संपत्ति की कमी होती है।
- **पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियॉं**- घर और व्यवसाय के बीच संतुलन बनाना सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। समाज महिलाओं से घर संभालने की उम्मीद करता है, जिससे व्यवसाय के लिए कम समय बचता है।
- **सामाजिक और लैंगिक रूढ़ियां**- पितृसत्तात्मक मानसिकता के कारण, महिलाओं के नेतृत्व क्षमता पर संदेह किया जाता है, जिससे उन्हें पुरुष प्रतिस्पर्धियों की तुलना में अधिक संघर्ष करना पड़ता है।
- **प्रशिक्षण और जानकारी की कमी**- व्यवसाय प्रबंधन, तकनीकी ज्ञान, कानूनी जानकारी और नेटवर्क की कमी के कारण महिलाएँ अपने उद्यम को कुशलतापूर्वक चलाने में असमर्थ होती हैं।
- **सुरक्षा और विपणन संबंधी मुद्दे**- पुरुषप्रधान बाज़ार में काम करते समय सुरक्षा की चिंताएँ और - व भी महिलाओं के लिए एकविपणन के लिए आवश्यक नेटवर्क का अभा बड़ी चुनौती है।

इन चुनौतियों के बावजूद सरकारी योजनाएँ इन बाधाओं को दूर करने और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में मदद कर रही हैं।

➢ **निष्कर्ष-**

समाज के आर्थिक विकास के लिए उद्यमशीलता तथा सतत व्यापार में वृद्धि आवश्यक है। उद्यमियों का उदय समाज में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक कारकों पर निर्भर करता है। महिलाओं को एक मंच प्रदान करने का काम स्वरोजगार समूह (Self-Help Groups, SHGs) करते हैं, जिसमें वे सामूहिक रूप से बचत, ऋण प्रबंधन तथा व्यावसायिक उद्यमों में हिस्सा ले सकती हैं। महिला उद्यमियों के लिए सरकारी योजनाएं न केवल आर्थिक निर्भर बनाती हैं, बल्कि उनमें नेतृत्व कौशल और सामुदायिक सहयोग की भावना भी विकसित होती हैं तथा इस तरह उन्हें अपने-अपने उद्योग कनेक्शन के साथ अपने कौशल, नेटवर्क को विकसित करने और उन्हें प्रतिस्पर्धी बाजारों के लिए तैयार करने में मदद करती हैं।

**संदर्भ सूची-**


1. D.P. Ambadas Pande and M.H.N. Tiwari, 'Government Schemes: A tool for Women Empowerment,' B. Aadhar, Int. Peer-Reviewed Index. Res.J., 2023
2. ग्रामीण विकाससुहास अव्हाड .डॉ -, सक्सेस प्रकाशन, पुणे, पृष्ठ 3.11
3. https://www.bajajfinserv.in/hindi/mudra-loan-for-women)
4. https://sbi.bank.in
5. www.bajajfinservmarkets.in
6. www.bajajfinservmarkets.in
7. सरकारी योजनाज्ञानेश्वर मगर .प्रा -, रत्नाई प्रकाशन, कोल्हापुर, पृष्ठ 57

# महिला सशक्तिकरण में आर्थिक स्वावलंबन की भागीदारी

**प्रा.डॉ.आहेर संगिता एकनाथराव**
हिंदी विभागाध्यक्ष
महिला महाविद्यालय, गेवराई।
E-mail sangitaaher1971@gmail.com

भारतीय संस्कृति में स्त्री को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उसका त्याग, लज्जा, संयम, चरित्र आदि गुणों को ऋषि मुनियों ने भी सराहा है।वैदिक काल में तो उसे पुरुषों के बराबर के अधिकार प्राप्त थे। इसके बाद आने वाले मध्यकाल में उसकी स्थिति दीन हीन बन गई थी। आधुनिक युग में उसे संविधान ने ही समान अधिकार दिए परंतु उसकी अबालापन की मोहर बनी रही। आज समय की मांग है कि महिला सशक्त हो जाए और अपने अधिकारों के साथ स्वतंत्रता से जीवन यापन करें। इसके लिए सामाजिक संगठनों और सरकारी योजनाओं से महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला है। इस दौर में महिलाओं की भी पूरी कोशिश रही है कि वह अपने आप को आगे बढ़ाएं,परंतु इसके लिए स्त्री का शिक्षित होना भी उतना ही जरूरी है। क्योंकि जब तक महिला साक्षरता का स्तर ऊंचा नहीं उठता तब तक वह विकास की दौड़ में आगे नहीं बढ़ सकती। और आधुनिक स्त्री ने साक्षरता का चित्र बदलना शुरू किया। विकास की दौड़ में आगे बढ़ने के लिए उसने शिक्षा का शस्त्र उठाया और उसका सक्षम दिशा की ओर सफर शुरू हुआ। किसी भी स्त्री का सर्वांगीण विकास तभी संभव होगा जब हर क्षेत्र में उसकी समान भागीदारी होगी। जब स्त्री पारिवारिक और सामाजिक उत्पीड़न से मुक्त होगी तभी वह प्रगति के पथ पर मार्गस्थ हो पाएगी। केवल सरकारी स्तर पर ही उसे अधिकार मिलकर फायदा नहीं है,बल्कि सामाजिक स्तर पर भी उसे नैतिक सहयोग की जरूरत है। समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए महिलाओं का सामाजिक और आर्थिक स्तर पर भी ऊंचा होना जरूरी है, क्योंकि आर्थिक स्वावलंबन से ही सशक्तिकरण संभव होता है।

महिला सशक्तिकरण के लिए स्त्री पुरुष के लिए हर क्षेत्र में समान अवसर से ही समानता संभव होगी।महिलाओं की पुरुषों के बराबर वैधानिक -महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य", राजनीतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में उनके परिवार, समुदाय, समाज एवं राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की स्वायत्तता है।"1 आज महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में निश्चित रूप से सुधार हुआ है।वह अत्यंत सहज और स्वाभाविक रूप से अपने परिवार के सुख सुविधाओं के लिए जागरुक है। पुरानी रूढ़ियों को तोड़कर आत्मनिर्भर बनने में वह खुशी महसूस करती है। क्योंकि परिवारिक अर्थव्यवस्था में स्त्री की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। हमारे देश में प्राचीन काल से ही अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में उसकी भूमिका सराहनीय रही है, परंतु पुरुषों ने स्वयं का महत्व बनाए रखने के लिए उसकी भूमिका को नजर अंदाज किया। परंतु इसमें उसे कानून और महिला संगठनों का यथा योग्य सहयोग मिला और स्त्री ने सशक्तिकरण की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाया। आज इस अर्थ प्रधान युग में पारिवारिक अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए उसकी भूमिका को भी महत्व दिया जाने लगा है।आज "

नारी अपने पैरों पर खड़ी है। उसमें से कुछ क :अधिकांशतः पास सरकारी नौकरी है, कुछ के पास अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान है, कुछ सामाजिक संस्थाओं से जुड़ी है,तो कुछ विविध सांस्कृतिक गतिविधियों से संलग्न है।"2 शिक्षा प्राप्त कर उसने अब कलम ही नहीं थामी बल्कि बंदूक भी उठा ली है। पारंपरिक मान्यताओं पर चोट करती हुई वह मानव जीवन को नया आयाम दे रही है। आत्मविश्वास और आर्थिक स्वावलंबन के कारण उसने अपनी सामाजिक पहचान बनाई है और हर क्षेत्र में प्रवेश भी किया है। कोई भी क्षेत्र उसके लिए अछूता नहीं रहा है। 22 अप्रैल 2025 जम्मूकश्मीर स्थित पहलगाम हमले के जवाब में - आतंकवाद के वि◌िरोध में भारत सरकार ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के रूप में जवाब दिया था। इसकी जानकारी देने के लिए सोफिया कुरैशी और व्योमिका सिंग इन दो नारी शक्तियों को चुना गया था। इन्होंने ही इसकी जानकारी संपूर्ण देश वासियों को दी थी। महिला सशक्तिकरण की यह बहुत बड़ी मिसाल है।

नारी शिक्षा के अस्त्र का शस्त्र के रूप में संचालन कर वह आर्थिक स्वावलंबन की ओर बढ़ रही है।यह बोध उसके मन में पनप रहा है कि, आत्मनिर्भर बनकर ही अहम निर्णय लेने की क्षमता उसे प्राप्त होगी। डॉबाबासाहेब अंबेडकर ने भारतीय नारी की बौद्धिक क्षमता और साम .र्थ्य को पहचाना था। इसीलिए उन्होंने स्त्री को पुरुष के समकक्ष रखा। हिंदू कोड बिल बनाकर भारतीय नारी को स्वाभिमान से जीने का अधिकार दिलाया। हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम में जो हिंदू कोड बिल", जिसे बाबा साहब ने लिखा था, का एक भाग है, नारी को धन संपत्ति संबंधी पूर्ण अधिकार दे दिए हैं। इस अधिनियम में संपत्ति के विषय में पुरुष और स्त्री में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रखा गया है। "3 सभी क्षेत्रों में महिलाओं को गरिमा और समानता प्रदान की गई है। किसी भी प्रकार का भेदभाव एवं असमानता का कड़ा विरोध इसमें किया गया है। परिणामतजोड़ी गई। वह अपने अधिकारों के प्रति तथा स्वतंत्र महिला सशक्तिकरण में और एक कड़ी : सत्ता के प्रति सचेत हुई। स्वयं अपनी आय और सम्मान पाकर अपने जीवन को वह पूर्ण बनाना चाहती है।

आज स्त्रियों की आर्थिक स्थिति में निश्चित रूप से परिवर्तन हुआ है। कामकाजी स्त्रियों की संख्या भी अब बढ़ने लगी है। स्त्रियों के लिए आर्थिक कानून भी बनाया गया है, जिसमें उसे संपत्ति के साथ समान श्रम जैसे लाभ दिए गए हैं। आज महिलाओं ने हर क्षेत्र में प्रवेश किया और सफलता भी पाई है। आर्थिक स्वावलंबन से महिलाओं को निर्णय लेने की स्वतंत्रता और समानता प्रदान की गई है। आत्मनिर्भर बनने से परिवार एवं समाज में भागीदारी और निर्णय लेने की शक्ति भी बढ़ी है। यह निर्विवाद सत्य है कि", जहां साक्षरता का प्रतिशत बढ़ा है वहां पारिवारिक बजट और आय प्रबंधन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है।"4 घर और दफ्तर को संभालते हुए अपने आप को विकास की धारा से वह जोड़ रही है। परंतु उनकी समस्याएं समाप्त नहीं हुई है। आज भी उनके साथ भेदभाव किया जाता है। इसके लिए भी संवैधानिक कानून द्वारा संरक्षण दिया गया है।क्योंकि जब तक महिलाओं के आर्थिक जीवन में प्रगति नहीं होती तब तक उनकी सामाजिक स्थिति भी सुधर नहीं सकती। स्त्री के लिए आर्थिक कानून भी बनाया है जिसमें उसे संपत्ति के साथ समान श्रम भी मिल रहा है। इसलिए वह आर्थिक स्तर पर अपना बहुमोल योगदान दे रही है।

भारतीय नारी की आर्थिक स्थिति में प्रगति की भागीदारी शिक्षा के कारण प्रभावित हुई है। समाज का नारी के प्रति दृष्टिकोण भी उसकी आर्थिक स्थिति से प्रभावित हुआ है।उच्च वर्ग और मध्य वर्ग में स्त्री शिक्षा को लेकर बेहतर परिणाम देखने को मिले हैं। इसलिए उनकी आर्थिक स्थिति में बदलाव आया है एवं

उनके योगदान को सराहा भी जा रहा है। समानता, स्वतंत्रता एवं शिक्षा के फल स्वरुप आत्मनिर्भर हो रही नारी विविध क्षेत्रों में अपनी क्षमता का परिचय दे रही है। शिक्षा के क्षेत्र में जागृति के कारण उसका आत्मविश्वास बढ़ा है।महिलाओं ने न केवल शिक्षा स्वास्थ्य के ही क्षेत्र में अपितु व"िज्ञान, तकनीक, प्रौद्योगिकी, सेना,पुलिस, अंतरिक्ष,अनुसंधान, कला, साहित्य,संस्कृति, पत्रकारिता, प्रबंधन, राजनीति, उद्योग, व्यापार,आयात, निर्यात, एवं अन्य सामाजिक आर्थिक क्षेत्र में भी अपनी पहचान स्थापित की है।"5 नारी आज प्रत्येक क्षेत्र में अपनी क्षमता का परिचय सक्षमता से दे रही है। जहां भी उसे अवसर मिलता है वह अपनी सार्थकता सिद्ध कर देती है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता उसकी हीन भावना को जड़ से दूर किया है। परिणामस्वरूप समाज में भी उसे सम्मान का स्थान मिल रहा है।

आज स्त्री पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में प्रविष्ट हो चुकी है। उसने अपनी शिक्षा के माध्यम से आर्थिक स्थिति में सुधार किया है। वह एक स्वतंत्रचेता के रूप में अपना कार्य कर रही है। आज धीरे धीरे वह बौद्धिक विकास के साथ आत्मविश्वास प्राप्त कर खुद की क्षमता को आजमाकर सशक्त बन रही है। हमारे देश की वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने 1 फरवरी 2026 को केंद्रीय बजट संसद में प्रस्तुत किया। यह बजट नारी शक्ति की मजबूत भागीदारी का प्रतीक माना गया। उनका यह नौवां बजट है, जो भारतीय इतिहास में रिकॉर्ड बन चुका है। स्वयं प्रधानमंत्री ने इसपर प्रतिक्रिया देते हुए कहा,"वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा लगातार 9 बजट पेश करना राष्ट्रीय गर्व की बात है और इस उपलब्धि से देशभर की महिलाएं प्रेरित महसूस कर रही हैं। "6 राष्ट्र के आर्थिक विकास में स्त्रियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। आत्मनिर्भरता से नारी स्वस्थ सामाजिक आकार ग्रहण करेगी जिसका नतीजा हमारे राष्ट्र का और अधिक पुख़्ता विकास होगा।

महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए उसका आत्मनिर्भर होना अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि आर्थिक स्वावलंबन के बिना स्त्री की परिस्थिति में अपेक्षित परिवर्तन नहीं आयेगा। आत्मनिर्भर होने से वह स्वतंत्र रूप में निर्णय क्षमता और सामर्थ्य को लेकर अग्रसर होगी। क्योंकि जब तक महिलाओं की सभी क्षेत्रों में भागीदारी नहीं होगी तब तक विकास नहीं होगा। इसके लिए सामाजिक भेदभाव एवं असमानता को मिटाना जरूरी है। महिला और पुरुष में असमानता सामाजिक संरचना से जुड़ी हुई है। " निर्धन परिवारों में महिलाएं परिवार की आय में प्रमुख योगदान करती हैं और कभी कभी तो वे पुरुषों की "अपेक्षा अधिक योगदान करती हैं।7 संविधान में स्त्री पुरुष वेतन को समान रखा गया है, परंतु सामाजिक संरचना के कारण श्रमिक महिलाओं के साथ हर स्तर पर भेदभाव किया जाता है। कामकाजी महिला पर दोहरा दायित्व आता है। आज स्त्री जीवन के हर क्षेत्र में कामकाजी महिलाओं की संख्या बढ़ रही है। ये महिलाएं एक साथ घर की जिम्मेदारी और साथ ही देश की आर्थिक तरक्की में भी योगदान दे रही है। जहां तक श्रम का प्रश्न है इसमें तो वह पुरुषों से भी आगे है। अफसोस इस बात का है की उसका घरेलु श्रम को आर्थिक दर्जा नहीं मिलता है।

महिलाओं के सशक्तिकरण में कानूनी संरक्षण के अधिनियम अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुए हैं। लेकिन केवल कानूनी सहयोग ही काफी नहीं है समाज की मानसिकता में भी परिवर्तन जरूरी है। स्त्रियों में सामाजिक जागृति के लिए तथा स्त्रियों के की रक्षा के लिए सरकार की ओर से भी वैधानिक उपाय किए

जाते हैं। संविधान में महिलाओं के लिए समानता का अधिकार दिया गया है,साथ ही आर्थिक, सामाजिक कानून भी बनवाए गए हैं। महिलाओं के स्वावलंबन हेतु एवं उन्हें सशक्त बनाने के लिए कानून और सरकारी योजनाएं काफी नहीं है बल्कि समाज की मानसिकता भी बदलनी चाहिए। राजनीति के क्षेत्र में आरक्षण देने के बावजूद भी वह पुरुष के हाथ की कठपुतली बनी हुई है। राजनीति के नाम पर पति या अन्य पुरुष रिश्तेदार रहते है।ऐसे एक नहीं ऐसे कई उदाहरण देखने को मिले हैं जिनमें पंचायती चुनावों मैं हमें" महिलाओं के लिए आरक्षित स्थानों पर खड़ी महिला उम्मीदवारों के पूरे चुनाव का संचालन उनके पतियों, भाइयों या अन्य पुरुष रिश्तेदारों द्वारा किया गया।"8 संविधान में तो महिलाओं को समान अधिकार दिए गए हैं परंतु वास्तव में उसे अमल में नहीं लाया जाता है। आज का युग व्यापक रूप से नारी का पथ प्रशस्त करने का प्रयास करता है, अब वह केवल सहानुभूति की पात्र नहीं है बल्कि उसके अधिकारों की मांग प्रबल रूप में मुखर हुई है। महिला विकास एवं महिला सशक्तिकरण के हेतु सरकार द्वारा सराहनीय प्रयास हुए हैं। परंतु यह एक पक्ष है जो शहरों और महानगरों तक सीमित है। ग्रामीण महिलाएं आज भी आर्थिक रूप से गुलामी का जीवन यापन कर रही है। सरकारी योजनाओं में ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रधानता दी गई है। इसमें उनके उत्थान के प्रयास भी है, परंतु यह योजनाएं फाइलों में ही रह जाती है और परिणामतइन स्त्रियों का : यद्यपि घर के बाहर की दुनिया "विकास भी वही बंद हो जाता है। इसमें आज भी जागृति की आवश्यकता है। में महिलाओं की उपस्थिति तथा उनका हस्तक्षेप जैसेजैसे बढ़ा है-, एक बड़े बदलाव को हम रेखांकित कर सकते हैं, चाहे वह अवसरों की उपलब्धता हो या पहले की तुलना में सुविधाओं की बात हो। लेकिन इसके बावजूद समाज जिस तेजी से बदल रहा है तथा विकास की जो गति है, उसकी तुलना में महिलाओं की स्थिति में सुधार या प्रगति नहीं हो पाई है।"9 सरकारी योजनाएं, सामाजिक भेदभाव एवं महिला सशक्तिकरण की कुछ कमियों को छोड़कर आज की नारी लगभग सभी क्षेत्र में प्रविष्ट होकर आर्थिक स्थिति में अग्रसर हुई है, यह उपलब्धि समाज और देश के लिए अत्यंत उपयोगी और महत्वपूर्ण है।

निष्कर्षतस्थान बना रही आज महिलाएं सभी चुनौतियों को स्वीकार कर विभिन्न क्षेत्रों में अपना : अपने क्षेत्र में सक्रिय भागीदारी को निभा रही है और सफल भी हो रही है। परंतु उसकी यह -है। अपने भागीदारी अत्यंत कम मात्रा में दिखाई देती है। नगरों और महानगरों में उसके कार्य को सराहा जाता है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में आज भी वह पिछले पन्ने पर रहकर ही भूमिका निभा रही है। हालांकि पारिवारिक अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ रूप बनाने में भी उसकी भागीदारी महत्वपूर्ण होती है। आज का युग अर्थ प्रधान है और इसमें महिलाओं की भागीदारी को मान्यता दी जा रही है और परिणामतप्रातिनिधिक मात्रा में ही क्यों : ह भूमिका सराहनीय है जिसकी बदौलत उसका सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से मजबूत ना हो स्त्री की य कदम पुरुषों के बराबर बढ़ रहा है और सशक्तिकरण की विराटता को लेकर लगभग सभी क्षेत्रों में उसने अपने आप को साबित किया है। उसका यह बदलता हुआ स्वरूप आत्मनिर्भरता के कारण समाज के प्रत्येक उत्पादन क्षेत्र में योगदान दे रहा है। ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जो नारी के क्षमता के बाहर है। केवल आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं हर क्षेत्र में वह प्रगति कर रही है।

**संदर्भ**

1) डॉ दीपाली सक्सेना महिला सशक्तिकरण सिद्धांत और वास्तविकता प्रस्तावना :7
2)कविता शर्मा.क्र .सामाजिक स्थिति और विकास पृ -भारतीय स्त्री :162

3) ज्ञानेंद्र रावत .क्र .एक समाजशास्त्रीय अध्ययन पृ :औरत :216
4) कविता शर्मास्त्री विकास की ऐतिहासिक रूपरेखा : पृ .क्र .28
5) डॉ.क्र .महिला सशक्तिकरण और कानून पृ : अग्निहोत्री .एन .ए.146
6)https://WWW.Jansatta.com
7) डॉ दीपाली सक्सेना .क्र .महिला सशक्तिकरण सिद्धांत और वास्तविकता पृ :85
8) वही वही पृ.क्र .110
9) वही वही पृ.क्र .216

# महिला स्वयं सहायता समूहों की आर्थिक भूमिका और नेतृत्व क्षमता

**शोधनिर्देशक**
प्रा. डॉ. लक्ष्मण शिवराम मुंडे(हिंदी विभागाध्यक्ष) .
कै,.वै -लक्ष्मीबाई देशमुख महाविद्यालय परळी .जिबीड .

**शोधार्थी**
पल्लवी रघुनंदन खरात
,(हिंदी -डी.पीएच)
बलभीम कलाब ,विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय ,ीड४३११२६.
Email:pallavikharat1002@gmail.com Mob. N. 956177111

**प्रस्तावना:**

महिला स्वयं सहायता समूह एक बहुचर्चित विषय बन गया है। स्वयं सहायता समूह महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। जिसमें बांग्लादेश के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री मोहम्मद यूनुस का प्रयास उल्लेखनीय रहा है। इन्होंने १९७० से ही लघुवित्ता आंदोलन की शुरुआत की थी जिसके तहत गरीबी विशेष कर औरतों को बिना किसी शर्त के ऋण देने की व्यवस्था की गई और आज लघुवित्ता आंदोलन विश्व के ७ हजार संस्थाओं द्वारा चलाए जा रहा है। जिससे लगभग १ करोड़ ६ लाख लोगों को रोजगार दिया जा चुका है। वास्तव में स्वयं सहायता समूह गांव के व्यक्तियों का एक ऐसा संगठन है जो अपनी इच्छा से संगठित होकर नियमित रूप से थोड़ी-थोड़ी बचत कर सामूहिक निधि में जमा करते हैं। तथा जिसका उपयोग सदस्यों की आकस्मिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए किया जाता है।

इस प्रकार समूह के सदस्य हफ्ते अथवा महीने से एक बार बैठक कर विभिन्न विषयों पर चर्चा कर एक दूसरे की समस्याओं का समाधान करते हैं, जिससे यह महिलाएं गरीबी, बेरोजगारी तथा निरक्षरता के चक्रव्यूह से निकलकर सशक्तिकरण की दिशा में कदम बढ़ा रही है और न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक और राजनीतिक आयामो पर भी सशक्तिकरण की और अग्रसर है।

महिला स्वयं सहायता समूह ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में महिलाओं को संगठित करने का एक सशक्त माध्यम बन गए हैं। कोफी अन्नान के अनुसार "विकास के लिए महिलाओं के सशक्तिकरण से बेहतर कोई उपकरण नहीं है"। ये समूह १० से २० महिलाओं का एक स्वयच्छिक संगठन होते हैं, जो आपसी सहयोग और सामूहिक बचत के माध्यम से अपनी सामाजिक - आर्थिक स्थिति सुधारने का प्रयास करते हैं। महिलाओं के **आर्थिक सशक्तिकरण** और **नेतृत्व विकास** के लिए एक क्रांतिकारी मॉडल साबित हुए हैं।

**अध्ययन के उद्देश:**

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्निलिखित उद्देश्य:

१) महिला स्वयं सहायता समूहों के स्थिति का अध्ययन।
२) महिला स्व सहायता समूहों की आर्थिक भूमिका और नेतृत्व क्षमता का अध्ययन।
३) स्वयं सहायता समूह की प्रगति की समीक्षा करना

**स्वयंसहायता समूह का उद्देश:**

स्वयं सहायता समूह का उद्देश्य ग्रामीण निर्धनों मुख्य रूप से महिलाओं का लघु ऋण उपलब्ध करना है। तथा इसके साथ ही साथ बैंकिंग गतिविधियों के साथ जोड़कर बचत तथा महिलाओं में आपसी सहयोग को बढ़ावा देना है, इसके अतिरिक्त इसका प्रमुख उद्देश्य महिलाओं में समानता तथा संवाददाता को विकसित करना, आत्मविश्वास बढ़ना, आत्मनिर्भरता बढ़ाना तथा उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाना है। जिससे वह व्यक्तिगत स्तर पर सशक्त होने के साथ-साथ सामूहिक स्तर पर भी सशक्त हो सके और अपने अधिकारों के लिए सामने आ सके।

**स्वयं सहायता समूह का संचालन:**

समूह के सुचारू रूप से संचालन के लिए प्रत्येक समूह अपने सदस्यों में से ही तीन प्रतिनिधि अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष तथा सचिव की नियुक्ति करता है। ताकि समूह क्रियाविधि सुचारू रूप से चल सके। पदाधिकारी को चुनने का आधार मुख्यतः शिक्षा तथा आत्मविश्वास होता है। ताकि समूह में हिसाब किताब का काम यह स्वयं कर सके। प्राय: सुविधादाता द्वारा कभी-कभी इनको समूह चलाने की ट्रेनिंग भी दी जाती है। प्रत्येक महीने समूह की नियमित मीटिंग होती है, जो कि किसी सार्वजनिक स्थान अथवा प्रत्येक सदस्य के घर बारी-बारी से होती है।

शोध के अनुसार, इन समूहों की भूमिका को निम्नलिखित दो मुख्य बिंदुओं में विभाजित किया जा सकता है:

१) आर्थिक भूमिका २) नेतृत्व क्षमता का विकास

**१)आर्थिक भूमिका (Economic Role)**

SHG महिलाओं को वित्तीय रूप से स्वतंत्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं की आर्थिक स्थिति में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं:

- **बचत की आदत और वित्तीय समावेशन:** ये समूह महिलाओं में छोटी-छोटी नियमित बचत की आदत डालते हैं, जिससे वे साहूकारों के चंगुल से मुक्त होकर कम ब्याज पर बैंक ऋण (Microcredit) उपलब्ध कराते हैं। औपचारिक बैंकिंग सेवाओं से जुड़ पाती हैं।
- **सूक्ष्म ऋण और स्वरोजगार :** समूहों के माध्यम से प्राप्त ऋण का उपयोग महिलाएं सिलाई, बुनाई, पशुपालन, और खाद्य प्रसंस्करण जैसे लघु उद्योगों के लिए करती हैं।
- **आय में वृद्धि:** आंकड़ों के अनुसार, समूहों से जुड़ने के बाद १००% महिलाओं की आय में वृद्धि देखी गई है, जिससे वे अपने परिवार की शिक्षा और स्वास्थ्य पर बेहतर खर्च कर पा रही हैं।
- **वित्तीय साक्षरता:** समूह से जुड़ने के बाद महिलाएं बैंकिंग प्रक्रियाओं, बजट बनाने और निवेश के बारे में जागरूक होती हैं।
- **सामूहिक उद्यमिता:** 'लखपति दीदी' जैसी योजनाओं के माध्यम से महिलाएं अब बड़े बिजनेस मॉडल और डिजिटल सेवाओं की कमान संभाल रही हैं।
- **संपत्ति पर नियंत्रण:** शोध बताते हैं कि SHG सदस्य बनने के बाद महिलाओं का पारिवारिक संसाधनों और आय पर नियंत्रण बढ़ा है।

**२)नेतृत्व क्षमता (Leadership Potential)**

समूहों ने महिलाओं को केवल आर्थिक रूप से ही नहीं, बल्कि नेतृत्व के स्तर पर भी सक्षम बनाया है। समूह केवल पैसा बचाने का माध्यम नहीं हैं, बल्कि यह 'लीडरशिप' की पहली पाठशाला भी हैं:

- **निर्णय लेने की शक्ति:** समूह की बैठकों में सक्रिय भागीदारी से महिलाओं में आत्मविश्वास आता है, जिससे वे न केवल समूह में बल्कि अपने परिवार और समाज में भी निर्णय लेने में सक्षम बनती हैं, वे अब घर और समाज के महत्वपूर्ण निर्णयों में अपनी आवाज उठा रही हैं।
- **कौशल विकास और प्रशिक्षण:** SHG महिलाओं को नेतृत्व, संचार (Communication), और समस्या समाधान जैसे महत्वपूर्ण कौशल में प्रशिक्षित करते हैं।
- **सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध नेतृत्व:** ये समूह दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा और नशाखोरी जैसी समस्याओं के खिलाफ सामूहिक रूप से लड़ने के लिए महिलाओं को एकजुट करते है।
- **राजनीतिक भागीदारी:** नेतृत्व कौशल विकसित होने के कारण अब समूह की महिलाएं ग्राम सभाओं और स्थानीय चुनावों में अधिक सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं।

**निष्कर्ष:**

निष्कर्ष स्वरूप से यह कहां जा सकता है कि, समूह की क्रियो में भाग लेकर महिलाएं विभिन्न कार्यों से जुड़कर विकास के नए आयाम से जुड़ गई है। महिला सशक्तिकरण का प्राथमिक उद्देश्य ही यह है कि उनको अपने अधिकारों के प्रति सशक्त किया जाए और परिवार में निर्णय के स्तर पर ज्यादा से ज्यादा भागीदारी बढ़ाई जाए।

इस प्रकार ग्रामीण महिलाओं को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाने में स्वयं सहायता समूह महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। जिसके अंतर्गत स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसके तहत अब तक ३० हजार से ज्यादा स्वयं सहायता समूह का गठन किया जा चुका है। विभिन तथ्यों से स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं, कि इन्हीं समूहों के माध्यम से महिलाओं पर किए गए घरेलू हिंसा तथा शोषण पर प्रभावशाली ढंग से रोक लगाई गई है। जिससे समाज में महिलाओं की स्थिति में कुछ हद तक सुधार भी आया है। एक समय में जो महिलाएं अशिक्षित तथा अज्ञानी थी। स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात अपने स्वास्थ्य, बच्चों की शिक्षा, भोजन की पौष्टिकता तथा परिवार नियोजन के प्रति जागरूक हो गई है। प्रौढ़ शिक्षा मिशन द्वारा स्वयं सहायता समूह आंदोलन से महिलाओं में नेतृत्व गुणों का भी विकास किया जिससे वह समूह की बात को सामने लाने में सक्षम हुई। इस अध्ययन में समाज के अति आवश्यक अविभाज्य किंतु पिछड़े हुए अंग महिलाओं को सशक्त एवं स्वालंबी बनाने हेतु प्रभावी उपकरण स्वयं सहायता समूह की भूमिका पर दृष्टिपात करने का प्रयास किया गया है।

स्वयं सहायता समूह महिलाओं को "आर्थिक शक्ति" बनाने के साथ-साथ उन्हें समाज में एक नई पहचान दिला रहे हैं। हालांकि विपणन कौशल और तकनीकी जानकारी की कमी जैसी चुनौतियां अभी भी मौजूद हैं, लेकिन सरकार के निरंतर सहयोग से ये समूह भारत के समावेशी विकास का मुख स्तंभ बना सकते हैं।

**संदर्भ ग्रंथ सूची:**


१) शर्मा क्षमा,(२००२), "स्त्रीत्ववादी विमर्श समाज और साहित्य", राजकमल, नई दिल्ली।

२) शर्मा ओमप्रकाश,(२००४), "ग्रामीण समाज में नियोजित सामाजिक परिवर्तन", रावत पब्लिकेशन, जयपुर।

३) राजकुमार,(२००५), "नारी के बदलते आयाम", अर्जुन पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।

४) पसूका,(२००६), "ग्रामीण महिलाओं की बदलती स्थिति, कुरुक्षेत्र, भारत सरकार की पत्रिका सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय", नई दिल्ली।

५) कुमार नीरज,(२००७) "महिला सशक्तिकरण की कुछ कोशिश कुरुक्षेत्र ५३(५)"।

# मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण महिला उद्यमिता: संभावनाएँ और सामाजिक परिवर्तन

**मार्गदर्शक**
प्रो. डॉ. मुरलीधर अच्युतराव लहाडे
प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
जनविकासमहाविद्यालय, बनसारोळा

**संशोधक विद्यार्थी**
जयचंद अनंतराव तांबुरे
मु. कोळपिंपरी पो. अंजनडोह
ता. धारूर जि. बीड 431124
jaychandtambure@gmail.com,
8805098386

**संशोधन केंद्र**
बलभीम महाविद्यालय, बीड

---

**प्रस्तावना:**

मिथिलेश्वर की कहानियाँ ग्रामीण भारत के यथार्थ, सामाजिक संघर्षो और महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने के प्रयासों का सशक्त दस्तावेज हैं। वे अपनी कहानियों के माध्यम से पितृसत्ताक जकड़न, बाल-विवाह और अनपढ़ता जैसी सामाजिक कुरितियों को उजागर करते हुए ग्रामीण महिला उद्यमिता को एक नए बदलाव के रूप में पेश करते हैं। उनकी महिला पात्र (जैसे 'मेघना का निर्णय'की मेघना और 'अभी भी'की फुलिया) गरीबी और दासता से जुझते हुए आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते हुए सामाजिक परिवर्तन का संदेश देती हैं। ग्रामीण महिलाएँ दुनिया भर के ग्रामीण समुदायों में एक बुनियादी भुमिका निभाती है और कई आर्थिक गतिविधीयों में शामिल होती हैं। जैसे कि जीविका के लिए खेती, छोटे-मोटे व्यापार और कृषि-बाह्य कार्य। देश व समाज के समग्र आर्थिक विकास के लिए ग्रामीण महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक विकास आवश्यक हैं। क्योंकि महिलाओं के लिए उद्यमीता विकास इनके सशक्तीकरण का एक प्रमुख साधन हैं। सशक्तीकरण से ही महिलाओं को उनकी स्थिति, अस्तित्व, अधिकार एवं सम्मान में एक अलग प्रतिष्ठा प्राप्त होती हैं। सशक्तीकरण महिलाओं को जागरूक करणे का एक साधन भी हैं। ग्रामीण उद्यमीता का सीधा अर्थ ग्रामीण औद्योगीकरण से हैं।

ग्रामीण महिला उद्यमिता यह विषय अपने आप में कई पारंपारिक मान्यताओं को खस्त करने वाला हैं। पहले तो ग्रामीण महिलाएँ और उस पर उद्यमिता। जहाँ शिक्षा, सामाजिक स्वतंत्रता, पारिवारिक प्राथमिकता ही जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं की सुची में सबसे उपर हो, वहॉ उद्यमिता के लिहाज से ग्रामीण महिलाओं की चर्चा अपने आप में एक क्रांतिकारी अवधारणा लगती हैं। लेकिन अब यह क्रांतीकारी अवधारणा बहुत तेजी से सच बन रही हैं। भारत के गाँवों में महिलाएँ बडी संख्या में अपने घरों से निकल रहीं हैं और काम कर रही हैं और न सिर्फ काम कर रही हैं, बल्कि दुसरों के लिए रोजगार के अवसरों का भी निर्माण कर रहीं हैं। लेकिन यह राह न पहले कभी आसान थी और न ही अभी आसान हैं।

ग्रामीण महिलाओं को सफल उद्यमियों में बदलना एक सामाजिक आवश्यकता हैं। महत्वपूर्ण यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में हर वर्ग की महिलाएँ कुशलता प्रशिक्षण के जरिए छोटे किंतु आत्मनिर्भर उद्यम खड़े करने के प्रति काफी प्रदर्शित कर रही हैं। इस दिशा में उन्हें व्यावसायिक ज्ञान और तकनीकी जानकारि प्रदान करने के लिए कई योजनाएँ भी चल रही हैं जो केंद्र, राज्यों और आंतरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा संचलित होती हैं।

भारत के आर्थिक विकास में ग्रामीण लोंगो का महत्वपूर्ण योगदान होता हैं तथा ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका अति महत्वपूर्ण होती हैं। इस प्रकार महिला उद्यमी को आर्थिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत माना गया हैं। आधुनिक भारत में महिलाओं कि भूमिका एक माँ और गृहिणी के रूप में पारम्पारिक भूमिका तक ही सिमित नहीं हैं यह परिवर्तन की ओर गुजर रहा हैं। महिलाएँ साक्षर हो रही हैं और घर से बाहर निकलने लगी हैं तथा बेरोजगार रहने के बजाए पुरूषों के साथ आमदनी में वृद्धी करने हेतु व्यवसाय प्रारंभ कर दिया हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राचीन काल से महिलाएँ दबी हुई सी थी। किंतु आज बहुत परिवर्तन हो चुका हैं। इस महंगाई के युग में कृषी पदार्थों की कम किमत प्राकृतिक आपदाओं, बाढ़, सुखा आदि के कारण ग्रामीण लोगों के जीवन बसर में कठिनाई होले लगी, जिसके कारण उनकी आर्थिक स्थिति कमाजोर होने लगी। उक्त समस्याओं को सुलझाने के लिए महिलाएँ सरकारी नौकरी, स्वयं का व्यवसाय, मजदुरी तथा अन्य कार्या में खुलकर सहयोग करने लगी हैं। आज ग्रामीण परिवेश बदल चुका हैं। वर्तमान में प्रत्येक गाँव की महिलाएँ गृहिणी तथा खेती के साथ-साथ स्वयं सहायता समूह के माध्यम से अन्य कार्य आसानी से कर रहीं हैं। जिससे उनकी आय में वृद्धी होने लगी हैं। भारत में वर्तमान में शहरी एवं ग्रामीण विकास में उद्यमी पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर चलने को तैयार हैं। दुनिया एवं देश के विकास में महिलाएँ उन क्षेत्रों में भी बढ़चढ़कर योगदान दे रहीं हैं। जहाँ केवल पुरूषों का वर्चस्व माना जाता हैं आज महिला उद्यमी हर व्यवसाय को मुनाफे में बदलकर विकास में अपना योगदान दे रहीं हैं। कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिला उद्यमी की स्थिति अनुकुल नहीं हैं।

इस प्रकार महिला अपने परिवारों की आर्थिक स्थिती में सुधार करने हेतु पुरूषों का हर कार्य करने लगी हैं। इस कार्य में उनकी स्थिति अभी भी अपेक्षानुकूल नहीं हैं। इसके बावजुद भी ग्रामीण विकास में महिलाएँ ग्रामीण उद्यमिता के क्षेत्र में अनेक चुनौतिपूर्ण एवं उल्लेखनीय कार्य कर रहीं हैं। महिलाएँ कई विषय परिस्थितियों में भी कठिण चुनैतियों का सामना करते हुए अपने उद्यमों द्वारा न केवल अपने परिवार के आर्थिक स्वावलंबन में सहयोगी बनी हैं बल्कि ग्रामीण विकास में भी योगदान दे रहीं हैं। ग्रामीण महिलाएँ कृषी उद्यम, हस्त शिल्प उद्यम आदि उद्योग करती आई हैं। भारत में ग्रामीण क्षेत्रों के विकास से ही सम्पूर्ण विकास को आगे बढ़ाया जा सकता हैं।

ग्रामीण महिला उद्यमिता ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक सशक्तिकरण, कौशल विकास और लैंगिक समानता के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन ला रहीं हैं। स्व-सहायता समूहों, कृषि आधारित लघु उद्योगों और हस्तशिल्प के माध्यम से महिलाएँ न केवल आय अर्जित कर रही हैं बल्कि रूढ़िवादी सामाजिक मानदंडों को चुनौती देकर निर्णय लेने की क्षमता भी बढ़ा रहीं हैं। यह सतत विकास के लिए आवश्यक हैं। ग्रामीण महिला उद्यमी को अक्सर वित्तीय बाधाओं, औपचारिक शिक्षा की कमी, तकनीकी साक्षरता में कमी और पुरूष-प्रधान समाज में सांस्कृतिक रूढ़ियों जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैं।

ग्रामीण भारत में महिला उद्यमिता केवल आय-सृजन का माध्यम नहीं हैं, बल्कि यह सामाजिक बदलाव की एक मजबुत ताकत भी हैं। जब महिलाएँ उद्यम शुरू करती हैं तो उसका असर परिवार, समाज और स्थानिय अर्थव्यवस्था तीनों पर पड़ता हैं। ग्रामीण महिला उद्यमिता सामाजिक परिवर्तन की धुरी हैं। सही नितियाँ, प्रशिक्षण और समर्थन मिलें तो महिलाएँ न केवल अपने परिवारों को बल्कि पूरे समाज को बढ़ा सकती हैं। ग्रामीण महिला उद्यमिता का अर्थ हैं-ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं द्वारा स्वरोजगार और व्यवसाय की शुरूवात, संचालन और विकास। यह न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता का माध्यम हैं बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास की मजबूत नींव भी हैं।

वर्तमान काल में नारी शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, साहित्य, चिकित्सा आदि अन्य क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाती हुई दिखाई देती हैं। गाँवों में अज्ञान, रूढ़ी एवं परंपराओं की वजह से नारी का जीवन पिछड़ा हुआ दिखाई देता हैं। साथ हि शिक्षा के अभाव के कारण गाँवों एवं अंचलो की नारी में पिछड़ापन दिखाई देता हैं। नारी के प्रति समाज के दृष्टिकोन में पूर्णतः परिवर्तित रूप नहीं दिखाई देता हैं। नारी आज भी आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर नहीं हैं। ''संवैधानिक स्वतंत्रता व समानता के बावजूद भी यह आजादी और यह सम्मान केवल मुट्ठी भर महिलाओं के लिए ही हैं। सामान्य नारी आज भी उतनी ही पिछड़ी हुई हैं, उतनी ही असुरक्षित हैं। रूढ़ियों, परंपराओं, रिति-रिवाजों, अशिक्षा, अज्ञान, अंधविश्वासों एवं शोषण की वजह से भारतीय ग्रामीण समाज में नारी का जीवन पिछड़ा हुआ दिखाई देता हैं। वह अनेक अभिशापों से पीड़ित हैं। फिर भी पूजा-अर्चा, तीज-त्यौहारों, समारोहों, धार्मिक विधि-विधानों के समय नारी का महत्व अधिक रहता हैं। आज पुरूषों को जितना मान-सम्मान सामाजिक क्षेत्र में मिलता है उतना सम्मान नारी को नहीं मिलता हैं।

मिथिलेश्वर के कथा साहित्य में भी श्रमिक नारी का चित्रण मिलता हैं। 'भोर होने से पहले'कहानी की बुधनी जमींदार रविकांत के घर में नौकरानी का काम करती हैं। वह रविकांत के घर में काम करते समय कभी भी थकान महसूस नहीं करती हैं। तब रविकांत कहता हैं, ''आदिवासी खून की बनी हैं... थकान तो जानती नहीं ''[1] यहाँ लेखक ने श्रमिक नारी का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया हैं। 'रात' कहानी की नायिका झुनिया जमींदार जोगिंदर सिंह के खेत में मजदूर के रूप में रही हैं। तब झुनिया सोचती हैं, ''कौन इस गाँव में उसकी बपौती जायदाद हैं! कमाती है तो खाती हैं। तो इस तरह तो कहीं भी कमा-खा लेगी। रही शादी-ब्याह की बात सो कौन बड़ों की औरतों की तरह दुल्हन बनकर घर में बैठना है उसे। जहाँ कहीं भी जायेगी, खुद कमाकर खायेगी....''[2] यहाँ लेखक ने श्रमिक नारी का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया हैं।

'बैसाड़ीह की चंद्रवती'कहानी में चित्रित चंद्रावती पढ़ना चाहती हैं। लेकिन बैसाड़ीह गाँव के लोगों में नारी शिक्षा के प्रति उदासिनता एवं परंपरागत दृष्टि पाई जाती हैं। उस गाँव में कुछ लड़कियाँ पढ़ने लगी हैं। लेकिन नारी का अधिक पढ़ना उचित नहीं माना जाता हैं। नारी उच्च शिक्षित होने पर चिंता का विषय बन जाती हैं। इसलिए बेसाड़ीह गाँव के लोग लड़कियों को पढ़ने का विरोध करते हुए कहते हैं, ''लड़कियाँ पढ़-लिखकर क्या करेंगी? नौकरी तो उन्हें करनी है नहीं! चिट्ठी-पत्री लिखना-बाँचना जान गई, बस काफी है।''[3] ग्रामीण जीवनमें नारी शिक्षा के प्रति उदासीनता पाई जाीत हैं। 'तिरिया जनम'कहानी की नायिका सुनयना प्रायमरी स्कूल तक पढ़ चुकी है। वह आगे मिड़िल स्कूल और हाईस्कूल की पढ़ाई पूरी करना चाहती हैं तो पिताजी उसका विरोध करते हैं, ''लड़कियों का अधिक पढ़ना-लिखना ठीक नहीं होता, नौकरी तो उन्हे करनी है नहीं। घर-बार सँभालना हैं। चिट्ठी-पत्री लिखना-बाँचना जान नई, बस काफी है।''[4] यहाँ नारी शिक्षा के प्रति उदासीनता पाई जाती हैं। 'पहली घटना', 'रास्ते', 'नदी की राह में', 'एक गाँव की अंतःकथा', 'सरजू ब्रह्म के गाँव में', 'मनबोध मउआर'आदी कहानियों में भी नारी शिक्षा की स्थिती का यथार्थ चित्रण हुआ हैं। 'पहली घटना'कहानी की नायिका विधवा मीना में शैक्षिक चेतना पाई जाती है। वह आगे पढ़ना चाहती हैं परंतु उसका भाई और उसके घरवालें इसका विरोध करते हैं। तब विधवा मीना कहती है, ''पढ़ाई का महत्व सिर्फ जजमेंट लिखने तक ही नहीं होता है, भैया!''[5] 'रास्ते'कहानी में भी शैक्षिक चेतना का वर्णन आया हैं।

उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि ग्रामों में नारी शिक्षा के प्रति उदासीनता दिखाई देती हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि गाँवों में नारी का पढ़ना-लिखना उसके शादी के लिए बाधा माना जाता हैं। ग्रामों में उच्चजातियों के दबाव, बुजुर्गों के दबाव एवं माता-पिता के दबाव, रूढ़िप्रिय मानसिकता, गरीबी के कारण नारी उच्च शिक्षा से वंचित रहती हैं। इसका सजीव चित्रण मिथिलेश्वर के कथा साहित्य में हुआ हैं।

- ग्रामीण महिला उद्यमिता के प्रमुख क्षेत्र:

1) कृषि आधारित उद्यम - डेअरी, पशुपालन, मुर्गीपालन, मशरूम उन्पादन, मधुमक्खी पालन आदी।
2) कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योग - सिलाई-कढ़ाई, बुनाई, हस्तशिल्प, अगरबत्ती, मोमबत्ती, टोकरी निर्माण आदी।
3) खाद्य प्रसंस्करण - आचार, पापड़, मसाले, जैम, बाजरा व स्थानिय अनाज से उत्पाद।
4) सेवा क्षेत्र - ब्यूटी पार्लर, टिफिन सेवा, आंगनवाड़ी, क्रेच सेवाएँ, डिजिटल सेवाएँ ।
5) स्वयं सहायता समूह - सामुहिक बचत, ऋण सुविधा और समुह आधारित उद्यम।

- मिथिलेश्वर के साहित्य में ग्रामीण महिला उद्यमिता और सामाजिक परिवर्तन के मुख्य बिंदू:

1) आत्मनिर्भरता और संघर्ष - मिथिलेश्वर की नायिकाएँ केवल पिड़ित नहीं बल्कि संघर्षशील हैं जो घर के कार्यों से आगे बढ़कर आर्थिक गतिविधियों में शामिल होकर आत्मनिर्भरता की मिसाल पेश करती हैं।
2) रूढ़िवादिता के विरूद्ध विद्रोह - 'तिरिया जनम' और अन्य कहानियों के माध्यम से लेखक ने बाल-विवाह, बेमेल विवाह, घरेलु हिंसा और लिंगभेद के विरूद्ध सशक्त आवाज उठाई हैं।
3) सामाजिक पुनर्गठन - 'माटी कहे कुम्हार से' और अन्य रचनाओं में नारियों के द्वारा अन्याय का विरोध और शिक्षा के माध्यम से सामाजिक संरचना की संभावनाएँ रेखांकित की गई हैं।
4) परिवेशगत यथार्थ - ग्र ामीण जीवन के अंतर्विरोधों, सडीगली परंपराओं को तोडकर नए और आधुनिक विचारोंवाली महिला की स्थापना की गई हैं।
5) आर्थिक स्वतंत्रता और सशक्तिकरण - उद्यमशिलता ग्रामीण महिलाओं को वित्तिय रूप से स्वतंत्र बनाती हैं जिससे परिवार और समुदाय में उनकी स्थिति मजबुत होती हैं।
6) सामाजिक रूढ़ियों का अंत - घर से बाहर काम करने और व्यवसाय चलाने से महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोन में बदलाव आता हैं।
7) निर्णय लेने में भूमिका - आर्थिक भागीदारी के कारण घर के फैसलों (बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ) में महिलाओं की भागीदारी बढ़ती हैं।
8) गरीबी में कमी - लघु उद्योगों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन होता है, जो ग्रामीण गरीबी को दूर करनें में सहायक हैं।
9) कौशल विकास - महिला उद्यमी नए कौशल, तकनीक और आत्मविश्वास सीखती हैं जिससे उनका व्यक्तित्व विकास होता हैं।

**निष्कर्ष:**

मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण महिला का चित्रण बहुत यथार्थवादी और संवेदनशील हैं। वे गाँव की स्त्री को न तो आदर्श देवी बनाते है, न ही सिर्फ बेबस शिकार-बल्कि संघर्ष करती हुई चुपचाप सहन करने वाली और हालात को समझने वाली इंसान के रूप में दिखाते हैं। ग्रामीण महिला उद्यमिता केवल आर्थिक सशक्तिकरण का माध्यम नहीं हैं बल्कि यह एक सामाजिक परिवर्तन का भी कारण बन रही हैं। यह महिलाओं को सशक्त करती हैं और समाज में सकारात्मक बदलाव की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अगर सरकार और समाज मिलकर इन्हें अधिक समर्थन दे, तो महिलाएँ अपने समुदायों में और अधिक योगदान दे सकती हैं। इस अध्ययन से यह निष्कर्श निकलता है की भारतीय महिला उद्यमी अपने आप में

एक मिसाल हैं। वह अपने उद्यम गुणों एवं कौशल के दम सफलतापूर्वक व्यवसाय संचालित कर रहीं हैं। अपने परिवार को भी संभाल रहीं हैं। उसने एक महिला के रूप में अपने परिवार व समाज में और एवं महिला उद्यमी के रूप में अपने व्यवसाय में एक बेहतरीन संतुलन बना रखा हैं। वह अपने घर परिवार को साथ लेकर सफलतापूर्वक अपने व्यवासाय को बढ़ रहीं हैं और स्वयं को स्थापित करके व्यवसाय में सफलता का परचम लहरा रहीं हैं। एक सक्षम, शिक्षित गुणों से भरपूर महिला को स्वयं का व्यवसाय करने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। सरकार द्वारा महिला उद्यमी को विकसित करने हेतु अनेक योजना व कार्यक्रम संचालित किए जा रहें हैं, जो मुख्य रूप से महिला पर केंद्रित हैं। महिला उद्यमी द्वारा व्यवसाय संचालन में वित, स्वास्थ, विपणन, पारिवारिक समस्याओं जैसी अनेक समस्याओं का सामना किया जा रहा हैं। सरकार द्वारा समय-समय पर महिला उद्यमी हेतू दिशानिर्देश निकले जाने चाहिए ताकि सशक्त राष्ट्र की सशक्त नारी एक मजबूत शक्ति के रूप में उभर कर सामने आ सकें।

संदर्भ ग्रंथ सुची:

1. 'भोर होने से पहले' मिथिलेश्वर - पेज नं. 68, 14
2. मिथिलेश्वर की यादगारी कहानी पेज नं. 30
3. 'बैसाडिह की चंद्रावती' मिथिलेश्वर पेज नं. 12
4. मिथिलेश्वर 'तिरिया जनम' पेज नं 42
5. प्रा. रामेश्वरलाल रामपुरिया और श्री द्वारकादास गोयल - ग्रामीण समाजशास्त्र, पेज नं. 95,96

# लघुउद्योगो मे महिला नेतृत्व सफलता की कहानियाँ : और प्रेरणादायक उदाहरण

**प्रा.जयश्री जगन्नाथ पवार**
सहाय्यक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
म.वि.प्र.समाजाचे,
कला, वाणिज्य तथा विज्ञान महाविद्यालय,
त्र्यंबकेश्वर, नासिक
मोबाईल क्र8999940349 .
ईमेल आईडी -jaishreejpawar@gmail.com

**सार :-**

महिला एक नाम शक्ती का, एक नाम प्रेरणा का एक नाम करूणा का, हम सभी जानते है की जहाँ एक और महिला नजाकत प्यार की मुरत है, वही उसका एक और भी रूप है एक सशक्त महिला के रूप मे। महिला राष्ट्र के विकास में पुरुषों के समान महत्व रखती है। वर्तमान समय महिलाएँ अपनी प्रतिभा एवं काबलीयत का लोहा हर क्षेत्र मे मनवा रही है।भारत जैसे विकसनशील देश मे हमेशा से ही उदमियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। महिला को भूतनी के रूप मे हमारे रूढीवादी समाज ने सदैव ही बडे प्रेमाने पर उपेक्षित किया है।समाज में महिला को सदैवही एक गृहिणी के रूप में देखा व स्वीकार किया है, जो व्यवसाय करने के लिए बने ही नही है।लेकिन भारत के ग्रामीण क्षेत्र में कुछ महत्वकांक्षी महिलाएँ भी है। भारत के दूर दराज ग्रामीण क्षेत्रो में मे रहने वाली महिलाएँ जो अशिक्षा, अज्ञानता एवं अंधविश्वास की जंजिरो से जकडी हुई है,उनके लिए लघु उद्योग एवं कुटीर उद्योग के प्रसार से एक नई आशा का संचार हुआ है। महिला की उधमिता क्षेत्र में सहभागीता न केवल नही के बराबर रही है , बल की व व्यवसाय करणे का चुनाव करती है, जिसका पुरुष वर्ग चयन नही करता है। एक कुशल गृहिणी से कुशल व्यवसायी बनने का सफर असान नही है, परंतु अब ये तस्वीर बदल रही है। जो महिला रोजगार के लिए घर से बाहर नही जा सकती उनके लिये लघु एवं कुटीर उद्योग सर्वोत्तम पर्याय है। परिवार या गाँव की महिलाएँ ही संघटित होकर कुटीर एवं लघुउद्योगो की शुरुआत कर सकती है।

बीज शब्द : महिला उधमिता, आर्थिक विकास, अंधश्रद्धा, अशिक्षा, औद्योगिक विकास, अर्थव्यवस्था, आत्मनिर्भर, आर्थिक स्वतंत्रता।

**प्रस्तावना :-**

महिला सिर्फ घर की चार दीवारी में कैद होकर रह गई है, परंतु आधुनिक समाज में महिला घर की चारदीवारी से बाहर निकाल कर समस्त कार्य प्रक्रिया में समान भागीदारी दिखा रही है। आज लघु व मध्यम उद्योगों की गुणवत्ता वृद्धि को देखकर महिलायें न सिर्फ उद्यमिता की तरफ आकर्षित हुई है बल्कि अपनी शिक्षा व अनुभव के सहयोग से अपना व्यवसाय का सफलतापूर्वक संचालन भी कर रही है, जिसके परिणाम स्वरूप महिला उद्यमी अपने व्यवसाय को सफल संचालन के साथसाथ ही आर्थिक गतिविधियों को वह - को भी अच्छे से बना रही है। महिला उद्यम वित्तीय अवसरोंिता भारतीय महिलाओं के एक समूह का

प्रतिनिधित्व करती है, जो आर्थिक क्षेत्र में नए रास्ते तलाश रहे हैं, संगठित व्यापार में महिला को अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए प्रवेश देना आजकल आम बात हो गई है। महिला उद्यमिता की औद्योगिक विकास में मुख्य भूमिका रही है। भारत हमेशा से ही उद्यमियों की भूमि रहा है जिन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था में रणनीति रूप से कब्जा किया हुआ है। महिला उद्यमी की बात करें तो वह अन्य महिला उद्यमियों का प्रतिनिधित्व करती है, और उनसे उम्मीद की जाती है कि अनौपचारिक कार्य क्षेत्र में उनकी भूमिका सक्रिय रहे। महिला उद्यमी के उदय में उनका परिवार पर्यावरण एवं परिस्थितियों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। पुरुष प्रधान समाज में किसी नए उद्यम व्यवसाय का निर्माण वह सफलतापूर्वक संचालन एक बड़ी चुनौती है। एक पुरुष प्रधान समाज का डर साहसी ना होना एवं कम आशावादी नजरिया महिला की व्यावसायिक असफलता का मुख्य कारण बना है, और इसमें सबसे प्रमुख कारण व्यवसाय प्रारंभ पूंजी को सुरक्षित रखना है।

जब दुनिया महिला उद्यमिता दिवस मना रही है, तो चर्चाएं अक्सर शायरी संस्थापक को टेक इनवर्टर्स और कॉर्पोरेट नेताओं पर केंद्रित होती है, लेकिन भारत के ग्रामीण इलाकों में ऐसी अगणित कहानीया लिखी जा रही है। जहां महिला या अपनी मेहनत नवाचार और सामूहिक शक्ति से समुदायों को बदल रही है। ग्रामीण महिला उद्यमी भले ही निवेशकों को प्रेजेंटेशन ना देती हो लेकिन खेती पशुपालन और खाद्य प्रणालियों में उनका उधम आत्मनिर्भर निर्भरता और सतत विकास की नई परिभाषाएँ लिख रहा है। यहां कुछ प्रेरक कहानी है जो भारत में जमीन स्तर पर चल रहे महिला नेतृत्व वाले उद्योगों की तस्वीर पेश करती है।

1. **धापू देवी** ठशाला की वह एक श्रेष्ठ विद्यार्थी रहीकभी स्कूल नहीं गई। लेकिन जीवन की पा -। 15 साल पहले वह घूंघट छोड़ बाहर निकली तो वह हालत की मजबूर थी पति के काम में हाथ बटाना था। छह बिटयों और एक बेटे को अच्छा शिक्षा दिलानी थी। भले लोगों ने उपहास उडाया लेकिन उन्होंने सोलर कुकर और वाटर कूलर बनाने वाली इकाई में काम किया। वर्ष 2013 में पति का देहांत हो गया और धापू देवी के जीवन से जैसे धूप चली गई। रिश्तेदारों ने कहा एक साल से बाहर नहीं निकलना। लेकिन धापू देवी इन बाधाओं को स्वीकार नहीं किया। और एक महीने में वह काम पर चली गई। इसी इसी बीच उसकी 1 साल की बेटी बहुत बीमार हो गई तो उसे बचाने में काम आया घर में रखा अमरुद चूर्ण। इस घटना ने उसके जीवन में नई उम्मीद जगा दी और उन्होंने सोचा कि राजस्थान में एक एनीमिया और कुपोषण की समस्या बहुत अधिक है क्यों ना इस दिशा में काम किया जाए। उनका चूरन सुपर ५ नाम से लोकप्रिय है। यह उत्पाद राजस्थान के करीब ४० गांवों में पहुंच चुका है। 20000 बच्चों और 4000 महिलाओं को कुपोषण से लड़ने में मदद कर रहा है उनके द्वारा बनाया गया चूरन। पढ़ लिखना न जाननेवाली धापू देवी के बच्चे आज न केवल अच्छी शिक्षा पा चुके हैं , बल्कि वित्तीय रूप से भी आत्मनिर्भर है।
2. **श्यामा देवी** :उत्तराखंड की एक साधारण महिला जो कभी बच्चों की फीस तक नहीं भर पाती थी। इन्होंने स्वयं सहायता समूह से जुड़कर अपने भाग्य को बदला है। खुद प्रशिक्षित होकर एक सफल आदमी और मास्टर ट्रेनर बन गई है। आईसीएआर के रिपोर्ट के अनुसार आज वह स्वयं का घर और कार रखती है और अन्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बना रही है।

3. **अनीता मुड़ी** -सुख धरती पर उगी समृद्धि बांकुरा के दक्षिण कमालपुर गांव की अनीता मुडी ने वर्षों तक का सफर सफलता और मजबूरी से पलायन का सामना किया 2020 में उन्होंने बंजर जमीन पर मशरुम की खेती का प्रयोग किया। उन्होंने अश्वाशक कदम उठाए जो उनके क्षेत्र में पहली बार हुआ 2022 में पी आर ए डी ए एन के साथ जुड़कर अनीता एक किसान के सामुदायिक नेतृत्व करता बन गई है। उन्होंने महिलाओं को साथ लेकर एक फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी बनाई जिससे सामूहिक विपणन संसाधन साझा करने और सोलर सिंचाई को अपनाया गया। 3 वर्षों में अनीता की आयु 26000 से बढ़कर 2.8 लाख हो गई यानी -980 % की वृद्धि। गांव में मशरुम खेती का दायरा 10 गुना बड़ा और महिलाओं ने बैंक खातो के माध्यम से वित्तीय स्वतंत्रता हासिल की। अनीता का सफर दिखता है कि समूह एकता और जलवायु स्मार्ट तरीकों - से महिलाएं पूरे समुदाय को बदल सकती है।
4. **क्रांति उराव** खाद्य सुरक्षा से आर्थिक स्वावलंबन तक झारखंड के एरिया गांव की क्रांति उराव : कभी परिवार को दो वक्त का खाना भी मुश्किल से दे पाती थी। पी आर एडी ए एन के सहयोग से उन्होंने उन्नत खेती तकनीक के सीखी और सब्जी उत्पादन और पशुपालन को आजीविका का हिस्सा बनाया अब वह हर साल अतिरिक्त 60000 कमा रही है। अब उन्होंने अपनी आय से सोलर सबमर्सिबल पंप पावर टिलर खरीदा और 1 लाख की बचत भी की। आज क्रांति एक बहू आय स्रोत वाली उद्यमी है, जिन्होंने धान कुटाई मशीन खरीद कर गांव के लिए मिलिंग केंद्र स्थापित करने की योजना बनाई है। यह कहानी बताती है की जानकारी बाजार और क्रेडिट मिलने से ग्रामीण महिलाएँ कितना आगे बढ़ सकती है।
5. **सिया मरावी** -जमिनी स्तर पर हरी क्रांति की अगुआ। मध्य प्रदेश के मंडला जिले की सिया मरावी नर्मदा जैविक खाद्य समिति का नेतृत्व करती है। जहां 10 महिलाओं की टीम बायो रिसर्च सेंटर चलाती है। वे द्रव जीवामृत सुपर कंपोस्ट और वर्मी कंपोस्ट बनाकर किसानों (बीआरसी) को भेजती है। जिससे रासायनिक खाद का प्रयोग घट रहा है। उनका सबसे बड़ा नवाचार है सोलर ऑपरेटेड ऑटोमेटेड जीवामृत यूनिट जो केवल चार दिनों में 2000 लीटर जैविक इनपुट तैयार करती है। समूह अब तक 48 टन वर्मी कंपोस्ट और 9500 लीटर जीवामृत भेज चुका है। सिया की वजह से महिलाओं की आई बढी है। बाजारों से सीधा जुड़ाव मिला है और समुदाय टिकाऊ खेती की ओर बढ़ रहा है।
6. **ललिता महाता** -पश्चिम बंगाल के बांकुरा जिले की ललिता महाता गर्व से कहती है "मैं अपने पैसे से बैल खरीदने वाली गांव की पहली महिला हूं। " वे रानीबांध महिला फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी का हिस्सा है। जहां महिलाओं को खेती संबंधी निर्णय लेने बाजार भाव जाने और बिचौलियों के बिना सीधे बिक्री करने में मदद मिलती है। यह सिर्फ आर्थिक बदलाव नहीं था। पहली बार महिलाओं खेती के संसाधनों पर अपना नियंत्रण पाया। ललिता के बैल आज ग्रामीण महिलाओं की बढ़ती आजादी का प्रतीक है।

7. **रेणु देवी** -बकरियों से बदला सैकड़ो परिवारों का भविष्य झारखंड की रेणु देवी जो कभी टीकाकरण से बकरियों की मौत का डर रखती थी। आज 35 पशु सखियों में से एक है वह 2000 से अधिक बकरी पालन को टीकाकरण कृमि नाशन और स्वास्थ्य सेवाएं उनकी सहायता से उरांव जैसी महिलाओं की वार्षिक आय 1 पॉइंट 1. 1 लाख तक पहुंच गई है। रेनू जैसी महिला उद्यमी स्थानीय स्तर पर विशेषज्ञता और भरोसे की प्रणालियां खड़ी कर रही है, जो सच्चे अर्थों में ग्रामीण उद्यमिता है।
8. **बीना देवी** :मुंगेर बिहार की बिना देवी ने घर की चार दिवारी से निकलकर मशरूम की खेती शुरू की उन्होंने 15 00 से अधिक ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षित किया और नारी शक्ति पुरस्कार प्राप्त किया।
9. **मोहिनी** :नासिक, महाराष्ट्र की मोहिनी ने पारंपरिक घानी तकनीक से कोल्ड प्रेस्ड तेल का - व्यवसाय शुरू किया। मात्र10 लाख की पूंजी से शुरू होकर आज उनका व्यवसाय मासिक 1. 7 लख रुपए से अधिक का राजस्व उत्पन्न कर रहा है।
10. **फाल्गुनी नायर** -50 वर्ष की उम्र में अपना कैरियर बदलकर , इन्होंने सौंदर्य उद्योग में ईकॉमर्स - के माध्यम से एक बड़ी कंपनी स्थापित की, जो महिला उद्यमियों के लिए प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत है।

**प्रेरणा के मुख्य बिंदु** :महिला उद्योग के लिए मुख्य प्रेरणा आर्थिक स्वतंत्रता )financial independence), निर्णय लेने की स्वायत्तता )autonomy), और अपने सपनों को साकार करने की इच्छा है। यह उन्हें वीडियो को तोड़कर अपनी पहचान बनाने परिवार के साथ काम का संतुलन )work - life balance) स्थापित करने और आत्मनिर्भर बनकर समाज में आर्थिक विकास में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करती है।

**महिला उद्यमियों के लिए प्रमुख प्रेरणा के कारक:**

- **आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता:** स्वयं के व्यवसाय का मालिक बनना और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता।
- **काम का लचीलापन:** पारिवारिक जिम्मेदारियों और व्यावसायिक जीवन के बीच संतुलन )Work-Life Balance) बनाना।
- **आर्थिक विकास:** अपने परिवार और देश की अर्थव्यवस्था में योगदान देने की इच्छा।
- **आत्मविश्वास और कौशल:** चुनौतियों का सामना कर आत्मविश्वास बढ़ाना और नई चीजों को सीखना।
- **सफलता की मिसालें:** सफल महिला उद्यमी जैसे वंदना लूथरा )VLCC), ऋचा कार )Zivame), और कल्पना सरोज जैसी हस्तियां भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत हैं।
- **सहायता प्रणालियाँ:** Startup India और मुख्यमंत्री महिला उद्यमी योजना जैसी सरकारी पहलों द्वारा वित्तीय सहायता मिलना।

- **आत्मविश्वास** :संसाधनों की कमी के बावजूद द्रोणिक्षा शक्ति से सफलता प्राप्त की। प्रशिक्षण का महत्व ) केवीके :KVK ) और आरसेटी )RSETI ) जैसे संस्थानों से कौशल प्राप्त करना। सहयोग ) समूह के रूप में काम करना :Self-Help Groups) चुनौतियों को काम करता है।

इन प्रेरक कारकों के बावजूद, महिला उद्यमियों को अपनी क्षमता को पहचानकर, कौशल विकास और सही योजना के साथ आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

ये कहानियां सिद्ध करती हैं कि सही मार्गदर्शन और अवसर मिलने पर महिलाएं किसी भी व्यवसाय में सफलता प्राप्त कर सकती हैं। उद्यमिता विकास हेतु सुझाव महिलाओं द्वारा सामना की जा रही समस्याओं : रने में अनेक उपाय व सुझाव शामिल रहे परंतु सबसे प्रमुख उपाय है पुरुष प्रधान समाज द्वारा को दूर क अपनी दृष्टिकोण को बदलने की जा सदैव वही महिला को दोयम दर्जे का माना गया है महिला को विकसित करने के लिएजितनी आवश्यकता कार्यक्रम एवं नीति बनाने समान अवसर प्रदान करने की है उससे कई ज्यादा जरूरी है समाज द्वारा महिला के प्रति अपनी सोच के दायरे को बढ़ाने की।

**उद्देश्य-:**

- सकारात्मक वातावरण प्रदान करना जो महिला को आगे बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित कर सके।
- महिला हेतु जागरूकता कार्यक्रम बनाना एवं उन्हें संचालित करना।
- महिला की शैक्षिक स्तर को ऊंचा उठाना एवं शिक्षण प्रशिक्षण के माध्यम से महिला के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना।
- महिला विकास हेतु सभा सम्मेलन संगोष्ठी का आयोजन समय समय पर किया-जाए ताकि महिला को व्यक्तित्व विकास के साथपूर्वक संचालन हेतु साथ अपने व्यवसाय की सफलता-आवश्यक जानकारी मिल सके।
- महिला को उधम भारत के आर्थिक विकास को गति देने में सबसे महत्वपूर्ण कारक राष्ट्रीय और विदेशी पूंजी आदि में उड़ती है परंतु क्षेत्र करता हूं की राय है कि लघु एवं मध्य होने देश की आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारत के आर्थिक विकास को गति देने में सबसे महत्वपूर्ण कारक राष्ट्रीय और विदेशी पूंजी आदि में वृद्धि है, परंतु क्षेत्र करता हूं की राय है कि लघु एवं मध्य होने देश की आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत में ऐसे बहुत कम उद्योग है जिन पर महिलाओं का स्वामित्व है। भारत में महिला उद्यमिता परंतु अभी भी यह सब काफी सीमित है। दुनिया की लगभग आधी आबादी महिला से बनी है वर्तमान समय में महिला को समाज का बेहतरीन आधार माना गया है भारतीय महिला घर में सजाकर रखा जाने वाला शो पीस नहीं है, बल्कि आधुनिक समाज में महिला ने अपने पैर पर न सिर्फ घर की चार दिवारी में बल्कि चार दिवारी के बाहर है फैला कर अनेक क्षेत्रों में अपना वर्चस्व कायम किया है इन्हें में से एक क्षेत्र है उद्यमिता।

महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने वाले प्रमुख कारकों को निम्नलिखित श्रेणियां में वर्गीकृत किया जा सकता है।

१ (**आर्थिक कारक :** वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करना आई में वृद्धि और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की महिलाओं के लिए आत्मनिर्भर बनने की इच्छा मुख्य प्रेरक है सरकार की ओर से कम ब्याज दर पर लोन सब्सिडी की सुविधा भी सहायक है।

२ (**सामाजिक** - संस्कृत कारक परिवार का सहयोग सामाजिक स्थि :ति में सुधार की आकांक्षा और समाज में अपनी पहचान बनाने की इच्छा महिलाओं को प्रोत्साहित करती है।

३ (**मनोवैज्ञानिक कारक :** खुद का कुछ करने का जुनून आत्मविश्वास जोखिम लेने की प्रवृत्ति और रचनात्मकता उन्हें उधमाशीलता की ओर लाते हैं।

४ (**शिक्षा और प्रशिक्षण :** शिक्षा तकनीक विज्ञान और व्यावसायिक कौशल विकास कार्यक्रम महिलाओं को अपना व्यवसाय चलाने के लिए सक्षम बनाते हैं।

५ (**सरकारी पहल :** स्टार्टअप इंडिया जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता महिला उद्योग के लिए दी जाती है।

**निष्कर्ष**:-

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय महिला उद्यमी अपने आप में एक मिसाल है। वह अपने उद्यम गुणो एवं कौशल के दम पर न केवल सफलतापूर्वक व्यवसाय संचालित कर रही है, बल्कि अपने नारी शक्ति गुणो से अपने परिवार को भी संभाल रही है। उसने एक महिला के रूप में अपने परिवार व समाज में और एक महिला उद्यमी के रूप में अपने व्यवसाय में एक बेहतरीन संतुलन बना रखा है। वह अपने घर परिवार को साथ लेकर सफलतापूर्वक अपनी व्यवसाय को न सिर्फ आगे बढ़ा रही है बल्कि स्वयं को स्थापित कर व्यवसाय में सफलता का परचम लहरा रही है भारत में बड़ी संख्या में महिला उद्यमी है और किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के विकास में महिला उद्यमी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है अगर हम बात करें वर्तमान व्यवसायिक जगत की तो महिला उद्यमी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है वह अपने काम और अपने मात्राओं के बीच संतुलन स्थापित कर सकते में पर्याप्त रूप से सक्षम है एक सक्षम शिक्षित गुना से भरपूर महिला को स्वयं का व्यवसाय करने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए सरकार द्वारा महिला उद्यमी को विकसित करने हेतु अनेक योजना व कार्यक्रम संचालित किया जा रहे हैं जो मुख्य रूप से सिर्फ महिला पर केंद्रित है।

**साहित्यिक संदर्भ :-**


- सैदपुर एयरटेल 2012 - उद्यमिता के संदर्भ हम अगर बात करें तो इसमें भी पुरुषों का ही वर्चस्व रहा है परंतु अब समय एवं मान्यताएं बदल रही है यह महिला को पुरुष के सामान्य एक सफल आदमी के रूप में देख रही है भारत के कुल युद्ध में उद्यमियों में महिला उद्यमी 10% का प्रतिनिधित्व कर रही है यह प्रतिशत साल दर साल बढ़ रहा है।
- २ नरेंद्र कुमार झा (2012 - प्रत्येक देश की अर्थव्यवस्था महिला विकास महिला सशक्तिकरण पर बल दे रही है जो महिला हेतु रोजगार के दरवाजे खोलकर उसे स्वयं का व्यवसाय खोलने हेतु प्रेरित कर रही है। जिसके परिणाम स्वरूप महिला अपनी गृहिणी वाली छवि से बाहर निकाल कर एक बहु आयामी पहचान बन रही है वह अपने

परिवार के साथसाथ अपनी व्यवसाय का प्रबंध कर व्यवसाय का सफलतापूर्वक संचालन - रही कर है। आज बड़ी संख्या महिलाएं व्यवसाय के माध्यम से आर्थिक और आत्मनिर्भर बनने के अवसर तलाश रही है।

- शाहएच 2012 - आर्थिक विकास का गति देने में महिला उद्यमी की मुख्य भूमिका रही है। इस पर रखने हेतु मजदूरों के एक क्षेत्र विशेष पर प्रकाश डाला गया जिसमें कार्य श्रमिक वर्ग का कौशल उल्लेखनीय है इस सफलता के तहत उपक्रम की सफलता को अभिसारी अविश्वसनीय रूप से देखा गया है। हम इन समस्याओं का समाधान कर महिला को सशक्त एवं आत्मनिर्भर की राह पर अग्रसर कर सकते हैं।
- https://www.startupindia.gov.in
- https://msme.gov.in

# सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ और उनके समाधान: महिला उद्यमियों के अनुभव

**सौ. शीतल लिंडायत**
एम.एस.पी. मंडळ
बलभीम आर्ट्स,सायन्स अँड कॉमर्स कॉलेज, बीड जिल्हा बीड (एम. एस)

**सारांश**

भारत में पिछले कुछ वर्षों में महिला उद्यमिता तेजी से बढ़ रही है। आज कई महिलाएँ छोटे-छोटे व्यवसायों से लेकर बड़े स्टार्ट-अप तक चला रही हैं और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं। फिर भी उनके सामने कई सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ मौजूद हैं। परिवार की जिम्मेदारियाँ, लिंग भेदभाव और समाज की पुरानी सोच अक्सर महिलाओं के आत्मविश्वास को प्रभावित करती हैं और उन्हें व्यवसाय शुरू करने या आगे बढ़ाने से रोकती हैं [3]।

कुछ अध्ययनों में यह पाया गया है कि ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों की महिलाओं को शिक्षा की कमी, संसाधनों की कमी और सामाजिक दबाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है [1]। दूसरी ओर, सरकारी योजनाएँ जैसे मुद्रा योजना और स्टैंड-अप इंडिया जैसी पहल महिलाओं को आर्थिक सहायता और अवसर प्रदान कर रही हैं [2]।

इस शोध पत्र में विभिन्न अध्ययनों के आधार पर यह समझने का प्रयास किया गया है कि महिला उद्यमियों को किन सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और इन समस्याओं को दूर करने के लिए कौन-कौन से उपाय प्रभावी हो सकते हैं।

## प्रस्तावना

आज का भारत महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और क्षमता का साक्षी बन रहा है। पहले जहाँ महिलाओं को मुख्य रूप से घरेलू जिम्मेदारियों तक सीमित माना जाता था, वहीं आज वे व्यापार, उद्योग और नवाचार के क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से छोटे-छोटे व्यवसाय शुरू कर रही हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में कई महिलाएँ स्टार्ट-अप और ऑनलाइन व्यवसाय चला रही हैं [3]।

फिर भी यह सफर आसान नहीं है। सामाजिक दबाव, परिवार की अपेक्षाएँ और समाज में मौजूद रूढ़ियाँ कई बार महिलाओं के आत्मविश्वास को कम कर देती हैं। कई महिलाएँ व्यवसाय शुरू करना चाहती हैं, लेकिन संसाधनों की कमी और सामाजिक समर्थन के अभाव में वे आगे नहीं बढ़ पातीं [1]।

इसी कारण महिला उद्यमिता के सामने आने वाली सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं को समझना और उनके समाधान ढूँढ़ना आवश्यक है।

## साहित्य समीक्षा

महिला उद्यमिता से संबंधित विभिन्न अध्ययनों में महिलाओं के अनुभवों और चुनौतियों को विस्तार से समझाया गया है।

IJRAW के अध्ययन में यह बताया गया है कि कई महिलाओं को पारिवारिक जिम्मेदारियों, शिक्षा की कमी और सामाजिक दबाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जो उनके व्यवसायिक विकास को प्रभावित करती हैं [1]।

JETIR के अध्ययन में सरकार की भूमिका पर विशेष ध्यान दिया गया है। इसमें बताया गया है कि विभिन्न सरकारी योजनाएँ और वित्तीय सहायता कार्यक्रम महिलाओं को व्यवसाय शुरू करने और उसे आगे बढ़ाने में मदद कर रहे हैं [2]।

Inspira अध्ययन के अनुसार कई महिलाएँ आत्मविश्वास, धैर्य और नेतृत्व क्षमता जैसे गुणों के कारण उद्यमिता के क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं, लेकिन उन्हें बाजार तक पहुँच और वित्तीय संसाधनों की कमी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है [3]।

Social Research Foundation के अध्ययन में यह पाया गया कि सामाजिक रूढ़ियाँ और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ महिला उद्यमिता की प्रगति में महत्वपूर्ण बाधा बनती हैं [4]।

## उद्यमिता में सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ

### सामाजिक बाधाएँ

महिलाओं के सामने आने वाली सामाजिक बाधाओं में सबसे प्रमुख है परिवार की जिम्मेदारियाँ। बच्चों की देखभाल, घरेलू काम और परिवार की अपेक्षाएँ महिलाओं के समय और ऊर्जा का बड़ा हिस्सा ले लेती हैं, जिससे उनके लिए व्यवसाय पर पूरा ध्यान देना कठिन हो जाता है [4]।

इसके अलावा कई बार महिलाओं को वित्तीय संस्थानों से ऋण प्राप्त करने में भी कठिनाई होती है, क्योंकि समाज में अभी भी यह धारणा मौजूद है कि पुरुष व्यवसाय को बेहतर तरीके से संभाल सकते हैं [1]।

### सांस्कृतिक बाधाएँ

सांस्कृतिक बाधाएँ भी महिला उद्यमिता को प्रभावित करती हैं। समाज में लंबे समय से चली आ रही धारणाएँ जैसे "महिलाओं का स्थान केवल घर तक सीमित है" महिलाओं के आत्मविश्वास को कम कर देती हैं।

कई अध्ययनों में यह पाया गया है कि महिलाओं को अक्सर बाजार में गंभीरता से नहीं लिया जाता और उन्हें अपनी क्षमता साबित करने के लिए पुरुषों की तुलना में अधिक मेहनत करनी पड़ती है [3]।

### बाधाओं के समाधान

**सरकारी योजनाएँ** - भारत सरकार ने महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं। मुद्रा योजना, स्टैंड-अप इंडिया और प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम जैसी योजनाएँ महिलाओं को वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्रदान करती हैं [2]।

इन योजनाओं के माध्यम से कई महिलाओं ने छोटे-छोटे व्यवसाय शुरू किए हैं और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनी हैं।

**प्रशिक्षण और जागरूकता**

प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम महिलाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कौशल विकास केंद्रों और विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाएँ व्यवसाय से जुड़ी नई जानकारी और कौशल सीख सकती हैं [3]।

इससे उन्हें अपने व्यवसाय को बेहतर तरीके से संचालित करने में मदद मिलती है।

**सामुदायिक सहयोग**

सामुदायिक सहयोग भी महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्वयं सहायता समूहों और सामाजिक संगठनों के माध्यम से महिलाएँ एक-दूसरे का सहयोग करती हैं और अनुभव साझा करती हैं [2]।

इस प्रकार का सहयोग महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक दोनों प्रकार का समर्थन प्रदान करता है।

**निष्कर्ष**

महिला उद्यमिता आज भारत के सामाजिक और आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। हालाँकि महिलाओं को अभी भी कई सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है, लेकिन सरकारी योजनाएँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम और सामुदायिक सहयोग इन चुनौतियों को कम करने में मदद कर रहे हैं [1][2][3]।

यदि समाज में महिलाओं के प्रति सकारात्मक सोच विकसित की जाए और उन्हें पर्याप्त अवसर और समर्थन दिया जाए, तो वे न केवल सफल उद्यमी बन सकती हैं बल्कि देश के आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

**संदर्भ सूची**

[1] International Journal of Research in Academic World (IJRAW) – महिला उद्यमियों के सशक्तिकरण में आने वाली बाधाएँ एवं चुनौतियाँ.

[2] Journal of Emerging Technologies & Innovative Research (JETIR) – महिला उद्यमिता और सरकारी भूमिका: वर्तमान परिदृश्य भारत के संदर्भ में.

[3] International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS / Inspira ) – अवसर और चुनौतियों से भरी महिला उद्यमिता.

[4] Social Research Foundation – महिला उद्यमी: गुण, समस्याएँ एवं समाधान.

# नई शिक्षा नीति 2020 और व्यावसायिक शिक्षा: लडकियों के लिए अवसर और दिशाएँ

**महेश खांडवे**
शोध छात्र- हिंदी विभाग,
बलभीम महाविद्यालय, बीड (महाराष्ट्र)
Email: maheshkhandve206@gmail.com

**सारांश :**

किसी भी राष्ट्र की प्रगति उस देश की महिलाओं की स्थिति और उनकी कार्यक्षमता पर निर्भर करती है। नई शिक्षा नीति 2020 इसी विचार को धरातल पर उतारने का एक क्रांतिकारी प्रयास है। शिक्षा क्रांति के इस दौर में बुनियादी शिक्षा का महत्व भी बहूत बढ़ गया है। व्यावसायिक शिक्षा राष्ट्र के शिक्षा सम्बन्धी प्रयास का एक महत्वपूर्ण तत्व है। व्यावसायिक शिक्षा की स्वीकृति देश के आर्थिक एवं सामाजिक वृद्ध को प्रभावित करणे में उल्लेखनीय है। नई शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा की पारंपारिक परिभाषा को बदलते हुए व्यावसायिक शिक्षा को मुख्य धारा की पढ़ाई के साथ एकीकृत कर दिया है। व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education) एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जो लड़कियों को विशिष्ट व्यवसायों, नौकरियों या करियर के लिए व्यावहारिक कौशल (Practical Skills) और तकनीकी ज्ञान प्रदान करती है। यह सीधे रोजगार क्षमता को बढ़ाती है, जिसमें आईटी, होटल मैनेजमेंट, आतिथ्य, हस्तकला, मैकेनिक जैसे क्षेत्र शामिल है। नई शिक्षा नीति (NEP2020) लड़कियों के लिए व्यावसायिक शिक्षा महज एक विकल्प नही, बल्कि सशक्तिकरण के एक सशक्त माध्यम के रूप में प्रस्तूत करती है। इसका मुख्य उद्देश्य लड़कियों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना और उन्हें 21 वी सदी के कौशल से लैस करना है, इस शिक्षा नीति के अनुसार लड़कियों को सुरक्षित और व्यवहारिक पहँचान प्रदान की जाएगी।

**बीज शब्द :** नई शिक्षा नीति 2020, व्यावसायिक शिक्षा, कला-कौशल, डिजिटल शिक्षा, नैतिक शिक्षा, सर्वांगीण विकास, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लिंग-समावेश, परिवर्तन आदि।

**प्रस्तावना :**

इक्कीसवी सदी में राष्ट्रो की प्रगति और विकास का मूल आधार उनकी शिक्षा संपदा ही होगी। यह आधार जितना सशक्त, समेकित, सजगह तथा परिवर्तनों के प्रति सतर्क और गतिशील होगा, राष्ट्र की प्रगति में लडकियों की भागीदारी भी उतनी ही विस्तृत और सर्वव्यापी होगा। इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए भारत की प्राथमिक आवश्यकता हर लडकी तक गुणवत्तापूर्ण तथा उपयोगी कौशलों की ग्राह्यता से परिपूर्ण

शिक्षा पहँचाने की होगी। ऐसे में नई शिक्षा नीति 2020 देश के लिए सकारात्मक संभावनाओं के द्वारा खोलती है। नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है, जिससे लड़कियों को कौशल आधारित प्रशिक्षण के अधिक अवसर मिलते है। नई शिक्षा नीति 2020 लडकियों के लिए व्यावसायिक शिक्षा के साथ जोडकर आत्मनिर्भरता के नए द्वार खोलती है। आज के बदलते समय में शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं बल्कि सशक्तीकरण और आत्मनिर्भरता का आधार बन चुकी है। नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला और कौशल आधारित बनाने पर जोर दिया गया है, जिससे लड़कियों के लिए नए अवसर उत्पन्न हुए है। कौशल आधारित और व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से लड़कियाँ विभिन्न क्षेत्रों- जैसे तकनीक, स्वास्थ्य, कृषि, उद्यमित आदि में आगे बढ़कर आत्मनिर्भर बन सकती है।

लड़कियों के लिए यह शिक्षा नीति एक ऐसे 'कौशल-आधारित' समाज की रचना करती है, जहाँ वह केवल डिग्री धारक नही बल्कि आत्मनिर्भर पेशेवर बनकर उभरेंगी। कक्षा 6 में ही इंटर्नशिप और व्यावसायिक प्रशिक्षण की शुरूवात, लड़कियों को तकनीकी क्षेत्रों, कोडिंग, डेटा साइंस से लेकर आधुनिक कृषि और कला जैसे विविध क्षेत्रों में अपनी दिशा चुनने की आजादी देती है। यह नीति लैंगिक समानता को बढ़ावा देकर समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य करती है।

**नई शिक्षा नीति-2020 और व्यावसायिक शिक्षा :-**

किसी देश के विकास में उस देश की शिक्षा व्यवस्था का बहुत अत्याधिक महत्व होता है और अगर उस शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को व्यवसाय दिलाना और उनको जीविकोपार्जन योग्य बनाना हो तो उस देश का विकास निश्चित होता है। सामान्यत: शिक्षा को व्यवसाय के साथ जोड़ना ही व्यवसायिक शिक्षा कहलाती है, परन्तु व्यावसायिक शिक्षा छात्रों को व्यवसाय चुनने एवं व्यवसाय संबंधित योग्यता प्राप्त कराने का अवसर प्रदान करती है।

व्यावसायिक शिक्षा हमारे भारतीय शिक्षण के लिए एक महत्त्वपूर्ण प्रेरणादायक स्त्रोत है। भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ को बदलने में व्यावसायिक शिक्षा ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति में जो सबसे ज्यादा ध्यान लगाया है तथा सबसे अधिक परिवर्तन किया है, वह व्यावसायिक शिक्षा है। व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education) आधुनिक युग की नई माँग है। व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए इसे नई शिक्षा नीति 2020 में गुणवत्तापुर्ण शिक्षा का स्थान दिया गया है। नई शिक्षा नीति के एक घटक के रूप में भारत में व्यावसायिक शिक्षा एक नई शिक्षा प्रणाली का प्रस्ताव करती

है, जिससे युवाओं को नौकरी की दुनिया के नए क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए आवश्यक दक्षताओं से लैस करने का प्रयास किया है। नई शिक्षा नीति 2020 हमारे छात्रों को 21 वी सदी के आधुनिक कौशल से सशक्त बनाने पर केंद्रित है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मूल उद्देश्य व्यावसायिक शिक्षा से जुडे सामाजिक पदानुक्रम पर काबू पाना, गुणवत्तापूर्ण व्यावसायिक शिक्षा को चरणबद्ध तरीके से सामान्य शिक्षा के साथ एकीकृत करना, कम उम्र में ही व्यावसायिक अनुभव प्रदान करना, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को पॉलिटेकनिक, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई), स्थानीय उद्योगों आदि के साथ सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना, ताकि छात्रों को कार्यस्थल पर अनुभव और प्रशिक्षण मिल सके। नई शिक्षा नीति व्यावसायिक शिक्षा को भारतीय शिक्षा प्रणाली की रीढ मानती है।

**नई शिक्षा नीति 2020 और व्यावसायिक शिक्षा: लडकियों के लिए प्रमुख अवसर और दिशाएँ :**

नई शिक्षा नीति (NEP2020) लड़कियों के लिए व्यावसायिक शिक्षा को सामान्य शिक्षा के साथ एकीकृत कर कक्षा ६ से ही इंटर्नशिप और कौशल विकास (जैसे- कोडिंग, डेटा विश्लेषण, उद्यमिता) के द्वारा खोलती है। यह नीति लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाने, तकनीकी क्षेत्रों में भागीदारी बढ़ाने और आर्थिक स्वतंत्रता के लिए विशेष छात्रवृत्ति और सुरक्षित वातावरण प्रदाण करती है। नई शिक्षा नीति अब लड़कियों को तकनीकी, प्लंबिंग ऑटो मैकेनिक, रसद और ग्रीन कंस्ट्रक्शन जैसे क्षेत्रों में भी प्रशिक्षण के लिए प्रेरित कर रही है, जो आधुनिक युग में लड़कियों को सक्षमता की ओर बढ़ाती है। नई शिक्षा नीति में अब लड़कियों के लिए कक्षा 6 से ही कौशल आधारित पाठ्यक्रम की शुरूवात की गई है। इससे लड़कियाँ प्रारंभ से ही विभिन्न व्यवसायों का अनुभव प्राप्त कर सकती है। व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से लड़कियाँ केवल नौकरी खोजनेवाली नहीं, बल्कि खुद का बिजनेस खडा करके नौकरी देनेवाली भी बन सकती है। आज लड़कियाँ प्रारंभ से ही विभिन्न व्यवसायों का अनुभव प्राप्त कर रही है। स्वास्थ्य सेवाएँ, सिलाई, कृषि, फैशन डिजइनिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है।

आज लडकियाँ पारंपारिक क्षेत्रों से आगे बढ़ सकती है। DIKSHA और SWAYAM जैसे ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म वर्चुअल सिमुलेशन और ऑनलाईन कौशल पाठ्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों की लडकियों के लिए शिक्षा सुलभ बना रहे हैं। डिजिटल शिक्षा के कारण लड़कियों को घर बैठे प्रशिक्षण की सुविधा विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के लड़कियों को दी जा रही है। ग्रामीण क्षेत्रों की लड़कियों के लिए छात्रवृत्ति और विशेष योजनाएँ भी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। नई शिक्षा नीति में लिंग-समावेशी कोष की स्थापना एक ऐतिहासिक पहल है। नई शिक्षा नीति (NEP2020) का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा को समावेशी, कौशल आधारित

और रोजगारोन्मुख बनाना है। इस नीति में व्यावसायिक शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है, जिससे लड़कियों को आत्मनिर्भर और सशक्त बनने के अधिक अवसर प्राप्त होते है। आज की दिशा और अवसर केवल दफ्तरों तक सीमित नहीं है। व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से लड़कियाँ उद्यमिता और नवाचार के क्षेत्र में नेतृत्व करने के लिए तैयार हो रही है। यह शिक्षा नीति न केवल शिक्षा के अंतर को कम करने का संकल्प लेती है, बल्कि लड़कियो को 'आत्मनिर्भर भारत' की सशक्त पहचान बनाने का सुनहरा अवसर और सही दिशा भी प्रदान करती है।

**निष्कर्ष :-**

नई शिक्षा नीति 2020 में लड़कियों के लिए विशेष प्रावधानों को देखते हुए सहज ही कहा जा सकता है कि यह शिक्षा नीति लड़कियों के लिए अति उपयोगी सिद्ध होगी। नई शिक्षा नीति लड़कियों को केवल डिग्रीधारी नही, बल्कि 'हुनरमंद' बनाकर आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सक्रीय भागीदारी के लिए प्रेरित करती है। इस शिक्षा नीति के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा लड़कियों के लिए सशक्तिकरण का माध्यम बन सकती है। यह नीति उन्हें केवल शिक्षा ही नहीं बल्कि कौशल, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास भी प्रदान करती है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची :-**

1. नए भारत की नीव राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – इंजीनियर अवनीश कुमार सिंह
2. नई शिक्षा नीति 2020 और मेरे विचार – जितेन्द्र यादव
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 रचनात्मक सुधारों की ओर – पंकज अरोडा एवं उषा शर्मा
4. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं बालकों का नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009: एक विधिक अध्ययन – डॉ. उग्रसेन वर्मा
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – डॉ. अरविन्द कुमार यादव
6. NEP-2020.pdf(ncert.nic.in)
7. https://sstmaster.com/vocational-education-hindi
8. https://www.education.gov.in

# नारी चेतना विमर्षमहादेवी वर्मा के साहित्यिक प्रदेय में :

**डॉ .सुनीता यादव**
सहायक प्राध्यापक एवं प्रभारी प्राचार्य
नेताजी सुभाषचंद्र बोस शासकीय स्नातक महाविद्यालय इछावर सीहोर, म.प्र.

नारीचेतना की वैचारिकता सामाजिक यथार्थ का एक बेहद संजीदा स्वरूप है। यह समकालीन - समय और समाज का यथार्थ रूप है। इसके स्पष्ट स्वरूप को समझने के लिए इसके वैचारिक आधार को स्पष्ट करना आवश्यक है। नारीवधारणा को कैसे समझा जाय यह चेतना के स्वरूप और चेतना की अ- स्वभाव पर आश्रित है। साहित्य के स्पष्ट परिप्रेक्ष्य से ही चेतना और संघर्ष का स्वरूप निर्धारित होता है। चेतना की इस दिशा में किए गए प्रयास से ही संघर्ष की राह निर्मित होती है। जहाँ तक नारीचेतना की - वाल है तो इसके निर्माण में कार्य करने वाली मुख्यतः हमारे सामने दो धाराएँ हैं। पहली वह वैचारिकी का स जो प्रकारांतर से चली आ रही है। दूसरी धारा समकालीन विचारों की है, जिसने नारीचेतना को विकसित - होने का अवसर दिया। यह समय नारीई भी चेतना सम्पन्न समय है। यह समझना की जरूरी है कि को- साहित्यिक संघर्ष अपने समय और समाज की मान्यताओं के विरूद्ध यदि खड़ा होता है तो उसकी कोई न चेतना के संब-कोई पृष्ठभूमि भी होती है। उसी पृष्ठभूमि पर उस संधर्ष का स्वरूप तैयार होता है। नारींध में यह सवाल हो सकता है कि आखिरकार वह कौनके सवाल का वैचारिक समर्थन चेतना-सी बात है जो नारी- कर उसे परम्परागत विचारों और धार्मिक रूढ़ियों के विरूद्ध खड़ा होने के लिए सबल बनाती रही है। महोदेवी वर्मा ने लिखा है, ‘‘भारतीय समाज में जिस अनुपात में नरी जागृत हो सकी, उसी के अनुसार अपनी सनातन सामाजिक स्थिति के प्रति उसमें असंतोष भी उत्पन्न होता जा रहा है।‘‘1 यहाँ जिस असंतोष की बात की जा रही है वह असंतोष ही इस संघर्ष के निर्माण में है। लेकिन यह समझने की भी आवश्यकता है कि जिस सामाजिक परिवेश में इसकी बुनियाद रखी गयी वहाँ इसके लिए बहुत कम जगह थी। सबसे पहले इसकी जड़ को समझना जरूरी है। इस संदर्भ में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि उपनिवेशवाद का विरोध करने वाले लोगों ने जब राजनीतिक समानता और स्वतंत्रता की बात की तो उसी से इस तरह के चेतना और संधर्ष के विचार पैदा हुए। उपनिवेशवाद के विरोध मंे जिस राजनैतिक नैतिकता के सवाल को उठाया उसका प्रभाव अपने समाज पर भी बहुत गहराई से पड़ा। इस आधार पर, और नारीचेतना के - परिप्रेक्ष्य में यह कहा जा सकता है कि अगर नवजागरणकालीन आंदोलन की पृष्ठभूमि नहीं बनती, राष्ट्रवादी विचार का उदय नहीं होता, राजनैतिक अधिकार के प्रति जागरूकता पैदा नहीं होती तो समाज सुधार का शायद ऐसा रूप नहीं होता। मतलब यह कि इसकी बुनियाद में भी अंग्रेजी राज का विरोध है। इस विरोध से ही पितृसŸाा के विरोध का रास्ता शुरू हुआ। तत्कालीन समाज व्यवस्था से इसे हर कदम पर विरोध झेलना पड़ा। महादेवी वर्मा ने सामाजिक एकरूपता का क़हाका़ तैयार किया। उन्होंने नरीद का पुरूष भे- समाप्त कर सम्यक समाज को स्थापित करने की ओर सकारात्मक कदम बढ़ाया। उन्होंने लिखा है‘हमें न किसी पर जय चाहिए, न किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुता चाहिए, न किसी का प्रभुत्व। केवल अपना स्थान, अपना स्वत्व।’ इस ‘स्थान’ और ‘स्वत्व’ के रूप में महादेवी वर्मा पुरूषसमाज से कई रियायतें - माँगती हैं। जैसे‘मानसिक और शारीरिक विकास के लिए विस्तृत स्वाधीनता’, जैसे ‘अन्याय को प्रश्रय न देना’, ‘गृह की दीवारों के बाहर के कार्य क्षेत्र’, ‘पुरूषों के समाज ही नागरिक अधिकार’, ‘सम्पत्ति का

स्वामित्व', 'शासनव्यवस्था में स्थान-' इत्यादि। महादेवी 'एकनिष्ठ विवाह' के विरूद्ध बिलकुल नहीं हैं। महादेवी साफ तौर पर कहती हैं, 'बेड़ियों के साथ ही उसी अस्त्र से बंदी यदि पैर भी काट डालेगा तो चेतना की आशा, दुराशा मात्र रह जाएगी।' बेड़ियाँ काटो, अपने पैर नहीं, अपनी स्वाधीनता के साथ अपने घर का विखंडन मत करो।''2

महादेवी वर्मा ने नारी विमर्श की वैचारिकी को भी हमारे सामने रखा है जिसका बहुत अच्छा विश्लेषण दूधनाथ सिंह ने किया है। लिखते हैं कि ''प्राचीन स्त्रियों के बारे में महादेवी जब लिखती हैं तो उनकी उच्चता और पुरूष के सामने उनकी बराबरी के गौरवअलग -बार अलग-उल्लेख वे बार भाव का-प्रसंगों में करना नहीं भूलतीं। वे लिखती हैं, 'प्राचीन आर्यनारी के सहधर्मचारिणी तथा सहभागिनी के रूप में - कहीं भी पुरूष का'अंधानुसरण' या अपने आपको-'छाया बना लेने' का आभास नहीं मिलता।' इस 'अंधानुसरण' और 'छाया बना लेने' जैसे दुर्गुणों को आगे इस आलेख में वे विकसित और विश्लेषित करती हैं। इसी संदर्भ में वे याज्ञवल्क्य मैत्रेयी संवाद और मैत्रेयी द्वारा-'मृत्योर्मामृतम गमय' वाले कथन तथा 'रघुवंश' में सीता द्वारा अपने आत्मसम्मान और अस्मिता के संबंध में कहे गये श्लोक -सर्ग)14, श्लोक 61) को भी उद्धत करती हैंः

वाच्यस्त्वया मद्वचनात्स राजा वह्नौ विशुद्धामपि यत्मक्षम्।

मां लोकवाद श्रवणादहसीः श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य।।

महादेवी लिखती हैं कि 'उसका सारा जीवन साकार साहस है (सीता), जिस पर कभी दैन्य की छाया नहीं पड़ी।' वे इस प्रसंग को ज्यादा नहीं बढ़ती लेकिन भारतीयों के भगवान पर यह कलंक भारी तो पड़ता ही है। सीता तो यह तर्क देती हैं कि .....'मैं अग्निपरीक्षा से उनके सामने गुजर चुकी हूँ-, फिर भी लोकापवाद के कारण मेरी हँसी उड़ाई गई और)मेरा परित्याग किया गया।(' सीता पूछती हैं कि 'ऐसी महान कुलपरंपरा - कभी सुना है कि ऐसा हुआ हो में?' ..... लेकिन हमें तो लगता है कि यह पितृसŸाात्मक समाज ही यह महान कुलपरंपरा है।-''3 इसमें कोई दो राय नहीं कि इसका विरोध नहीं हुआ, लेकिन जितना विरोध हुआ इस उससे कई गुना समर्थन मिला। नारी को अनेक दीवारों में बांधा गया था जिसके अनेक अंतर्विरोध हैं। महादेवी वर्मा के विचारों से असहमति अनेक पक्ष हैं लेकिन समय और समाज की वास्तविकता को अस्वीकार करना कठिन है4। दूधनाथ सिंह ने लिखा है कि ''पुरातन मिथकीय अप्सराओं के बारे में महादेवी के जो विचार हैं, वे प्रतिक्रियावादी विचारों से अलग हैं, जिसमें अप्सराएँ सिर्फ ऋषिमुनियों का तप भंग - करने के लिए देवताओं द्वारा इस्तेमाल की जाती थीं। वह जो'सेक्सवर्कर्स-' की परजीवी और त्रासद भूमिका है, महादेवी का कथन या सूक्तिवचन उनके बारे में- कुछ इस प्रकार है :'नारी पत्नी बनकर पुरूष को वह नहीं दे सकती जो उसकी पशुता का भोजन है।' इसीलिए उसे माता और प्रेयसीदोनों की भूमिका निभानी - होगी।''5 यह समझने की बात है कि आखिर इन विचारों का आधार क्या हैं? जाहिर सी बात है सामांतवादी मानसिकता ने नारी को वैसा देखना, समझना और बनाना चाहा जैसी उसकी चाहत थी। उसने अपने वर्चस्व के बल पर नारी के हर रूप को अपनी चाहत के अनुसार जबरन गढ़ा। उसमें नारी की कोई भूमिका नहीं है। नारी सिर्फ माध्यम है। उसकी इच्छा अनिच्छा आदि का उसके लिए कोई मतलब नहीं है। इसी आधार पर तो-

'कामायनी' में जयशंकर प्रसाद ने लिखा था ....."इस अर्पण में कुछ और नहीं, केवल उत्सर्ग छलकता है। मैं दे हूँ और न फिर कुछ लूँ, इतना ही सरल झलकता है।"6

नारीचेतना की अपनी वैचारिकता है उसका आधार भी उन्हीं सवालों पर टिका है जो उसकी - अवधारणा के मूल में हैं। मसलन, अशिक्षा, सामाजिक और पारिवारिक असमानता, धार्मिक और सामाजिक रूढ़ियाँ और आडंबर, आर्थिक और सामाजिक हितों की असुरक्षा का भाव, जीवन में अकेलापन, दासी जैसे जीवन स्तर आदि के प्रतिरोध में जिन विचारों और विचारकों ने पहल की वही विचार नारीचेतना - की आकांक्षा के अभिप्राय बने। दूधनाथ सिंह ने इस पर विचार करते हुए महादेवी वर्मा के माध्यम से जो व्यक्त किया वही नारी वैचारिकता का आधार है। उन्होंने लिखा है, "विस्तृत नभ का कोई कोना, मेरा न कभी अपना होनायह जो विचित्र-, मार्मिक, कठिन पीड़ा है, वही महादेवी को बीसवीं शताब्दी का कवि बनाती है। एक दुख, जिसका कार्यभारतीय  कारण संबंध बनता है। इसीलिए वह बीसवीं सदी की सारी-स्त्रियों का दुख है, जो अपनी चाहना का गंतव्य जानते हुए भी नहीं जानती या नहीं जानना चाहतीं। जो अदम्य लालसा सात पर्दो में है, महादेवी के गीत उसी की सार्वजनीन अभिव्यक्तियाँ हैं। इसीलिए महादेवी सारी भारतीय स्त्रियों में समाहित हैं। उन स्त्रियों के पास छूट नहीं है। बंधन है। डर है। नष्ट होने का डर। महादेवी उन्हें स्वर और शब्द प्रदान करती हैं।"7 यहाँ यह विचारणीय सवाल है कि महादेवी वर्मा को बारबार अपनी - परंपरा को याद करना पड़ रहा है, जबकि भारत की सामाजिक धारणा है कि हमारा समाज अपनी बुद्धिमता, संस्कार और ज्ञान के लिए विश्वविख्यात है। जिस समाज, देश और राज्य के ज्ञान की इतनी समृद्ध परंपरा रही हो उसे यह याद दिलाना पड़े, उसके सामने उसी की परंपरा की दुहाई देनी पड़े, उसे ही न्याय, समानता और असमानता के बारे में बताना पड़े, ऐसी स्थिति क्यों बनी? वास्तव में यही भारतीय समाज का खोखलापन है। वह बाहर से जितना समृद्ध दिखाई देता है, अंदर उससे कई गुना खोखला है। यही है चैचारिक खोखलापन का सामाजिक स्वरूप।

भारतीय नारी के लिए बनाये गये घेरे की सबसे मजबूत दीवार के रूप में विवाह संस्था रही है, जिसके इर्द। विवाह को भारतीय समाज में नारी जीवन की कैद और उस पर गिर्द ही सारी दीवारें बनाई गई हैं- हर समय पुरूष का पहरा की तरह बना दिया गया। एक तरह से नारी जीवन की गुलामी का वैधानीकरण जैसे रूप मंे विवाह को स्थापित किया गया। यह पितृसŸाात्मक व्यवस्था का सबसे बड़ा हथियार था जिसने नारी के जीवन को सबसे अधिक मजबूर बनाया है। इसके बारे में महादेवी वर्मा के विचार में एक सजग वैचारिक आक्रोश हैयथा --, "विवाह संस्था के बारे में महादेवी का एक विचित्र वाक्य हैः-'विवाह मनुष्यजाति की असभ्यता की सबस-े प्राचीन प्रथा है और सभ्यता की भी।' 'असभ्यता' की क्यों? क्योंकि पुरूष ने अनेक कारणों से उस पर अपना हिंसक एकाधिपत्य जमा लिया। उसे दासी में बदल दिया। उसे घर के भीतर के निभृत अंधेरे मेंे ढकेल दिया। उसके सारे 'स्वत्वों' और अधिकारों का हरण कर लिया। महादेवी इसी को कहती हैं कि 'रंगविरंगे पक्षी-, गाय, घोड़ा, उसी तरह एक नारी भी मनोरंजन के लिए पाल लेता है।"8 इससे आगे महादेवी जिस बात को हमेशा उठती रही हैं वह इस प्रकार है, "स्वाभाविक रूप से विवाह में किसी भी व्यक्ति के 'साहचर्य की इच्छा' प्रधान होनी चाहिए।' 'प्रेम' और 'अधिकार' की नहीं, 'साहचर्य' की।"9 ये सारे सवाल नारीचेतना का जो आंदोलन -ल में हैं। जैसे नारीवैचारिकता के मू- उन्नीसवीं सदी में शुरू हुआ उसके वैचारिक स्त्रोत क्या थें? इसके उŸाार में पहला, पारंपरिक नारी की छवि तथा दूसरा औपनिवेशिक प्रतिरोध को माना जा सकता है। अब यहाँ यह कहना उचित होगा कि इन दोनों की

प्रेरणा का सम्मिलित स्वरूप ही नारीचेतना का वास्तविक वैचारिक उत्थान है। इस संदर्भ राधा कुमार का - मत उद्धत है, ''उन्नीसवी सदी को स्त्रियों की शताब्दी कहना बेहतर होगा क्योंकि इस सदी में सारी दुनिया में उनकी अच्छाईबु-राई, प्रकृति, क्षमताएँ एवं उर्वरा गर्मागर्म बहस के दौरान और उसके बाद भी नारी जागरूकता का विस्तार होना शुरू हुआ और शताब्दी के अंत तक इंग्लैंड, फ्रांस तथा जर्मनी के बुद्धिजीवीयों ने नारीवादी विचारों को अभिव्यक्ति दी। उन्नीसवीं सदी के मध्य तक रूसी सुधारकों के लिए 'महिला प्रश्न' एक केन्द्रिय मुद्दा बन गया था जबकि भारत में खासतौर से बंगाल और महाराष्ट्र में समाज सुधारकों ने स्त्रियों में फैली बुराइयों पर आवाज उठाना शुरू किया।''10 इससे सहमत हुआ जा सकता है क्योंकि इस कालखंड में नारी मजबू हुई जिसके अनेक रूप आगे विकसित हुए।

कोई भी आंदोलन किसी खास वैचारिक आग्रह के साथ सिर्फ शुरू नहीं होता है। समय, समाज और आंदोलन की दिशा से उसके विकास की गति और यति तय होती है। उसी से यह निर्धारित होता है कि उसकी वैचारिक और बौद्धिक स्थिति कैसी रही है। अनेक तरह के परंपरागत विचार मानवीय धरातल पर कमजोर हो जाते हैं और लोक संवेदना से उपजे हुए विचार उसकी अवधारणा बन जाते हैं। नारीचेतना के - आंदोलन में भी बहुत हद तक स्थिति ऐसी ही थी।दूधनाथ सिंह ने ठीक ही लिखा है कि ''विचार कहीं से भी आयें, अगर वह हमारी जरूरत के वक्त काम आता है, अगर वह हमारी समस्याओं को सुलझाने में मददगार साबित होता है तो उस लेनेलेकिन महादेवी ने जब स्त्रियां की समस्याओं पर ... नहीं।अपनाने में कोई हर्ज- लिखना शुरू-सोचना किया तो उन्हें किसी तरह का प्रलोभन नहीं था। वह एक 'जेनुइन' मानसिक स्थिति थी। यह उनका सचेतपन था जब उन्होंने 'श्रृंखला की कड़ियों' का अनुभव किया। जिन कड़ियों को वे खुद तोड़ चुकी थीं, उनकी दिली ख्याहिश थी कि वे उनकी दूसरी संगिनियों के लिए भी टूटे। तब इस पर इन्होंने विचार करना और कलम चलाना शुरू किया। ये सारे आलेख उनके इसी नैतिकउद्वेलनों -मानसिक कर्तव्य- अलग समयों पर-के प्रतिफल हैं। अक्सर अलग, अलगसोचे गये आलेखों में परस्पर -अलग कोणों से लिखे- तर्विरोधी बातें भी हैंअं, पुनरावृŸिायाँ भी हैं। एक ही बात का एक जगह खंडन है तो दूसरी जगह समर्थन। एक संभ्रमात्मक मनः स्थिति भी है। यह कि जो महादेवी सोच रहीं हैं, कह रही हैं, जो निर्णयनिष्कर्ष दे रहीं - हैं, वे उचित, तर्कसिद्ध और जरूरी हैं भी अथवा नहीं? लेकिन फिर भी वे तरहतरह से मुख्यतः भारतीय - समु-नारी-स्त्रियों और सामान्यतः विश्वदाय के प्रश्नोंविचार-समस्याओं पर अपना सोच-, अपने तर्क, अपना व्यंग्य और अपना गुस्सा प्रकट करती ही हैं। जहाँ से हमारी सभ्यता का इतिहास शुरू होता है, जिन स्त्रियों का जिक्र ऋचाओं से लेकर उपनिषदों, पुराणों, महाभारत, रामायण या अन्य मिथकों और कथाओं में है, उनकी महानता, मजबूरी, उनकी नियति और उनकी विडंबनाओं को महादेवी अपने इन आलेखों में बतौर- जिक्र या संदर्भ उपस्थित होने पर उठाती तो हैं, लेकिन उनका दायरा बहुतकुछ विश्लेषणात्मक नहीं है। - दर्शन के प्रति चरम आकर्ष-का विद्यार्थी होने के कारण और शाक्य मुनि के दुःख संस्कृतण के कारण, प्राचीन स्त्रियों के प्रति उठाये गये संदर्भ, सामान्य, भावुकता-भरे और मात्र परिचयात्मक हैं। जैसे याज्ञवल्क्य- दो बाद पेश करती हैं। गोपा और गाथा की तरह इन आलेखों में-मैत्रेयी का प्रसंग। इससे महादेवी एक गौरव यशोधरा या सीता का जिक्र मात्र है।''11 कुल मिलकर महादेवी वर्मा ने नरीवैचारिकता पर अपना बहुर - स्पष्ट मत व्यक्त किया। सामाजिक सुधार की राह में यह मत भारतीय समाज की आधार भूमि के रूप में दिशा मिली। इस प्रकार भारतीय समाज आज जिस जगह काम किया। इससे समाज सुधार की प्रक्रिया को खड़ा है उसमें इस तरह के विचारोंं की महती भूमिका रही है।

संदर्भ सूची


01. शृंखला की कड़ियाँमहोदेवी वर्मा-, पृ - .105

02. महादेवी वर्मादूधनाथ सिंह-, पृ-105

03. वही, पृ-.95-96

04. शृंखला की कड़ियाँमहादेवी वर्मा -,पृ.147

05. महादेवी दूधनाथ सिंह-, पृ .106

06. कामायनीजयशंकर प्रसाद-, पृ.,-88

07. कामायनीजयशंकर प्रसाद-, पृ-.89

08. महादेवी वर्मा दूधनाथ सिंह -, पृ- .21

09. वही, पृ - .108-109

10. नारी संघर्ष का इतिहास -पृ-राधा कुमार -23

11. महादेवीसिंह दूधनाथ-, पृ-.93-94

# उदय प्रकाश की कहानियों में समाजव्यवस्था का यथार्थवादी चित्रण

शोधार्थी

**श्री. विजय हरिश्चंद्र सोमवंशी**
एम.ए.बी.एड्.
सह शिक्षक, डॉ. व्यंकटराव डावळे
माध्यमिक विद्यालय, अंबाजोगाई

मार्गदर्शक

**प्रो.डॉ. लहाडे मुरलीधर अच्युतराव**
एम.ए.,बी.एड.,एम.फिल.,पीएच.डी. (हिंदी)
हिंदी विभागाध्यक्ष
जनविकास महाविद्यालय, बनसारोळा,
ता. केज., जि.बीड

**सारांश:-**

उदय प्रकाश ने अपने समय के समाज और व्यवस्था का यथार्थ चित्रण किया है। 'मोहनदास' कहानी के नायक मोहनदास को लंबे समय तक रोज़गार नहीं मिलता। ओरियंटल कोल माइंस में चुने हुए लोगों में उसका पहला नंबर था। वह अपने प्रमाण-पत्र वगैरा वहाँ जमा कर आता है। लेकिन वहाँ से उसके लिए बुलावा नहीं आता। उसे समझता है कि बिछिया टोला का बिसनाथ मोहनदास बनकर कोल माइंस में काम कर रहा है। मोहनदास माइंस जाता है और मार खाकर लौट आता है। फिर वह जी.एम. तक पहुँचने का सोर्स लगाता है। इंक्वायरी बैठाता है। बिसनाथ कोर्ट में साबित कर देता है कि वही मोहनदास है। मोहनदास को समाप्त करने में तुला है, वह हमारे समय का सच है। हमारी वर्तमान सामाजिक राजनैतिक व्यवस्था इन्हीं पंक्तियों में कैद है। चुनाव होते हैं सरकारे बदलती हैं पर वह भ्रष्ट ढाँचा यथावत बना रहता है जो वंचित समाज के उत्थान के लिए बनी योजनाओं से अपनी जेबें भरता है।

उदय प्रकाश समकालीन कहानी के एक महत्वपूर्ण कहानीकार है। समकालीन कहानी साहित्य परिमाण की दृष्टि से इतना विशाल है कि इसके प्रत्येक पहलू, प्रत्येक अंग तथा प्रत्येक प्रवृत्ति के विश्लेषण तथा विवेचन के लिए अधिक परिश्रम, समय तथा अनुसंधान की आवश्यकता है। हिंदी कहानी साहित्य का इतिहास सौ वर्ष से अधिक का है। हिंदी कहानी उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है, नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है। हिंदी कहानी में प्रेमचंद के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने तो हिंदी कहानी के लिए जो भूमि तैयार की। उदय प्रकाश हिंदी के समकालीन कहानी के कहानीकार के रुप में अपने समय के प्रति ईमानदार रहे हैं। उन्होंने समाज और व्यवस्था का यथार्थ चित्रण किया है। शायद एक बडे रचनाकार की यही पहचान होती है कि वह अपने समय की विडंबनाओं को परत-दर-परत उघाडता है और पाठक के सामने ऐसे प्रश्न ला खड़े करता है जो अब तक उसकी सोच का हिस्सा नहीं थे।

उदय प्रकाश की लंबी कहानी की किताब 'मोहन दास' के अंतिम आवरण पृष्ठ में पाकिस्तान के 'आज' पत्र के संपादक अजमल कमाल का वक्तव्य छपा है, 'पाकिस्तान में वह सभी कुछ है, जो कुछ हिंदुस्तान में है... सिर्फ उदय प्रकाश जैसे अफसानानिगार को छोडकर। उनका यह वक्तव्य उन सब के लिए गर्व करने लायक है, जो उदय प्रकाश को हिंदी का बड़ा कहानीकार मानते रहे हैं। लेकिन मैं उदय प्रकाश को बड़ा कहानीकार नहीं मानता। जिस प्रकार से नई कहानी का परिदृश्य राजेंद्र यादव, कमलेश्वर, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा, अमरकांत तथा भीष्म साहनी से मिलकर पूरा होता है। उसी प्रकार उदय प्रकाश के साथ हमें संजीव, शिवमूर्ति, महेश कटारे और अखिलेश आदि लेखकों का नाम लेना होगा। हम उन्हें नज़रअंदाज नहीं कर सकते। वहीं इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि इन सबके बीच अपनी कहन और शैली की विशिष्टता के कारण उदय प्रकाश सबसे अलग नज़र आते है। शायद यही कारण है कि उनका प्रभाव आज हिंदी कहानी में सक्रिय पचास से अधिक युवा लेखकों में सब से अधिक दिखाई देता है।

'मोहनदास' उदय प्रकाश की चर्चित कहानी है। यह कहानी इतनी चर्चित एवं प्रभावशाली है कि साहित्य अकादमी ने अपने इतिहास में पहली बार किसी एक कहानी को अपने सम्मान का आधार बनाया है। कहानी की शुरुआत में ही लेखक अपने इरादे से पाठकों को अवगत करा देता है "मै हमेशा की ही तरह, कहानी की आड़ में, आपको फिर से अपने समय और समाज की एक असली जिंदगी का ब्यौर देने बैठा हूँ।"[1]

कहानी का नायक मोहनदास दलित समाज से है और कबीर पंथी है। उसने फर्स्ट डिवीजन में बी. ए. पास किया था। लेकिन उसे लंबे समय तक रोजगार नहीं मिलता। ओरियंटल कोल माइंस उसके जीवन में उम्मीद की किरण बनकर आती है। चुने हुए लोगों में उसका पहला नंबर था। वह अपने प्रमाण-पत्र वगैरा वहाँ जमा कर आता है। लेकिन वहाँ से उसके लिए बुलावा नहीं आता। वह खेती-बाड़ी और सूपा चटाई बुनने के काम में लगा रहता है। एक दिन उसका साढू गोपाल दास आकर बताता है कि बिछिया टोला का बिसनाथ मोहनदास बनकर कोल माइंस में काम कर रहा है। मोहनदास माइंस जाता है और मार खाकर लौट आता है। फिर वह जी.एम. तक पहुँचने का सोर्स लगाता है। जी.एम. इंक्वायरी बैठाता है। बिसनाथ अपने को मोहनदास साबित कर देता है। मोहनदास विक्षिप्त हो जाता है।

बिसनाथ कोर्ट में साबित कर देता है कि वही मोहनदास है। सब निराश हो जाते हे। न्यायिक दंडाधिकारी गजानन माधव मुक्तिबोध अपनी विशेष पावर का प्रयोग करते हुए सीक्रेट ज्यूडीशियल इंक्वायरी बिठाते है। एस. पी. शमशेर बहादुर की सहायता से ताबड़तोप छापे मारते हैं। लगता है मोहनदास जीत

जाएगा। लेकिन मुक्तिबोध का तबादला हो जाता है। तब बिसनाथ की जमानत हो जाती है। वह इंसपेक्टर विजय तिवारी तथा थाने के सिपाहियों को खिला पिलाकर मोहनदास को पीट पीटकर उसके हाथ-पैर तुड़वा डालता है। "जिसे बनना हो बन जाए मोहनदास। मैं नहीं हूं मोहनदास। मैंने कभी कहीं से बी.ए. नहीं किया। कभी टॉप नहीं किया। मैं कभी किसी नौकरी के लायक नहीं रहा। बस मुझे चैन से ज़िंदा रहने दिया जाय।"[2]

मोहनदास को समाप्त करने में तुला है, वह हमारे समय का सच है। उदय प्रकाश अपने समय को व्याख्यायित करने के लिए कहानी का जो ढाँचा गढ़ते हैं वह नया है, अलक हटकर है। अलग हट कर इसलिए है क्योंकि उनके सरोकर अलग हैं। मतलब अलग तरीके से हाशिए की दुनिया की तकलीफों को समझने से हैं। विकसित भारत की जो तस्वीर हमारे सामने है वह वास्तविक नहीं बल्कि भ्रामक तस्वीर है। तह तक जा कर चीजों को समझना और उस त्रासद संसार में पाठक को ले जाना उदय प्रकाश को कहानीकार के रुप में विशिष्ट बनाता है। उदय प्रकाश एक जगह कहते हैं "ऐसा समय, जिसमें अगर गौर से देखें तो जो भी सत्ता में है, उसमें से हर कोई एक दूसरे का क्लोन है। हर कोई एक जैसी ब्रांड का उपभोक्ता है।"[3]

हमारी वर्तमान सामाजिक - राजनैतिक व्यवस्था इन्हीं पंक्तियों में कैद है। चुनाव होते हैं सरकारे बदलती हैं पर वह भ्रष्ट ढाँचा यथावत बना रहता है जो वंचित समाज के उत्थान के लिए बनी योजनाओं से अपनी जेबें भरता है। ठगी का यह धंधा यूँ ही चलता रहता है। ऐसे में अपवादों को छोड़ कर हर कोई दूसरे का क्लोन नहीं है, तो क्या है? मोहनदास कहानी में व्यवस्था के बरित्र के कई कोण सामने आते हैं। हम जानते हैं रिश्वत लेना और देना दोनों ही जुर्म हैं। किंतु दरिद्रता और भ्रष्ट व्यवस्था आम आदमी को अंततः इसी राह पर धकेल सकती है। वह रिश्वत भले ही कभी न ले पर रिश्वत देने के लिए उसे मज़बूर कर सकती है। हर तरफ से हताश हो कर एक जगह मोहनदास के मन में ऐसे ही भाव उभरते हैं "उसके मन के सबसे भीतर कोने ने अच्छी तरह से जान लिया था कि उसके जीवन के ठूंठ की किसी गाँठ से जो नए कोंपल के कल्ले आश्चर्य की तरह फूटने वाले थे, आकाश के देवताओं ने उसकी विषदा जानकर, उसके लिए दया की जो बूंदे टपकाई थी, उन्हें दुर्भाग्य और भ्रष्टाचार की लू ने झुलसा डाला है। अब कोई उम्मीद कहीं से नहीं बची है। अगर उसके पास कुछ नकदी जमा पूँजी होती तो किसी दलाल से मिल कर रुपये ऊपर तक पहुंचा कर वह यह नौकरी पा सकता था।"[4]

मोहनदास की स्वयं को मोहनदास प्रमाणित करने की जद्दोजहद का त्रासद अंत उसके अन्याय के समक्ष आत्मसमर्पण से होता है। एक ईमानदार संघर्ष की परिणति। ऐसी व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष यहाँ

अपराधियों और सत्ताधारियों में गहरी साँठगाँठ है, जहाँ उसका साथ देने वाले चंद लोगों को भी या तो खरीद लिया जाता है या फिर हाशिए पर धकेल दिया जाता है। 'मोहनदास', 'पाल गोमरा का स्कूटर' तथा 'और अंत में प्रार्थना' ऐसी व्यवस्था का छिपा हुआ अमानवीय चेहरा दिखाने वाली कहानियाँ हैं।

'और अंत में प्रार्थना' कहानी में डॉ. वाकणकर का तबादला होता है। जैसे कि ईमानदार और बिना सोर्स के व्यक्ति का अबसर हो जाया करता है। इस छोटे से शहर में एक दिन छोटी सी घटना घटती है जो आगे चल कर न केवल कोतमा जैसे कस्बे में तनाव पैदा करती है बल्कि डॉ. वाकणकर के जीवन में भी ऐसा सवाल खड़ा करती है जिसका उत्तर वह अपने जीवन की आहुति देकर चुकाते हैं। घटनाएं कुछ इस तरह घटती हैं एक कॉलेज के दो छात्रों द्वारा एक ही कंपनी का जूता अलग अलग कीमत पर दो दुकानदारों से खरीदा जाना। दोनों कि कीमत में अंतर के चलते महंगा जूता बेचने वाले दुकानदार से दोनों लड़कों कीझड़प, हाथापाई। दुकानदारों का इकट्ठे होकर लडकों कों पीटना और पुलिस स्टेशन ले जाना। बात बढ़ते-बढ़ते छात्रो द्वारा एस.डी.एम. और थाने के घेराव पथराव तक जा पहुंचती है। एस.डी.एम. अपनी कार बचाने के चक्कर में गोली चलाने का आदेश दे देता है जिसमें एक छात्र की मौत हो जाती है जो कि बड़्िकस्मती से अल्पसंख्याक निकलता है।

यहीं से सांप्रदायिक राजनीति शुरु होती है और प्रशासन से लेकर नेता एवं अपराधी तक डॉ. वाकणकर पर झूठी पोस्टमार्टम रिपोर्ट लिखने का दबाव डालते हैं। डॉ. वाकणकर पोस्टमार्टम पैनल में जाने से ही बचना चाहते है किंतु इस कदर घिर जाते हैं कि रिपोर्ट लिखने के लिए तैयार होना पड़ता है। निर्णायक क्षणों में जो अटल सत्य उनके अंदर उभरता है वह सच को लिखने का है। और वह एस.पी. के सामने सच लिखते हैं "सेरेब्रल हेड इंजुरी, प्रण्ड फैटल, काज्ड बाई दी गन शाट..."[5]

इस दौरान उच्ब रक्तचाप के रोगी डॉ. वाकणकर मानसिक उत्पीड़न से गुजरते हैं तथा ब्रेन हेमरेज़ के शिकार हो जाते हैं। यह सच की कीमत है और सच की जीत भी। कहानी की सबसे महत्वपूर्ण घटना डॉ. वाकणकर का व्यवस्था के आगे झुक जाना नहीं बल्कि सच को जिंदा रखने के लिए अड़िग रहना है। बिना डरे सच बोलना तथा व्यवस्था को झकझोरना है बाहे वह आदिवासियों में फैली महामारी के निदान के लिए आँखे मूंदे बैठे जिलाधीश को झकझोरना हो या पोस्टमार्टम की सच्ची रिपोर्ट लिखना ।

उदय प्रकाश की कहानियाँ अपने समय को इतिहास के आईनें में देखती हैं। आज़ादी के बाद जहाँ हम खड़े हैं वहाँ स्वतंत्रता जैसे शब्द कितने प्रासंगिक है। देश की आबादी का कितना हिस्सा स्वतंत्रता को भोग रहा है। 'पाल गोमरा का स्कूटर' कहानी भी कुछ असुविधाजनक सवाल हमारें सामने रखती है। यहाँ

स्कूटर स्वयं हाशिए पर छूट चुके व्यक्ति का प्रतीक है। यह कहानी एक बहुत बड़ा सवाल उठाती है, क्या हाशिए पर छूट चुका समाज कुछ लुप्त हो चुकी पक्षियों और जानवरों की प्रजातियों की तरह लुप्त हो जाएगा। स्कूटर एक्सीडेंट में मारे गए विक्षिप्त हो चुके पाल गोमरा के स्कूटर से जो डायरी निकलती है उसमें लिखी कविता की पंक्तियाँ तो इसी ओर इशारा करती है

'जो प्रजातियों लुप्त हो रही हैं
यथार्थ मिटा रहा है जिनका अस्तित्व
हो सके तो हम उनकी हत्या में न हों शामिल
और संभव हो तो संभालकर रख लें
उनके चित्र, ये चित्र अतीत के स्मृति चिहन हैं..."[6]

ईमानदारी और स्वाभिमान जैसे मूल्य क्या लुप्त प्रजातियों की नियति को प्राप्त हो जाएँगे। यही सवाल हमारे कठिन समय में उदय प्रकाश की कहानियों पैदा करती है।

चुनाव के दिनों में गाडियों में करोड़ों रुपये पकड़े जाने के जो समाचार हम प्रतिदिन सुन रहे है। 'दिल्ली की दीवार' एक कहानी है। व्यवस्था के इस पतित चेहरे की तस्वीर हमें दिखाती है। इस कहानी में सफाई कर्मचारी के हाथ संयोगवश बाबा आदम का खज़ाना लग जाता है। भ्रष्टाचार का आलम यह है कि पैसा छुपाने के लिए अलमारियों और तिजोरियाँ छोटी पड़ती जा रही हैं। तो दीवारों में चिनवा दी गई है जहाँ अनगिनत पैसा दूँस दिया जाता है। भ्रष्टाचार का स्वरुप भी इतना विकराल हुआ कि आम आदमी की समझ से बाहर चला गया ऊपर से लेकर नीचे तक इस व्यवस्था के स्वरुप को उदय प्रकाश की कहानियाँ उधेड़ती है। इस प्रकार उदय प्रकाश के बहाने वर्तमान हिंदी कहानियों में समाज और व्यवस्था को देखा जा सकता है।

**संदर्भ ग्रंथ :-**

1. मेहनदास, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006 पृष्ठ संख्या - 12
2. वही, पृ. 85
3. वही, पृ. 29
4. वही, पृ. 21
5. और अंतमें प्रार्थना, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006 पृ. 200
6. पाल गोमरा का स्कूटर, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण : 2006 पृ. 76

# भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में महिला उद्यमियों की भूमिका

शोधार्थी
**राधा आत्माराम राठोड**
हिंदी विभाग
डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय छत्रपती संभाजी नगर
मोबाइल नंबर: 8329218798

उद्यमियों के रूप में महिलाओं की बढ़ती उपस्थिति के कारण देश में महत्वपूर्ण व्यवसाय और आर्थिक विकास हुआ है देश में रोजगार के अवसर पैदा करके जनसांख्यिकीय परिवर्तन लाकर और महिला संस्थापकों की अगली पीढ़ी को प्रेरित करके महिलाओं के स्वामित्व वाले व्यवसाय उद्यम समाज में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं देश में संतुलित विकास के लिए महिला उद्यमियों के सतत विकास को बढ़ावा देने की दृष्टि से स्टार्ट अप इंडिया भारत में पहलीं योजनाओं, नेटवर्क और समुदायों को सक्षम बनाने और स्टार्ट अप इकोसिस्टम में विविध हितधारकों के बीच भागीदारी को सक्रिय करने के माध्यम से महिला उद्यमिता को मजबूत बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। महिलाओं का देश की अर्थव्यवस्था में प्राचीन काल से ही किसी-न-किसी रूप में योगदान रहा है। नारियों के आर्थिक एवं उत्पादक कार्यों का निर्धारण मानव सभ्यता के प्रारम्भिक काल से ही चला आ रहा है, क्योंकि 'आदिकाल' में उद्यपि महिलाएं शिकार करने नहीं जाती थीं , लेकिन उसको परिवार में ही रहकर विभिन्न कार्य करने पड़ते थे जैसे अनाज साफ करना व उसे काटना जानना, पीसना , खाना बनाना, बच्चे संभालना आदि प्रमुख थे। जब पशुपालन युग प्रारम्भ हुआ तो उसमें भी महिलाओं को अनेक घरेलू कार्य करने पड़ते थे जिनमें पशुओं की देखभाल करना , दूध से अनेक व्यंजन बनाना , पशुओं की सेवा करना आदि प्रमुख थे। इसके बाद जब कृषि युग आया तब महिलाओं को जो विभिन्न कृषि एवं घरेलू कार्य करने पड़ते थे, उन कामोमें घर में कपड़ा बनाना, मिट्टी के बर्तन बनाना टोकरियां बनाना तथा कूटना - पीसना आदि प्रमुख थे। लेकिन महिलाएं पहले से कहीं अधिक योगदान देने में आज सक्षम हैं। पिछले दशक के दौरान महिला उद्यमिता को आर्थिक विकास के एक महत्वपूर्ण उपयुक्त स्त्रोत के रूप में मान्यता दी गई है। महिला उद्यमी अपने और दूसरों के लिए नई नौकरियां पैदा करती हैं। वे समाज उद्यमशीलता के अवसरों के दोहन के लिए विभिन्न समाधान भी प्रदान कर रही हैं।

**महिला उद्यमी की परिभाषा** -

"महिला उद्यमी वह व्यक्ति है जो अपनी व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के लिए चुनौतीपूर्ण भूमिका स्वीकार करती है। कुछ सकारात्मक करने की तीव्र इच्छा उद्यमशील महिलाओं का अंतर्निहित गुण है, जो परिवार और सामाजिक जीवन दोनों में मूल्यों का योगदान देने में सक्षम है।"

**भारत में महिला उद्यमियों की भूमिका और योगदान** : -

भारत में ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में सूक्ष्म उद्यम क्षेत्र में महिलाओं का वर्चस्व है। सूक्ष्म उद्यम क्षेत्र में कार्यरत लोगों में 74 प्रतिशत महिलाएं शामिल हैं। कुटीर हस्तशिल्प उद्योगों में 65 प्रतिशत से अधिक महिलाएं खाद्य उत्पादों और पेय पदार्थों के प्रसंस्करण में लगी हुई हैं।

**महिला उद्यमियों पर औद्योगिक क्रान्ति का प्रभाव : -**

जिस समय देश में औद्योगिक क्रान्ति हुई उसमें महिलाओं की आर्थिक स्थिति को भी प्रभावित किया। इसका प्रभाव यह हुआ कि महिलाओं ने पारिवारिक सीमाओं का परित्याग करके घर से बाहर भी कार्य करना प्रारंभ कर दिया, क्योंकि औद्योगिक जगत में महिलाओं को अब श्रम करने के अधिक अवसर प्राप्त होने लगे। इसका प्रमुख कारण यह भी रहा कि मालिक, महिला श्रम सस्ती दर पर प्राप्त लेते थे। जिस समय उन्नीसवीं शताब्दी का समापन हुआ तो उस समय सम्पूर्ण महिलाओं का वर्ग ' श्रमजीवी वर्ग के रूप में अपना स्थान ग्रहण कर चुका था। उस समय श्रमिक महिलाओं में 33%, जर्मन में 44.8% रूस में 45% तथा भारत में 27% जो विभिन्न व्यवसायों में आज भी व्यापक रूप से कार्यरत हैं।

**भारतीय महिलाओं की व्यावसायिक स्थिति :-**

उद्यपि भारत में महिलाओं के घरेलू कार्यों का निर्धारण प्राचीन काल में ही हो गया था, लेकिन इन कार्यों में महिलाओं की सहभागिता में उन्नीसवीं सदी के अन्तिम चरण में काफी तेजी आ गयी थी, जिसका प्रभाव समाज के प्रत्येक वर्ग की महिलाओं पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ। इसका विवरण इस प्रकार है :

**निम्न वर्गीय महिलाओं के प्रमुख कार्य :**

जब उद्योगिक क्रान्ति का समापन हुआ तो उस समय महंगाई अपनी चरम सीमा पर थी। इस महंगाई के कारण समाज की निम्नवर्गीय महिलाओं को परिवार से निकलकर विभिन्न व्यवसायिक कार्य करने पड़े।

इस वर्ग की महिलाओं के प्रमुख कार्य खेतो का जोतना, पत्थर की खानों तथा चाय के बागानों में चाय की पत्तियां निकालना आदि था।

**महिलाओं के प्रमुख कार्य :**

भारतीय महिलाओं की व्यावसायिक स्थिति : उद्यपि भारत में महिलाओं के घरेलू कार्यों का निर्धारण प्राचीन काल में ही हो गया था, लेकिन इन कार्यों में महिलाओं की सहभागिता में उन्नीसवीं सदी के अन्तिम चरण में काफी तेजी आ गयी थी, जिसका प्रभाव समाज के प्रत्येक वर्ग की महिलाओं पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ। इसका विवरण इस प्रकार है :

निम्न वर्गीय महिलाओं के प्रमुख कार्य जब उद्योगिक क्रान्ति का समापन हुआ तो उस समय महंगाई अपनी चरम सीमा पर थी। इस महंगाई के कारण समाज की निम्नवर्गीय महिलाओं को परिवार से निकलकर विभिन्न व्यवसायिक कार्य करने पड़े। इस वर्ग की महिलाओं के प्रमुख कार्य - खेतो का जोतना, पत्थर की खानों तथा चाय के बागानों में चाय की पत्तियां निकालना आदि था भारतीय व्यवसायों में मध्यम वर्गीय महिलाओं का प्रवेश काफी समय बाद हुआ। इस सम्बन्ध में सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री श्री पी. सेन गुप्ता ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि "महिला शिक्षा को गति प्रदान करने के लिए और महिलाओं को आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए सर्व प्रथम शिक्षक के धंधे का द्वार खुला।" महिलाओं का दूसरा प्रमुख कार्य परिचारिका का कार्य था। इसीलिए ब्रिटिश सरकार द्वारा स्त्रियों को सन् 1875 - 76 ई. में ' परिचारिका ' के प्रमुख रूप में प्रशिक्षण दिया गया। महिलाओं की व्यावसायिक गतिविधियां देश के आर्थिक विकास के साथ - साथ बढ़ती चली गई।

जैसे - जैसे शैक्षणिक प्रचार होता गया वैसे ही सरकार के प्रशिक्षण युक्त व्यवसायों में महिलाओं ने व्यावसायिक क्षेत्र में अपना एक निश्चित स्थान बना लिया था। स्वतन्त्र भारत में भी मध्यम महिलाओं के कार्य करने के अधिकार को मान्यता प्रदान की गयी तथा उनकी विभिन्न समस्याओं को स्थान में रखते हुए सरकार द्वारा विभिन्न कानून पारित किए गए। मध्यम वर्गीय महिलाओं द्वारा किए जाने वाले प्रमुख कार्यों का विवरण श्रीमती पी. सेन गुप्ता ने अपनी भारत की कार्यरत महिलाओं में निम्न प्रकार प्रस्तुत किये है:-

1. **आर्थिक योगदान**: महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों अनौपचारिक व्यावसायिक समस्याओं से निपटने में विकास और दक्षता में सीधा योगदान देती हैं और गरीबी में कम नीति निर्माताओं के लिए मुख्य मुद्दों में से एक है।

2. **पूंजी निर्माण**: उद्यमी औद्योगिक प्रतिभूतियों को जारी करके जनता की निष्क्रिय बचत जुटाते हैं। उद्योग में सार्वजनिक बचत के निवेश से राष्ट्रीय संसाधनों का उत्पादक उपयोग होता है। पूंजी निर्माण की दर बढ़ती है, तो तीव्र आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है।

3. **प्रति व्यक्ति आय में सुधार**: भारत में महिला उद्यमी भी अवसरों को दोहन कर रही हैं। वे भूमि श्रम और पूंजी जैसे अव्यक्त और निष्क्रिय संसाधनों को वस्तुओं और सेवाओं के रूप में राष्ट्रीय और मापने के लिए महत्वपूर्ण मानदंड हैं।

4. **रोजगार सृजन**: भारत में महिला उद्यमी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। लघु उद्योग स्थापित करके वे लोगों को रोजगार देती हैं।

5. **शैक्षणिक कार्य**: मध्यम वर्गीय महिलाओं का सबसे प्रथम व प्रमुख कार्य शिक्षण कार्य है। इसीलिए आज महिलाएं शिक्षित होकर बड़े बड़े पद प्राप्त कर रही हैं जैसे प्रोफेसर, इन्स्पेक्टर , डॉक्टर , इंजीनियर, पायलट या राजकीय पदो के साथ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुख्य पदो पर भी कार्य कर रही है।

6. **स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्य**: मध्यम वर्गीय महिलाओं का द्वितीय प्रमुख कार्य स्वास्थ्य कार्य है। इसलिए आज स्वास्थ्य विभाग में दाईं, परिचारिका स्वास्थ्य निरीक्षक सामान्य डॉक्टर या चिकित्सक के पद पर अधिकांश महिलाएं कार्य कर रही है।

7. **कारखानों सम्बन्धी कार्य** : आज विभिन्न प्रकार के कारखानों में भी विभिन्न कार्यों के लिए महिलाओं को ही नियुक्त किया जाता है, जिनमें कपड़े, तम्बाकू, आटा मिले, तेल तथा काजू आदि के कारखाने प्रमुख है।

8. **खान सम्बन्धी कार्य**: कोयला, इस्पात, पत्थर अभ्रक, मैंगनीज, इस्पात आदि खानों में महिलाओं की संख्या सबसे अधिक है।

9. **बगीचे ( बागान) सम्बन्धी कार्य**: आज महिलाएं चाय, काॅफी, रबर के बागानों में भी पर्याप्त संख्या में कार्य कर रही है।

10. **कला सम्बन्धी कार्य**: प्राचीन काल में नृत्य करने वाली महिलाओं को आलोचना युक्त दृष्टिकोण से देखा जाता था क्योंकि यह कार्य बाह्य बालाओं या वेश्याओं का ही माना जाता था, लेकिन आजकल ऐसा नहीं है। आज समाज में नृत्य, संगीत तथा कला को काफी महत्व दिया जाने लगा है। इसीलिए इस क्षेत्र में महिलाओं का प्रवेश सम्मानपूर्वक हो रहा है।

11. **विधिक श्रेत्र में कार्य** : आज महिलाओं ने विधिक श्रेत्र पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया है। क्योंकि आजकल वकील, बैरिस्टर या न्यायाधीशों के पद पर महिलाएं कार्य कर रही है, विधिक श्रेत्र के अतिरिक्त कूटनीतिक श्रेत्र में भी महिलाएं कार्य कर रही हैं।

12. **ग्रामीण श्रेत्र सम्बन्धी कार्य**: आधुनिक काल में सरकार द्वारा संचालित सामुदायिक योजना के अन्तर्गत ग्राम सेविकाओं के पद पर महिलाओं को नियुक्त किया जाता है, जिनका कार्यक्षेत्र ग्रामीण क्षेत्र ही होता है। सामाजिक कार्यकर्ताओं के रूप में भी महिलाओं को ही नियुक्त किया जाता है।

13. **सार्वजनिक निर्माण विभाग के साथ**: आज महिलाओं से सस्ती दरों पर विभिन्न प्रकार के निर्माण कार्य कराए जाते हैं, जिसमें नये रास्तों का निर्माण, भवन निर्माण कार्य तथा नदी योजनाओं में बांध निर्माण आदि का कार्य प्रमुख है।

14. **लघु व्यवसाय**: महिलाएं कुछ व्यावसायिक कार्य घर पर रहकर ही करती हैं, क्योंकि इनमें मशीनो तथा बिजली की आवश्यकता नहीं होती है। कार्यों में मछली पकड़ना, बीड़ी बनाना रंगाई, सिलाई-कढ़ाई, सुनाई आदि का कार्य करना, छपाई का कार्य करना, खिलोने बनाना आदि प्रमुख कार्य हैं । कुछ महिलाएं घर पर रहकर ही पापड़, आचार भी बनाती है। घर पर कागज के थैले आदि भी तैयार करना, गत्ते के डिब्बे बनाकर, चटाई व टोकरियां आदि बनाना भी इन्हीं कार्यों में शामिल होते हैं।

कुछ महिलाएं रेल्वे तथा अन्य विभागों में भी परिचायिकाओं के रूप में कार्य कर रही हैं।

15. **अन्य कार्य**: उपरोक्त कार्यों के अतिरिक्त महिलाओं, दफ्तरों तथा वितरण केन्द्रों पर भी कार्य कर रही हैं। महिलाएं सहायक, टाइपिस्ट, टेलीफोन ऑपरेटर आदि के पदों पर भी कार्य करती हैं। आज बहुत सी महिलाएं सिलाई-कढ़ाई की दुकानों पर कार्य ही नहीं कर रही है, अपितु बैंकों आदि से कर्जा लेकर स्वयं

इनके केन्द्रों का संचालन कर रही हैं। आधुनिक काल में महिला उद्यमियों का भारतीय अर्थव्यवस्था में बोहोत बड़ा योगदान रहा हैं।

**सामाजिक योगदान**: महिला उद्यमी देश में संतुलित क्षेत्रीय विकास और जीवन स्तर में सुधार की दिशा में भी योगदान दे रही हैं।

1. **संतुलित क्षेत्रीय विकास**: भारत में महिला उद्यमी आर्थिक विकास में क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करती हैं। वे सरकार द्वारा दिए जाने वाले संसाधनों, रियायतों और सब्सिडी का लाभ उठाने के लिए पिछले क्षेत्रों में उद्योग स्थापित करते हैं।

2. **जीवन स्तर में सुधार**: लघु उद्योगों की स्थापना से आवश्यक वस्तुओं की कमी को कम किया जा सकता है तथा नये उत्पाद लाये जा सकते हैं। इस देश में महिला उद्यमी बड़े पैमाने पर विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन कर रही हैं और उन्हें कम दरों पर पेश कर रही हैं, जिसके परिणामस्वरूप जीवन स्तर में सुधार हो रहा है।

3. **अन्य योगदान**: महिला उद्यमी समाज की संस्कृति को बदलने में मुख्य भूमिका निभाती हैं। हमारे देश में महिलाएं घर से बाहर निकलकर स्वतंत्रता आदि की भावना विकसित करती हैं। इस प्रकार हमारे देश में महिला उद्यमी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण संरक्षण, बैकवर्ड और फार्वर्ड एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं और देश की आर्थिक वृद्धि में योगदान दे रही हैं।

**निष्कर्ष** -

निष्कर्ष ता कहा जाता हैं की आज भारत की अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान पुरूषों से कम नहीं है। जिस महिला को कुछ समय पूर्व तक अबला निम्न स्तर की स्त्री माना जाता था, आज वही महिला पुरूषों से सम्बंधित क्षेत्रों में उनसे आगे निकल गयी है। किसी भी समाज या देश के समग्र आर्थिक विकास के लिए महिलाओं का सामाजिक और आर्थिक विकास आवश्यक है। उद्यमशीलता वह मानसिक स्थिति है जो हर महिला में होती है, भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति स्पष्ट रूप से परिवर्तन की प्रक्रिया में है और भविष्य के सामाजिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। आज महिला उद्यमिता समाज में महिलाओं की स्थिति और उसी समाज में उद्यमिता की भूमिका दोनों के बारे में है। भारतीय महिलाएं देश की

सामाजिक-आर्थिक प्रगति शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। महिलाओं को अच्छे विचारों तक पहुंच प्रदान की जानी चाहिए ताकि

वे सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन ला सकें और देश के विकास में योगदान दे सकें। भारत के बदलते आर्थिक परिदृश्य में महिला उद्यमी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, जिनका योगदान सराहनीय है। ये गतिशील महिला उद्यमी भारतीय अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाल रही हैं और रोजगार सृजन विकास में तेजी लाने और समय समृद्धि के लिए उत्प्रेरक का काम कर रही हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. लखन लाल चौकचे ( 2021) - महिलाओं के आधिन विकास में जयाविना विकास कार्यक्रमों के ओगवान का अध्ययन करना

2. सुजाता परी अहिरवाल, प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ( 2014) महिला उद्यमिता और सरकारी भूमिका: वर्तमान परिदृश्य भारत के संदर्भ में।

3. भारत के उद्यमशीलता परिदृश्य का बदलता चेहरा: महिला अग्रणी भूमिका में, इन्वेस्ट इंडिया (मई 2023)

# महिला सशक्तिकरण : सरकारी योजनाओं की भूमिका

**प्राजक्ता नानासाहेब देशमुख,**
हिंदी विभाग,
.mob. no9975906933
Mail ID- psdalavi862@gmail.com

➢ **शोध आलेख सार-**

महिलाओं को आत्मनिर्भर और आर्थिक स्वतंत्रता के लिए महिला सशक्तिकरण तथा आर्थिक सशक्तिकरण आवश्यक है। सशक्तिकरण का आशय केवल शक्ति का अधिग्रहण नहीं है बल्कि कानून तथा नीति निर्माण की प्रक्रिया की क्रियान्विति में सहभागितानियंत्रण , शक्ति का परिवर्तनशील कार्यों तथा जागरूकता निर्माण की एक प्रक्रिया है। भारत जैसे विकसनसशील देशों में, महिलाएँ लंबे समय से सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाओं का सामना कर रही हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने, आय के स्रोत बढ़ाने तथा सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी को बढ़ावा देने में स्वरोजगार समूहों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सरकार, बैंक स्टार्टअप इंडिया, महिला उद्यमियों के लिए मुद्रा योजना, अन्नपूर्णा योजना, स्त्री शक्ति पैकेज, व्यवसाय ऋण तथा महिला उद्यमी निधि योजना आदि जैसे उपक्रमों के माध्यम से युवाओं, महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान कर रही है।

➢ **बीज शब्द-** महिला सशक्तिकरण, महिला उद्यमी, स्त्री शक्ति, सरकारी योजनाएँ, ऋण, आधुनिकीकरण, आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, आर्थिक विकास, ब्याज दर।

➢ **शोधालेख विश्लेषण-**

सशक्तिकरण एक बहुआयामी अवधारणा है जो व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र तथा कार्यों में पूर्ण अस्मिता तथा शक्तियों को प्राप्त करने योग्य बनाता है। प्रारंभिक काल में भारतीय समाज में स्त्रियों को समान अधिकार प्राप्त थे। वैदिक काल और उत्तर वैदिक काल के पश्चात समाज की मौलिक अवस्थाओं का स्थान रूढ़ियों ने ले लिया, जिसका परिणाम समाज में स्त्रियों का अधिकार तथा सम्मान कम हो गया। पुरुष प्रधान समाज स्त्रियों के अधिकारों का हनन करता गया तथा कर्म सांस्कृतिक मूल्यों तथा परंपराओं के नाम पर शोषण करते हैं, जिसका परिणाम स्त्री की स्थिति दिन-ब-दिन दयनीय बन गयी। "देश की लगभग आधी आबादी महिलाएँ हैं, लेकिन आज भी बड़ी संख्या में महिलाएँ बेरोजगार है और आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भर है। परिवार, समाज और राष्ट्र के बेहतर भविष्य के लिए महिलाओं का सशक्तिकरण बेहद आवश्यक है। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना आर्थिक रूप से मजबूत करना, आत्मसम्मान और आत्मविश्वास बढ़ाना तथा सामाजिक राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना, यह सभी पहलू महिला सशक्तिकरण का हिस्सा माने जाते हैं।"[1] राष्ट्र का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विकास शासन की गुणवत्ता एवं महिलाओं की सक्षमता दोनों पर निर्भर करता है। महिला उद्यमियों की बढ़ती भागीदारी से महत्वपूर्ण आर्थिक विकास हुआ है। भारत सरकार महिला उद्यमियों को विभिन्न योजनाओं द्वारा वित्तीय सहायता कर रही है। ""सशक्तिकरण महिलाओं की पारंपरिक भूमिका में

एक मौलिक परिवर्तन है और सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उनकी भागीदारी में वृद्धि है।"[2] परंपरागत सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं के साथ व्यवहार और उनकी स्थिति में गुणात्मक सुधार हुआ है तथा उन्हें सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों और समूहों में शामिल किया जा रहा है।

➢ **महिलाओं के लिए सरकारी योजनाएँ-**

महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित करने तथा उनका आर्थिक विकास सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार ने शुरू की गयी प्रमुख योजनाएँ इस प्रकार है -

1) **मुद्रा योजना**- मुद्रा योजना (PMMY) एक शासकीय परियोजना 8 **अप्रैल** 2015 को शुरू हुईजो, "महिला उद्यमियों को नवनिर्माण, व्यापार और सेवा क्षेत्रों में छोटा व्यवसाय (बुटीक, ब्यूटी पार्लर, ट्यूशन सेंटर, सिलाई, छोटा उद्योग आदि) शुरू करने या बढ़ाने के लिए को बिना किसी गारंटी के ₹50,000 से ₹10 लाख तक का लोन प्रदान करती है।"[3] यह योजना महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कम ब्याज दरों पर ऋण देती है। Udyami Mitra पोर्टल या किसी भी बैंक, एनबीएफसी, या एमएफआई के माध्यम से आवेदन किया जा सकता है।

2) **स्टैंड-अप इंडिया योजना**- भारत सरकार की यह योजना 5 अप्रैल 2016 को महिलाओं, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों के बीच उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए की गई थी। "महिला उद्यमियों को ग्रीनफील्ड उद्यम (विनिर्माण, सेवा, या व्यापार क्षेत्र में पहली बार उद्यम) स्थापित करने के लिए ₹10 लाख से ₹1 करोड़ तक का बैंक ऋण प्रदान करना है।"[4] यह योजना प्रत्येक बैंक शाखा से कम से कम 18 वर्ष से अधिक उम्र के SC, ST या महिला उद्यमी को ऋण सुनिश्चित करती है, जिसका ब्याज दर सबसे कम दर होता है। पुनर्भुगतान 18 महीने की मोरेटोरियम अवधि के साथ अधिकतम 7 वर्षों में करना आवश्यक है। Stand-Up India पोर्टल (standupmitra.in) के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है। यह योजना गैर-वैयक्तिक उद्यमों के मामले में, आयोजक के रूप में 51% शेयरधारिता प्रदान करती है।

3) **अन्नपूर्णा योजना**- "अन्नपूर्णा योजना मुख्य रूप से खाद्य-आधारित व्यवसायों (जैसे खान-पान, टिफिन सेवा, कैटरिंग) को शुरू या विस्तार करने के लिए ₹50,000 तक का ऋण प्रदान करती है। 1 अप्रैल 2000 को प्रारंभ हुई यह योजना भारतीय स्टेट बैंक (SBI) (और अन्य बैंक) द्वारा पेश की जाती है, जिसके तहत बहुत कम ब्याज दर पर 36 महीनों (3 वर्ष) में ऋण चुकाने की सुविधा मिलती है।"[5] इस योजना के लिए केवल भारतीय महिला उद्यमी ही इसके लिए पात्र हैं। इच्छुक महिलाएँ अपने नजदीकी भारतीय स्टेट बैंक (SBI) शाखा में जाकर या इसके वेबसाइट के माध्यम से सीधे आवेदन कर सकती हैं।

4) **स्त्री शक्ति योजना**- "स्त्री शक्ति पैकेज महिलाओं के लिए अक्टूबर 2000 में शुरू की गई एक अनोखी सरकारी योजना है। कुछ रियायतें देकर उद्यमिता का समर्थन करती है। यह महिला लोन योजना उन महिलाओं के लिए पात्र है, जिनके पास व्यवसाय में अधिकांश स्वामित्व है तथा इन महिला उद्यमियों को उनकी संबंधित राज्य एजेंसियों द्वारा आयोजित उद्यमिता विकास कार्यक्रम के तहत नामांकित किया जाना चाहिए। महिलाओं को ₹2 लाख से अधिक के लोन पर 0.05% की ब्याज रियायत का लाभ मिलता है।

5) **देना शक्ति योजना**- देना शक्ति योजना कृषि, विनिर्माण, माइक्रो-क्रेडिट, रिटेल स्टोर या छोटे उद्यमों में महिलाओं को ₹20 लाख तक का लोन मिलता हैं तथा इंटरेस्ट रेट पर 0.25% की रियायत भी प्रदान करती है। महिला उद्यमी माइक्रो क्रेडिट श्रेणी के तहत ₹50,000 तक के लोन का लाभ उठा सकती हैं।

6) **महिला उद्यम निधि योजना**- सबसे लोकप्रिय सरकारी योजनाओं में से एक, महिला उद्यम निधि योजना, पंजाब नेशनल बैंक और भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) द्वारा पेश की जाती है। महिला उद्यमियों को 10 वर्षों में चुकाने के लिए ₹10 लाख तक का लोन देकर एक नया लघु उद्यम स्थापित करने में सहायता करती है। ब्याज दर शुल्क बाजार दरों पर निर्भर करता है।

7) **ओरिएंट महिला विकास योजना**- ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स ने यह योजना शुरू की, जिसमें व्यक्तिगत रूप से या किसी मालिकाना संस्था में संयुक्त रूप से 51 प्रतिशत शेयर पूँजी की स्वामित्व वाली महिलाएँ ओरिएंट महिला विकास योजना के माध्यम से लोन का लाभ उठा सकती हैं। ₹ 10 लाख से ₹ 25 लाख के बीच के लोन के लिए गारंटी की आवश्यकता होती है। लोन 2 प्रतिशत ब्याज दर पर 7 साल का पुनर्भुगतान है।

8) **सेंट कल्याणी स्कीम**- इस योजना का लाभ मौजूदा और नए उद्यमी तथा स्व-नियोजित महिलाएँ दोनों उठा सकती हैं। कृषि, कुटीर उद्योग और खुदरा व्यापार जैसे सूक्ष्म/लघु उद्यम सभी आवेदन करने के पात्र हैं। इसके लिए किसी गारंटर की आवश्यकता नहीं होती। लोन का ब्याज दर बाज़ार की दरों पर निर्भर करता है तथा पुनर्भुगतान कार्यकाल 7 साल का होता है।

9) **उद्योगिनी योजना**- महिला विकास निगम ने भारत सरकार के तहत उद्योगिनी योजना लागू की है। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में रहने वाली अनपढ़ महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करके उद्यमिता को बढ़ावा देती है तथा प्रेरित करती है।"[6]

10) **प्रधानमंत्री रोजगार योजना**- "देश के शिक्षित युवाओं को स्व-रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए 1993 में शुरू की गई यह योजना युवाओं को अपनी व्यक्तिगत व्यावसायिक परियोजना शुरू करने और बाद में दूसरों के लिए रोजगार की गुंजाइश पैदा करने के लिए एक लोन राशि प्रदान करती है। विनिर्माण, व्यापार, सेवाएँ आदि उद्योगों के लिए बिना कोई गारंटी के ₹1 लाख तक के लोन मिलता हैं। पुनर्भुगतान कार्यकाल 3 से 7 साल तक का होता है।"[7]

सरकारी योजना का उद्देश्य महिलाओं की आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है, ताकि व्यवसाय के विस्तार के साथ-साथ उसका आधुनिकीकरण भी कर सकते हैं। यह योजनाएँ न केवल वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देते हैं, बल्कि महिलाओं को नेतृत्व और सामुदायिक विकास में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर भी प्रदान करते हैं। महिला उद्यमियों के लिए सरकारी योजनाओं के मुख्य लाभ:

- **आसान और किफायती ऋण का प्रबंध**- विभिन्न योजनाओं के तहत, महिला उद्यमी कम ब्याज दरों पर व्यवसाय शुरू करने या बढ़ाने के लिए ऋण प्राप्त कर सकती हैं।

- **सुरक्षित ऋण**- कई सरकारी योजनाएँ (जैसे स्त्री शक्ति पैकेज, मुद्रा) बिना किसी सुरक्षा या गिरवी के 5 लाख से 10 लाख रुपये तक का लोन प्रदान करती हैं।
- **कम ब्याज दरें**- बैंक महिला उद्यमियों को ऋण पर रियायती ब्याज दरें प्रदान करते हैं।
- **अनुदान और वित्तीय सहायता**- महिला कॉयर योजना जैसी योजनाओं में मशीनरी की लागत पर 75% तक अनुदान मिलता है। वहीं, महिला उद्यम निधि के तहत 10 लाख रुपये तक के आसान ऋण उपलब्ध हैं।
- **तकनीकि और कौशल प्रशिक्षण**- सरकारी योजनाएँ व्यवसाय के लिए तकनीकी सहायता, कौशल विकास कार्यक्रम, और प्रशिक्षण प्रदान करती हैं।
- **सरलीकृत प्रक्रिया**- ये योजनाएँ महिलाओं को बिना अधिक कागजी कार्रवाई के ऋण प्राप्त करने में मदद करती हैं, जिससे उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने में प्रोत्साहन मिलता है।

महिला उद्यमियों को व्यवसाय शुरू करने से उनकी आत्मविश्वास में बढ़ोतरी हो रही है। विश्व बैंक की रिपोर्ट यह बताती है कि अगर 50 प्रतिशत महिला आबादी कार्यबल में शामिल हो जाती है, तो भारत का सकल घरेलू उत्पाद प्रति वर्ष 1.5 प्रतिशत अंकों से बढ़कर 9 प्रतिशत हो सकता है। लेकिन उसे बढ़ाने में अक्सर बाधाएँ तथा चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैं। प्रमुख रूप से जो बाधाएँ आती है वह इस प्रकार हैं-

- **वित्तीय संकट और ऋण में कमी**- महिला उद्यमियों को बैंकों से ऋण प्राप्त करने में अक्सर मुश्किल होती है, क्योंकि उनके पास संपत्ति या जमानत के रूप में गिरवी रखने के लिए संपत्ति की कमी होती है।
- **पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियॉं**- घर और व्यवसाय के बीच संतुलन बनाना सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। समाज महिलाओं से घर संभालने की उम्मीद करता है, जिससे व्यवसाय के लिए कम समय बचता है।
- **सामाजिक और लैंगिक रूढ़ियां**- पितृसत्तात्मक मानसिकता के कारण, महिलाओं के नेतृत्व क्षमता पर संदेह किया जाता है, जिससे उन्हें पुरुष प्रतिस्पर्धियों की तुलना में अधिक संघर्ष करना पड़ता है।
- **प्रशिक्षण और जानकारी की कमी**- व्यवसाय प्रबंधन, तकनीकी ज्ञान, कानूनी जानकारी और नेटवर्क की कमी के कारण महिलाएँ अपने उद्यम को कुशलतापूर्वक चलाने में असमर्थ होती हैं।
- **सुरक्षा और विपणन संबंधी मुद्दे**- पुरुषप्रधान बाज़ार में काम करते समय सुरक्षा की चिंताएँ और - विपणन के लिए आवश्यक नेटवर्क का अभाव भी महिलाओं के लिए एक बड़ी चुनौती है।

इन चुनौतियों के बावजूद सरकारी योजनाएँ इन बाधाओं को दूर करने और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में मदद कर रही हैं।

➢ **निष्कर्ष-**

समाज के आर्थिक विकास के लिए उद्यमशीलता तथा सतत व्यापार में वृद्धि आवश्यक है। उद्यमियों का उदय समाज में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक कारकों पर निर्भर करता है। महिलाओं को एक मंच प्रदान करने का काम स्वरोजगार समूह (Self-Help Groups, SHGs) करते हैं, जिसमें वे सामूहिक रूप से बचत, ऋण प्रबंधन तथा व्यावसायिक उद्यमों में हिस्सा ले सकती हैं। महिला उद्यमियों के लिए सरकारी योजनाएं न केवल आर्थिक निर्भर बनाती हैं, बल्कि उनमें नेतृत्व कौशल और सामुदायिक सहयोग की भावना भी विकसित होती हैं तथा इस तरह उन्हें अपने-अपने उद्योग कनेक्शन के साथ अपने कौशल, नेटवर्क को विकसित करने और उन्हें प्रतिस्पर्धी बाजारों के लिए तैयार करने में मदद करती हैं।

**संदर्भ सूची-**


1. D.P. Ambadas Pande and M.H.N. Tiwari, 'Government Schemes: A tool for Women Empowerment,' B. Aadhar, Int. Peer-Reviewed Index. Res.J., 2023
2. ग्रामीण विकाससुहास अव्हाड .डॉ -, सक्सेस प्रकाशन, पुणे, पृष्ठ 3.11
3. https://www.bajajfinserv.in/hindi/mudra-loan-for-women)
4. https://sbi.bank.in
5. www.bajajfinservmarkets.in
6. www.bajajfinservmarkets.in
7. सरकारी योजनाज्ञानेश्वर मगर .प्रा -, रत्नाई प्रकाशन, कोल्हापुर, पृष्ठ

# डिजिटल युग में महिला उद्यमिता: ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और विपणन रणनीतियां

**हरिभाऊ नामदेव विटोरे**
हिंदी संशोधक छात्र
बलभीम कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय बीड

**सार (Abstract)**

डिजिटल युग में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विकास ने व्यापार और उद्यमिता के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया है। इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग ने महिलाओं को भी उद्यमिता के क्षेत्र में नई पहचान बनाने का अवसर प्रदान किया है। आज महिलाएँ घर बैठे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपने उत्पादों और सेवाओं को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुँचा रही हैं। इस शोध आलेख का उद्देश्य डिजिटल युग में महिला उद्यमिता के विकास, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की भूमिका तथा प्रभावी विपणन रणनीतियों का विश्लेषण करना है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि डिजिटल साक्षरता, प्रशिक्षण और उचित संसाधनों की उपलब्धता से महिला उद्यमिता को और अधिक प्रोत्साहन मिल सकता है।

**कीवर्ड:**

डिजिटल युग, महिला उद्यमिता, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, डिजिटल मार्केटिंग, स्वरोजगार

## 1. प्रस्तावना

वर्तमान समय में डिजिटल तकनीक ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। व्यापार और उद्यमिता भी इससे अछूते नहीं रहे हैं। पहले जहाँ व्यवसाय स्थापित करने के लिए अधिक पूंजी और संसाधनों की आवश्यकता होती थी, वहीं आज ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से कम लागत में व्यवसाय शुरू करना संभव हो गया है।

महिला उद्यमिता आज के समय में आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन गई है। महिलाएँ अब केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे छोटे और मध्यम व्यवसायों के माध्यम से समाज और अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। डिजिटल युग ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का एक सशक्त माध्यम प्रदान किया है।

## 2. अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध आलेख के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. डिजिटल युग में महिला उद्यमिता के स्वरूप को समझना।
2. ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की भूमिका का विश्लेषण करना।
3. डिजिटल विपणन रणनीतियों का अध्ययन करना।
4. महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियों की पहचान करना।
5. महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के उपाय सुझाना।

## 3. शोध पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक आंकड़ों (Secondary Data) पर आधारित है। इसमें विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, और इंटरनेट स्रोतों का उपयोग किया गया है। विषय से संबंधित साहित्य का विश्लेषण करके निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

## 4. डिजिटल युग में महिला उद्यमिता

डिजिटल युग ने महिलाओं के लिए उद्यमिता के नए अवसर प्रदान किए हैं। महिलाएँ अब छोटे-छोटे व्यवसायों के माध्यम से आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। महिलाएँ निम्नलिखित क्षेत्रों में उद्यमिता कर रही हैं:

1. हस्तशिल्प और कला उत्पाद
2. खाद्य प्रसंस्करण (अचार, पापड़, बेकरी)
3. फैशन और बुटीक
4. ऑनलाइन शिक्षण और सेवाएँ
5. सौंदर्य और स्वास्थ्य सेवाएँ
6. ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से ये व्यवसाय तेजी से विकसित हो रहे हैं।

## 5. ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की भूमिका

### (1) सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म

फेसबुक, इंस्टाग्राम और व्हाट्सऐप जैसे प्लेटफॉर्म उत्पादों के प्रचार के लिए अत्यंत प्रभावी माध्यम हैं। इन प्लेटफॉर्म के माध्यम से महिलाएँ सीधे ग्राहकों से जुड़ सकती हैं।

### (2) ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म

ऑनलाइन मार्केटप्लेस जैसे अमेज़न, फ्लिपकार्ट और मेशो छोटे उद्यमियों को अपने उत्पाद बेचने का अवसर प्रदान करते हैं।

### (3) डिजिटल भुगतान प्रणाली

UPI, गूगल पे, फोनपे जैसी डिजिटल भुगतान सेवाएँ लेन-देन को आसान और सुरक्षित बनाती हैं।

## 6. डिजिटल विपणन रणनीतियाँ

ऑनलाइन व्यवसाय की सफलता के लिए निम्नलिखित रणनीतियाँ महत्वपूर्ण हैं:

1. सोशल मीडिया मार्केटिंग – नियमित पोस्ट और प्रचार करना।
2. कंटेंट मार्केटिंग – आकर्षक फोटो, वीडियो और जानकारी साझा करना।
3. ब्रांडिंग – अपने उत्पाद के लिए अलग पहचान बनाना।
4. ग्राहक संबंध प्रबंधन – ग्राहकों के साथ अच्छा व्यवहार और संवाद बनाए रखना।

5. ऑनलाइन विज्ञापन – फेसबुक और गूगल पर विज्ञापन देना।

## 7. चुनौतियाँ

महिला उद्यमियों को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है:

1. डिजिटल साक्षरता की कमी
2. वित्तीय संसाधनों की कमी
3. तकनीकी ज्ञान का अभाव
4. सामाजिक और पारिवारिक बाधाएँ
5. बाजार प्रतिस्पर्धा

## 8. सुझाव

महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए निम्न उपाय किए जा सकते हैं:

1. डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम चलाना।
2. सरकारी योजनाओं की जानकारी देना।
3. वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना।
4. प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित करना।
5. स्वयं सहायता समूहों को प्रोत्साहित करना।

## 9. निष्कर्ष

डिजिटल युग में महिला उद्यमिता के लिए अपार संभावनाएँ हैं। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और डिजिटल विपणन रणनीतियों के माध्यम से महिलाएँ अपने व्यवसाय को विकसित कर सकती हैं और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकती हैं।

## संदर्भ सूची (References)

1. Ministry of Women and Child Development, Government of India – महिला सशक्तिकरण और उद्यमिता संबंधी रिपोर्ट।
2. NITI Aayog – महिला उद्यमिता और डिजिटल अर्थव्यवस्था से संबंधित रिपोर्ट।
3. Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises – MSME योजनाएँ और महिला उद्यमिता रिपोर्ट।
4. Digital India अभियान से संबंधित सरकारी दस्तावेज और रिपोर्ट।
5. Maharashtra State Gazetteer – महाराष्ट्र के सामाजिक एवं आर्थिक अध्ययन से संबंधित जानकारी।
6. Entrepreneurship Development, Vasant Desai, Himalaya Publishing House, Mumbai

# भारतीयता: संकल्पना एवं स्वरूप

**डॉ. राम सदाशिव बड़े**
स्वामी रामानंद तीर्थ महाविद्यालय, अंबेजोगाई

भारतीय समाज एवं संस्कृति विश्व के सबसे प्राचीनतम समाज में से एक है। उसका अपना इतिहास है और अपनी परंपरा। संपूर्ण विश्व में भारत की पहचान उसकी संस्कृति और परंपरा के कारण होती रही है।

भारतीयता की संकल्पना स्पष्ट करने हेतु अनेकानेक सवालों का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार की संकल्पना स्पष्ट करते समय कई सवाल उपस्थित किया जा सकते हैं। ऐसे समय में जरूरी नहीं है कि उन सभी सवालों के जवाब इस प्रकार प्राप्त किया जाए, जो सबका समाधान कर सके। मूलतः भारतीयता की संकल्पना एक अत्यंत संश्लिष्ट और जटिल संकल्पना है। इस संकल्पना को जानने और समझने के लिए 'भारत' शब्द की उत्पत्ति, भारतीय का अर्थ और फिर भारतीयता को समझना होगा।

**भारत शब्द की उत्पत्ति:-** 'भारत' शब्द की उत्पत्ति कब कहां और कैसे हुई यह बड़ा विवाद का विषय रहा है। भारत शब्द की उत्पत्ति के संदर्भ में कई मत प्रचलित है। इसमें पहला मत है - ऋग्वेद काल में इस देश में भरत नाम का मानव समूह रहा करता था। इस मानव समूह के आधार पर इस देश को भारत कहा गया है। दूसरे मत के अनुसार दुष्यंत और शकुंतला का पुत्र भरत इस देश का सम्राट था, इसलिए इस देश का नाम भारत पड़ा।तीसरे मत के अनुसार वैदिक काल में आर्य समुदाय की 'भरत' नाम की एक पराक्रमी शाखा थी, जिसेने सतलज नदी को पार कर एक प्रदेश में अपनी बस्ती बनाई थी। बाद में उस बस्ती को ही भारत जनपद कहा जाने लगा और इस जनपद की प्रजा को भारतीय प्रजा कहकर पहचाने जाने लगा। इसके आधार पर देश के विशिष्ट प्रदेश को भारत कहा जाने लगा। चौथे मत के अनुसार 'ऋग्वेद' में यज्ञ अग्नि को भारत कहा जाता था और भारत जनपद में रहने वाले लोगों ने सबसे पहले इस देश की भूमि पर यह यज्ञ अग्नि प्रज्वलित की, इसलिए इस देश का नाम भारत पड़ा। पांचवें मत के अनुसार बौद्ध ग्रंथो में भारत को 'जंबूद्वीप' की संज्ञा दी गई थी। जंबूद्वीप एक भूप्रदेश है और इस प्रदेश के एक हिस्से को भारत कहा गया। उल्लेखनीय बात यह है कि प्राचीन युग में इस देश के कई नाम प्रचलित थे जैसे - अजानाभवर्ष, हैमतवर्ष, कार्मिक संस्थान, कुर्मसंस्थान आदि।

**भारतीय शब्द का मूल अर्थ और परिभाषा:-** भारतीय का मूल अर्थ बताते हुए 'भाषा' पत्रिका के मार्च अप्रैल 2006 के अंक में लिखा गया है —"भारतीय शब्द का मूल 'भारत' शब्द है । भारत 'भा' और 'रत' इन दो शब्दों के योग से बना है। 'भा' का अर्थ है 'प्रकाश' और 'रत' का अर्थ है 'तलीन'। इस तरह भारत का अर्थ हुआ प्रकाश में रत या लीन ।"1 भारतीय शब्द का अर्थ बताते हुए 'लघु हिंदी शब्द सागर' में लिखा गया है-" भारत संबंधी भारत का निवास"2 अतः ऊपर दिए गए विवेचन के आधार पर भारतीय शब्द के चार- पांच अर्थ ग्रहण किया जा सकते हैं। पहले अर्थ तो यह है कि जो व्यक्ति भारत देश से संबंधित हो , जो भारत के भौगोलिक सीमाओं में निवास करता हो, भारतीय भाषा बोलता हो , वह भारतीय है। दूसरा अर्थ है, जो पूर्ण रूप से भारतीय परिवेश से संबंधित है, वह भारतीय है। तीसरी अवधारणा जातीय संस्कृत है, जो भारत के मौलिक स्वरूप उसकी मूल संस्कृति एवं जीवन जीने की पद्धति की ओर संकेत करता है।

उदाहरण स्वरूप मान लीजिए महाराष्ट्र के किसी व्यक्ति को अगर दिल्ली में पूछा गया कि आप कहां के हैं वह तुरंत उत्तर देगा मैं महाराष्ट्र का हूं। महाराष्ट्रीयन हूं। अर्थात वह व्यक्ति महाराष्ट्र की संस्कृति , महाराष्ट्र की कला, महाराष्ट्र की भाषा आदि की ओर संकेत करता है। यदि महाराष्ट्र के किसी व्यक्ति को अमेरिका में पूछा जाए कि आप कहां के हैं? वह तुरंत उत्तर देगा मै भारत का हूं ।भारतीय हूं। अर्थात वह व्यक्ति भारत की संस्कृति, भारत की कला, भारत की भाषा आदि की ओर संकेत कर रहा है।

**भारतीयता का मुख्य अर्थ:-** भारतीयता शब्द का मूल अर्थ बताते हुए मानव मूल्य परक शब्दावली का विश्व कोष में लिखा गया है —"भारतीय+तल+टॉप = भारतीयता। भारतीय विशेषण में 'ता' प्रत्यय लगाकर बनाया गया है। यह संस्कृत शब्द स्रोत से प्राप्त शब्द है। 'ता' प्रत्यय के योग से संख्या भाववाचक संज्ञा रूप में परिणत हो जाता है। भारतीय का अर्थ है भारत से संबंधित।"3 भारतीयता के इस मुख्य अर्थ की ओर ध्यान दे, तो ज्ञात होता है कि भारतीयता वह भाव या विचार है, जिसमें भारतीय तत्वों की झलक दिखाई देती है। निम्नांकित कुछ उदाहरण से भारतीयता का अर्थ और अधिक स्पष्ट हो सकता है। जैसे- आपका यह विचार भारतीयता के अनुकूल है । उसका आचरण भारतीयता से प्रभावित है। भारतीयता मानव मूल्यों की पुष्टि करती है। इन प्रयोगों में भारतीयता यह शब्द भारत से संबंधित विभिन्न तत्वों की ओर संकेत करता है। मान लीजिए की कोई भारतीय स्त्री परदेश में जाती है और उसे शराब पीने के लिए कहते हैं, तो वह सहज रूप में कह देती है माफ कीजिए यह हमारे संस्कारों में नहीं है। वह स्त्री जीन संस्कारों की बात करती है, असल में वह भारतीयता है।

**भारतीयता की परिभाषाएं :-** हमने पहले ही कहा है कि भारतीयता को परिभाषित करना कोई आसान कार्य नहीं है ।मूलत: यह संकल्पना अत्यंत संश्लिष्ट जटिल और विभिन्न संदर्भ में उपयोग में लाई जाने वाली तथा व्यापक संकल्पना है। विभिन्न विद्वानों ने भारतीयता को अलग-अलग प्रकार से परिभाषित करने की कोशिश की है अत: कुछ प्रमुख विद्वानों की परिभाषाएं यहां दी जा रही है।

**भारत भूषण अग्रवाल** के मतानुसार-" भारतीयता पद्धति अथवा पदार्थ में नहीं है, तो उसके प्रति हमारा दृष्टिकोण समन्वय अथवा मेल का दृष्टिकोण है। पृथक और विभिन्न तत्वों में भी एक विराट जीवन देखने की चेष्टा भारतीयता है। इसी के सहारे हम विश्व दर्शन तक पहुंच सकते हैं, जो प्राय: सभी देशों का लक्ष्य है।"4

**विद्यानिवास मिश्र** के अनुसार-" नानात्व में एकता का दर्शन ही भारतीयता है। व्यवहार और परमार्थ की अलग-अलग पहचान ही भारतीयता है ।भाव और ज्ञान की एकता ही तो भारतीयता है ।"5

**कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर** के अनुसार —"भारतीय जीवन धीरे-धीरे जीने का जीवन है। उसमें उद्वेश और आवेग नहीं होता संतोष और शांति ही उसके मूल आधार है।"6

**स्वामी विवेकानंद** के अनुसार-" भारतीयता आध्यात्मिक तरंगों से ओत प्रोत है ।"7

**महर्षि अरविंद** के अनुसार-" भारतीयता का प्राण धर्म है इसकी आस्था धर्म है और इसका भाव धर्म है"8

**डॉ शिव कुमार मिश्रा** के अनुसार-"भारतीयता को पूरी तरह समझने के लिए भारत को पूरी तरह समझना आवश्यक है, क्योंकि इसके अभाव में भारतीयता की चर्चा अर्थ नहीं रखती। जब मैं भारत को समझने की

बात कर रहा हूं, तो मेरा आशय उसकी परंपरा और उसके वर्तमान तथा उनके बीच से उगते भविष्य को समझने से हैं ।''9

**डॉ मदन मोहन तरुण** ने भारतीयता को परिभाषित करते हुए लिखा है-" हम अपनी विशेषताओं और विकृतियों के साथ ही तो भारतीयता है। भारतीयता कोई आसमानी चीज नहीं है। वह हमारे जीवन की सामान्यतम विशिष्टता है। आज भारतीयता समय के अनुकूल नूतन मूल्य की स्वीकृति में है। उपलब्ध साधनों से संसार संपन्न देशों के बीच अपने देश को प्रतिष्ठा दिलाने में है। गरीबी और कू प्रथाओं के विरुद्ध सामूहिक संघर्ष में निहित है ।वह मंदिरों के निर्माण में नहीं है। परिवहन यातायात और विद्युतीकरण तथा शिक्षा के अधिकतम प्रसार में निहित है।''10

**मानव मूल्य परक शब्दावली का विश्व कोष** के अनुसार-" भारतीयता जीवन जीने की सच्ची कला है। क्योंकि यह मनुष्य को मानसिक शांति देती है। भारतीयता का मुख्य अर्थ बनता है वह भाव या विचार जिसमें भारतीय तत्वों की झलक हो, जो भारतीय संस्कृति से संबंधित हो। भारतीयता शब्द मुख्य रूप से ईसी अर्थ में प्रयुक्त होता है।''11

**भारतीयता के लक्षण:-** मूलत: भारतीयता का संबंध भारतीय अस्मिता के साथ है। 'अस्मिता' का मुख्य अर्थ —"अस्मि+ तल + टाप = अस्मिता। स्पष्ट है अस्मिता मन का वह भाव या मनोवृति है, जिसमें यह मानकर चला जाता है कि मेरी एक पृथक और विशिष्ट सता पहचान है।''12 यदि भारतीयता का संबंध अस्मिता के साथ है, भारतीय विशिष्टता के साथ है, तो भारत की पहचान के कई लक्षण होंगे। अत: भारतीयता के कुछ प्रमुख लक्षण नीचे दिए जा रहे हैं- आध्यात्मिकता, संस्कृति, कर्म- पुनर्जन्म, स्त्रियों का आदर, वर्णाश्रम आश्रम, 16 संस्कार, एकता, सहिष्णुता, धर्म की प्रधानता, समन्वय शक्ति, त्याग, आदर्श विश्व बंधुत्व, पर्व और त्योहार।

**भारतीयता का बदलता हुआ स्वरूप :-** ऊपर हमने भारतीयता के जिन लक्षणों की चर्चा की है, उसके बदलते हुए स्वरूप पर भी चर्चा करना नितांत आवश्यक बन जाता है। जैसे-जैसे युग आगे बढ़ता गया वैसे-वैसे भारतीयता का स्वरूप भी बदलता गया। आधुनिक पीढ़ी में त्याग की जगह भोग को, विनम्रता की जगह अहम्, गुरुजनो के प्रति सम्मान की जगह उनका अपमान, अनुशासन की जगह आक्रमण, मूल्य और आदर्शों की जगह उनका अस्वीकार, भारतीय जीवन प्रणाली की जगह पश्चिम जीवन प्रणाली के प्रति आकर्षण, समन्वय की जगह असमन्वय, बंधुता की जगह कटुता यह सब कुछ भारतीयता के बदलते हुए स्वरूप की ओर संकेत कर रहा है ।

वर्तमान युग में भारतवासियों में आपसी फूट और कलह, भाषावाद, प्रांत वाद, आलस्य शराबीपन, जुआ, पर स्त्री गमन, ऊंच-नीच का भेदभाव, जातिवाद आदि का बोलबाला है। भाषा को लेकर आए दिन झगड़े चलते ही रहते हैं। एक ओर मराठी के मुद्दे राज ठाकरे जैसे नेता पर पूरे देश में बवाल मचा देते हैं, तो दूसरी ओर लालू प्रसाद यादव जैसे राजनेता कहते हैं हम मुंबई में आकर छठ पूजा करेंगे। प्रांत वाद का ताजा उदाहरण है, महाराष्ट्र और कर्नाटक सीमावद से जुड़ा हुआ। कोई कहता रहता है, मैं महाराष्ट्र का हूं, मैं कर्नाटक का हूं, मैं गुजरात का हूं, मैं आसाम का हूं, मैं यूपी का हूं, किंतु कोई यह नहीं कहता कि मैं भारत का हूं। मैं भारतीय हूं। सचिन तेंदुलकर जैसे महान खिलाड़ी ने कहा कि मैं पहले भारतीय हूं और बाद में

महाराष्ट्रीयन इस पर जातिवादी ताकतों ने संपूर्ण देश में बवाल मचा दिया। अब आप सोचिए इस देश की प्रगति कैसे संभव है इससे हमारी भारतीयता हमारी एकता क्या खाक बनी रहेगी।

**सारांश** :- सारांश रूप में यह कहा जा सकता है कि भारतीयता को किसी 10-15 लक्षणों में बांध देना उसके साथ अन्याय होगा। भारतीयता पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण धुंधलापन आ गया है। सच्ची भारतीयता के दर्शन हमें महात्मा गांधी के सादा जीवन उच्च विचारों में होते हैं। भारत के राष्ट्रगीत में होते हैं। तथा जयशंकर प्रसाद की निम्न पंक्तियों में होते हैं

"औरों को हंसते देखा मनु हंसो और सुख पाओ।

अपने सुख को विस्तृत कर लो सबको सुखी बना।।"13

**संदर्भ ग्रंथ सूची:-**

1. भाषा पत्रिका मार्च-अप्रैल 2006, पृष्ठ, 25
2. लघु हिंदी शब्द सागर, पृष्ठ ,223
3.मानव मूल्य परक शब्दावली का विश्व कोष, पृष्ठ ,1287
4.भारतीयता और हिंदी कविता, पृष्ठ, 25
5.भारतीयता की पहचान,पृष्ठ, 49
6. मानव मूल्यपरक शब्दावली का विश्व कोष, पृष्ठ, 1287
7. वही, पृष्ठ, 1287
8. वही, पृष्ठ, 1287
9.भारतीयता और हिंदी कविता, पृष्ठ, 11
10.स्वाधीनोत्तर हिंदी साहित्य और भारत, पृष्ठ, 25
11.मानव मूल्य परख शब्दावली का विश्व कोष, पृष्ठ, 1287
12.वही, पृष्ठ, 1287
13.कामायनी, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ ,22

# ग्रामीण महिला उद्योनिता संभावनाय व सामाजिक परिवर्तन

**प्रो. डॉ . राजश्री बा . कल्याणकर**
कै . लक्ष्मीबाई देशमुख महिला महाविद्यालय परळी वै जि . बीड 431515
दूरभाष 770 970 5454

आज के भारतीय समाज में अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है,क्योंकि यह न केवल आर्थिक विकास बल्की सामाजिक संरचना मे भी गहरे बदलाव ला रहा है ।

1. ग्रामीण महिला उद्योनिता का अर्थ :--

ग्रामीण महिला उद्य मिता से अर्थ उन महिला से है जो गाव मे रहते हुए स्वयं का व्यवसाय, लघुउद्योग ,कृषि आधारित या हस्तशिल्प आधारित कार्य आरंभ करती है और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती है ।

उदाहरण :-- डेअरी,मधुमक्खी पालन,हस्तकला,खाद्य प्रसंस्करण (आचार पापड स्नॅक्स )

2 . ग्रामीण महिलाओं के लिए उपलब्ध संभावनाये:-आज ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के लिए पहिले की तुलना मे अधिक अवसर उपलब्ध हो रही है ।

(i) सरकारी योजनाएँ

भारत सरकारने महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए कई योजनाएँ शुरू की है ।

* स्वयंसहायता समूह (SHG) ,राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ( NRLM), मुद्रा योजना, स्टॅन्ड अप इंडिया ,महिला उदिमिता मंच । इन्से क्रेडिट प्रशिक्षण, बाजार संपर्क मिलते है ।
* डिजिटल पहुंच :---- मोबाईल बँकिंग, व्हाट्सअप एफबी मार्केटिंग ग्रामीण ,ई-कॉमर्स (ओएनडीसी ॲमेझॉन सहेली आदि ) से छोटे छोटे प्रोडक्ट्स बाहर बेचना आसान हुआ ।
* क्लस्टर मॉडेल :--- समूह उत्पादन प्रसंस्करण ब्रँडिंग करणे से लाबत भट्टी और मोल भाव बढता है ।
* ऋण सुविधा
* प्रशिक्षण
* विपणन सहायता

प्रदान करती है ।

(ii) डिजिटल टेक्निक की भूमिका :----

डिजिटल इंडियाअभियान के कारण आता ग्रामीण महिलाएँ

* ऑनलाइन विक्री
* डिजिटल भक्तान
* ई-कॉमर्स प्लॅटफॉर्म का उपयोग कर पा रही है ।

( iii) महिला उद्यमिता से होने वाले सामाजिक परिवर्तन :---

1. आर्थिक स्वतंत्रता :--- जब महिलाये स्वयं कमाने लगती है तो परिवार मे उनका निर्णय निर्माण मे योगदान बढता है । इससे स्त्री पुरुष समानता को बढावा मिलता है ।

2. पारिवारिक संरचना मे परिवर्तन :----- पहले महिलाएँ केवल सिमित लेकिन अब वे :-

* व्यवसाय चला रही है ।
* बच्चो की शिक्षा और परिवार की आर्थिक योजना मे सक्रिय भूमिका निभा रही है ।

3. सामाजिक सन्मान और पहचान :----

उद्यमी बनने के बाद महिलाओं की सामाजिक स्थिती मजबूत होती है और उन्हे समुदाय मेतृत्व अवसर मिलते है ।

* आय बढनेसे शिक्षा, स्वास्थ, पोषण पर खर्च बढता है - बेटियों की स्कूल ड्रॉप - आउट दर घटती है ।
* घर और पंचायत मे निर्णय शक्ती बढती है ।

महिलाओं की आवाज सार्वजनिक मामलो मे मजबूत होती है ।

* बाल-विवाह ,घरेलू हिंसा जैसी कुरीतियो असर आर्थिक आत्मनिर्भरता से बाहर निकलने के विकल्प खुलते है ।
* रोल मॉडेल प्रभाव :- एक महिला सफल होती है तो पडोस की और ते भी कोशिश करती है । समुदाय का नजरिया बदलता है ।

4. ग्रामीण महिला विद्यापीठाचे प्रमुख क्षेत्र:-

| क्षेत्र | संभावनाएँ |
|---|---|
| कृषी आधारित उद्योग ------ | जैविक खेती दुग्ध उत्पादन |
| हस्त शिल्प ----------कढाई बुनाई लोककला | |
| खाद्य प्रसंस्करण----------पापड ,आचार ,मसाले | |
| सेवा क्षेत्र----------सिलाई ,ब्युटी पार्लर, डिजिटल सेवाएँ | |

5. चुनौतिया जो अभी भी मौजूद है:-- हालाँकि संभावनाय बढ रही है, फिर भी कुछ बाधाएँ है ।

* शिक्षा और कौशल की कमी
* सामाजिक रुढियाँ और पितृसत्ताक मानसिकता
* पुंजी और बाजार तक सीमित पहुंच

इन इन चुनावतीयो हो दूर करने के लिए प्रशिक्षण वित्तीय सहायता साक्षरता और सामाजिक जागरूकता आवश्यक आहे ।

6. ग्रामीण महिला उद्यमिता और व्यापक सामाजिक परिवर्तन :-----

ग्रामीण महिलाओं के उद्यमि बनने से

* ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होती है ।
* बेरोजगारी कम होती है ।
* पलायन मे कमी आती है ।
* अगली पिढी की शिक्षा और स्वास्थ मे सुधार होता है। यह परिवर्तन केवळ आर्थिक नाही बल्की सांस्कृतिक और मानसिकता से जुडा सामाजिक परिवर्तन भी है ।

7 . निष्कर्ष:----

ग्रामीण महिला उद्यमिता केवल व्यक्तिगत सफलता की कहानी नही है, बल्की यह पुरे समाज मे परिवर्तन का माध्यम बन रही है । जब ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा तकनीक और वित्तीय सहायता मिलती है तो वे न केवल अपने परिवार बल्की पुरे समाज के विकास में योगदान देती है ।

संदर्भसूची :- शोधलेख ( research articles )

1. Kumar n, raghunathan ,K. Arrieta,A Jilani, A & Pandey S. (2021) " The power of the collective empowers women evidence from self help groups in India
2. Devi,S (2024 ) transfermative impact of self help groups on women's empowerment in India international journal of economics.

# नई शिक्षा नीति और लड़कियों की वास्तविकता

**बालासाहेब एकनाथराव येवले**
पीएच.डी.शोधार्थी
हिंदी विभाग
बलभीम महाविद्यालय, बीड
balasahebyewle8@gmail.com

**डॉ. बाबासाहेब कोकाटे**
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
स्नातक तथा स्नातकोत्तर
हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र
तथा उपप्रधानाचार्य बलभीम महाविद्यालय,बीड
drbkokate@gmail.com

प्रस्तावना:

भारत में शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी साधन माना गया है। समय के साथ शिक्षा व्यवस्था में सुधार और परिवर्तन की आवश्यकता को देखते हुए भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू किया। यह नीति भारतीय शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी, कौशल-आधारित और रोजगारपरक बनाने का प्रयास करती है।

विशेष रूप से यह नीति लड़कियों की शिक्षा और उनके सशक्तिकरण को एक महत्वपूर्ण उद्देश्य के रूप में स्वीकार करती है। लंबे समय तक भारतीय समाज में लड़कियों को शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में कई बाधाओं का सामना करना पड़ा है। परंतु नई शिक्षा नीति में व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा में शामिल करके लड़कियों के लिए अनेक नए अवसर उपलब्ध कराए गए हैं।

1. शिक्षा में लैंगिक समानता और समावेशन

नई शिक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य शिक्षा में लैंगिक समानता स्थापित करना है। भारतीय समाज में लंबे समय तक लड़कियों की शिक्षा को सीमित दृष्टि से देखा गया, लेकिन आज शिक्षा को उनके अधिकार के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विशेष रूप से "Gender Inclusion Fund" की व्यवस्था की गई है, जिससे लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जा सके।प्रसिद्ध समाज सुधारक ज्योतिराव फुले ने स्त्री शिक्षा के महत्व पर कहा है,"विद्या बिना मती गई, मती बिना नीति गई, नीति बिना गति गई, गति बिना वित्त गया और वित्त बिना शूद्र दबा।"1 यह उद्धरण स्पष्ट करता है कि शिक्षा के अभाव में समाज का विकास संभव नहीं है, विशेषकर तब जब स्त्रियाँ शिक्षा से वंचित हों।

2. कौशल विकास और आत्मनिर्भरता

व्यावसायिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को कौशल प्रदान करना है, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें। नई शिक्षा नीति के अनुसार विद्यालय स्तर पर ही कौशल आधारित पाठ्यक्रम शुरू करने का प्रावधान किया गया है। जब लड़कियाँ तकनीकी और व्यावसायिक कौशल प्राप्त करती हैं, तो वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो सकती हैं और समाज में उनका स्थान सशक्त होता है। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने युवाओं के कौशल विकास के बारे में कहा है,"Learning gives creativity, creativity leads to thinking, thinking provides knowledge and knowledge makes you great."2 यह कथन बताता है कि शिक्षा और कौशल व्यक्ति को महान बनने की दिशा में प्रेरित करते हैं।

3. आर्थिक सशक्तिकरण के अवसर

व्यावसायिक शिक्षा लड़कियों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का महत्वपूर्ण माध्यम है। जब लड़कियाँ किसी कौशल या व्यवसाय में दक्ष होती हैं, तो वे नौकरी प्राप्त करने के साथ-साथ स्वयं का उद्यम भी स्थापित कर सकती हैं।

महान चिंतक डॉ. भीमराव आंबेडकर ने शिक्षा के महत्व को बताते हुए कहा है,

"Cultivation of mind should be the ultimate aim of human existence."3 यह विचार दर्शाता है कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं है, बल्कि आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण का मार्ग भी है।

4. सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती

भारतीय समाज में कई स्थानों पर अभी भी यह धारणा मौजूद है कि कुछ व्यवसाय केवल पुरुषों के लिए ही उपयुक्त हैं। नई शिक्षा नीति इन रूढ़ियों को तोड़ने का प्रयास करती है और लड़कियों को विज्ञान, तकनीक और विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। शिक्षिका सावित्रीबाई फुले ने कहा था कि,"जाओ, सीखो और दूसरों को सिखाओ; ज्ञान ही मुक्ति का मार्ग है।"4 यह विचार दर्शाता है कि शिक्षा सामाजिक बंधनों को तोड़ने की शक्ति रखती है।

5. तकनीकी और डिजिटल शिक्षा के अवसर

आज के युग में डिजिटल तकनीक शिक्षा और रोजगार का महत्वपूर्ण साधन बन गई है। नई शिक्षा नीति में डिजिटल शिक्षा और तकनीकी कौशल पर विशेष बल दिया गया है। लड़कियां यदि डिजिटल कौशल में दक्ष हों, तो वे वैश्विक स्तर पर भी रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकती हैं। महान कवि और चिंतक रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने शिक्षा के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा है,"The highest education is that which does not merely give us information but makes our life in harmony with all existence."5 यह विचार शिक्षा को जीवन के व्यापक विकास से जोड़ता है।

6. ग्रामीण क्षेत्रों में व्यावसायिक शिक्षा का महत्व

ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों के लिए शिक्षा और रोजगार के अवसर सीमित होते हैं। नई शिक्षा नीति ग्रामीण क्षेत्रों में कौशल विकास केंद्र और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से इन अवसरों को बढ़ाने का प्रयास करती है। महात्मा गांधी ने शिक्षा के संदर्भ में कहा था, "By education I mean an all-round drawing out of the best in child and man."6 यह कथन दर्शाता है कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की संपूर्ण क्षमता का विकास करना है।

निष्कर्ष:

नई शिक्षा नीति के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया गया है। यदि इसे प्रभावी रूप से लागू किया जाए, तो लड़कियों के लिए रोजगार, उद्यमिता और नेतृत्व के नए अवसर उत्पन्न हो सकते हैं।

नई शिक्षा नीति और व्यावसायिक शिक्षा का समन्वय भारतीय समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन का संकेत है। यह नीति लड़कियों को शिक्षा, कौशल और रोजगार के अवसर प्रदान करके उन्हें सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है।यदि इन नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो यह न केवल लड़कियों के जीवन में बल्कि पूरे समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

संदर्भ सूची

1. ज्योतिबा फुले, गुलामगिरी,पृ.50

2. ए.पी.जे. कलाम, Wings of Fire,पृ.75

3. बाबासाहेब आंबेडकर, The Buddha and His Dhamma,पृ.90

4. सावित्रीबाई फुले, काव्यफुले,पृ.75

5. रविद्रनाथ टेगोर, Personality,पृ.81

6. महात्मा गांधी, Basic Education,पृ.89

# नई शिक्षा नीति और व्यावसायिक शिक्षा लड़कियों के लिये अवसर और दिशायें

**अंजु देवचंद वाघ**
शोध छात्रा - हिंदी विभाग
बलभीम महाविद्यालय, बीड़

प्रस्तावना:

भारत में नई शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला और कौशल-आधारित बनाने पर जोर दिया है। इसका सकारात्मक प्रभाव लड़कियों की शिक्षा और उनके रोजगार अवसरों पर पड़ सकता है। शिक्षा अब केवल डिग्री तक सीमित न रहकर कौशल और रोजगार से जुड़ रही है।

नई शिक्षा नीति का उद्देश्य:

नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य है कि हर बच्चे विशेषकर लड़कियों को समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले।

मुख्य बिंदु:

1. शिक्षा को अधिक लचीला और कौशल आधारित बनाना।

2. ड्रॉपआउट दर कम करना और लड़कियों की भागीदारी बढ़ाना।

3. ग्रामीण क्षेत्रों की लड़कियों को विशेष सहायता देना।

4. डिजिटल और तकनीकी शिक्षा तक पहुंच बढ़ाना।

व्यावसायिक शिक्षा का महत्व:

आज के आधुनिक युग में केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है। रोजगार प्राप्त करने और आत्मनिर्भर बनने के लिए व्यावहारिक कौशल आवश्यक है।

व्यावसायिक शिक्षा के उद्देश्य:

1. विद्यार्थियों को रोजगार के लिए तैयार करना।

2. कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना।

3. स्वरोजगार को प्रोत्साहन देना।

4. बेरोजगारी कम करना।

निष्कर्ष:

नई शिक्षा नीति और व्यावसायिक शिक्षा मिलकर लड़कियों को आत्मनिर्भर, कुशल और सशक्त बना सकती है।

संदर्भ:

1. व्यावसायिक कार्य शिक्षा - एम. रोकड मंगलिक

2. कार्य शिक्षा - एल. पी. सिंह

# ग्रामीण महिला उद्यमिता*संभावनाएं और सामाजिक परिवर्तन :

शोध छात्र
**सय्यद सज्जाद एकबाल**
MA.Bed.Phd.
बलभीम महाविद्यालय बीड

ग्रामीण महिला उद्यमिता केवल आर्थिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह परिवार, समाज और स्थानीय अर्थव्यवस्था में व्यापक परिवर्तन का माध्यम है। जब गांव की महिलाएं स्वरोज़गार या व्यवसाय शुरू करती हैं, तो उससे आय, आत्मविश्वास और सामाजिक स्थिति।तीनों में सुधार होता है—

1. ग्रामीण महिला उद्यमिता क्या है?

जब गांव में रहने वाली महिलाएं अपने कौशल, संसाधनों और अवसरों का उपयोग करके स्वयं का व्यवसाय शुरू करती हैंजैसे खेती से जुड़े उत्पाद—, हस्तशिल्प, डेयरी, सिलाई, खाद्य प्रसंस्करण, ऑनलाइन बिक्री आदिमिता कहते हैं।तो उसे ग्रामीण महिला उद्य—

उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र में कई महिलाएं स्वयं सहायता समूह )SHG) के माध्यम से पापड़, मसाले, अगरबत्ती, डेयरी उत्पाद बनाकर अच्छा लाभ कमा रही हैं।

2. ग्रामीण महिला उद्यमिता की प्रमुख संभावनाएं

(1) कृषि आधारित उद्योग

जैविक खेती, डेयरी व्यवसाय, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन, सब्जी व फल प्रसंस्करण

(2) कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योग

बुनाई, सिलाई कढ़ाई, हस्तनिर्मित वस्त्र, मिट्टी के बर्तन, पारंपरिक कला उत्पाद

(3) खाद्य प्रसंस्करण

अचार, पापड़, मसाले, मिलेट उत्पाद (बाजरा), घर का बना स्नैक्स

(4) डिजिटल और सेवा क्षेत्र

ऑनलाइन उत्पाद बिक्री, कॉमन सर्विस सेंटर )CSC), मोबाइल रिपेयरिंग, ब्यूटी पार्लर

ग्रामीण ईकॉमर्स-

सरकार की योजनाएं जैसे प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, और स्टैंड अप इंडिया योजना महिलाओं को ऋण, प्रशिक्षण और बाज़ार उपलब्ध कराने में सहायता करती हैं।

3. ग्रामीण महिला उद्यमिता से सामाजिक परिवर्तन

(1) आर्थिक आत्मनिर्भरता

महिलाएं परिवार की आय में योगदान देती हैं, जिससे गरीबी कम होती है और जीवन स्तर सुधरता है।

(2) शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार

जब महिला कमाती है, तो वह बच्चों की शिक्षा और परिवार के स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देती है।

(3) सामाजिक सम्मान और निर्णय क्षमता

आर्थिक रूप से सक्षम महिला परिवार और समाज में महत्वपूर्ण निर्णय लेने लगती है। उसका आत्मविश्वास बढ़ता है।

(4) लैंगिक समानता

महिला उद्यमिता पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता को बढ़ावा देती है।

(5) स्थानीय रोजगार सृजन

एक महिला उद्यमी अन्य महिलाओं को भी काम देती है, जिससे गांव में रोजगार बढ़ता है।

4. चुनौतियां

पूंजी की कमी, बाज़ार तक पहुंच का अभाव, तकनीकी ज्ञान की कमी, सामाजिक रूढ़ियां, डिजिटल साक्षरता की कमी

5. समाधान और सुझाव

सरकारी योजनाओं की जानकारी और लाभ उठाना, स्वयं सहायता समूह से जुड़ना, डिजिटल प्रशिक्षण लेना, स्थानीय बाजार के साथसाथ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग- बैंकिंग और वित्तीय साक्षरता बढ़ाना

निष्कर्ष

ग्रामीण महिला उद्यमिता केवल आय का साधन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन की शक्ति है। इससे महिलाओं की स्थिति मजबूत होती है, परिवार सशक्त होता है और गांव की अर्थव्यवस्था विकसित होती है। यदि सरकार, समाज और स्वयं महिलाएं मिलकर प्रयास करें, तो ग्रामीण भारत में व्यापक और सकारात्मक बदलाव संभव है।

# महिला उद्यमियों हेतु सामाजिक- सांस्कृतिक बाधाएं एवं समाधान

**प्रो.डॉ.ललिता एन.राठोड**
हिंदी विभाग
बलभीम महाविद्यालय.बीड

**सारांश**

आधुनिक काल में समाज के दृढ कहे जाने वाले दो स्तंभ समाज के लिए आवश्यक तत्व हैं। इन दो स्तंभों पर ही समाज की नींव टिकी है। इन दोनों स्तंभों को स्त्री एवं पुरुष की संज्ञा प्रदान की जाती है। इनकी परस्पर निर्भरता तथा कार्य प्रणाली से ही उज्जवल समाज का निर्माण होता है। वर्तमान समय में स्त्री और पुरुष यह दोनों निरंतर परिवार, समाज तथा राष्ट्र की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहे हैं। हमारे देश भारतवर्ष में विशेषकर ग्रामीण समाज में गरीबी, अशिक्षा एवं आर्थिक असमानता आदि अनेक कारण काफी अंतराल से विकास के मार्ग में बाधा बने हुए हैं। स्त्री एवं पुरुष इन दोनों की श्रमशीलता उनके स्वयं के लिए ही नहीं बल्कि सामाजिक तथा सामुदायिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। महिला केंद्रित ग्रामीण उद्योगों के विकास तथा महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष मॉडल तैयार किया जा सकता है। इनमें महिलाओं को कानूनी सहायता, वित्तीय प्रबंधन तथा विपणन कौशल्या प्रदान करने की विधियों का विश्लेषण किया जा सकता है। महिला उद्यमियों के लिए स्थानीय और वैश्विक बाजार तक व्यापारिक स्थिति की पहुंच एवं वृद्धि के लिए उपाय किए जाने की आवश्यकता है। मनुष्य का जन्म से लेकर मृत्यु तक का जीवन क्रम एक व्यवस्था के अंतर्गत संचालित होता है। जिस प्रकार मनुष्य जीवन गति को चलायमान रखने के लिए एक निश्चित विधि एवं लक्ष्य क्रियाशील होते हैं। उसी प्रकार व्यक्ति को व्यक्तियों से, समूहों से, समाज से एवं राष्ट्र से जुड़ने के लिए एक सांस्कृतिक कड़ी होती है। इस कथन का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति के जीवन को सुचारू ढंग से चलने के लिए उद्यम की नितांत आवश्यकता होती है।

**बीज शब्द** - समाज,महिला, स्तंभ, तत्व, संज्ञा, पुरुष, उज्जवल, कार्य, प्रणाली, राष्ट्र, उन्नति, योगदान, ग्रामीण, स्त्री, शिक्षा, गरीबी, आर्थिक, असमानता, श्रम, विकास, उद्यम तथा बाजार आदि।

## प्रस्तावना

महिला को समाज में दोहरी भूमिका का निर्वहन करना पड़ता है। कितना भी कुछ हो महिला कितने भी ऊंचे पद पर प्रतिष्ठित क्यों ना हो परंतु उसे ग्रहणी की भूमिका का पालन अवश्य ही करना पड़ता है। एक महिला उद्यमी के समक्ष सामाजिक रूढ़ियों, पारिवारिक जिम्मेदारी, पितृसत्तक व्यवस्था के कठोर नियम, चूल्हा-चौका, बच्चों का पालन-पोषण, पति की तीमारदारी के साथ ही साथ सास-ससुर की भी देखभाल तथा सामाजिक बंधन आदि अनेक बाधाएं सुरक्षा के मुंह की भांति बाधाएं बनकर खड़ी रहती है।

## विश्लेषण

हमारे देश भारतवर्ष में यह परंपरा आदिकाल से प्रचलन में रही है कि पुरुष बाहर से कमाकर लाता था और स्त्री उसे व्यवस्थित करके परिवार का पालन-पोषण करती थी। कालांतर में जनसंख्या में वृद्धि के कारण पालन-पोषण का कार्य अवस्थित हो गया। इस कारण गाड़ी के दोनों पहिए स्त्री- पुरुष को परिवार को व्यवस्थित ढंग से चलाने के कारण श्रम करना अनिवार्य हो गया।" ग्रामीण समाज में महिलाओं की भूमिका को मुख्य रूप से घरेलू कार्यों, बच्चों की देखभाल और पारिवारिक जिम्मेदारियां तक ही सीमित माना गया है। निर्णय लेने की स्थिति में महिला का स्थान गोन ही रहता है। लिंग भेद के कारण इस कार्य में पुरुषों को

प्रमुख माना जाता है।"1 महिलाओं की सामाजिक स्थिति का आकलन अधिकतर उनके पारिवारिक भूमिकाओं के आधार पर ही निर्धारित किया जाता है। महिलाओं का घरेलू कार्यों के साथ-ही-साथ कृषि कार्य में भी सहयोग रहता है परंतु उनका यह योगदान अक्सर करके अदृश्य रहता है अर्थात उसके इन कार्यों की कार्य में गणना नहीं की जाती है इसका कारण यह है कि- " महिलाएं विवाह के पश्चात बाल-विवाह, दहेज-प्रथा जैसी कुप्रथाओं के चलते हुए ससुराल में आकर घरेलू कार्यों तथा पारिवारिक जिम्मेदारियां में उलझ जाती है। जिससे उनके शैक्षिक तथा पेशेवर अवसर अधिकतर सीमित हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में महिलाओं को अपना समग्र विकास तथा सामाजिक पहचान का सुदृढ़ करने के लिए श्रम करने की अनिवार्य आवश्यकता होती है।"2

महिलाओं को सामाजिक तथा सांस्कृतिक बढ़ाओ के कारण आत्मविश्वास में कमी, नेटवर्किंग में मुश्किल तथा सुरक्षा संबंधी चिंताओं से भी जूझना पड़ता है। महिला तथा पुरुष के एकत्रित होने के संज्ञान पर ध्यान देने की आवश्यकता है । "आधुनिक समय में मानव समुदाय को होमोसेपीयन्त कहा जाता है। इसके पूर्व को मानव को निएंडरथल कहते थे। वैज्ञानिकों का मानना है कि लाखों वर्ष पूर्व निएंडरथल पुरुषों तथा होमोसेपियंस महिलाओं के मध्य अधिक संबंध बने। आधुनिक वैज्ञानिक खोजों के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि अधिकतर मामलों में निएंडरथल पिता और मानव माताएं थी। यहीं से स्त्री और पुरुष के संबंधों की प्रगति का रहस्य ज्ञात होता है।"3 संबंधों का कारण ही स्त्री तथा पुरुष दोनों को जिम्मेदारियां के निर्वहन के लिए शारीरिक श्रम की ओर प्रेरित करने का कारण बना है।

अर्थव्यवस्था को स्थिर रखने,रोजगार के अवसरों को विकसित करने तथा नवाचार के लिए उद्यमिता आवश्यक कारक है। उद्यमिता विकास में महिलाओं की भूमिका मैं तो महत्वपूर्ण होती है। खेद का विषय यह है कि महिलाओं के उद्यमिता के विकास में सामाजिक तथा सांस्कृतिक बाधाएं अवरोध बनकर उनके इस मार्ग में रोड़ा अटका देती हैं। पूंजी की कमी, सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्याएं के अतिरिक्त भी अनेक ऐसे कारक हैं जो महिलाओं को उद्यमी बनने की संभावनाओं में बाधाएं उत्पन्न करते हैं।परिवार को व्यवसाय की अपेक्षा अधिक महत्व देना, लैंगिक भूमिकाएं आदि महिलाओं के नेतृत्व को सीमित करते रहते हैं। यह महिला उद्यमियों की असफलता में बाधक हैं। "औपचारिक सहायता नेटवर्क को सुदृढ़ करने की योजनाओं की नियमित जांच करना तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म संसाधनों की कमी से निपटने में कैसे मदद करें। इस पर ध्यान देना नितांत आवश्यक है। महिला उद्यमियों को अपने जीवन काल में साधारण समस्याओं की भांति ही कुछ विशेष समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है।"4

हमारे भारतवर्ष में जनसंख्या वृद्धि के साथ-ही-साथ बेरोजगारी एक प्रमुख समस्या है। "बेरोजगारी की बढ़ती हुई समस्या का सामना हम उद्यमिता विकास के माध्यम से ही कर सकते हैं। भारत सरकार समय-समय पर उद्यमिता विकास के लिए सामान्य जनता के मध्य योजनाएं लाती रहती है। इसमें केंद्रीय तथा राज्य इन दोनों सरकारों का सहयोग रहता है। वित्तीय व्यवस्था का प्रावधान भी भारत सरकार निरंतर करती रहती है। पंचवर्षीय योजनाओं की योजना इसी उद्देश्य से निर्धारित की गई है।" 5

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समग्र कौशल विकास पर जोर देती है।यह व्यावहारिक कौशल तथा उद्योग-विशिष्ट ज्ञान प्रदान करती है। कौशल विकास में खेल,शिक्षा,कला तथा व्यावसायिक शिक्षा में व्यावहारिक कौशल के साथ-ही-साथ अकादमिक ज्ञान को एकीकृत करके समग्र कौशल विकास पर जोर देती है। जिससे पुरुषों के साथ-ही-साथ महिलाओं को भी रोजगार एवं उद्यमिता के लिए तैयार किया जा सके।

प्राय: यह देखा गया है कि भारत जैसे विकासशील देश में महिला को भी एक सफल उद्यमी के स्वरूप में देखा जाता है तथा उसका भी औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे भारतीय समाज में महिलाओं को सदैव उपेक्षित ही किया गया है। क्षेत्र वह चाहे परिवार के नेतृत्व का हो, सामाजिक प्रतिष्ठा का पद हो या उद्यमिता का ही क्यों न हो परंतु वर्तमान समय में ऐसा नहीं है। महिलाएं किसी भी क्षेत्र में आज अपनी सफलता एवं बुलंदी के झंडे गाड़ रही है। वर्तमान समय में महिला चौका-चूल्हा से बाहर निकलकर उद्यमिता के औद्योगिक विकास में भी मुख्य भूमिका निभा रही है।

एम.एस.एम.ई के सर्वे की स्थिति यह दर्शाती है की कुल औद्योगिक उत्पादन में लगभग प्रतिशत देश के निर्यात का 30% रोजगार की स्थिति का एवं 26 मिलियन से अधिक इकाइयों में लगभग 96 मिलियन लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ है। महिला उद्यमियों का उदय होने में उनके परिवार, पर्यावरण एवं परिस्थिति की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। वर्ष सन 1961ई. के संविधान संशोधन में कृषि व ग्रामीण उद्योग मंत्रालय तथा लघु उद्योग मंत्रालय को एक में ही समावेशित कर दिया गया है। उद्यमिता से महिला उद्यमी को घर के अतिरिक्त आय वर्जित होती है। वह अपने परिवार को उज्जवल भविष्य की दिशा प्रदान कर सकती है। इसके अतिरिक्त उद्यमिता विकास से महिलाओं का सामाजिक उत्थान हो सकता है।

**निष्कर्ष**

उद्यमिता के माध्यम से महिलाएं समाज में अपनी एक पृथक पहचान बनाने के साथ-ही-साथ आत्मसम्मानपुर्ण जिंदगी जी सकती हैं। आर्थिक उन्नति होने से वह पराश्रित नहीं रहेगी तथा महिला शब्द के पर्यायवाची शब्द 'अबला' को मुंहतोड़ जवाब देने में सक्षम हो जाएगी। इस प्रकार उद्यमिता विकास संपूर्ण नारी समाज को सम्मान के उच्च शिखर पर स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगा। महिला उद्यमी के विकास में वित्त समस्या, विपणन समस्या, कच्चे माल की अनुपलब्धता, प्रतिस्पर्धा, जोखिम, प्रबंधनकीय क्षमता का अभाव आदि बाधाएं उपस्थित हैं। हमारे भारत सरकार अनेक प्रकार की योजनाएं पारित कर महिला उद्यमियों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर रही है।

**संदर्भ**

1. डॉ. रंजन त्रिवेदी -आत्मनिर्भरता और स्वयं सहायता समूह, संस्करण 2026 संकल्प प्रकाशन, कानपुर, पृ.20
2. वही पृ .21
3. गुणाकर मुळे - ब्रह्मांड की उत्पत्ति , संस्करण 2017, राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली, पृ. 240
4. सं. डॉ. प्रवीण कुमार - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा में नवाचार, संस्करण 2024, स्वराज प्रकाशन, मेरठ, पृ. 25
5. वही पृ. 23

# ग्रामीण महिला उद्यमिता : संभावनाएं और सामाजिक परिवर्तन

**सुनिता नारायण गायकवाड**
शोधार्थी
कला व वाणिज्य महाविद्यालय सातारा ,
E -Mailsunitalsnikam@gmail.com

**डॉ.बाबासाहेब कोकाटे**
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
स्नातक तथा स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
एवं अनुसंधान केंद्र
बलभीम महाविद्यालय बीड
E -Mail drbkokate@gmail.com

---

**प्रस्तावना**

वैश्वीकरण के इस युग में आर्थिक एवं सामाजिक परिवेश तेजी से बदल रहा है । २१ वी शताब्दी के आरंभ में भारतीय पुरुषप्रधान समाज में शोषित, पीडित अशिक्षित नारी अपने अस्तित्व और अस्मिता के लिए आत्मनिर्भरता के साथ आगे बढ़ने लगी । महिला सक्षमीकरण के अंतर्गत महिलाओं के लिए शिक्षा, आर्थिक स्वातंत्र्य निर्णयक्षमता सामाजिक समानता राजकिय समानता तथा पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की क्षमता को विकसित करने में 'सरकारी योजनाओं के साथ समाज भी अपनी अहम भूमिका निभा रहा है । "नारियों के लिए सबसे बडा अभिशाप उनकी अशिक्षा ठी और उनकी परतंत्रता का प्रमुख कारण उनकी आर्थिक स्वतंत्रता का अभाव था "।[१] लैंगिक भेदभाव मिटाकार रूढ़ियो' को तोड़कर प्रत्येक महिला को परिवार, समुदाय तथा समाज में अपनो हक के लिए खडे रहने का अधिकार प्राप्त होना ही विकास की सच्ची व्याख्या है । महिलाओंका सर्वसमावेशी विकास होना आवश्यक है। भारत में महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी अमिट छवि छोड रही है। शहरों में तो शिक्षा के द्वार खुले होने के कारण हर क्षेत्र में महिला पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं । विश्व में आज भारत की महिलाएं की हर क्षेत्र में उड़ान भर रही है । भारत गावों का देश है। भारत की असली पहचान तथा महिलाए रूढ़िओं विकास गांवों से निगडित है। देश के विकास में ग्रामीण महिलाए उद्योगक्षेत्र में भी आगे बढ़ रही है । गांवों में बालिकाओं के शिक्षा को प्रथमता देने के कारण लडकियों रूढ़िओं को चुनौती देकर आत्मनिर्भर बन रही है। अपने परिवार, समुदाय और समाज में निर्णयक्षमता से नौकरी तथा उद्यमिता में देश के आर्थिक विकास को आगे बढ़ा रही है। पुरुषों के साथ-साथ उद्योग क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका भी महत्वपूर्ण है ।" स्त्रियो कि अवस्था को सुधारे बिना जगात के कल्याण की कोई संभावना नही है "।[२]

भारतीय उद्योगक्षेत्र में आज गोवों का महत्वपूर्ण स्थान है। शहरी महिलाओं के साथ-साथ आज इस विकसित भारत में शिक्षा तथा डिजिटल भारत के माध्यम से गांव में महिलाओं के लिए अनेक क्षेत्र खुल गए है। भारत की कई सारी ग्रामीण लडकियॉं अपनी पढ़ाई तो पुरी करती है लेकिन शादी के बाद उन्हें अपना परिवार संभालना ही उनका कर्तव्य माना जाता है। लेकीन आज की ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए भारत सरकार की कई सारी योजनाओं को कार्यान्वित किया जा रहा है। जिससे व अपनी अलग पहचान आत्मनिर्भरता से बना सके । अपने विकास के साथ परिवार और समुदाय का भी विकास कर सके

। महिलाएं जबतक स्वयं की क्षमता और आत्मविश्वास को जागृत नहीं करती तब तक वह सशक्त नहीं बन पाती ।

"अपनी इच्छाओं अरमानों के लिए जाब वह आत्मविश्वास के साथ लडती है और गैर सामझोतावादी बन जाती है तब परिवार और समाज के लिए वाह चुनौती बन जाती है "।[३] सशक्तिकरण के अंतर्गत लडकियों को समान और दर्जेदार शिक्षा प्राप्त कराके उन्हें विविध रोजगार कौशल प्रशिक्षण और आर्थिक अवसरों के साथ आर्थिक सक्षम बनाना। देश की प्रगति के लिए महिलाओं की प्रतिभा और कौशल का उपयोग करके उनके लिए आत्मनिर्भरता से पूरे परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास का मजबूत करना आवश्यक है। आज ग्रामीण इलाके में कई सारी महिलाएँ समाज के बदलते परिवेश और आवश्यकता के कारण उद्योग की शुरुवात करती है । कुछ महिलाओं के महिलाओं के अंदर कई सारी, कलाओं का भांजर होता है जिससे वह अपना विकास करती है।

**ग्रामीण समाज में महिला उद्यमिओं के लिए योजनाएं**

भारत गावों का देश होने के कारण ग्रामीण विकाम में महिलाओं की भूमिका अहम है। परिवर्तन करने की ताकद महिलाओं में दिखाई देती है। कृषि पशुपालन और ग्रामींग लघुउद्योगों के माध्यम से महिला ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ बन रही है । पंचायती राज में ग्रामीण महिलाए आर्थिक आत्मनिर्भरता, निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी, स्वयं सहायता समूह के माध्यम से उद्योगक्षेत्र में आगे बढ़ रही है । शिक्षा, स्वास्थ और सामाजिक परिवर्तन को गति दे रही है। आर्थिक सामाजिक और शैक्षिक सशक्तिकरण के लिए सुकन्य समृद्धी योजना, मुद्राऋण, महिला उदयम निधि योजना, महिला उद्यमिता मंच ,स्टैंडअप इंडिया, महिला शक्ति केंद्र, मिशन शान्ति, बेटी बचाओ बेटी बदाओं लखपती दीदी और मुद्रा योजना ये योजनांए शिक्षा वित्तीय स्वतंत्रता सुरक्षा और स्वास्थ के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने पर केंदीत है ।

लखपति दीदी योजना ग्रामीण स्वयं सहायता समूहो की महिलाओं को प्रशिक्षण देकर प्रति वर्ष लाख से अधिक कमाई करने में सक्षम बनाती है। आज वैश्विक स्तर पर डिजिटल संसार में महिलाओं के लिए सरकारी योजनाओं के माध्यम से बाहे फैलाकर कई नए मार्ग खड़े है। स्टार्टअप इंडिया के माध्यम महिलाएँ युरोपिय देशों मे तकनीकी युग मी सक्षमता के साथ स्थानीय उत्पादों को देश विदेश के बाजारों में पहुँचा रही है।

महिला उद्यमिता मंच (WEP) नीति आयोग व्दारा महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों को बढ़ावा देने के लिए और सहयोग के लिए एक डीजिटल प्लॅटफॉर्म है। डीजिटल कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से महिला सशक्तिकरण और मजबुत हो रहा है । यह मंच मार्गदर्शन (मेंटरशिप) कौशल विकास, विपणन सहायता और कानूनी- वित्तीय सलाह प्रदान करता है। विभिन्न सरकारी संघटनाओं के साथ नीती आयोग और नीजी संस्थाएं मिलकर काम करती है।

महाराष्ट्र सरकार विविध योजनाओं क महाराष्ट्र सरकार विविध योजनाओं के माध्यम से 18 से 55 वर्ष की महिलाओं के लिए कोई भी व्यवसाय शुरू करने के लिए 3 लाख रुपये तक की राशी कम व्याज पर ऋण देकार और 30% सब्सिडी प्रदान करती है ।)UMANG) उमंग ऐप के माध्यम से आवेदन किया जाता है।

महाराष्ट्र महिला गृह उदयोग योजना की विशेषताएँ

१. ऋणशाही लाख ताल आसन ऋण ३ —
२. सब्सिडी -ऋण पर 30% की सब्सिडी उपलब्ध
३. पात्रता - 18 से 55 वर्ष की महिला उद्यमी
४. व्याजदर - बहुत कम या शून्य व्याजदर (पात्रता के अनुसार(

महिला समृद्धि योजना के अनुसार दिव्यांग या कमजोर वर्ग की महिलाओं के लिए 50,000 रुपये तक अदा दिया जाता है । सरकारी योजनाएं महिला एवं बालविकास, राष्ट्रीय महिला आयोग के माध्यम से महिलाओं को सक्षम किया जा रहा है । जिस कारण आज महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में बढचढकर भागीदारी कर रही है । सरकार व्दारा महिलाओ के विकास के लिए अनेक प्रयास हो रहे है जिससे देश की अर्थव्यवस्था में महिलाओ की भागीदारी बढ राही है ।

**ग्रामीण उदयोग में महिलाओं की भूमिका**

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी बहुत सारे कार्य में महिलाओं की ही ज्यादा मदद ली जाती है । कृषि कार्य खदानो ,कारखानों में, वृक्षारोपन, मछली पालन, कुक्कुटपालन ,पशुपालन जैसे घरेलू उद्योगों का अब परिवर्तन हो रहा है । इन घरेलू उद्योगों का अब व्यावसायिक स्तर पर महिलाएं अपना रही है । ऐसे उद्योगों मे उसे व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर आर्थिक विकास का माध्यम बनाने में सक्षम किया जा सकता है । ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। कृषिकार्यो मे पशुपालन और कुटिर उद्योगों के माध्यम से अर्थव्यवस्था को मजबूती देने में महिला सक्षम बन रही है । कृषि कार्य मृदा संरक्षण, सामाजिक वनीकरण, दुग्ध उद्योग, रेशीम उद्योग, आदि में महिलाओं की सहभागिता 69% से अधिक है । स्वयं सहायता समूहो' के माध्यम से महिलाएं छोटी बचत, ऋण के साथ लघुउद्योग जैसे सिलाई, बुनाई ,खाद्य प्रसंस्करण माध्यम से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही है।

आज गांव भी आधुनिक तकनीक से अवगत हो रहा है । हर क्षेत्र आज गाँव से जुड़ रहा है । बँकिंग, कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से आसानी से कम ऋण पर धनराशी प्राप्त करके गाँव की महिलाओ के समूह एक साथ जुडकर उद्योग क्षेत्र में अपना नया अस्तित्व बना रही है । जैसे सिलाई कढ़ाई के नए नए तरिके से बनाया समान आज युरोपिय देशों में निर्यात होते है । साथ साथ ज्वेलरी व्यवसाय, हर्बल सामान जैसे साबुन, तेल, विदेश में बड़ी मांग से बेचे जाते हैं। साथ साथ भारतीय मसाले, हस्तकला में जूट उत्पाद, पारंपारिक औषधियाँ, अगरबत्ती पापड, आचार, सेंद्रीय धान आदि के उत्पाद बनाने में ग्रामीण महिलाएं अग्रसर है । उनका बनाया सामान देश विदेश की बाजारों में अपना स्थान बनाया हुआ है । 2016-2017 में शुरु हुई बँक सखी योजना' ग्रामीण इलाको में बडी मददगार साबित हुई । इसके माध्यम से कई बैंकिंग सेवाओं और सरकारी योजनाओं के माध्यम से उद्योग के लिए महिलाओं को आर्थिक मदद मिल रही है।

भारत में 70 लाख से अधिक कारगिरों में' महिलाओं की संख्या अधिक है । जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में, कताई, बुनारी, पापड, आचार, हस्तशिल्प के माध्यम से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही है । सामाजिक आर्थिक सुधार के साथ उन्हें घर बैठे रोजगार प्रदान होता है । बुनाई, कताई रंगाई और छपाई का काम करनेवाली महिलाओ की संख्या लगभग 33 लाख से अधिक है। गाँव की महिलाएँ डेअरी उत्पाद, तथा

ब्यूटी पार्लर, हस्तशिल्प, मशरूम की खेती जैसे व्यवसाय में कम निवेश के साथ शुरु करके इसमे अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकती है।

मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के अंतर्गत व्यवसाय शुरु कले के लिए 10,000 से 2 लाख तक वित्तीय सहायता मिलती है । महिला किसान योजना में कृषि कार्यों के लिए 40,000 ऋण + 10,000 सब्सिडी दी जाती है । 2025 में महिला श्रम भागीदारी दर %35.3 हो गया है । स्टार्टअप इंडिया देश में संतुलित विकास के लिए महिला उद्यमियों के सतत विकास को बढावा देने की दृष्टी से भारत में पहालो योजनाओं, नेटवर्क और समुदायो को सक्षम बनाने और महिला उद्यमिता को मजबूत बनाने के लिए प्रतिबद्ध है । भारत में महिलाओ के नेतृत्व वाली सभी लघु औदयोगिक इकाइयों में महाराष्ट्र व चार दक्षिणी राज्यों का योगदान %50से अधिक है ।

"भूमण्ड़लीकरण ने अपने तमाम अच्छाइयों एवं बुराइयों के साथ सभी वर्ग के शिक्षित स्त्रियो को घर से बहार निकलने का अवसर दिया । परिणामस्वरूप स्त्री अपने वर्जित क्षेत्रो में ठोस दावेदारी कि और स्वावलंबन के दिशा मे तीव्र प्रयास भी सामने आए "।[४] आज महिलांए पहले की तुलना में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ चढकर भागीदारी कर रही है । महिलाओं को पुरुषो के समान अधिकार प्रदान करने के लिए रोजगार के क्षेत्र मे समान संधी की आवश्यकता है। महिला परिवार की आधारशीला बनकर परिवार के साथ देश को भी सक्षम बना रही है। पितृसत्ताक बाधाओं को तोड़कर राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक विकास की ओर अग्रसर हो रही है। यह उद्यमी महिलाएं विकसित और आत्मनिर्भर भारत की सबसे बडी ताकद है । स्वयं रोजगार करनेवाली महिलाएं अवसर मिलने पर, आज भारत की आत्माविश्वास से आगे बढ़ रही है। देश की आर्थिक व्यवस्था को मजबूत में करने में भारत की स्टार्टअप क्रांति मे महिलाए असाधारण भूमिका निभा रही है । अपने साहस तथा नेतृत्व से आधुनिक विचारो' का परिचय दे रही है । स्वयं आत्मनिर्भर बनकर समाज परिवर्तन का माध्यम बन रही है । जब एक औरत सक्षम बनती है तो समाज समुदाय उसका परिवार सक्षम बनता है।

महिलाएं अब केवल नौकरी पानेवाली नहीं बल्की नौकरी देने वाली (Enterpreneur) बन रही है । जो देश को आर्थिक विकास को नई दिशा दे रही है । महिलाओं का रुख उद्यमशीलता की ओर तेजी से बढ़ने का एक प्रमुख कारण काम के प्रति उनका जुनून है ।

१. वंदना विथिका 27 पृष्ठ 2013 मार्च – आजकाल –
२. स्वामी विवेकानंद 20 पृष्ठ 2013 मार्च – आजकाल –
३. डॉ61 शोधसमिक्षा पृष्ठ – पंचशील – ज्योती किरण .
४. जीवनलाल 2014 मार्च – हिंदी साहित्य मी स्त्री विमर्श –
५. स्वामी विवेकानंद विवेकानंद साहित्य –
६. भारत में महिला उद्यमीता अवसर एवं बधाएँ सरस्वती चौधरी –

# नयी शिक्षा नीति और व्यावसायिक शिक्षा में महिलाओं हेतु अवसर एवं दिशाएँ

**शोध छात्र**
बिरकले शिवाजी विश्वांभर
हिंदी विभाग, बलभीम महाविद्यालय, बीड महाराष्ट्र.

**सारांश.**

**नयी शिक्षा नीति**-2020 (NEW EDUCATION POLICY-2020) तथा व्यावसायिक शिक्षा )VOCATIONAL EDUCATION( के संयुक्त प्रयास ने हमारे देश भारतवर्ष में महिलाएँ जिसमें सम्मिलित हैं (युवा बेरोजगार लड़कियाँ तथा महिलाएँ दोनों ही), के लिए आत्मनिर्भरता, कौशल विकास, भविष्य विकास तथा महिला सशक्तिकरण के नये द्वार खोले गये हैं। इस शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है। हमारे देश का संविधान लोकतंत्र की पहचान है। भारतीय संविधान के चैथे भाग में यह निर्देशित किया गया है कि प्राथमिक स्तर तक सभी बच्चों (लड़कियाँ-लड़के) को अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की जाये।

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 27 अध्यायों तथा चार भागों में विभाजित है।** शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि तथा तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता के मद्देनजर इसे लागू किया गया है। इस शिक्षा नीति के माध्यम से नयेनये शोध-, ज्ञानविज्ञान में वृद्धि तथा रोजगार के नये अवसर उपलब्ध होंगे। इस नीति में उपयोगी शिक्षा - को ध्यानमें रखकर शिक्षा को मुख्य धारा में सम्मिलित करने एवं बुनियादी ढाँचे का विकास तथा रोजगार कौशल आदि को शामिल किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देना है।

**बीज शब्द**- शिक्षा, व्यावसायिक, नीति, महिलाएँ, बेरोजगारी, आत्म निर्भरता, कौशल विकास, सशक्तिकरण, भविष्य, उद्देश्य, संविधान, लोकतंत्र, प्राथमिक स्तर, अनिवार्य, निःशुल्क, गुणवत्ता, बुनियादी, तकनीकि, शोध, ज्ञानविज्ञान-, रोजगार, अवसर तथा उपयोगी आदि।

**प्रस्तावना**- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-20020 जिसे नई शिक्षा नीति के नाम से भी जाना जाता है। हमारे देश भारतवर्ष में शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए इस नीति की निर्मिति की गयी है। व्यावसायिक ‘ ही इस नीति का एक महत्वपूर्ण भाग है। आज समाज को सशक्त तथा समृद्ध बनाने के लिए ’शिक्षा व्यावसायिक शिक्षा की नितान्त आवश्यकता है, क्योंकि इसी प्रकार की शिक्षा मानव समाज को कौशलपूर्ण व्यक्तित्व प्रदान कर सकती है।

**विश्लेषण**- नई शिक्षा नीति एवं व्यावसायिक शिक्षा नीति में लैंगिक समानता अर्थात् GENDER EQUALITY को बढ़ावा देने के अतिरिक्त महिला वर्ग को पारम्परिक व्यवस्था से बाहर निकालकर तकनीकी एवं कौशल विकास आधारित क्षेत्रों में स्थापित करने पर केन्द्रित है।

‘‘हमारे देश भारतवर्ष में निरन्तर शिक्षित बेरोजगारों की संख्या में वृद्धि हो रही है। साक्षरता अभियान से कुछ हद तक शिक्षा में तो बढ़ावा मिला है, परन्तु रोजगार के अवसरों में कोई खास परिवर्तन नहीं आया

है। जनसंख्या का कुछ भाग ही सरकारी नौकरियों में नियुक्त हैं शेष लोग उद्योगों एवं निजी संस्थाओं में ही नौकरी कर रहे हैं। भाग्यशाली व्यक्ति को ही सरकारी नौकरी मिलती है, ऐसी मानव समाज की धारणा है।''1

नयी शिक्षा नीति शिक्षा के क्षेत्र में एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं क्रान्तिकारी कदम है जो हमारे देश भारतवर्ष की शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करके शिक्षा को आधुनिक, समावेशी और सशक्त बनाने में प्रयासरत है। इस नीति का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा में नवाचार को बढ़ावा देना तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में कानून सम्मत यह प्रयास किये गये हैं कि इसके माध्यम से शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर गुणवत्तापूर्ण, सुलभ तथा समता पर आधारित शिक्षा प्रदान करने की दिशा में ठोस प्रयास किये जायें। यह नीति केवल पाठ्यक्रमों में ही परिवर्तन नहीं करती है बल्कि यह शिक्षण विधि में परिवर्तन करके अनुसंधान तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भी नवाचार को प्रोत्साहित करती है।

''इस नीति के सफल क्रियान्वयन से भारत में शिक्षा का परिदृश्य पूर्णतः बदलने एवं नवाचारों की दिशा में एक मजबूत कदम बढ़ाने की उम्मीद है।''2 देश में जनसंख्या वृद्धि की समस्या के साथसाथ -ही-बेरोजगारी भी एक प्रमुख समस्या है। बेरोजगारी की समस्या का सामना हम उद्यमिता विकास के माध्यम से वाली 'ऊँट के मुँह में जीरा' ही कर सकते हैं। जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में सरकार द्वारा संचालित योजनाएँ कहावत के समान ही हैं। ये योजनाएँ अपेक्षित परिणाम देने में असमर्थ हैं। इसका कारण यह है कि परिवर्तित आधुनिक औद्योगिक प्रवृत्तियों के अनुरूप भारतीय जनमानस में कौशल एवं तकनीकी ज्ञान का अभाव है। यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में कौशल विकास पर ही अत्यधिक जोर दिया गया है।

शिक्षा क्या है? इसे जानना भी आवश्यक जान पड़ता है। अरस्तू का कथन है कि''-स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करना ही शिक्षा है।''3

इसके अतिरिक्त आधुनिक शिक्षा का सम्बन्ध व्यक्ति और समाज दोनों के कल्याण से है। नई शिक्षा नीति शिक्षा के व्यापक अर्थ को भारतीय परिदृश्य में समाहित करती हुई दृष्टिगोचर हो रही है।

शिक्षा के साथसाथ हमें रोजगार प्राप्त करने के लिए उद्यम के अर्थ को ज्ञात करना आवश्यक प्रतीत - होता है। किसी भी उद्यमी द्वारा किये गये व्यावसायिक कार्य को उद्यम तथा क्रिया करने वाले उद्यमी तथा कार्य करने के प्रयत्न को उद्यमिता की संज्ञा प्रदान की जाती है। इस प्रकार उद्यमिता से तात्पर्य उस कौशल दृष्टिकोण, चिन्तन, तकनीक एवं कार्य प्रणाली से है, जिसके द्वारा व्यवसाय में निहित अनेक प्रकार के जोखिम एवं अनिश्चितताओं का सामना किया जाता है। इस संदर्भ बीकथन इस प्रकार गायकवाड़ का.आर. -है

''उद्यमिता से तात्पर्य नव प्रवर्तन से है। यह अनिश्चितताओं का सामना करने के लिए काम लेने की अन्तः प्रेरणा और इच्छा है। अर्थात् यह भावी घटनाओं को इस प्रकार देखने की क्षमता है जो बाद में सही हो सके।''4

प्रायः यह देखा जा रहा है कि ग्रामीण क्षेत्र का युवा गाँव स्तर पर रोजगार की अनुपलब्धता की (युवती-युवक) पास के शहरी इलाकों में रोजगार की तलाश में जाते हैं-समस्या से गाँव छोड़कर आस, जहाँ पर उन्हें अत्यंत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उद्यमिता विकास के लिए आवश्यक है कि हम अपने युवाओं तक

उद्यमों से सम्बन्धित नया ज्ञान, नई तकनीकि, नयी सूचनाएँ, नयी जानकारियाँ तथा आवश्यक जानकारियाँ भी पहुँचायें, ताकि युवा वर्ग आयपरक बातों को सोच तथा समझ सके। इसी जानकारी से परिपूर्ण है नई शिक्षा नीति। वर्तमान समय में परिवर्तित शिक्षा प्रणाली की नितान्त आवश्यकता है। अभी उच्च -अभी'' ) 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी' शिक्षा संस्थानभारतीय प्रौद्योगिक संस्थानसे यह सूचना निर्गत की ( गयी है कि हम कक्षा10 से प्रवेश लेकर तकनीकी ज्ञान प्रदान करेंगे।''5 यह कदम स्वागत योग्य है। अभी तक इन संस्थानों में प्रवेश पाना कठिन ही नहीं बल्कि अत्यंत कठिन माना जाता है।

नई शिक्षा नीति में वंचित वर्गों एवं बालिकाओं की शिक्षा के लिए भारत सरकार ने विशेष वित्तीय कोष की भी व्यवस्था की है, ताकि लड़कियों की शिक्षा में आर्थिक बाधा का सामना न करना पड़े।

व्यावसायिक शिक्षा नीति में कक्षा 6 से ही बालिकाओं के लिए भी व्यावसायिक कौशल, तकनीकि शिक्षा, शिल्प शिक्षा तथा सैन्य रक्षा तकनीक आधारित शिक्षा की व्यवस्था की गयी है।

इस शिक्षा के क्रियान्वयन हेतु अनेक नयेनये तकनीकपरक शिक्षा संस्थानों की स्थापना की गयी है। - सरकारी बजट में इस योजना को सम्मिलित करके इसके लिए वित्तीय व्यवस्था का भी प्रावधान किया गया है।

भारतवर्ष में इस समय महिलाओं मे तकनीकि शिक्षा के लिए 19 राष्ट्रीय कौशल विकास संस्थान )**NATIONAL TECHNICAL INSTITUTE**( तथा 300 से भी अधिक औद्योगिक शिक्षण संस्थान )**INDUSTRIAL TRAINING INSTITUTE**( कार्यरत हैं। व्यावसायिक शिक्षा संस्थान देश में युवा वर्ग दोनों को कक्षा (बालिका-बालक)10 की योग्यता के साथ रोजगारपरक शिक्षा प्रदान करते हैं।

स्टेम )**STEM**( का विश्लेषण इस प्रकार हैविज्ञान -, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग तथा गणित )**SCIENCE,TECHNOLOGY,ENGINEERING & MATHMATICS**( यह एक शिक्षा का अत्यंत आधुनिक दृष्टिकोण है, जो विज्ञान प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग तथा गणित इन चारों विषयों को पृथक पृथक पढ़ाने के स्थान पर संयुक्त रूप से परस्पर जोड़कर व्यावहारिक तरीके- )**INTERDISCIPLINARY APPROACH**( से विशेषकर बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करने का माध्यम है जो शिक्षा के क्षेत्र में कारगर सिद्ध हो सकता है।

**निष्कर्ष.**

हमारे देश भारतवर्ष में नई शिक्षा नीति जिसे -राष्ट्रीय शिक्षा नीति'2020' के नाम की संज्ञा प्रदान की गयी है तथा व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रमों के माध्यम से रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने की पहल की गयी है। इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में रोजगार परक शिक्षा, कौशल विकास, आत्मनिर्भरता, भविष्य को सुनहरा बनाने तथा युवा वर्ग को सशक्त बनाने के लिए सवित्त प्रावधान किया गया है। शिक्षा (युवती-युवक) की गुणवत्ता में वृद्धि करने तथा तकनीकि ज्ञान एवं नयेशोध आदि का ज्ञान प्राप्त करने के लिए नयी नये- शिक्षा नीति की आवश्यकता महसूस की गयी। इस शिक्षा नीति में बुनियादी ढाँचे के विकास हेतु नये केन्द्र तथा शिक्षा का विकास आदि जिससे राष्ट्र उन्नत हो सके का प्रावधान किया गया (शिक्षा सम्बन्धी) है।

**संदर्भ.**

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति :2020-डॉअरविन्द कुमार यादव ., पृ .201, संस्करण 2025, समता प्रकाशन कानपुर।

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: शिक्षा में नवाचारप्रवीण कुमार .डॉ .सं-, पृ संस्करण (फ्लैप) .2024, स्वराज प्रकाशन दिल्ली।

3. वही, पृ .24

4. विकास का समाजशास्त्रमिश्र .के.के-, पृ .218, संस्करण 2015, भवदीय प्रकाशन अयोध्या।

5. दैनिक जागरण 10 मार्च 1926.

# भारत सरकार की योजनाएँ: अवसर एवं चुनौतियों से भरी ग्रामीण महिला उद्यमिता

**पवार ज्ञानेश्वर राधाकिसन**
पीएचडी शोधछात्र.
डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय

**सारांश**

किसी भी राष्ट्र के हित और विकास के लिए महिला एवं पुरुष की समान भागीदारी आवश्यक होती है। भारत ग्रामीण एवं अनगिनत गावों के देश के रुप में जाना जाता है। देश की लगभग सत्तर प्रतिशत आबादी गावों में निवास करती है। वह अपनी आजीविका के लिए कृषि तथा कृषि से सबंधित अन्य छोटे- कि किसी भी देश की आर्थिक प्रगति ,मोटे व्यवसायों पर निर्भर हैं। यह बात निश्चित रुप से कह सकते हैं मुख्य रुप से इसके ग्रामीण इलाकों में निवास करने वाली आबादी के मानक पर तथा साथ ही साथ ग्रामीण इलाकों में घटित विकास के स्तर पर निर्भर करती है। ग्रामीण महिला उद्यमिता को देश के आर्थिक विकास में बढ़ोत्तरी करने के एक उपकरण के रुप में देखा जा सकता है। वह प्रारंभ में ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए रोजगार अवसर उपलब्ध कराने में तथा बेरोजगारी की समस्या से जूझ रहे लोगों के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने में कारगर साबित हो रही है। महिला उद्यमिता के द्वारा महिलाओं की आर्थिक व सामाजिक स्थिति मजबूत करके क्षेत्रीय विकास को बल दिया जा सकता है। भारत में सूक्ष्मलघु एवं मध्यम , उद्यम और क्षेत्रों में महिलाएँ बहुत पुराने समय से संलग्न हैं। वह इन क्षेत्रों में अपना बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रही है।

**मूल शब्द:** ग्रामीण महिलाअवसर एवं ,सरकारी योजनाएँ ,आर्थिक विकास ,महिला उद्यमिता की समस्याएं , चुनौतियां।

**प्रस्तावना:**

वीं शताब्दी में 21 महिला उद्यमिता आज के युग की सबसे महत्वपूर्ण एवं क्रांतिकारी घटना है। आ ,महिला एक शिक्षितत्मनिर्भर एवं अधिकार संपन्न महिला के रूप में बड़ी संख्या में परिलक्षित हो रही हैं तथा सामाजिकराजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण सहभागिता प्रदान कर रही हैं। एक समय , लेकिन विगत तीन दशकों से हुए ,तक वह घर के चार दिवारी के अंदर बंद हुआ करती थीसामाजिक एवं आर्थिक क्रियाओं तथा राजनीतिक परिवर्तनों के फलस्वरूप उद्यमिता के क्षेत्र में महिलाओं का तेजी से आगमन हुआ है। वर्तमान समय में महिला उद्यमी वे महिलाएँ हैंजो अपने व्यक्तिगत जरुरतों को पूरा करने , एवं आर्थिक रुप से संपन्न बनने के लिए चुनौतिपूर्ण जीवन स्वीकार करती हुई दिखाई पड़ती हैं। इस चुनौतिपूर्ण सफ़र का सामना करने के बाद ही एक महिला उद्यमी आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर बनती है। साथ ही वह न केवल खूद को आत्मनिर्भर बनाती हैबल्कि दूसरों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाती हैं। ,

आज भारत को वैश्विक महाशक्ति बनाने में महिला उद्यमी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैंलेकिन , ,अन्य देशों की तुलना में भारत के ग्रामीण क्षेत्रों की महिला उद्यमिता का विकास काफ़ी कम दिखाई देता हैं वहीं देश के शहरी भागों में महिला उद्यमिता की प्रगति अधिक दिखाई पड़ती हैं। ग्रामीण महिलाएँ परिवार का

सृजन करके समाज एवं राष्ट्र का नेतृत्व करती हैं। इसलिए देश के समग्र आर्थिक विकास के लिए महिलाओं का सामाजिक एवं आर्थिक विकास आवश्यक हैं।

**भारत में ग्रामीण उद्यमिता एवं महिला उद्यमिता**

उद्यमी शब्द की उत्पत्ति 'एंट्रेप्रेन्ड्रे' से हुई है वीं शताब्दी का 13 जो ,फ्रांसीसी शब्द है जिसका अर्थ है 'कुछ करना' तथा 'शुरू करना' हैं। में 1730'रिचर्ड कैन्टिलन' ने एक व्यावसायिक उद्यम के वित्तीय जोखिम को उठाने की तत्परता को एक उद्यमी की विशिष्ट विशेषता बताई है। वीं शताब्दी के 18'जीन-बैप्टिस्ट' और 'जॉन स्टुअर्ट मिल' ने उद्यमी शब्द को शिक्षा जगत में लाने का कार्य किया है। प्रो .एल .एम . -झिंगल के अनुसार"अर्थशास्त्र में उद्यमी का अर्थ है ऐसा आर्थिक नेता जो नई वस्तुओंनई तकनीकी तथा , पूर्ति के नये स्त्रोतों को सफलतापूर्वक संचालन करने के सुअवसर पहचानने की योग्यता रखता होऔर आवश्यक सयंत्र तथा साधनशक्ति को एकत्रित करने और उन्हें संगठित कर कारोबार -प्रबन्ध और श्रम , चलाने की क्षमता रखता हो।" ग्रामीण उद्यमिता का सीधा अर्थ ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानिक संसाधनोंज्ञान एवं , श्रम का उपयोग करके लघु उद्योग शुरू करने तथा उन्हें विकसित करने एवं प्रबंधन करने से हैं। इसका मूल उद्देश्य स्थानिक स्तर पर रोजगार पैदा करनागरीबी कम करना और शहरी प्रवास को रोकना हैं। इसमें कृषि , जो ,कुटीर उद्योग एवं सेवा क्षेत्र के विभिन्न उद्यम शामिल हैं ,हस्तशिल्प ,तथा कृषि से जुड़े छोटे व्यवसाय ग्रामीण विकास कोा बढ़ावा देते हैं। ग्रामीण उद्यमिता को देश के आर्थिक विकास में बढ़ोत्तरी करने के एक उपकरण के रुप में देखा जा सकता है। शुरुआत मेंयह ग्रामीण भागों में रहने वाले लोगों के लिए रोजगार , स्तर को उँचा उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका अद-अवसर उपलब्ध कराने एवं उनके जीवनाा करती हैं।

ण महिला उद्यमिता देश के ग्रामीण विकास एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता का आधार हैं। ग्रामीण ग्रामी पशुपालन एवं दुग्ध व्यवसाय जैसे कम जोखिम वाले उद्यमों के ,हस्तशिल्प ,पापड़ ,अचार ,महिलाएं कृषि वित्ती ,लेकिन शिक्षा की कमी ,माध्यम से आत्मनिर्भर बन रही हैंय बाधाओं एवं विपणन की चुनौतियों का सामना करती हैं। विकसित देशों का इतिहास यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक तथा आर्थिक विकास के लिए किसी भी देश में महिला उद्यमिता की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण होती है। महिला उद्यमिता के संदर्भ में 'नाँरमन लाँग' का मत है -कि ,"महिला उद्यमिता का अर्थ एक ऐसी जटिल प्रक्रिया से हैजिसका उद्देश्य , अर्थात् भारत में महिला उद्यमिता का अर्थ ,किसी आर्थिक क्रिया अथवा इकाई का प्रसार करना होता है जितना कि उत्पादन के साधनों को संगठित करने ,किसी नवाचार का प्रसार करने से उतना अधिक नहीं है से।" संक्षेप में कह सकते हैंकि भारत में महिला उद्यमिता का तात्पर्य मुख्यतः किसी नए उद्योग के संचालन , तथा उसकी व्यवस्था करने से ही है।

**महिला उद्यमिता के लिए सरकार द्वारा संचालित योजनाये:-**

- **अन्नपूर्णा योजना**

  भारत सरकार द्वारा अन्नपूर्णा योजना को को जयपु 2015 अक्टूबर 31र जिले के बमोरी गांव से प्रारंभ किया गया। इस योजना के भीतर 'स्टेट बैंक ऑफ मैसूर' द्वारा खाद्य उद्योग में कार्य करने वाली इच्छुक महिलाओं को हजार तक का ऋण उपलब्ध कराया जाता हैं। जिसका भुगतान 50 माह में आसान किस्तों द्वारा कर सकती हैं। अन्नपूर 36 महिलाएं अगलेण्णा योजना में भोजन ,

स्नेक्स के व्यापार आदि हेतु रसोई के बर्तन एवं उपकरणों को खरीदने के लिए बैंक द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की जाती हैं।

- **सोलर चरखा योजना**

ग्रामीण महिलाओं को रोजगार प्रदान कराने के लिए सरकार द्वारा सोलर चरखा योजना चलाई जा रही है। इस योजना में वर्ष के प्रत्येक जिले के अंतर्गत एक लाख लोगों को रोजगार तक देश 2022 से जोड़ने का प्रयास किया गया हैं। इस योजना के तहत काफ़ी महिलाओं को रोजगार मिल रहा हैं।

- **मुद्रा योजना**

भारत सरकार द्वारा इस योजना के अंतर्गत महिलाओं को ब्यूटी पार्लरसिलाई केंद्र एवं ट्यू ,शन सेंटर आदि को खोलने के लिए लाख तक का ऋण दिया जाता हैं। इस योजना के 10 हजार से लेकर 50 तहत ऋण प्रदान करते समय महिलाओं को एक मुद्रा कार्ड भी दिया जाता है। यह मुद्रा कार्ड आपके क्रेडित कार्ड के समान ही कार्य करता है। इस योजना को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया हैं , -इस प्रकार हैं जो कि

  - शिशु ऋण:तक ही सीमित हैं। 50000 इसमें ऋण राशि -
  - किशोर ऋण:लाख रुपए तक ऋण दिया जाता हैं। इसका 5 से लेकर 50000 इसमें - लाभ स्थापित उद्यम वाले लोगों द्वारा उठाया जा सकता है।
  - तरुण ऋण: लाख रुपए तक ऋण दिया जाता हैं। 10 इसमें -

    इन तीन चरणों के तहत महिला उद्यमी इस योजना का लाभ आसानी से उठा सकती हैं और ऋण लेकर अपना व्यवसाय प्रारंभ करके अन्य लोगों को भी रोजगार के अवसर प्रदान कर सकती हैं।

- **महिला उद्यम निधि स्कीम**

'पंजाब नेशनल बैंक' भी महिला उद्यमियों को वर्ष के लिए रियायती दर पर ऋण उपलब्ध 10 ऑटो रिक्शा तथा दुपहिया वाहन ,योजना के तहत महिलाएं ब्यूटी पार्लर खोलने कराता हैं। इस लाख तक की राशी दी जा सकती हैं। 10 खरीदने के लिए

- **सेंट कल्याणी स्कीम**

'सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया' द्वारा महिला उद्यमियों के लिए अपने उद्यम के विस्तारीकरण एवं पुनरुत्थान हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जाती हैं। इस योजना के अंतर्गत ग्रामीण एवं कुटीर उद्योगोंखुदरा व्यापार हेतु ,कृषि एवं संबध्द कार्यों ,स्वरोजगार में संलग्न महिलाओं ,लघु लद्योगों , महिला उद्यमियों को बिना किसी सुरक्षा गारंटी के उद्योग लगाने हेतु बैंक द्वारा ऋण उपलब्ध कराया जाता हैं।

- **स्त्री शक्ति योजना उद्योग**

इसमें तो ऐसे उद्योगों को ,प्रतिशत से अधिक महिलाओं की भागीदारी एवं मालिकाना हक हो 50 'भारतीय स्टेट बैंक' द्वारा ऋण प्रदान किया जाता हैं। इस योजना (एसबीआई) के तहत लाख से 2 प्रतिशत की छूट दी जाती हैं। 0.5 अधिक ऋण पर ब्याज दर में

- **सिंडिकेट बैंक महिला शक्ति योजना**

'सिंडिकेट बैंक' महिला उद्यमी के लिए साल की अवधि पर ऋण देता हैं। हालांकि यह बैंक भी 10 प्रतिशत से अधिक मालिकाना हक वाले उद्यमी को ही ऋण 50 किसी उद्यम में देता हैं। इस योजना का मूल उद्देश्य महिला उद्यमियों को समर्थन देना एवं प्रगतिशील बनाना हैं।

- **उद्योगिनी स्कीम**

साल तक की महिला उद्यमियों को 45 से 18'पंजाब एंड सिंध बैंक' द्वारा आसान किस्तों और रियायती ब्याज दर पर लाख तक का ऋण उपलब्ध कराया जाता हैं। साथ ही 1 इसमें पारिवारिक आय की स्थिति के अनुसार अनुसूचित जनजाति की महिलाओं को र तक का ऋण हजा 45 उपलब्ध कराने का प्रावधान हैं।

- **देना शक्ति योजना**

जो महिला उद्यमी कृषिखुदरा स्टोर तथा सूक्ष्म उद्यमों के क्षेत्र में अपना व्यवसाय ,ऋण-सूक्ष्म , साथ ही जिन ,बढ़ाना चाहती हैं्हें वित्तीय सहायता की आवश्यकता होती हैं उन्हें देना शक्ति योजना के तहत ऋण राशि 0.25 जिस पर ब्याज दर ,दी जाती हैं 2000000% होता हैं। इस राशि को महिला उद्यमी बैंक को किस्तों के मासिक भुगतान के द्वारा बड़ी ही आसानी से चुका सकता हैं।

- **प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम**

प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम अंतर्गत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महिलाओं के लिए 5000 अतिरिक्त नौकरियां सृजित की हैं। इस योजना के तहत खादी और ग्रामोद्योग आयोग द्वारा महिलाओं को आधुनिक चरखा चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता हैं तथा उन्हें ऋण उपलबं्ध करा कर स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया जाता हैं। इस कार्यक्रम द्वारा महिलाएं अपने घर पर ही काम करके रू प्रति दिन कमा सकती हैं। नीति आयोग द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार के 200 वें वार्षिक वैश्विक उद्यमिता8 साथ संयुक्त रूप से हैदराबाद शहर में आयोजितशिखर सम्मेलन समर्थन देने के लिए महिला में प्रतिष्ठित और आकांक्षी महिला उद्यमियों को बढ़ावा एवं (2017) उद्यम मंच की स्थापना के विचार ने आकार लिया हैं। इस मंच का प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा को औप 2018 मार्च 8 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर परचारिक रूप से शुभारंभ किया गया है। यह महिलाओं के लिए अपनी तरह का पहला सुविधा मंच है जिसे सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के विभिन्न संगठनों के साथ मिलकर काम करने और डब्ल्यूईपी वेबसाइट पर उनकी महिलाओं पर केंद्रित उद्यमिताकार्यक्रमों एवं पहलों को सूचीबध ,योजनाओं ,ंद करके उन्हें एक मंच पर लाने के लिए अधिदेशित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया गया हैं। डब्ल्यूईपी अपने सहयोगियों के माध्यम से विभिन्न सहायता क्षेत्रों के तहत सदस्यों को सेवाएं देने की पेशकश करता हैः-

- उद्यमिता कौशल
- प्रोत्साहन एवं त्वरण
- विपणन सहायता
- अनुपालन सहायता
- वित्त पोषण और वित्तीय सहायता
- सामाजिक उद्यमिता

**ग्रामीण महिला उद्यमियों की चुनौतियाँ**

पिछले कुछ दशकों में देश में नए छोटेअप की संख्या में वृध्दि होने के -मोटे व्यवसायों एवं स्टार्ट-कारण भारतीय अर्थव्यवस्था ने स्थिर वृध्दि की हैं। इसमें से बहुसंख्यक व्यवसायों की स्थापना पुरुषों द्वारा महिलाओं के पा उद्यमिता को लेकर भारतीय ,की गई हैं। हालाँकिस अनेक महत्वकांक्षाएँ मौजूद हैं। उनको अपना व्यवसाय उभारने एवं बनाये रखने के लिए निम्नलिखित चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैं -

**शिक्षा की कमी**

शिक्षा सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए काफ़ी महत्वपूर्ण होती है ,जागरुकता ,जो स्वास्थ , ण एवं सशक्तिकपरिवार का कल्यारण में सुधार लाती हैं। हालाँकि गरीबीसुरक्षा और पुरानी रुढ़ियों के , 50 कारण देश में महिला साक्षरता दर काफ़ी कम देखने को मिलता है। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग% से अधिक महिलाएं निरक्षर हैं। इसलिए महिलाओं को अपने उद्यम में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं।

**कच्ची सामग्री की कमी**

रस्ते ,उद्यम के लिए कच्चे माल की उपलब्धता एक अनिवार्य घटक है। ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात एवं रेल का अभाव होने के कारण ग्रामीण महिलाउद्यमियों को कच्चे माल की उपलब्धता करना बहुत मुश्किल होता हैं। महिला उद्यमियों के लिए कच्चे माल की कमी एक गंभीर चुनौती हैजो उत्पादन को रोक , सकती है और लागत को बढ़ा सकती है।

**वित्त की समस्या**

किसी भी कार्य को सफल बनाने के लिए वित्त का होना आवश्यक होता है। बिना वित्त के हम कोई भी कार्य नहीं कर सकते हैं। समाज में पुरुषों को अपने व्यवसाय के लिए विभिन्न बैंक एवं वित्तीय संस्था द्वारा वित्त के कई स्त्रोत प्राप्त हो जाते हैंलेकिन महिलाओं के लिए ऐसा नहीं होता है। उन्हें अपने व्यवसाय , में सफल होने की अशंका के कारण निवेशक इनके उद्यम में निवेश करने में संकोच करते हैं तथा महिला और पुरुषों में भेदभाव का रवैया अपनाते हैं। इसलिए महिला उद्यमी को वित्त प्राप्त करने के लिए कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता हैं।

**योग्यता का अभाव**

महिला उद्यमियों के सामने योग्यता का अभाव एक बड़ी बाधा एवं चिंता का विषय हैं। शिक्षा एवं कौशल के अभाव के कारण महिलाएं नए विचारों को लागू करने में असमर्थ हो जाती हैंजिससे वे रूढ़िवादी , वितरण और वित्तीय प्रबंधन की कमी एवं समझ न होने के ,तरीके से काम करती हैं। इसके अलावा विपणन कारण महिला उद्यमियों को बिचौलियों पर निर्भर रहना पड़ता हैं। इसलिए अधिकांश महिला उद्यम छोटे स्तर पर ही सीमित हो जाते हैं।

**पुरुष प्रधान समाज**

भारतीय संविधान ने स्त्री और पुरुष को समान अधिकार दिए हैंलेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में इसके , विपरित देखने को मिलता है। महिलाओं को पुरुषों के समान नहीं माना जाता है। उन्हें केवल घरेलु कामकाजों में व्यस्त रखा जाता हैं। किसी ग्रामीण महिला को व्यवसाय करने की इच्छा प्रकट होती हैतो उसे , कहीं पुरुष -न-अपने परिवार के मुखिया की अनुमति एवं मंजुरी लेनी पड़ती है। इस प्रकार देखा जाए तो कहीं प्रधान समाज ग्रामीणमहिला उद्यमी के लिए बाधा निर्माण करता हुआ दिखाई देता है।

**जानकारी का अभाव**

विभिन्न बैंकों द्वारा ऋण एवं ,मीण एवं शहरी महिला उद्यमियों को सरकार द्वारा विशिष्ट योजनाएँग्रा लेकिन कई महिला उद्यमी को सबंधित योजनाओं के बारे में जानकारी न हो ,सब्सिड़ी दी जाती हैंने के कारण वंचित रह जाती हैं। इसलिए वह साहूकारों एवं बिचौलियों से ऋण लेकर फ़ंस जाती हैं। कुछ महिला उद्यमी को मार्केटिंग की सही जानकारी नहीं होती हैं। वह अपना उत्पाद तो बना लेती हैलेकिन उसको सही दामों , पर नहीं बेच पाती हैं।

**निष्कर्ष**

कि भारतीय महिला उद्यमी ने समाज में अपना एक विशिष्ट स्थान स्थापित ,निष्कर्षतः कह सकते हैं बल्कि दूसरों को रोजगार देकर सराहनीय कार्य ,अपने व्यवसाय को न सिर्फ समृध्द कर रही है किया है। वह कर रही है। भारत सरकार द्वारा महिला उद्यमी को विकसित करने के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएं एवं कार्यक्रमों का आयोजन कर रही हैद्यमी को अपने व्यवसाय जो सिर्फ महिला उद्यमी पर केंद्रित हैं। महिला उ , विपणन एवं पारिवारिक समस्याओं जैसी अनेक समस्याओं का सामना करना ,स्वास्थ्य ,संचालन में वित्त पड़ता है। भारत में महिला उद्यमियों को विभिन्न सरकारी संस्थाओं एवं बैंकों द्वारा व्यापक स्तर पर रियायती ब्याज दरों पर ऋण की सुविधाएँ प्रदान की जा रही है। इसी के परिणाम स्वरुप आज महिला उद्यमिता की संख्या तेजी से बढ़ रही है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**


8. एमदिल्ल ,लि .कोणार्क पब्लिशर्स प्रा ,विकास का अर्थशास्त्र एवं आयोजन ,झिंगल .एल .ी , 308.पृ ,1988
9. Norman Long, Introducation of the Sociology of Rural Devlopment, Pg.128
10. अविनाश2017 ,नई दिल्ली ,पब्लिकेशन.ई.जी.ए.एस ,महिला उद्यमी ,कृपाल .
11. किरणनई ,पब्लिकेशन.ई.जी.ए.एस ,ग्रामीण महिला सशक्तीकरण ,कोरेथ .बड़ेहरा एवं ज़ॉर्ज . 2017 ,दिल्ली
12. डॉ2010 ,मुंबई ,हिमालया पब्लिशिंग हाउस ,भारत में उद्यमिता विकास ,माथुर.पी.एस.
13. डॉ2016,नई दिल्ली ,रमेश बुक्स डिपो जयपुर ,उद्यमिता विकास ,कोठारी .दमिलिं .
14. www.google.com

# डिजिटल युग में महिला उद्यमिता: ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और विपणन रणनीतियां

**डॉ. आशा वैजनाथ फड**
एम.ए., (हिंदी) बी. एड टेट, सेट, एम.
.फिल., पी.एच.डी.

**सारांश:**

डिजिटल युग में महिला उद्यमिता एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का प्रतीक है, जहां ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और विपणन रणनीतियां महिलाओं को वैश्विक बाजार तक पहुंच प्रदान करती हैं। यह लेख महिला उद्यमियों द्वारा डिजिटल टूल्स के उपयोग, जैसे सोशल मीडिया, ई-कॉमर्स और एसईओ, पर केंद्रित है, जो उन्हें सशक्त बनाते हैं। अध्ययन से पता चलता है कि डिजिटल मार्केटिंग न केवल व्यापार वृद्धि सुनिश्चित करती है, बल्कि लिंग समानता को भी बढ़ावा देती है, हालांकि चुनौतियां जैसे डिजिटल साक्षरता की कमी बनी रहती हैं। विश्लेषण साहित्य समीक्षा और केस स्टडी पर आधारित है, जो सतत विकास की क्षमता को उजागर करता है।

**बीज शब्द:**

महिला उद्यमिता, डिजिटल युग, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, विपणन रणनीतियां, सोशल मीडिया, ई-कॉमर्स, एसईओ, लिंग सशक्तिकरण, सतत व्यापार वृद्धि, डिजिटल साक्षरता।

**प्रस्तावना:**

डिजिटल युग ने उद्यमिता के परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया है, विशेष रूप से महिलाओं के लिए। परंपरागत रूप से, महिलाएं व्यापार में कई बाधाओं का सामना करती रही हैं, जैसे पूंजी की कमी, बाजार पहुंच और सामाजिक बंधन। लेकिन इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के उदय ने इन बाधाओं को कम किया है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसे अमेज़न, फ्लिपकार्ट, इंस्टाग्राम और फेसबुक महिलाओं को घर से ही व्यवसाय चलाने की सुविधा देते हैं, जबकि विपणन रणनीतियां जैसे टारगेटेड विज्ञापन और कंटेंट मार्केटिंग उन्हें वैश्विक ग्राहकों तक पहुंचाने में मदद करती हैं।विश्व बैंक की रिपोर्ट्स के अनुसार, डिजिटल उद्यमिता महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देती है, जो वैश्विक स्तर पर लिंग समानता के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक है। यह लेख डिजिटल युग में महिला उद्यमिता की भूमिका, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स के उपयोग और प्रभावी विपणन रणनीतियों पर चर्चा करता है, ताकि महिलाओं को सशक्त बनाने के नए आयामों को समझा जा सके।

उद्देश:

इस लेख के मुख्य उद्देश निम्नलिखित हैं:

1. डिजिटल युग में महिला उद्यमिता की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करना।
2. ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स (जैसे सोशल मीडिया और ई-कॉमर्स) के माध्यम से महिलाओं द्वारा अपनाई जाने वाली विपणन रणनीतियों का विश्लेषण करना।
3. इन रणनीतियों के व्यापार वृद्धि, सशक्तिकरण और सतत विकास पर प्रभाव को समझना।
4. चुनौतियों की पहचान करना और समाधान सुझाना, ताकि अधिक महिलाएं डिजिटल उद्यमिता में भाग ले सकें।
5. संदर्भित उदाहरणों के माध्यम से व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करना।

**पद्धती:**

प्रस्तुत लेख में साहित्य समीक्षा, केस स्टडी और उपलब्ध अनुसंधान रिपोर्ट्स शामिल हैं। विश्लेषणात्मक पद्धति में गुणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया, जहां महिलाओं के उद्यमिता के केस स्टडीज (जैसे रवांडा की यवेट उविम्पये का मुरुकाली प्लेटफॉर्म) को शामिल किया गया। डेटा की व्याख्या के लिए थीमेटिक एनालिसिस का उपयोग किया गया, जो डिजिटल प्लेटफॉर्म्स और विपणन रणनीतियों के पैटर्न्स को उजागर करता है।

**विश्लेषण:**

डिजिटल युग ने महिला उद्यमिता को एक नई दिशा दी है, जहां महिलाएं पारंपरिक बाधाओं से मुक्त होकर वैश्विक बाजारों तक पहुंच सकती हैं। यह विश्लेषण ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स और डिजिटल विपणन रणनीतियों पर केंद्रित है, जो महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विभिन्न अध्ययनों और सर्वेक्षणों के आधार पर, हम देखते हैं कि डिजिटल टूल्स ने महिलाओं की उद्यमशीलता को बढ़ावा दिया है, लेकिन चुनौतियां भी मौजूद हैं। नीचे विस्तार से चर्चा की गई है।

### 1. ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स का योगदान: बाजार पहुंच और लचीलापन

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स महिलाओं को भौतिक दुकानों या पारंपरिक बाजारों की आवश्यकता से मुक्त करते हैं, जिससे वे घर से ही व्यवसाय चला सकती हैं। ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स जैसे Shopify, Amazon, Flipkart और Etsy महिलाओं को उत्पाद बेचने की सुविधा प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं हस्तशिल्प, कृषि उत्पाद या हस्तनिर्मित सामान को Instagram, Facebook Marketplace या WhatsApp Business के माध्यम से बेचती हैं, जो उन्हें स्थानीय से वैश्विक ग्राहकों तक पहुंचाती हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार, 88% महिलाएं WhatsApp का उपयोग व्यवसाय के लिए करती हैं, जबकि 74% Facebook का, जो उन्हें ग्राहकों से सीधे जुड़ने में मदद करता है। इससे महिलाओं को लचीला कार्य समय मिलता है, विशेष रूप से उन महिलाओं को जो घरेलू जिम्मेदारियों के कारण बाहर नहीं निकल सकतीं।

उभरते बाजारों में, डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने महिलाओं की उद्यमशीलता को बढ़ावा दिया है। केन्या की एक महिला उद्यमी ने बताया कि संतुष्ट ग्राहक खुद सोशल मीडिया पर उनके उत्पादों की तस्वीरें और वीडियो साझा करते हैं, जो मुफ्त विपणन के रूप में काम करता है। इसी तरह, फिजी में महिलाएं सोशल मीडिया पर

कृषि उत्पाद बेचकर पहली बार ग्राहक प्राप्त कर रही हैं। इन प्लेटफॉर्म्स से महिलाओं को नेटवर्किंग, संसाधनों तक पहुंच और डेटा-आधारित निर्णय लेने की क्षमता मिलती है, जो उनकी उद्यमशीलता को मजबूत बनाती है।

### 2. विपणन रणनीतियों का विश्लेषण: डिजिटल टूल्स का प्रभाव

डिजिटल विपणन महिलाओं के लिए एक गेम-चेंजर है, क्योंकि यह कम लागत में ब्रांड प्रमोशन की अनुमति देता है। प्रमुख रणनीतियां शामिल हैं:

टारगेटेड विज्ञापन और सोशल मीडिया मार्केटिंग: प्लेटफॉर्म्स जैसे Instagram और LinkedIn पर महिलाएं लक्षित विज्ञापन चला सकती हैं। एक अध्ययन से पता चलता है कि 91.7% महिलाएं सोशल मीडिया मार्केटिंग का उपयोग करती हैं, जो उन्हें व्यापक दर्शकों तक पहुंचाने में मदद करता है उदाहरणस्वरूप, महिलाएं इन्फ्लुएंसर सहयोग के माध्यम से अपने ब्रांड को प्रमोट करती हैं, जो पारंपरिक विज्ञापन से सस्ता है।

**एसईओ (सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन) और कंटेंट मार्केटिंग:**

SEO महिलाओं को सर्च इंजनों पर बेहतर रैंकिंग दिलाता है, जबकि कंटेंट मार्केटिंग (ब्लॉग, वीडियो) ग्राहक जुड़ाव बढ़ाता है। सोशल मीडिया एनालिटिक्स से ग्राहक व्यवहार समझना आसान होता है, जिससे बिक्री में वृद्धि होती है। महिलाएं सोशल मीडिया पर अधिक सक्रिय होती हैं, जो उन्हें ब्रांड एंगेजमेंट में लाभ देता है।

डेटा एनालिटिक्स और वैयक्तिकृत मार्केटिंग: डिजिटल टूल्स से महिलाएं ग्राहक डेटा का विश्लेषण कर वैयक्तिकृत ऑफर दे सकती हैं, जो व्यवसाय प्रदर्शन को सुधारता है। एक रिपोर्ट के अनुसार, 63% महिलाएं सोशल मीडिया मार्केटिंग और डिजिटल पेमेंट्स से व्यवसाय सुधार का अनुभव करती हैं।ये रणनीतियां महिलाओं को पारंपरिक विपणन की तुलना में अधिक प्रभावी बनाती हैं, क्योंकि वे घर से ही लागू की जा सकती हैं।

### 3. लाभ: सशक्तिकरण और विकास

डिजिटल प्लेटफॉर्म्स और विपणन रणनीतियां महिलाओं को कई लाभ प्रदान करती हैं:

वैश्विक पहुंच और लागत बचत: महिलाएं बिना यात्रा या दुकान किराए के वैश्विक बाजारों में प्रवेश कर सकती हैं। 77% महिलाएं सोशल मीडिया से बेहतर दृश्यता का अनुभव करती हैं, जबकि 60% ग्राहक आधार में वृद्धि।

लचीलापन और नवाचार: डिजिटल टूल्स से महिलाएं घर से काम कर सकती हैं, जो घरेलू दायित्वों के साथ संतुलन बनाता है। इससे उद्यमशील क्षमता बढ़ती है, विशेष रूप से ऑनलाइन सोशल कैपिटल (ब्रिजिंग सोशल कैपिटल) के माध्यम से।

**बेहतर निर्णय और विकास:**

डेटा-ड्रिवन निर्णय, वैश्विक सहयोग और संसाधनों तक पहुंच से महिलाओं की उद्यमशीलता मजबूत होती है। एक अध्ययन में पाया गया कि डिजिटलाइजेशन महिलाओं की उद्यमशील अभिविन्यास को बढ़ाता है, जो सस्टेनेबल स्टार्टअप इंटेंशन को प्रोत्साहित करता है।

**4. चुनौतियां: बाधाएं और समाधान:**

हालांकि लाभ बहुत हैं, लेकिन चुनौतियां भी मौजूद हैं:

डिजिटल साक्षरता और इंटरनेट एक्सेस की कमी: कई महिलाएं, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, डिजिटल कौशल की कमी से जूझती हैं। अनियमित इंटरनेट और फंडिंग की कमी बाधा बनती है।

साइबर सुरक्षा और ऑनलाइन उत्पीड़न: महिलाएं ऑनलाइन जेंडर-बेस्ड हिंसा का सामना करती हैं, जिससे 36% अपना पूरा नाम, 41% फोटो और 59% वीडियो नहीं पोस्ट करतीं। ई-कॉमर्स अपनाने में ट्रांजेक्शन लागत और विश्वास की कमी बाधक है।

**वित्तीय और नियामक बाधाएं:**

व्यवसाय पंजीकरण की जटिलता से महिलाएं अनौपचारिक क्षेत्र में रहती हैं, जो बैंक खातों तक पहुंच को प्रभावित करता है।

समाधान के रूप में, डिजिटल ट्रेनिंग प्रोग्राम्स (जैसे डिजिटल मार्केटिंग, AI और डेटा एनालिटिक्स पर) आवश्यक हैं। इंडोनेशिया के सुकामनाह गांव जैसे केस स्टडी से पता चलता है कि ट्रेनिंग से महिलाएं लाभान्वित होती हैं। नीतिगत समर्थन, जैसे सरकारी ट्रेनिंग और फंडिंग, इन चुनौतियों को दूर कर सकता है।

**5. ट्रेंड्स: भविष्य की दिशा**

**डिजिटल युग में ट्रेंड्स तेजी से बदल रहे हैं:**

**AI और मशीन लर्निंग:** AI वैयक्तिकृत मार्केटिंग सक्षम करता है। 38% महिलाएं AI टूल्स का उपयोग करती हैं, लेकिन निरंतर इंटरनेट वाली महिलाएं 2.5 गुना अधिक AI अपनाती हैं।वीडियो मार्केटिंग और वॉइस सर्च: ये नए बाजारों में प्रवेश की सुविधा देते हैं। महिलाएं SEO, हैशटैग स्ट्रैटेजी और एनालिटिक्स से डिजिटल दृश्यता बढ़ा सकती हैं।

**फिनटेक और क्लाउड-बेस्ड टूल्स:** ये परिचालन लागत कम करते हैं और नेटवर्किंग बढ़ाते हैं।भविष्य में, डिजिटलाइजेशन महिलाओं की उद्यमशीलता को और मजबूत करेगा, लेकिन डिजिटल कौशल विकास पर जोर देना जरूरी है।

**निष्कर्ष :**

डिजिटल युग में महिला उद्यमिता ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स और विपणन रणनीतियों के माध्यम से नई ऊंचाइयों को छू रही है। ये टूल्स महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करते हैं, व्यापार वृद्धि सुनिश्चित करते हैं और लिंग समानता को बढ़ावा देते हैं। हालांकि, चुनौतियां जैसे डिजिटल डिवाइड को दूर करने की

आवश्यकता है। समग्र रूप से, डिजिटल मार्केटिंग सतत विकास का माध्यम बन सकती है, यदि महिलाओं को उचित समर्थन मिले।

**समारोप:**

महिला उद्यमिता डिजिटल युग की सबसे शक्तिशाली कहानियों में से एक है। यह न केवल व्यक्तिगत सशक्तिकरण का प्रतीक है, बल्कि समाजिक परिवर्तन का भी। महिलाओं को डिजिटल टूल्स अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि वे वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपनी जगह मजबूत करें। अंत में, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि तकनीक समानता का माध्यम है, और महिलाओं की भागीदारी से ही एक समावेशी डिजिटल दुनिया संभव है।

**संदर्भ सूची:**


1. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन एंड रिव्यूज। (न.द.)। डिजिटल युग में महिला उद्यमिता। https://ijrpr.com/uploads/V5ISSUE4/IJRPR25257.
2. आईजेएमआरए। (2021)। महिला उद्यमियों द्वारा अपनाई गई डिजिटल विपणन रणनीतियां। https://www.ijmra.us/project%20doc/2021/IJMIE_APRIL2021/IJMIE7April21-22124.
3. गोब्रैंडवर्ज। (2025)। विपणन के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना: महिला उद्यमियों को ऊंचा उठाने वाली रणनीतियां। https://www.gobrandverge.com/empowering-women-through-marketing-strategies-to-elevate-female-entrepreneurs
4. ऑनिमॉड ग्लोबल। (2024)। डिजिटल विपणन और महिला-स्वामित्व वाले व्यवसायों को सशक्त बनाना। https://www.onimodglobal.com/digital-marketing-and-empowering-women-owned-businesses
5. आईबीआईएस स्टूडियो। (न.द.)। उद्यमिता के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना: प्रगति में डिजिटल विपणन की भूमिका। https://ibisstudio.com/empowering-women-through-entrepreneurship-the-role-of-digital-marketing-in-driving-progress
6. ईवुमेननेटवर्क। (2024)। महिला उद्यमी डिजिटल युग में मजबूत ब्रांड कैसे बना सकती हैं। https://www.ewomennetwork.com/blog/ewomennetwork-1/post/how-women-entrepreneurs-can-build-a-strong-brand-in-the-digital-age-1871

# वर्तमान समय में हिंदी उपन्यासकारों का योगदान

**शोध निर्देशक: प्रो.डॉ. ललिता राठोड**
बलभिम कला, विज्ञान तथा वाणिज्य महाविद्यालय बीड
**शोध छात्रा: अरुणा परशुराम राठोड**

**प्रस्तावना:** वर्तमान समय में हिंदी उपन्यासकारों का योगदान अत्यंत व्यापक, प्रभावशाली और बहुआयामी रूप में देखा जा सकता है। हिंदी उपन्यास आज केवल साहित्यिक रचना भर नहीं रह गया है, बल्कि यह सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक मूल्यों, राजनीतिक परिस्थितियों और मानवीय संवेदनाओं का एक सशक्त माध्यम बन चुका है। आधुनिक हिंदी उपन्यासकार अपने लेखन के माध्यम से न केवल समाज की वास्तविकताओं को उजागर कर रहे हैं, बल्कि वे परिवर्तन और जागरूकता के वाहक भी बन रहे हैं।

**बीच शब्द:** उपेक्षित, प्रतिस्पर्धा,यथार्थ, आडंबर, ज्वलंत,वैश्वीकरण

समकालीन हिंदी उपन्यासकारों ने अपने लेखन में विविध विषयों को शामिल किया है। जहाँ पहले उपन्यास मुख्यतः प्रेम, परिवार और नैतिक मूल्यों के इर्द-गिर्द केंद्रित होते थे, वहीं आज के उपन्यासकार नारी विमर्श, दलित चेतना, आदिवासी जीवन, पर्यावरण संकट, वैश्वीकरण, प्रवासी जीवन और पहचान के संघर्ष जैसे गंभीर और ज्वलंत मुद्दों को अपने लेखन का विषय बना रहे हैं। इन विषयों के माध्यम से वे समाज के उन वर्गों की आवाज़ बनते हैं जिन्हें लंबे समय तक साहित्य और समाज दोनों में उपेक्षित किया गया।

वर्तमान हिंदी उपन्यासकारों की एक महत्वपूर्ण विशेषता उनकी यथार्थवादी दृष्टि है। वे जीवन की सच्चाइयों को बिना किसी आडंबर के प्रस्तुत करते हैं। उनके उपन्यासों में शहरों की भागदौड़, अकेलापन, मानसिक तनाव, प्रतिस्पर्धा और आधुनिक जीवन की जटिलताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। साथ ही, ग्रामीण जीवन की समस्याएँ, परंपराएँ, सामाजिक संरचना और परिवर्तनशीलता भी उनके लेखन में सजीव रूप में उभरती हैं। इस प्रकार, वे समाज के दोनों पहलुओं—ग्रामीण और शहरी—का संतुलित चित्रण करते हैं।

भाषा और शैली के स्तर पर भी आधुनिक हिंदी उपन्यासकारों ने महत्वपूर्ण प्रयोग किए हैं। उनकी भाषा सरल, सहज और संवादात्मक होती है, जिससे पाठकों को जुड़ाव महसूस होता है। वे बोलचाल की भाषा, क्षेत्रीय शब्दों और नए मुहावरों का प्रयोग करके अपने लेखन को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं। इससे न केवल भाषा का विकास होता है, बल्कि साहित्य भी अधिक जीवंत और प्रासंगिक बनता है।

डिजिटल युग में हिंदी उपन्यासकारों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। आज ई-पुस्तकों, ब्लॉग्स, ऑनलाइन पत्रिकाओं और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से उनके लेखन की पहुँच व्यापक हो गई है। इससे नए लेखकों को अवसर मिला है और पाठकों का एक नया वर्ग भी तैयार हुआ है, जो हिंदी साहित्य में रुचि ले रहा है। यह परिवर्तन हिंदी उपन्यास के विकास में एक महत्वपूर्ण कदम है।

वर्तमान समय के हिंदी उपन्यासकार वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी अपनी पहचान बना रहे हैं। वे भारतीय समाज और संस्कृति को वैश्विक संदर्भों में प्रस्तुत कर रहे हैं, जिससे हिंदी साहित्य को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल रही है। उनके उपन्यासों में स्थानीयता और वैश्विकता का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।

इसके अतिरिक्त, समकालीन हिंदी उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक गहराई भी विशेष रूप से दिखाई देती है। लेखक मानव मन की जटिलताओं, आंतरिक संघर्षों, अवसाद, अकेलेपन और अस्तित्व संबंधी प्रश्नों को गहराई से चित्रित करते हैं। इस प्रकार के लेखन से पाठकों को न केवल कथा का आनंद मिलता है, बल्कि वे आत्ममंथन के लिए भी प्रेरित होते हैं। यह प्रवृत्ति हिंदी उपन्यास को और अधिक गंभीर और चिंतनशील बनाती है।

एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि वर्तमान हिंदी उपन्यासकार सामाजिक परिवर्तन के प्रति सजग हैं। वे अपने लेखन के माध्यम से रूढ़ियों, अंधविश्वासों और सामाजिक कुरीतियों का विरोध करते हैं। स्त्री-स्वतंत्रता, लैंगिक समानता और मानवाधिकार जैसे विषयों को प्रमुखता देकर वे समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास कर रहे हैं। इस दृष्टि से उनका योगदान केवल साहित्य तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक सुधार से भी जुड़ा हुआ है।

**निष्कर्ष:** अंततः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान हिंदी उपन्यासकार समाज के सजग, संवेदनशील और जिम्मेदार रचनाकार हैं। वे अपने लेखन के माध्यम से न केवल मनोरंजन करते हैं, बल्कि समाज को जागरूक, शिक्षित और प्रेरित भी करते हैं। उनका योगदान हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने के साथ-साथ समाज के समग्र विकास में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

**संदर्भ सूची:**

1) सम्मेलन पत्रिका: साहित्य-संस्कृति भाषा विशेषांक, पृष्ठ 117

2) हिंदी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास- डॉ पारू कांत देसाई, चिंतन प्रकाशन कानपुर, पृ 114

3) मेरा हमदम मेरा दोस्त, सं कमलेश्वर, पृ 73

4) अज्ञेय  और आधुनिक रचना की समस्या- डॉ रामस्वरूप चतुर्वेदी पृ 126

# महाराष्ट्रातील स्त्री कामगार- लोकसंख्या प्रमाण आणि बेरोजगारीचा कल: स्वयंरोजगाराद्वारे सक्षमीकरणाची आवश्यकता

**आश्विनी कृष्णा केळे**
संशोधक विद्यार्थी
अर्थशास्त्र विभाग,
डॉपीठबाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्या .,
छत्रपती संभाजीनगर
Email: ashwinikele07@gmail.com

**डॉ. डी. बी. मोरे**
संशोधन मार्गदर्शक
तेरणा महाविद्यालय धाराशिव

**Abstract:**

प्रस्तुत संशोधन लेख हा महाराष्ट्रातील महिलांच्या आर्थिक स्थितीचा आणि रोजगाराच्या बदलत्या स्वरूपाचा अभ्यास करतो .राज्याच्या विकासात महिलांचा सहभाग महत्वाचा असूनही, गेल्या काही दशकात कामगार लोकसंख्या प्रमाण )WPR) आणि बेरोजगारीचा दर )UR) यामध्ये मोठे चढउतार दिसून - .आले आहेतNSSO (50 वी व 68 वी फेरी आणि (PLFS (2020-21) आकडेवारीनुसार, ग्रामीण महिलांचा कार्यसहभाग दर 44.7% वरून घटून 34.1% झाला आहे, तर शहरी भागात बेरोजगारीचा दर 7.4% पर्यंत वाढला आहे. वाढत्या बेरोजगारीच्या या पार्श्वभूमीवर केवळ नोकऱ्यांच्या शोधात न राहता 'स्वयंरोजगार' आणि 'लघु उद्योगांचे नेतृत्व' हाच महिला सक्षमीकरणाचा प्रभावी मार्ग असल्याचे हा संशोधन लेख अधोरेखित करतोसदरील संशोधन लेखामध्ये असे दिसून येते की ., महिलांना भांडवल आणि बाजारपेठेसोबतच प्रामुख्याने तांत्रिक आव्हानांचा सामना करावा लागतोतर डिजिटल साक्षरता आणि . आधुनिक तंत्रज्ञानाचे प्रशिक्षण दिले, तर स्वयंरोजगाराच्या माध्यमातून महिलांचे आर्थिक स्वावलंबन आणि सामाजिक नेतृत्व अधिक भक्कम होऊ शकते.

**Keywords:** कामगार लोकसंख्या प्रमाण )WPR), बेरोजगारीचा कल, स्वयंरोगार, महिला सक्षमीकरण, लघू उद्योग, तांत्रिक आव्हाने.

**प्रस्तावना )Introduction):**

महाराष्ट्रच्या सामाजिक आणि आर्थिक जडणघडणीत महिलांची भूमिका ऐतिहासिक काळापासून कळीची राहिली आहेआघाडीचे राज्य असले भारताच्या एकूण अर्थव्यवस्थेत महाराष्ट्र हे ., तरी राज्यातील महिलांच्या आर्थिक सहभागाचे स्वरूप काळानुसार बदलत गेले आहे :विशेषत .1991 च्या

जागतिकीकरणानंतरच्या काळात आणि अलिकडच्या कोविड-19 नंतरच्या परिस्थितीत रोजगाराच्या संधी आणि पध्दतींमध्ये मोठे स्थित्यंतर घडून आले आहे.

महाराष्ट्राच्या आर्थिक प्रगतीमध्ये महिलांचा सहभाग हा महत्वाचा घटक आहेलोकसंख्याशास्त्रीय . .बदल आणि अर्थव्यवस्थेतील स्थित्यंतरांमुळे महिलांच्या रोजगाराच्या स्वरूपात मोठे बदल झाले आहेत केवळ रोजगाराच्या संधी शोधण्यापेक्षा'रोजगार निर्मिती' करणे हा सक्षमीकरणाचा खरा मार्ग आहेकेवळ . लोकसंख्या वाढणे म्हणजे प्रगती नव्हे, तर त्या लोकसंख्येला उत्पादक कामात गुंतवणे हे खरे आव्हान आहे . ) महाराष्ट्रातील महिलांच्या बाबतीत कामगार लोकसंख्या प्रमाणWPR) मधील चढउ-तार आणि सुशिक्षित महिलांमधील 'बेरोजगारीचा दर' (UR) हे दोन महत्वाचे निर्देशक आहेतजेव्हा आपण सक्षमीकरणाचा . विचार करतो, तेव्हा केवळ नोकरी मिळवणे हा त्यावरील उपाय ठरू शकत नाहीवाढत्या बेरोजगारीच्या . पार्श्वभूमीवर स्वयंरोजगार हा केवळ एक पर्याय नसून ती महिलांच्या आर्थिक स्वातंत्र्याची आणि सामाजिक नेतृत्वाची गरज बनली आहेनिबंध महाराष्ट्रातील महिलांच्या रोजगाराच्या प्रस्तुत शोध . कलानुसार स्वयंरोजगाराचे महत्त्व अधोरेखित करतो.

**संशोधनाची उद्दिष्टे :**

1. महाराष्ट्रातील ग्रामीण आणि शहरी महिलांच्या स्त्री कामगार लोकसंख्या प्रमाण आणि महिलांमधील बेरोजगारीच्या वाढत्या दराचे विश्लेषण करणे.
2. आर्थिक आणि सामाजिक सक्षमीकरणासाठी स्वयंरोजगाराचे महत्त्व अधोरेखित करणे.
3. महिला उद्योजकांना भेडसावणाऱ्या तांत्रिक आव्हानांचा शोध घेणे.

**संशोधन पध्दती :(Research Methodology)**

प्रस्तुत संशोधनामध्ये 'वर्णनात्मक' आणि 'विश्लेषणात्मक' पद्धतीचा वापर करण्यात आला आहेहा . .अभ्यास पूर्णपणे दुय्यम साधनसामुग्रीवर आधारित आहे यासाठी NSSO (50 वी व 68 वी फेरी(, PLFS (2020-21) आणि महाराष्ट्र आर्थिक पाहणी अहवालांचा आधार घेतला आहे.

**महाराष्ट्रातील स्त्री कामगार लोकसंख्या प्रमाण )WPR) आणि बेरोजगारिचा कल )UR):**

तक्ता क्र 1: महाराष्ट्रातील महिलांच्या रोजगारातील आणि बेरोजगारीचा बदलता कल दर्शवणारा तक्ता )1993-2021).

| अनु क्रं. | वर्षे फेरी)/सर्वे( | ग्रामीण महिला WPR % | शहरी महिला WPR % | ग्रामीण महिला UR % | शहरी महिला UR % |
|---|---|---|---|---|---|

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | 1993-94 (NSSO 50 वी) | 44.7 | 14.3 | 0.3 | 5.5 |
| 2. | 2011-12 (NSSO 68 वी) | 28.7 | 13.9 | 0.3 | 2.8 |
| 3. | 2020-21 (PLFS) | 34.1 | 18.5 | 0.9 | 7.4 |

संदर्भ: A report on employment and unemployment situation based on data collected in state sample of 68th round of national sample surve (July 2011-June 2012).

**ग्रामीण स्थिती** :1993 मध्ये 44.7% असलेला ग्रामीण महिलांचा सहभाग 2011 मध्ये कमालीचा घटला )28.7%), मात्र 2020-21 मध्ये तो पुन्हा 34.1%. पर्यंत वाढला आहेहे दर्शवते की ग्रामीण भागात महिला . पुन्हा एकदाशेतीपूरक आणि लघु उद्योगांच्या माध्यमातून अर्थव्यवस्थेत सक्रिय होत आहेत.

**शहरी आव्हाने:** शहरी भागात बेरोजगारीचा दर 5.5% वरून 7.4% पर्यंत वाढणे ही चिंताजनक बाब आहे . शहरांमधील सुशिक्षित महिलांकडे कौशल्य असूनही त्यांना योग्य रोजगार मिळत नसल्याने तिथे स्वयंरोजगारीची सर्वाधिक गरज आहे.

**स्वयंरोजगाराद्वारे सक्षमीकरणाची आवश्यकता :**

केवळ उत्पन्न मिळवणे म्हणजे सक्षमीकरण नव्हेस्वयंरोजगार महिलांच्या आयुष्यात खालीलप्रमाणे बदल . :घडवून आणतो

1. आर्थिक निर्णय क्षमता )Financial Agenicy):

   नोकरीमध्ये महिलांना मर्यादित पगार मिळतो, मात्र स्वंयरोजगारात त्या संपूर्ण व्यवसायाच्या मालक असतातमालमत्ता खरेदी .उदा) मध्येयामुळे कुटुंबाच्या मोठ्या आर्थिक निर्णयां ., गुंतवणूकत्यांचा शब्द ( महत्वाचा ठरतो

2. अकुशल आणि सुशिक्षीत महिलांसाठी संधी:

   अनेकदा कौटुंबिक जबाबदाऱ्यांमुळे महिलांना पूर्णवेळ नोकरी करणे शक्य नसतेअशा वेळी घरबसल्या . .टिकवून ठेवतो किंवा लघू उद्योगातून मिळणारा रोजगार त्यांना आर्थिक प्रवाहात

3. आत्मसन्मानाची निर्मिती:

   जेंव्हा एखादी महिला स्वतःचे उत्पादन बाजारपेठेत विकते, तेव्हा तिला मिळणारी ओळख ही कोणत्याही पगारापेक्षा मोठी असतेह .ा आत्मविश्वास तिला सामाजिक अन्यायाविरुद्ध लढण्याची ताकद देतो.

4. लोकसंख्या लाभांशाचा वापर )Demographic Dividend):

महाराष्ट्रातील महिला लोकसंख्येचा मोठा भाग कार्यक्षम वयोगटात आहेजर त्यांना स्वयंरोजगाराच्या . संधी मिळाल्या नाहीत, तर हे मनुष्यबळ वाया जाईल.

5. वेळेचे नियोजनआणि सुलभता:

भारतीय कुटुंबात महिलांवर घरकामाची मोठी जबाबदारी असतेत्यांना घर आणि स्वयंरोजगारामुळे . .व्यवसाय यांतील समतोल राखण्यासाठी वेळेचे नियोजन स्वत:च्या सोयीनुसार करता येते

6. नेतृत्व गुणांचा विकास )Leadership Development):

जेंव्हा एखादी महिला स्वत:चा लघू उद्योग सुरू करते तेव्हा ती कच्चे माल खरेदी करणे, मार्केटिंग करणे आणि आर्थिक व्यवहार सांभाळणे या सर्व गोष्टी स्वतयोजक नेतृत्व विकसित करते यातून तिच्यात उद् : .होते

**लघु उद्योगांमधील महिलांची भूमिका आणि नेतृत्व )Role and Leadership):**

लघु उद्योगांमध्ये महिला केवळ कामगार नसून त्या एक कुशल 'मॅनेजर' आणि 'लीडर' म्हणून समोर येत आहेत.

1. बचत गटांचे संघटन:

महाराष्ट्रातील 'उमेद' आणि माविम सारख्या चळवळींनी हे सिद्ध केले आहे की, महिला सामूहिक नेतृत्वात अधिक यशस्वी होतात ग चालवतानाएखादा लघु उद्यो .त्या कच्चा माल खरेदीपासून ते मार्केटिंगपर्यंत सर्व स्तरावर नेतृत्व करतात.

2. कौशल्य आधारित नेतृत्व:

अन्नप्रक्रिया, कापड उद्योग आणि हस्तकला यांसारख्या क्षेत्रांत महिलांकडे उपजत कौशल्ये असतातया . .कौशल्यांचे रूपांतर त्या व्यावसायिक नेतृत्वात करत आहेत

३. नवनवीन क्षेत्रात पदार्पण: आताच्या काळात महिला केवळ पापड, लोणच्यापुरत्या मर्यादित न राहता डिजिटल मार्केटिंग, ईकॉमर्स-, आणि मशरूम शेती यांसारख्या आधुनिक लघु उद्योगांचे नेतृत्व करत आहेत .

4. सामाजिक नेतृत्व: एक महिला उद्योजक जेंव्हा यशस्वी होते, तेव्हा ती आपल्या गावातील किंवा परिसरातील इतर 5-10 महिलांना रोजगार देऊन त्यांचेही नेतृत्व करते.

**आव्हाने आणि अडथळे )Challenges and Obstacles):**

महिलांना उद्योजक बनण्यापासून रोखणारे अडथळे आजही समाजात अस्तित्वात आहेत.

1. वित्तीय अडथळे )Financial Barriers): आजही ग्रामीण भागात अनेक महिलांच्या नावावर जमीन किंवा मालमत्ता नसतेपुढील सर्वात मोठे आव्हान तारण कर्ज मिळवणे हे त्यांच्या-त्यामुळे बँकांकडून विना . आहे.
2. दुहेरी ओझे )Double Burden): व्यवसायाची जबाबदारी सांभाळताना घरकाम आणि मुलांचे संगोपन यात महिलांची ओढाताण होतेकुटुंबाकडून सहकार्य न मिळाल्यास अनेक महिला अर्ध्यातूनच उद्योग बंद . .करतात
3. तंत्रज्ञानाचा अभाव: बदलत्या काळात ऑनलाइन व्यवहार आणि मार्केटिंग महत्त्वाचे झाले आहेमात्र . ग्रामीण भागातील महिलांकडे स्मार्टफोनचा प्रभावी वापर आणि तांत्रिक साक्षरता कमी असल्याने त्या स्पर्धेत मागे पडतात.
4. बाजारपेठेशी संपर्क )Market Linkage):

   उत्पादन तयार करणे सोपे असले तरी ते योग्य किमतीत विकण्यासाठी हक्काची बाजारपेठ मिळवणे कठीण असते.योजकांना त्यांच्या मेहनतीचा योग्य मोबदला मिळत नाहीमध्यस्थांमुळे महिला उद् .
5. सामाजिक रूढी:

   व्यवसाय करणे हे महिलांचे काम नाही किंवा घराबाहेर पडून व्यवहार करने योग्य नाही यशा जुन्या विचारांमुळे महिलांच्या आत्मविश्वासावर परिणाम होतो.

**तांत्रिक आव्हाने )Technical Challenges):**

आजच्या स्पर्धेच्या आणि डिजिटल युगात महिला उद्योजकांकडे केवळ उत्पादन असून चालत नाही, तर त्यांना अनेक तांत्रिक आघाड्यांवर लढा द्यावा लागतो.ही आव्हाने खालीलप्रमाणे आहेत .

1. डिजीटल साक्षरतेचा अभाव )Digital Literacy Grap):

   अनेक महिला उद्योजक पारंपरिक पध्दतीने व्यवसाय करण्यात कुशल असतात, परंतु व्यवसाय डिजिटल प्लॅटफॉर्मवर नेण्यासाठी लागणाऱ्या कौशल्यांची कमतरता जाणवतेमेलचा वापर-यामध्ये प्रामुख्याने ई ., ऑनलाइन बँकिंग, आणि डिजिटल पेमेंट उदा), UPI QR, Codes) सुरक्षितपणे हाताळणे यातील अडचणींचा समावेश होतो.
2. ई :कॉमर्स आणि ऑनलाइन मार्केटिंगमधील अडथळे-

उत्पादन तयार झाल्यावर ते अमॅझॉन,फ्लिपकार्ट किंवा स्वतःच्या वेबसाइटवरून विकण्यासाठी विशिष्ट तांत्रिक प्रक्रियेची गरज असते मालाचे फोटो काढणे, त्याचे वर्णन लिहिणे, आणि सोशल मीडियाचा मार्केटिंग साठी वापर करणे यात ग्रामीण भागातील महिलांना तांत्रिक मार्गदर्शनाची कमतरता भासते.

3. आधुनिक यंत्रसामग्री आणि उत्पादन तंत्रज्ञानः

लघु उद्योगांमध्ये आजही अनेक ठिकाणी जुन्या पद्धतीची यंत्रे वापरले जातातउत्पादनाचा दर्जा . रण्यासाठी आणि उत्पादन खर्च कमी करण्यासाठी ऑटोमेशन किंवा आधुनिक मशनरी आवश्यक सुधा असते मात्र या यंत्राचे कार्य समजून घेणे आणि त्यांची देखभाल करणे यासाठी लागणारे तांत्रिक प्रशिक्षण महिलांपर्यंत पोहोचत नाही.

4. माहिती सुरक्षा आणि सायबर धोके:

जसजसा व्यवसाय ऑनलाइन होतो तसतसा सायबर फसवणुकीचा धोका वाढतोडेटा चोरी ., आर्थिक फसवणूक किंवा फिशिंग यासारख्या तांत्रिक धोक्यापासून आपला व्यवसाय कसा वाढवायचा, याचे ज्ञान नसल्यामुळे अनेक महिला डिजिटल व्यवहारांपासून लांब राहणे पसंत करतात.

5. कच्च्या मालाची निवड आणि गुणवत्ता नियंत्रण )Quality Control):

उत्पादनाची गुणवत्ता जागतिक दर्जाची राखण्यासाठी विशिष्ट तांत्रिक मानकांचा उदा. ISO, FSSAI, Agmark वापर करावा लागतो या प्रमाणपत्रासाठीची कागदपत्रे आणि तांत्रिक चाचण्यांची प्रक्रिया सामान्य महिला उद्योजकांसाठी अत्यंत गुंतागुंतीचे असते.

6. अपुरे तांत्रिक प्रशिक्षण आणि पायाभूत सुविधा:

ग्रामीण भागात वीज पुरवठ्यातील अनिश्चितता आणि इंटरनेटची कमी गती यामुळे तांत्रिक प्रगतीला खीळ बसतेतसेच., नवीन तंत्रज्ञान शिकवणारी प्रशिक्षण केंद्र स्थानिक पातळीवर उपलब्ध नसल्यामुळे महिलांना जुन्याच तंत्रावर अवलंबून राहावे लागते.

**उपाय:**

1. सरकारी स्तरावर 'डिजिटल सखी' सारख्या उपक्रमांद्वारे तांत्रिक साक्षरता वाढवणे.
2. प्रत्येक जिल्ह्यात तांत्रिक मदत केंद्र उभारणे.
3. महिलांसाठी विशेष ई.मार्केटिंग कार्यशाळांचे आयोजन करणे -

**निष्कर्ष:**

महाराष्ट्रातील महिलांच्या कामगार लोकसंख्या प्रमाणातील बदल आणि वाढती शहरी बेरोजगारी हे स्पष्ट करतात की केवळ पारंपारिक नोकऱ्यावर अवलंबून राहणे आता शक्य नाहीसोय रोजगार आणि ल .घु उद्योगांमधील तांत्रिक प्रगती हाच महिलांच्या खऱ्या सक्षमीकरणाचा मार्ग आहेतर महिलांना योग्य तांत्रिक . त्तीय सहाय्य मिळालेप्रशिक्षण आणि वि, तर त्या केवळ स्वतःचेच नव्हे तर राष्ट्राचे आर्थिक भविष्य बदलू शकतीलस्वयंरोजगार हा केवळ चरितार्थाचे साधन नसून ते महि .लांच्या सामाजिक आणि मानसिक सक्षमीकरणाचे एक प्रभावी शस्त्र आहे.

**शिफारशी:**

1. सरकारने स्वयंरोजगारासाठी विशेष अनुदान आणि प्रशिक्षण कार्यक्रम राबवणे आवश्यक आहे . .जेणेकरून महिलांचा आर्थिक सक्षमीकरणाचा टप्पा गाठता येईल
2. डिजिटल साक्षरता अभियानाद्वारे महिलांना ऑनलाइन व्यवहारांचे मोफत प्रशिक्षण द्यावे.
3. बँकांनी महिला उद्योजकांसाठी विना-तारण कर्जे योजनांची प्रक्रिया सुलभ करावी.
4. तालुक्याच्या ठिकाणी तांत्रिक मदत केंद्र स्थापन करावे.
5. उत्पादनांच्या विक्रीसाठी हक्काची बाजारपेठ आणि सरकारी प्रदर्शने उपलब्ध करून द्यावीत.

**संदर्भ )References):**

1. भारत सरकार, पीरिऑडिक लेबर फोर्स सर्वे )PLFS) वार्षिक अहवाल 2020- 21, सांख्यिकी आणि कार्यक्रम अंमलबजावणी मंत्रालय )MOSPI).
2. भारत सरकार, नॅशनल सॅम्पल सर्वे )NSSO) 50 वी आणि 68 वी फेरी अहवाल, रोजगार आणि बेरोजगारीची स्थिती.
3. महाराष्ट्र शासन, महाराष्ट्र आर्थिक पाहणी अहवाल 2021-22 आणि 2024-25.
4. देशपांडे सुधीर, (2018) महाराष्ट्राची अर्थव्यवस्था, हिमालया पब्लिशिंग हाऊस.
5. मजुमदार, इंद्राणी )2007) Women and Globalization in the Indian context, पेंग्विन बुक्स.
6. ड्रेझ, जीन आणि सेन अमर्त्य )2013), An uncertain Glory: India and it's contradictions, एलन लेन पब्लिशर्स.
7. महाराष्ट्र राज्य महिला आयोग )MSCW) अधिकृत संकेतस्थळ.
8. नॅशनल इन्स्टिट्यूट ऑफ ट्रान्सफॉर्मिंग इंडिया )NITI Aayog)- महिला सक्षमीकरण आणि उद्योजकता विभाग.

# डिजिटल युगातील महिला उद्योजकता :ऑनलाइन प्लॅटफॉर्म आणि विपणन धोरण:

**डॉ. रेणुका दशरथराव बडवणे (भावसार)**

जालना समाजकार्य महाविद्यालय रामनगर जालना.

**प्रस्तावना:**

भारतीय उद्योग परंपरेमध्ये मोठ्या प्रमाणात विविध उद्योगांना चालना मिळालेली आहे. पूर्वीपासूनच भारतातील वस्तूंची, संस्कृती आणि परंपरेचें संपूर्ण जगभर वाहवा व स्वागत झालेले आहे.

पूर्वीपासूनच भारतीय बाजारपेठ ही आकर्षणाचे केंद्र बनली आहे. त्यामुळेच आजही संपूर्ण भारतामध्ये अनेक विदेशी पर्यटक प्रत्येक ऋतूमध्ये सातत्याने येऊन सण, समारंभ, धार्मिक परंपरा, विषयी जाणून घेतात व येथे वास्तव्य करून संशोधन करत असतात . दिवाळी, दसरा, कुंभमेळा, होळी गुढीपाडवा व विविध राज्यातील वेगवेगळ्या सणांविषयी जाणून घेतात व मोठ्या प्रमाणामध्ये खरेदी करतात ही खरेदी प्रामुख्याने हस्तकला, लोककलेतून झालेली दिसते. यामध्ये राजस्थान, गुजरात, आंध्र प्रदेश, तामिळनाडू, केरळा या ठिकाणी पर्यटकांची संख्या मोठ्या प्रमाणात आढळून येते.

भारतीय उद्योग व्यवसायामध्ये स्त्री आणि पुरुषांचा उद्योग क्षेत्रात समान सहभाग होता व आहे. भारतात स्त्रिया सुद्धा पुरुषांच्या बरोबरीने प्रत्येक क्षेत्रात कार्यरत असायच्या व आजही त्या कार्यरत आहेत. परंतु स्त्रिया कमी प्रमाणात प्रकाश झोतात आल्या.

उद्योजकीय क्षेत्रात त्यांना पुरेसा वाव भेटला नाही व प्रसिद्धीही भेटलेली दिसून येत नाही. किंवा त्यांच्या कला कौशल्यांना कधी जगासमोर प्रत्यक्षरीत्या आणण्याची किंवा मांडण्याची, व्यक्त होण्याची संधी मिळाली नाही, त्यामागे विविध कारणे असू शकतात.

जसे की... वाहतुकीच्या साधनांचा अभाव, एकट्या स्त्रीला घराबाहेर व बाजारपेठेत पाठवणे योग्य वाटत नसेल, पुरुष प्रधानता, रूढी परंपरा, निर्णय क्षमतांचा अभाव, आत्मविश्वास, कौटुंबिक जबाबदारी, आर्थिक कुचंबना, स्वातंत्र्याचा अभाव. या व यासारख्या अनेक समस्यांमुळे स्त्री उद्योजक ही नेहमीच बाजारपेठ्यापासून वंचित राहिली व जगासमोर ती स्वतःची ओळख करून देण्यास अपात्र ठरली.

**<u>स्त्री उद्योजकातील क्रांती</u>** :

21 व्या शतकात महिला सक्षमीकरणाचे वारे जगभर वाहू लागले. जागतिकीकरण आणि औद्योगीकरणाची लाट जगभर पसरली महिला सक्षमीकरणाचे वारे जगभर वाहू लागले. प्रत्येक क्षेत्रात स्त्रिया पुढे येऊ लागल्या, पुरुषांच्या बरोबरीने प्रत्येक क्षेत्रात त्यांच्या खांद्याला खांदा लावून किंबहुना स्वबळावर नवनवीन उद्योग क्षेत्रात पदार्पण करू लागल्या. त्यासाठी पदवी, पदविका, शिक्षण, प्रशिक्षण याचा विचार न करता स्त्रिया प्रत्यक्षात रस्त्यावर उतरल्या. शिवाय एमबीए ची पदवी घेऊ लागल्या. उद्योजकीय लघु उद्योजकीय व्यवसाय करण्यास लोन काढण्यास बँकेपर्यंत पोहोचण्यास त्या तत्पर व सक्षम झाल्या. कुटुंब चालविण्यासाठी व आर्थिक संपन्नतेसाठी त्या चहाच्या टपरीपासून फाईव्ह स्टार हॉटेल पर्यंत

प्रत्येक उद्योग व्यवसायात यशस्वीपणे वाटचाल करू लागल्या. आणि हळूहळू प्रत्येक उद्योजकीय क्षेत्र स्त्रियांनी काबीज करण्यास सुरुवात केलेली आहे.

21 व्या शतकामध्ये स्त्रियांच्या कर्तृत्वाला व त्यांच्या कष्टाला विशिष्ट स्थान निर्माण झालेले आहे सोशल मीडियाच्या माध्यमातून सुरू केलेल्या व्यवसाय किंवा उद्योगाला योग्य प्लॅटफॉर्म मिळाला आहे, त्यामुळे स्त्रियांचा आत्मविश्वास, आत्मसन्मान, आर्थिक स्थिरता व संपन्नता प्राप्त झालेली आहे.

**सोशल मीडिया डिजिटल युगातील ऑनलाइन प्लॅटफॉर्म :**

सोशल मीडियामुळे जग आपल्या कवेत येत आहे. मोबाईल सारखी वस्तू संपूर्ण जग आपल्याला एका सेकंदामध्ये दाखवते व हवी ती गोष्ट आपण साध्य करू शकत आहोत.

ज्ञान, वस्तू, कला, कौशल्य सर्व काही हाकेच्या अंतराने उपलब्ध होत आहे, त्यामुळे बऱ्यापैकी स्त्रिया या मोकळेपणाने उद्योग क्षेत्रात उतरत आहेत, व उंच भरारी घेऊ पाहत आहेत. आपलं कुटुंब, समाज व स्वतःचे व्यक्तिमत्व सांभाळून त्या ऑनलाइन बिजनेस करू लागल्या आहेत. कारण त्यांना ऑनलाईन मार्केटिंगचा फार मोठा आधार झाला आहे महिलांनी बनविलेले प्रत्येक वस्तू सहजपणे मोबाईलच्या माध्यमातून जगापुढे येत आहे त्यांना स्वतः तयार केलेल्या मालाची प्रसिद्धी करणे सोपे झाले आहे. स्वतःला व्यक्त करण्याची जागा मिळालेली आहे. "**डिजिटल युगातील महिला उद्योजकता ही आर्थिक सक्षमीकरणाची नवी क्रांती आहे**".

सोशल मीडिया आणि ॲमेझॉन, फ्लिपकार्ट, मिन्ट्रा, मिशो इत्यादी ॲप च्या माध्यमातून स्त्रिया दिवसेंदिवस अधिक सक्षम होताना दिसत आहेत. तसेच सिखो ॲप महिलांसाठी नवनवीन माहिती घेण्यासाठी महत्त्वपूर्ण ठरले आहे. ब्लिंकेट, डिजिटल मार्केटिंग, इंटरनेट तसेच अनेक नवनवीन माध्यमाद्वारे क्षणात आपल्यापर्यंत प्रत्येक वस्तू पोहोचविणारी माध्यमे उपलब्ध झालेली दिसून येतात. या साधनांमुळे महिला घरबसल्या जागतिक बाजारपेठेत उतरल्या आहेत. यामुळे भांडवल आणि संसाधनाच्या पारंपरिक मर्यादा मोडून कमी खर्चात व्यवसाय वाढवणे शक्य झाले आहे. स्टार्ट अप इंडिया सारखे उपक्रम महिलांना डिजिटल कौशल्यासह सक्षम करतात.

महिला उद्योजक उद्योजकांसाठी शासनाच्या माध्यमातून विविध रोजगाराच्या व प्रशिक्षणाच्या मोफत योजनांचे, अनुदान देण्याचे उपक्रम सातत्याने शहरी व ग्रामीण भागामध्ये सुरू असतात. या माध्यमातून महिलांना उद्योग क्षेत्रामध्ये व आर्थिक क्षेत्रामध्ये सक्षम करणे हा शासनाचा उद्देश असल्याचे दिसून येते. याचा देखील अनेक महिला मोठ्या प्रमाणामध्ये फायदा घेताना आढळून येतात.

**संशोधन लेखाचा उद्देश:**

— महिलांच्या उद्योजकीय कौशल्यांचे अध्ययन करणे. —- डिजिटल उद्योगातील महिलांचा अभ्यास करणे. —महिलांना असणाऱ्या उद्योजकीय संधी विषयी जाणून घेणे.

**विषयाची निवड:** — डिजिटल ऑनलाइन उद्योगाविषयी महिलांचा जास्तीत जास्त वाढलेला सहभाग जाणून घेणे व यामागील त्यांची भूमिका समजून घेणे.

— डिजिटल उद्योगांमध्ये महिलांना येणाऱ्या समस्यांचे अध्ययन करणे.

— ऑनलाइन उद्योगाकडे वळणाऱ्या स्त्रियांच्या वयोगटाच्या अध्ययन करणे.

— स्त्रिया कोणकोणत्या शासकीय योजनांचा वापर करतात त्याविषयी जाणून घेणे.

**डिजिटल उद्योजकीय क्षेत्रातील वैशिष्ट्ये** :

— सद्यस्थितीमध्ये स्त्री आणि पुरुष असा भेद कोणत्याच उद्योग क्षेत्रात दिसून येत नाही.

— स्त्रिया पुरुषांपेक्षा जास्त ऑनलाईनचा वापर करताना दिसून येतात.

— सोशल मीडिया हा फार मोठा प्लॅटफॉर्म महिलांना मिळालेला आहे.

— व्यावसायिक दृष्ट्या जागतिक बाजारपेठे महिला काबीज करताना दिसून येतात.

— ऑनलाइन मार्केटिंग मुळे जास्तीत जास्त महिला या उद्योग क्षेत्रामध्ये कार्यरत असल्याचे दिसून येते.

— कुटुंबावरील आर्थिक भार महिला उचलत आहेत.

एकूणच समाज आणि देशाच्या विकासा□साठी हा एक खूप मोठा प्लॅटफॉर्म आहे.

**डिजिटल उद्योग:**

व्याख्या :

**"कोणत्याही बाजारपेठेत प्रत्यक्ष न जाता आपला माल सहज लोकांपर्यंत पोहोचविणे व आर्थिक नफा कमविणे म्हणजे डिजिटल उद्योग होय."**

**"तयार वस्तूंचे प्रदर्शन सोशल मीडियाच्या माध्यमातून द्वारे करणे व ती विकणे."**

**"डिजिटल मार्केटिंगमुळे स्वत:ची स्वतंत्र ओळख निर्माण करून आर्थिक नफा कमवणे व आर्थिक सक्षम होणे."**

**"प्रत्यक्षरीत्या ग्राहक व उत्पादक यांचा कुठेही संबंध न येता आपली वस्तू यशस्वीरित्या ग्राहकापर्यंत पोहोचविण्याचा माध्यम म्हणजे डिजिटल उद्योग होय."**

**डिजिटल युगातील महिला उद्योजकतेमधील महत्त्वाचे मुद्दे:**

...संधी आणि सक्षमीकरण,

...जागतिक बाजारपेठेची माहिती,

...डिजिटल कौशल्याचा विकास, आव्हाने व ते पेलण्याची क्षमता आर्थिक स्वावलंबन सुलभ प्रवेश आणि कमी गुंतवणूक कुटुंब सांभाळून व्यवसाय करणे सुलभ होते.

... डिजिटल युगातील महिला उद्योजकता ही आर्थिक सक्षमीकरणाची नवी पहाट आहे.

इंटरनेट, सोशल मीडिया आणि ई-कॉमर्स इत्यादीच्या प्लॅटफॉर्ममुळे महिलांना भांडवलाच्या मर्यादेवर मात करून घरापासूनच जागतिक बाजारपेठेत पोहोचणे शक्य झाले आहे. सोशल मीडिया मार्केटिंग डिजिटल पेमेंट्स आणि ऑनलाइन कोर्सेस च्या मदतीने महिला नाविन्यपूर्ण व्यवसाय उभारत आहेत, ज्यामुळे पारंपारिक उद्योगातील आव्हाने कमी होऊन आर्थिक स्वातंत्र्य मिळत आहे.

**प्रमुख डिजिटल क्षेत्रे:**

महिला सध्यस्थीत्तीमध्ये ई-कॉमर्स, ऍड-टेक, फिनटेक आणि आरोग्य सेवा यासारख्या विविध क्षेत्रात नाविन्यपूर्ण स्टार्टअप सुरू करत आहेत. शासकीय पाठबळा द्वारे भारतात डिजिटल इंडिया उपक्रमाद्वारे ग्रामीण व शहरी महिलांना डिजिटल साक्षर बनवले जात आहे, ज्यामुळे स्टार्टअप इंडिया अंतर्गत महिला उद्योजकांना मोठी त्यांना मिळत आहेत.

**महिलांसाठी सर्व समावेशक डिजिटल धोरणे**,:

डिजिटल क्रांतीमुळे महिलांच्या आर्थिक सहभागासाठी नव्या संधी खुल्या झाल्या आहेत. त्यामुळे त्यांना जागतिक बाजारपेठत वर्क फ्रॉम होम यासारखी संधी मिळत आहे.

डिजिटल इंडिया अंतर्गत डिजिटल साक्षरता, आर्थिक समावेश आणि सुरक्षिततेवर भर देणारी विशेष धोरणे राबविले जात आहेत.

जसे की,— डिजिटल नारी योजना,

— डिजिटल शक्ती कार्यक्रम,

— डिजिटल आर्थिक समावेशन इत्यादी,

— यशोदा ये आय

— डिजिटल दीदी ( जीविका)

यासारखे उपक्रम ग्रामीण महिलांना तंत्रज्ञान, बँकींग आणि उद्योजकतेत दहा ते तीस हजार दरमहा मासिक उत्पन्न क्षमता निर्माण करून देऊन सक्षम करताना दिसून येत आहे.

**या धोरणांचा मुख्य उद्देश** :

... ग्रामीण व शहरी महिलांमधील डिजिटल दरी कमी करणे हा होय.

... ऑनलाईन हिंसाचार, रोलिंग आणि स्टॉकिंगचा (डिजिटल व्हायलेन्स) कमी करणे किंवा त्याचा सामना करण्यासाठी महिलांना डिजिटल आर्थिक व्यवहारांमध्ये सक्षम बनवणे.

— महिलांचे प्रमुख हक्क :

... हिंसाचारापासून स्वतःचे संरक्षण करण्याची क्षमता.

... गुलामगिरी भेदभाव यापासून मुक्त राहणे.

... शिक्षण घेण्याचा अधिकार

... मालमत्तेचा, मालकीचाअधिकार,

... राजकीय सहभागाचा, आरोग्याचा, सन्मानाचा आणि न्याय आणि समान वेतन मिळविण्याचा अधिकार समाविष्ट आहे.

यानुसार भारतातील प्रत्येक महिलेला सर्व क्षेत्रांमध्ये कार्य करण्याचा अधिकार आहे.

तसेच बदलत्या काळानुसार होणाऱ्या नवीन तंत्रज्ञानास स्वीकारून आर्थिक सक्षम होणे महत्त्वाचे आहे.

स्वतःचा आत्मसन्मान सांभाळून स्वावलंबी बनणे ही सुद्धा काळाची गरज व अधिकार आहे.

महिला ज्या ठिकाणी काम करतात त्या ठिकाणी त्यांना सुरक्षित वातावरण मिळणे व त्या वातावरणामध्ये त्यांनी आर्थिक स्वावलंबी होणे हा देखील महिलांचा अधिकार आहे.

यासाठी महिलांनी समाजात होणाऱ्या प्रत्येक बदलाला स्वीकारून पुढे जाण्याची आवश्यकता आहे.

**समारोप :**

सद्यस्थितीमध्ये सर्वात जास्त महिलांचा समावेश ऑनलाईन डिजिटल मार्केटिंग मध्ये असल्याचे दिसून येते.

महिलांसाठी ऑनलाइन डिजिटल चा प्लॅटफॉर्म अतिशय उपयुक्त ठरलेला आहे. यासाठी मोठे बदल होताना दिसून येत आहेत.

एकूणच प्रत्यक्ष स्त्रीचे व्यक्तिमत्व हे कुटुंबाचे आर्थिक सक्षमीकरण, समाजातील स्त्रीचे स्थान व देशाची आर्थिक संपन्नता यावर अवलंबून असते.

एकूणच डिजिटल ऑनलाइन मार्केटिंग हा व्यवसाय अतिशय महिलासाठी महत्त्वपूर्ण ठरलेला दिसून येतो.

यासाठी स्त्रियांनी स्वतःला अपडेट ठेवणे, आधुनिक तंत्रज्ञानाची माहिती करून घेणे, आपण जो व्यवसाय करत आहोत त्या व्यवसायाची सखोल माहिती अभ्यासणे, समाजामध्ये कुठल्या गोष्टींचा नवीन ट्रेंड चालू आहे त्याविषयी जागरूक राहणे या गोष्टी जर ऑनलाईन मार्केटिंग करणाऱ्या महिलांनी लक्षात घेतल्या तर या व्यवसायामध्ये सहजपणे त्या आणखी प्रगती करू शकतील.

"महिलांचा करा इतका सन्मान

जेणेकरून वाढेल आपल्या देशाची शान."

"देशाच्या प्रगतीसाठी महिलांची प्रगती होणे अत्यंत आवश्यक आहे."

# भारतातील महिला उद्योजकांच्या सामाजिक व सांस्कृतिक अडचणी व त्यांचे निराकरण

**डॉ.माया वामनराव बनसोडे**
सहाय्यक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
कला व विज्ञान महाविद्यालयनेकनूर ,
जिल्हा बीड

**प्रस्तावना :**

भारतात महिला उद्योजकांची संख्या वाढत असली तरी त्यांना सामाजिक आणि सांस्कृतिक अडथळ्यांमुळे व्यवसायात टिकून राहणे आव्हानात्मक ठरत आहेमहिला उद्योजकता ही आर्थिक विकास ., रोजगारनिर्मिती आणि सामाजिक परिवर्तनासाठी महत्त्वाची मानली जातेतथापि ., महिलांना व्यवसाय क्षेत्रात प्रवेश करताना सामाजिक व सांस्कृतिक अडचणींचा सामना करावा लागतो प्रस्तुत .संशोधनपर लेखात या अडचणींचे विश्लेषण करून त्यावरील उपाय सुचविण्यात आले आहेतविविध संशोधन अभ्यासांच्या . आधारे लिंगभेद, पितृसत्ताक व्यवस्था, कुटुंबीय जबाबदाऱ्या, सामाजिक रूढी व सामाजिक संपर्क अभाव यांसारख्या घटकांचा अभ्यास करण्यात आला आहे.

**अभ्यासाचे उद्दिष्टे :**

१. भारतातील महिला उद्योजकांच्या इतिहासाचा अभ्यास करणे .

२ भारतातील महिला उद्योजकांच्या .सामाजिक व सांस्कृतिक अडचणी अभ्यास करणे.

३ भारतातील महिला उद्योजकांच्या .सामाजिक व सांस्कृतिक अडचणी निराकरण करण्यासाठी उपाय सुचविणे

**संशोधन पद्धती :**

सदरचा संशोधन लेख लिहिण्यासाठी व्दितीय माहितीचा वापर करण्यात आला आहे. सदर व्दितीय माहिती प्राप्त करण्यासाठी विविध पुस्तके,संशोधन ग्रंथ , अहवालसंशोधन , लेख व संकेतस्थळांचा वापर करण्यात आला आहे

**विश्लेषण :**

**भारतातील महिला उद्योजकांच्या इतिहासाचा**

महिला उद्योजकतेचा इतिहास हा सामाजिक परिवर्तन, संघर्ष आणि सक्षमीकरणाचा इतिहास आहे . प्राचीन काळापासून आजच्या डिजिटल युगापर्यंत महिलांनी व्यापार, उद्योग आणि सेवाक्षेत्रात महत्त्वाची भूमिका बजावली आहे.

**प्राचीन व मध्ययुगीन काळ**

प्राचीन भारतात महिलांचा व्यापार व हस्तकला क्षेत्रात सहभाग असून महिलांनी कापड विणकाम, अन्नप्रक्रिया, हस्तकला यांसारखे उद्योग चालवले .मध्ययुगीन काळात सामाजिक बंधनांमुळे महिलांचा सार्वजनिक व्यापारातील सहभाग कमी झाला, तरी घरगुती उद्योगांत त्यांची भूमिका कायम राहिली.

**स्वातंत्र्यपूर्व काळ**

ब्रिटिश काळात काही महिलांनी शिक्षण, हस्तकला व सामाजिक संस्थांद्वारे उद्योजकीय कार्य सुरू केले .महिला सहकारी चळवळींची सुरुवात झाली व स्वदेशी चळवळीमुळे महिलांनी घरगुती उद्योगांना चालना दिली.

**स्वातंत्र्यानंतरचा काळ**

स्वातंत्र्यानंतर भारतीय संविधानाने स्त्री-पुरुष समानतेचा अधिकार दिला व त्यामुळे महिला शिक्षणात वाढ झाली. स्वयं-साहाय्य गट (SHG) आणि सहकारी संस्था उदयास आल्या. त्यातून महिलांना उद्योग करण्यासाठी पोषक वातावरण निर्माण होऊन महिला उद्योजक्तेचा विकास झाला आहे.

**आधुनिक काळ**

उदारीकरण, खासगीकरण आणि जागतिकीकरणामुळे महिलांना व्यवसायाच्या नवीन संधी उपलब्ध झाल्या. आयटी, सेवा, ई-कॉमर्स, स्टार्टअप क्षेत्रात महिलांचा सहभाग वाढला. डिजिटल तंत्रज्ञानामुळे घरबसल्या व्यवसाय सुरू करणे शक्य झाले.

**महिला उद्योजकांच्या सामाजिक व सांस्कृतिक अडचणी**

**१. समाजरचना**

भारतीय समाजातील पुरुषप्रधान मानसिकतेमुळे भारतामध्ये महिलांच्या नेतृत्वचा विकास होत नाही. त्यामुळे महिला उद्योजक निर्माण होण्यामध्ये पहिला सामाजिक अडथळा निर्माण होत आहे.

**२. शिक्षण व कौशल्य विकास कमतरता**

भारतातील ग्रामीण भागांत महिलांना उच्च शिक्षण किंवा व्यवसाय प्रशिक्षणाच्या संधी कमी मिळतात. त्यामुळे महिला उद्योजक निर्माण होण्यात अडचणी निर्माण होतात अथवा महिला उद्योजकांचा विकास होत नाही.

३. कुटुंबीय जबाबदाऱ्या

घरकाम, मुलांची काळजी आणि वयोवृद्धांची सेवा अशा बहुयायामी भूमिकेमुळे महिलांना व्यवसायासाठी विचार करण्यासाठी तसेच तो पूर्ण करण्यासाठी वेळ मिळत नाही हि देखील महिला उद्योजकांच्या विकासातील महत्वाची अडचण आहे.

४. सामाजिक रूढी व परंपरा

महिलांचे कार्यक्षेत्र घरापुरतेच अशी धारणा अजूनही महिलांच्या आई, पत्नी, सून या भूमिकांवर अधिक भर दिला जातो. त्यामुळे या सामाजिक रूढी व परंपरा महिला उद्योजकांच्या विकासात अडसर ठरत आहेत.

५. विवाह व निर्णयस्वातंत्र्याचा अभाव

लहान वयात विवाह झाल्याने शिक्षण व करिअरच्या संधी कमी होतात तसेच महिलांना आर्थिक निर्णयांमध्ये स्वतंत्रपणे सहभाग घेता येत नाही.

**६. सामाजिक सुरक्षेचा अभाव व अपयशाची भीती**

प्रवास, बाजारपेठ भेटी, बैठका यासाठी सुरक्षिततेच्या समस्या निर्माण होतात तसेच व्यवसायात अपयश आल्यास महिलांवर अधिक टीका होते. या गोष्टींचा महिला उद्योजकांच्या विकासावर दुष्परिणाम होत आहे.

**सामाजिक व सांस्कृतिक अडचणींचे निराकरण**

**१. शिक्षण, जनजागृती व कौशल्य विकास**

स्त्री-पुरुष समानतेबाबत शिक्षण आणि सामाजिक जागरूकता आवश्यक आहे. व्यवसाय, डिजिटल कौशल्य, आर्थिक साक्षरता प्रशिक्षण इत्यादी बाबी महिलांना देण्यासाठी ग्रामीण भागात कौशल्य विकास केंद्रे स्थापन करणे गरजेचे आहे.

**२. समाज व कुटुंबाचा पाठिंबा**

कुटुंबातील महिलांना उद्योग करण्यासाठी प्रोत्साहन मिळणेसाठी कुटुंबाचीव समाजाची मानसिकता बदलणे आवश्यक आहे. तसेच महिला उद्योग करू इच्छित असल्यास तिला घरातून पाठिंबा देणे आवश्यक आहे

**३. बचत गटांचा प्रचार व प्रसार**

महिला बचत गट व सहकारी संस्था महिलांना आर्थिक व सामाजिक आधार देतात. त्यातून महिलांच्या नेतृत्वाचा विकासहोत आहे त्यामुळे महिला बचत गटांचा मोठ्या प्रमाणावर प्रचार व प्रसार करणे गरजेचे आहे.

**४. धोरणात्मक बाबी**

महिलांमध्ये उद्योजकांचा विकास होण्यासाठी स्वतंत्र धोरण तयार करून त्यांची प्रभावी अंमलबजावणी करणे आवश्यक आहे.

**५. घरबसल्या करता येणाऱ्या व्यवसाय सुविधा**

ऑनलाइन व्यवसाय, ई-कॉमर्स आणि सोशल मीडियाच्या साहाय्याने महिलांना घरबसल्या व्यवसाय विस्ताराची संधी.

**६. सुरक्षित वातावरण व प्रेरणा**

कामाच्या ठिकाणी लैंगिक छळ प्रतिबंध यंत्रणा, सुरक्षित सार्वजनिक वाहतूक सुरक्षितता तसेच चांगल्या महिला उद्योजकांचा सन्मान केल्यास इतर महिलांना उद्योग करण्याची प्रेरणा मिळेल व त्यातून महिला उद्योजक निर्माण होती

महिला उद्योजकांच्या सामाजिक व सांस्कृतिक अडचणी या केवळ वैयक्तिक नसून समाजव्यवस्थेशीसंबंधित आहेतमानसिकतेत बदल .,शिक्षण, कुटुंबाचा पाठिंबा आणि संस्थात्मक सहाय्य यांद्वारे या अडचणी दूर करता येऊ शकतातमहिलांना समान संधी दिल्या.स त्या आर्थिक व सामाजिक प्रगतीत मोठे योगदान देऊ शकतात.

**संदर्भ :**

१जयश्री महाजन .डॉ ., महिला सक्षमीकरण , अथर्व पब्लिकेशन, धुळे

२ .Dr. Asha R. Gupta ,Women Entrepreneurship and Economic Empowerment Himalaya Publishing House

३ .Singh, A. K. , Issues and challenges in women entrepreneurship. ShodhKosh

Journal, 5(2)

४लकर्णीरेखा कु .डॉ ., भारतातील महिला उद्योजकता संकल्पना व विकास :, निराली प्रकाशन, पुणे

५ मंगला देशमुख .डॉ ., महिला सक्षमीकरण आणि उद्योजकता, हिमालय पब्लिशिंग हाऊस, मुंबई

६ .NITI Aayog, Women entrepreneurship platform (WEP) annual report, Government of India, New Delhi

७ .Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises , Annual report 2022—23. Government of India ,New Delhi:

# महिलांच्या स्वयंरोजगारासाठी योजना आणि सरकारी धोरणे

संशोधक
**प्रमिता हिम्मत भोजने**
(पालि आणि बुद्धिझम)
डॉडकर मराठवाडा विद्यापीठबाबासाहेब आंबे .,
छत्रपती संभाजीनगर
ईमेल :bhojanepramita2@gmail.com
मो7038306675 : .

मार्गदर्शक
**प्रो.डॉ.बाबासाहेब कोकाटे**

**प्रस्तावना**

महिलांना सक्षम बनविण्यासाठी आत्मनिर्भर बनविण्यासाठी केंद्र शासन असो किंवा राज्य शासन असो विविध योजना राबवत आहेमहिलांचा सन्मान किंवा तिच्या संरक्षणार्थ म्हणा . याच उद्देशाने महिला समृद्ध बनविण्याचे काम सर्वप्रथम महिलांना रोजगार देऊन किंवा अनुदानाच्या माध्यमातून रोजगार उपलब्ध करून महिलांना सक्षम बनविण्याचे कार्य शासन करीत आहे.त्यामध्ये विविध योजनांचा समावेश आहे .

**महिला स्वयंरोजगार योजना :**

महिलांना आर्थिक दृष्ट्या सक्षम करण्यासाठी केंद्र आणि महाराष्ट्र सरकार विविध स्वयंरोजगार योजना राबवत आहे 10,000.रू) मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना .ते ,(लाख सहाय्य 2मुद्रा योजना 50,000)रू ,(लाख 10 ते .स्वर्णिम योजना 5)% व्याजदरआणि महिला समृद्धी योजना यासारख्या ( योजनामधून महिलांना व्यवसाय सुरू करण्यासाठी कर्ज आणि अनुदान मिळते.

**महिला स्वयंरोजगार महत्त्वाच्या योजना :**

**(1मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना :** (2026)

प्रत्येक कुटुंबातील एक महिला पात्र सुरूवातीला रूपये आणि व्यवयाय यशस्वी झाल्यास 20,000 .लाख रूपयांपर्यंतची अतिरिक्त मदत 2

**(2मुद्रा कर्ज योजना ) :Shishu, Kishor, Tarun(**
नवीन व्यवसाय सुरू करण्यासाठी लाख रूपयापर्यंतचे कर्ज 10 ते 50,000
**(3स्वर्णिम योजना )New Swarnim Scheme(**

मागासवर्गीय महिलासाठी 5 लाख रूपयापर्यंतच्या कर्जावर केवळ 2% व्याज

**(4महिला समृद्धी योजना ) :MSY(** गरीब महिला उद्योजकासाठी स्वयं सहाय्यता गटांच्या )SHG( माध्यमातून अल्प व्याजदरात सुक्ष्म) वित्त-Micro-Finance(

**Maha- CMEGP योजना मुख्यमंत्री रोजगार निर्मिती योजना :**

उत्पादन क्षेत्रासाठी लाख रूपयापर्यंतच्या प्रकल्पांना मंजूरी आणि 50 कोटी आणि सेवा क्षेत्रासाठी 2 अनुदानाचा लाभ.

**महिला उद्योजकता निधी ) :Women Enterpreneuship Fund(**

पंजाब नॅशनल बँकेसारख्या प्रकल्पांना मंजूरी आणि बँकाद्वारे .कोटी रूपयापर्यंत कर्ज सुविधा 2

**महिलांना मोफत शिलाई मशीन योजना** (2026)

ग्रामीण व शहरी भागातील गरीब महिलांना स्वयंरोजगारासाठी मोफत शिलाई मशीन.

**आई कर्ज योजना** 2025

उद्देश महिलांना पर्यटन क्षेत्रात व्यवसायासाठी कर्ज सहाय्य – स्टार्ट अप इंडिया योजना

महिलांसाठी बिजनेस लोन, महिला बचत पत्र योजना , शिलाई मशीन, पिठाची गिरणी, मिरची कांडप योजना, ड्रोन दिदि योजना, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना

**महिला समृद्धी योजना :**

) लाखापेक्षा कमी वार्षिक कौटुंबिक उत्पन्न असलेल्या मागासवर्गीय 3SC/ST/OBCमहिलांना ( .उत्पन्न वाढवणाऱ्या उपक्रमासाठी कर्ज प्रदान करते ,लक्ष करते

**जिल्हा परिषद )ZP( योजना :**

ग्रामीण भागातील दारिद्र्यरेषेखालील )BPL( महिलांना स्वयंरोजगारासाठी उपकरणे किंवा कच्चा मालासाठी 100% अनुदान देते.

**महास्वयंम पोर्टल :**

महिला उद्योजकांसाठी विशिष्ट उपक्रमांसह कौशल्य प्रशिक्षण आणि नोकरीच्या संधीसाठी नोंदणी करण्यासाठी एक केंद्रीय व्यासपीठ

**संपूर्ण भारतात विविध राज्यामध्ये सुरू केलेल्या योजना**

राजश्री योजना - राजस्था न, कन्याश्री योजना -पश्चिम बंगाल

भाग्य लक्ष्मी योजना - कर्नाटक, लाडली लक्ष्मी योजना - मध्य प्रदेश

लाडली - दिल्ली हरियाणा, मुख्यमंत्री लाडली योजना - उत्तर प्रदेश

मुख्यमंत्री कन्या सुरक्षा योजना - बिहार , किशोरी शक्ती योजना - ओडिशा

ममता योजन - गोवा, सरस्वती योजना छत्तीसगड

माझी कन्या भाग्यश्री योजन - महाराष्ट्र , लाडकी बहिण योजना महाराष्ट्र

**बिहार सरकारी मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना** 2025

राज्यातील महिलांना सक्षम बनविण्यासाठी लाख रूपये पर्यंत आर्थिक 10 ते 10,000 साहाय्यता 50% अनुदान दिले जातेकौशल्य विकास च्या माध्यमातून ,छोटे व्यवसाय ,कृषी ,हि योजना शिलाई . .ज्यामध्ये व्याज मुक्ती आहे .महिलांना स्वयंरोजगार देते

महिलांसाठी केंद्र आणि राज्यसरकार विविध कल्याणकारी योजना चालवतातज्यात प्रधानमंत्री . ,(आर्थिक मदत) मातृत्व वंदना योजनाबेटी बचाओ बेटी पढाओ ,(मुलींच्या शिक्षणासाठी)उज्ज्वला योजना ,(स्वच्छ इंधन)सुकन्या समृद्धी योजना ,(मुलींसाठी बचत)लेक लाडकी योजना आणि (महाराष्ट्र) ज्या आर्थिक .साठी मुद्रा व कर्ज स्टँड अप इंडिया या सारख्या अनेक योजनांचा समावेश आहेउद्योजका सक◌्षमीकरणा आणि सामाजिक सुरक्षा प्रदान करतात.

समाजातील महिलांचे सक्षमीकरण हा सामाजिक न्यायाचा पाया आहे इतर मागास प्रवर्गातील . )OCB( महिलांना आर्थिकदृष्ट्या स्वावलंबी बनविण्यासाठी महाराष्ट्र शासनाने एक महत्त्वाकांक्षी योजना सुरू केली आहे .

**सुवर्ण जयंती ग्राम स्वयंरोजगार योजना -:**

शहरी भागातील महिलांसाठी सुवर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना राबवली जातेग्रामीण भागातील . क मदत आर्थिक टंचाई येऊ नये आर्थिक दृष्ट्या दुर्बल असलेल्या महिलांसाठी स्वयंरोजगाराद्वारे आर्थि म्हणून बचत गटाच्या माध्यमातून अर्थसहाय्य करणारी महिला स्वावलंबन योजना राबविली जाते कामधेनू योजनेद्वारे महिला स्वावलंबी व्हाव्यात म्हणून अशा महिलांना आर्थिकदृष्ट्या 50% काम देण्याचा राज्य शासनाचा मानस आहे.

**देवदासी पुनर्वसन योजना :**

या योजनेअंतर्गत ज्या देवदायी असतात त्यांना किंवा त्यांच्या मुलींना विवाहासाठी 10हजार रूपये इतके अनुदान दिले जाते ते 500 त्यांना शिक्षणासाठी .तसेच त्यांना शिक्षणासाठी सुद्धा प्रोत्साहीत केले जाते . .रूपयांपर्यंत अनुदान दिले जाते 600

**महिलांसाठी व्यावसायिक प्रशिक्षणाची योजना :**

वर्षाच्या वरील महिलांना व्यावयायिक प्रशिक्षण निराश्रीत राखी 15व गटातील स्त्रीयाविधवा अशा , .महिलांना प्राधान्य दिले जाते

**सरकारी धोरणे**

गरीब महिलांना स्वयंरोजगारासाठी अनुदान योजना (महिला व बाल कल्याण समितीची योजना)

महिलांचे सक्षमीकरण करणे 2001 – त्यांना स्वयंरोजगार करण्यास उत्तेजन देणे यासाठी महिला धोरण , जिल्हा परिषदेच्या वी 5 इयत्ता (मुलामुली करीता) महिलांना लेडीज सायकल ,टक्के सेसफंडाची रक्कम 10 न उदरनिर्वाह देवदासींना शासनाचे अनुदा ,महिन्याचे ज्युदो कराटे प्रशिक्षण 3 वी च्या विद्यार्थ्यीनींना 10 ते श ,मिरची कांडप यंत्र ,पीठ गिरणी ,प्रमाणे -/500 .भत्ता म्हणून दरमहा रूिवण यंत्रशेवई यंत्र तसेच , 2006/06/29 .स्वयंरोजगार प्रशिक्षण दिच्या शासन निर्णयानुसार राबविण्यात येत आहेयामध्ये संगणक . ,(सीआयटी-एमएस) प्रशिक्षणब्युटी पार्लरनर्सिंग कोर्स इत्यादीचा समावेश ,शिवण कला ,फॅशन डिझाईन , महिला धोरण जाहिर करणारे देशातील महार .आहेाष्ट्र पहिले राज्य आहे.

**संदर्भ**

1) गुगल विकिपिडीया फाईल
2) युवा साथी
3) भारत सरकार विकिपिडीया

# कुटीर व हस्तकला उद्योगांमध्ये महिलांचा सहभाग

**डॉ.रेखा बाजीराव ढेरे**
बलभीम महाविद्यालय,बीड.

4) **प्रस्तावना-**

एकविसाव्या शतकात यंत्रयुगाच्या सहाय्याने उद्योग व्यवसायात मोठ्या प्रमाणात प्रगती झालेली दिसून येते आहे.मानवी मनास असलेली विविधतेची व नाविन्याची ओढ दिवसेंदिवस वाढत जात असताना यामुळे दिसून येते.मात्र आजही यंत्रयुगात कुटीर व हस्तकला सारख्या पारंपरिक उद्योगाला मोठ्या प्रमाणात मागणी असलेली दिसून येते.हीच खरी आपल्या संस्कृतीची ओळख असून ती जोपासणारा जाणकार वर्ग आजही या उद्योगाला प्रोत्साहन देताना दिसून येतो.पिढ्यानपिढ्या चालत आलेले हे उद्योग व त्यात दिवसेंदिवस होत असलेला विकास,ग्राहकांची मागणी यामुळे बाजारपेठेत या उद्योगाला आजही अग्रेसर स्थान आहे.बचत गटाच्या माध्यमातून हक्काची बाजारपेठ यासाठी निर्माण केली गेली आहे.

कुटीर व हस्तकला उद्योगास पुरक असे नियोजित प्रशिक्षण आज शासनाच्या वतीने महिलांना दिले जाते.महिलांना रोजगार उपलब्ध करून त्यांना समाजामध्ये सन्मानाचे व्यासपीठ उपलब्ध झाल्यामुळे त्यांना प्रोत्साहन मिळते आहे.प्रामुख्याने घरातील सदस्यांद्वारे,स्वतःच्या घरात,लहान जागेत व अल्प भांडवल आणि पारंपरिक कौशल्याचा वापर करून वस्तूंचे उत्पादन करणारे सगळे व्यवसायाचा कुटीर व हस्तकला उद्योगात समावेश होतो.

**कटीर व हस्तकला उद्योगात महिलांचा सहभाग-**

या उद्योगात हाताने किंवा साध्या अवजारांचा वापर करून कलात्मक पारंपरिक वस्तूंची निर्मिती केली जाते.आपला देश हा शेतीप्रधान देश आहे.त्यात पुरूषप्रधान संस्कृतीचा पगडा हा परंपरागत चालत आलेला आहे.मात्र आज घरकामाबरोबरच घरातून चालणाऱ्या उद्योगात महिलांचा सहभाग मोठ्या प्रमाणात वाढलेला दिसतोय.मुळात स्त्रीमध्ये अंगभूत अनेक कलाकुसर या दडलेल्या असतात.अशा उद्योगामुळे त्यांना संधी मिळत आहे आणि त्यामुळे नवनिर्मितीचे बळ त्यांच्या हाती आले आहे.ग्रामीण अर्थव्यवस्थेचा कणा मानले जाणारे व रोजगाराच्या संधी उपलब्ध असलेल्या अनेक व्यवसायाचा कुटीर व हस्तकला उद्योगात समावेश होतो.

प्रामुख्याने मानवी हस्तकलेचा यात वापर होत असल्याने मशिनचा वापर नगण्य असतो.बांबूवरील नक्षीकाम,कोरीवकामावर वेगवेगळ्या रंगांचा वापर करून सौंदर्य वाढवले जाते.यामुळे कलात्मक सौंदर्याची प्रचीती येते.हे सगळे कौशल्य पिढ्यानपिढ्या चालत आलेले असते.दैनंदिन वापरासाठी व सजावटीसाठी या वस्तू वापरल्या जातात.स्थानिक स्तरावर उपलब्ध असलेल्या साहित्याचा वापर यामध्ये केला जातो.यात लाकूड,बांबू,ताग,रेशीम अशा साहित्याच्या समावेश असतो.कुंभारकामात मातीची भांडी,मातीची पुतळे यांना रेखीव आकार डॉ देण्याचे कौशल्यापुर्ण कामात स्त्री ही पुरुषांपेक्षा जास्त सरस असल्याचे चित्र दिसून येते.तीच्या हाती असलेल्या कलेतून ती मानवी मनाला स्पर्श करू पाहते आहे.हेच तिच्या खऱ्या सौंदर्याचे वैशिष्ट्य आहे.विणकामात साड्या,शाल,चटई व बांबूच्या टोपल्या अशा अनेक वस्तूंची निर्मिती केली जाते.कोरीवकामात कापडावरचे जरीकाम,भरतकाम यातली बारकावे जाणून नाविन्यपूर्ण पद्धतीने वस्तू आज बाजारात उपलब्ध आहेत.दैनंदिन स्वयंपाकाघरात लागणारे पापड, लोणचे व मसाले तयार करणे.या मसाल्यात असणारी विविधता व रूचकरपणा महिलांच्या कौशल्याची साक्ष

देतो.मेणबत्या किंवा साबण निर्मिती बरोबरच सुवासिक अत्तर निर्मिती अशा विविध प्रकारच्या मागणीमुळे महिलांचा सहभाग वाढला असून महिला बचत गटांनी देखील पुढाकार घेतला आहे.

यात मानवी कौशल्यसर्जनशिलता आणि सांस्कृतिक वारसा दिसून येतो.ही उत्पादने स्थानिक बाजारपेठेत विक्री केली जातात.म्हणून ते विक्रीसाठी महिला पुढाकाराने सहभाग नोंदवतात.ग्रामीण भागातील महिलांचा सहभाग हा अग्रेसर असलेला दिसून येतो.कुटीर व हस्तकला उद्योगात महिलांचा सहभाग अत्यंत मोलाचा असून त्या केवळ उत्पादक न राहता नेतृत्वाची धुरा सांभाळून आत्मनिर्भर बनत आहेत.

5) कुटीर व हस्तकला उद्योगात महिलांचे नेतृत्व-

महिलांचा आत्मविश्वास वाढतो आहे आणि कुटुंबात निर्णय घेण्याची क्षमता विकसित होत आहे.या उद्योगात महिला पुढाकार घेऊन स्वयंसाह्यता गटांद्वारे ग्रामीण व शहरी अर्थव्यवस्थेला बळकट करण्याचे काम करीत आहेत.ज्यामुळे त्यांना सामाजिक व आर्थिक स्वावलंबन मिळत आहे. स्वयंसाह्यता गटामुळे महिला एकत्र येऊन उत्पादनपणन आणि व्यवसाय व्यवस्थापनात महिलांचे नेतृत्व अधिक चांगले असल्याचे दिसून येते.सांस्कृतिक वारसा कलेतून जोपासण्याचे महत्त्वपुर्ण कार्य महिला नेतृत्व करतात दिसून येते.

6) निष्कर्ष-

थोडक्यात कुटीर व हस्तकला उद्योग हे महिला सक्षमीकरणाचे एक प्रमुख साधन बनले आहे.जिथे त्या केवळ कष्टकरी नसून आपल्या कौशल्यबळावर नेतृत्व करत आहेत.अशा उद्योगातील महिलांच्या सहभागामुळे ग्रामीण व शहरी भागातील कुटुंबव्यवस्थाच नव्हेतर अर्थव्यवस्था बळकट होण्यास मदत होते आहे.या हस्तकला केवळ आपल्या उपजीविकेचे साधन नव्हे तर ते आपल्या सांस्कृतिक वारशाचे प्रतिबिंब आहेत.या उद्योगामुळे महिलांना रोजगाराबरोबरच एक स्वतंत्र ओळख निर्माण झाली आहे.देशात सध्या आठ हजारांहून अधिक 'स्टार्टअप' उपक्रमांचे नेतृत्व महिला उद्योजक करत आहेत.महिलांना कुटीर व हस्तकला उद्योगामुळे हक्काचे व्यासपीठ उपलब्ध झालेले असून त्यातून महिलांचे आर्थिक उत्पन्न दिवसेंदिवस वाढण्यास चालना मिळत असल्याचे दिसून येते.यामुळे कुटीर व हस्तकला उद्योगात महिलांचा सहभाग वाढत असून महिला समर्थपणे नेतृत्व करत असल्याचे चित्र आज सर्वत्र दिसून येते आहे.

7) संदर्भ ग्रंथ-

१)महिला स्वयंसहाय्यता बचत गट-प्रा.एम.यु.मुलाणी

२)महिला बचत गट-महिलांसाठी विकास योजना आणि महिलांसाठी उद्योग-व्यवसाय -अमोद,अमोद प्रकाशन.

# भिन्न कादंबरीतील महिला सक्षमीकरणाचा विचार

**डॉ. संदीप परदेशी,**
सहयोगी प्राध्यापक,
पदवी व पदव्युत्तर मराठी विभाग,
बलभीम कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, बीड

## प्रास्तविक:

मराठी साहित्याच्या प्रवाहात नव्वदोत्तर कालखंडात स्त्रीवादी जाणिवा' अधिक प्रगल्भ आणि वास्तववादी झाल्याचे दिसून येते. पूर्वीच्या साहित्यात स्त्रीला केवळ 'माता', 'पत्नी' किंवा 'प्रेयसी' अशा रूपात पाहिले जात असे; मात्र आधुनिक लेखिकांनी स्त्रीच्या अस्तित्वाचा, तिच्या शरीराचा आणि तिच्या संघर्षाचा शोध घेण्यास सुरुवात केली. या परिवर्तनाच्या प्रवाहात कविता महाजन यांची 'भिन्न' ही कादंबरी महत्वाची ठरते. ही कादंबरी केवळ एका कथेपुरती मर्यादित नसून, ती भारतीय समाजव्यवस्थेतील स्त्रीच्या दुय्यम स्थानावर आणि शोषणावर केलेले प्रखर भाष्य आहे.

'महिला सक्षमीकरण' ही संकल्पना केवळ घोषणांपुरती किंवा आर्थिक मदतीपुरती मर्यादित नसून खऱ्या अर्थाने सक्षमीकरण म्हणजे स्त्रीला स्वतःच्या शरीराचा, आरोग्याचा, आर्थिक निर्णयांचा आणि जगण्याच्या पद्धतीचा अधिकार मिळणे होय. 'भिन्न' कादंबरी याच मूलभूत अधिकारांची चर्चा करते. ही कादंबरी एच.आय.व्ही. ग्रस्त स्त्रियांच्या जीवनावर आधारित असली, तरी ती केवळ आजाराचे दुःख मांडत नाही. तर, हा आजार जडल्यानंतर समाजाने आणि कुटुंबाने नाकारलेल्या स्त्रिया 'शून्यातून विश्व' कसे उभे करतात, याचा हा प्रेरणादायी प्रवास आहे.

कादंबरीतील विमल, रेणू आणि अंजली यांसारखी पात्रे भिन्न सामाजिक स्तरांतून येतात. त्यांच्या समस्या भिन्न आहेत, पण त्यांचा लढा एकच आहे—तो म्हणजे 'सन्मानाने जगण्याचा अधिकार'. पितृसत्ताक पद्धतीत स्त्रीचे शरीर हे केवळ उपभोगाचे साधन मानले जाते, पण कविता महाजन यांनी या कादंबरीत स्त्रीच्या शरीराची स्वायत्तता आणि तिच्या मनाची उभारी समर्थपणे चित्रित केली आहे.

प्रस्तुत शोधनिबंधात 'भिन्न' कादंबरीतील पात्रांच्या माध्यमातून व्यक्त झालेला सक्षमीकरणाचा विचार, त्यातील सामाजिक अडथळे आणि स्त्रियांनी स्वतःच्या अस्तित्वासाठी दिलेला लढा यांचा थोडक्यात आढावा घेण्याचा प्रयत्न केला आहे.

## कादंबरीतील महिला सक्षमीकरणाचा विचार:

कादंबरीत विमल, रेणू आणि अंजली या तीन प्रमुख स्त्रियांच्या कथा समांतरपणे चालतात. 'विमल' ही एक कष्टकरी, सोशिक पण शेवटी बंड करून उठणारी स्त्री आहे. तिचा एच.आय.व्ही. पॉझिटिव्ह असण्याचा प्रवास तिला अधिक प्रगल्भ बनवतो. समाजाने टाकून दिल्यानंतरही स्वतःच्या पायावर उभे राहणे, हा तिच्या सक्षमीकरणाचा मुख्य टप्पा आहे. 'रेणू' ही मध्यमवर्गीय पार्श्वभूमी असलेली स्त्री लग्नासारख्या संस्थेतील फोलपणा ओळखून स्वतःच्या आवडीनिवडी आणि निर्णय स्वतंत्रपणे घेते, जे आधुनिक सक्षमीकरणाचे लक्षण आहे.अंजली ही कार्यकर्त्याच्या भूमिकेतून वावरणारी इतर स्त्रियांना आधार देते. सक्षमीकरण म्हणजे संघटन आणि दुसऱ्या स्त्रीला दिलेला आधार, हे तिच्या पात्रातून दिसते.

या कादंबरीतून एच.आय.व्ही. सारख्या आजाराकडे पाहण्याचा समाजाचा दृष्टिकोन बदलणे आणि अशा परिस्थितीतही स्त्रियांनी उपचारांसाठी व सन्मानाने जगण्यासाठी दिलेला लढा अधोरेखित होतो तसेच विमलसारख्या स्त्रिया जेव्हा स्वतः कष्ट करून उदरनिर्वाह करतात, तेव्हा त्या खऱ्या अर्थाने सक्षम होतात व आर्थिक स्वावलंबन जपतात. आपल्या शरीरावर कोणाचा अधिकार असावा आणि कोणाचा नसावा, हे ठरवण्याचे स्वातंत्र्य म्हणजे सक्षमीकरण, असा विचार लेखिकेने मांडला आहे. यातून लैंगिक स्वातंत्र्याचा विचार समोर येतो. कादंबरीतील स्त्रिया पुरुषांच्या दयेवर न जगता, स्वतःचे मार्ग स्वतः निवडताना दिसतात यातून पुरूषप्रधान संस्कृतीला नाकारण्याचे धाडस त्या दाखवतात.

कादंबरीतील विमल, रेणू आणि अंजली या तिघींच्या प्रवासातून सक्षमीकरणाचे तीन महत्त्वाचे टप्पे समोर येतात ते म्हणजे अस्तित्व टिकवणे, स्वावलंबन मिळवणे आणि संघटित होऊन व्यवस्थेला प्रश्न विचारणे. एच.आय.व्ही. पॉझिटिव्ह असल्याचा शिक्का बसल्यानंतर समाजाने नाकारलेली स्त्री जेव्हा स्वतःच्या पायावर उभी राहते, तेव्हा ते खऱ्या अर्थाने सक्षमीकरण असते. ही कादंबरी सांगते की, सक्षमीकरण हे केवळ कायद्याने किंवा आर्थिक मदतीने येत नाही, तर ते 'स्व'च्या जाणीवेतून आणि आत्मसन्मानाने जगण्याच्या निर्धारातून येते.

## निष्कर्ष:

१. 'भिन्न' ही कादंबरी स्त्रियांना केवळ 'पिडीत' म्हणून सादर करत नाही, तर त्या पिडीत अवस्थेतून बाहेर पडण्याच्या प्रक्रियेचे दर्शन घडवते.

२. सक्षमीकरण ही एक निरंतर चालणारी प्रक्रिया आहे. ही कादंबरी सांगते की, जोपर्यंत स्त्री स्वतःच्या अस्तित्वाची ओळख पटवून घेत नाही, तोपर्यंत बाह्य सक्षमीकरण अपूर्ण आहे.

३. कविता महाजन यांनी कादंबरीत वास्तववादी चित्रण करून मराठी साहित्यात सक्षमीकरणाचा एक नवा 'भिन्न' पैलू समोर आणला आहे.

४. सक्षमीकरण म्हणजे केवळ पुरुषांच्या बरोबरीने उभे राहणे नव्हे, तर स्वतःच्या कमकुवतपणावर मात करून स्वतःचे अवकाश शोधणे, हा महत्त्वाचा संदेश या कादंबरीच्या मुळाशी आहे.

## समारोप:

'भिन्न' ही कादंबरी केवळ एका आजाराचे किंवा सामाजिक विषमतेचे चित्रण करणारी कथा नाही, तर ती स्त्रीच्या अंतर्मनातील अदम्य जिद्दीचा दस्तऐवज आहे. प्रस्तुत ठिकाणी हे स्पष्ट होते की, कविता महाजन यांनी 'महिला सक्षमीकरण' ही संकल्पना कोणत्याही भपकेबाज शब्दांत न मांडता, ती प्रत्यक्ष जगण्यातून आणि संघर्षातून उभी केली आहे.

अंतिमत: 'भिन्न' कादंबरी पितृसत्ताक मानसिकतेला छेद देत स्त्रीच्या शरीरविषयक आणि निर्णयविषयक स्वातंत्र्याचा पुरस्कार करते. कविता महाजन यांनी रेखाटलेला हा महिला सक्षमीकरणाचा विचार पारंपारिक चौकटी मोडून काढणारा आणि वास्तववादी आहे. आजच्या काळातही, जिथे स्त्रिया विविध आघाड्यांवर लढत आहेत, तिथे 'भिन्न' मधील नायिकांचा हा लढा प्रेरणादायी ठरतो. ही कादंबरी वाचकाला अंतर्मुख करते आणि समाजाला स्त्रियांच्या आरोग्याकडे, अधिकारांकडे आणि त्यांच्या मानवी अस्तित्वाकडे पाहण्याची एक नवी, निकोप दृष्टी देते.

## संदर्भ ग्रंथसूची:

१. महाजन कविता, भिन्न कादंबरी, राजहंस प्रकाशन

२. भागवत विद्युत - स्त्रीवादी सामाजिक विचार, डायमंड प्रकाशन.

३. साने मंगला - स्त्रीवादी साहित्य समीक्षा.

# ग्रामीण महिला उद्योजकता : संधी आणि सामाजिक परिवर्तन

**डॉ,काळनर सुनिता भास्कर. सहायक प्राध्यापक,**
अर्थशास्त्र विभाग वाणिज्य,कला, व विज्ञान महाविद्यालय ओझर (मिग)
Email ID- kalnarsunita83@gmail.com

**सारांश (Abstract)**

ग्रामीण महिला उद्योजकता ही ग्रामीण विकास आणि सामाजिक परिवर्तनाचा महत्त्वपूर्ण घटक आहे. ग्रामीण भागातील महिलांनी स्वयं-साहाय्य गट (SHG), सूक्ष्म वित्त (Microfinance), कृषीपूरक उद्योग, कुटीर उद्योग, दुग्धव्यवसाय, हस्तकला, डिजिटल व्यवसाय अशा विविध क्षेत्रांत उल्लेखनीय कामगिरी केली आहे. Self Employed Women's Association (SEWA) व National Rural Livelihoods Mission (NRLM) यांसारख्या उपक्रमांनी महिला सक्षमीकरणास चालना दिली आहे. या संशोधनाचा उद्देश ग्रामीण महिला उद्योजकतेच्या संधी, अडचणी आणि सामाजिक परिणामांचा अभ्यास करणे हा आहे. वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक पद्धतींचा वापर करून प्राथमिक व द्वितीयक माहितीच्या आधारे निष्कर्ष काढण्यात आले आहेत. अभ्यासातून असे दिसून येते की ग्रामीण महिला उद्योजकतेमुळे आर्थिक स्वावलंबन, सामाजिक प्रतिष्ठा आणि निर्णय क्षमतेत वाढ होते.

**प्रस्तावना**

भारत हा कृषिप्रधान देश असून लोकसंख्येचा मोठा भाग ग्रामीण भागात राहतो. ग्रामीण विकासामध्ये महिलांचा सहभाग अत्यंत महत्त्वाचा आहे. पूर्वी ग्रामीण महिला घरगुती कामांपुरती मर्यादित होती; मात्र शिक्षण, स्वयं-साहाय्य गट (SHG), सूक्ष्म वित्त (Microfinance) आणि शासकीय योजनांमुळे महिलांमध्ये उद्योजकतेची भावना वाढीस लागली आहे. Self Employed Women's Association (SEWA) सारख्या संस्थांनी महिलांना संघटित करून स्वावलंबनाचा मार्ग दाखविला. तसेच National Rural Livelihoods Mission (NRLM) अंतर्गत महिला बचत गटांद्वारे उद्योग, हस्तकला, दुग्धव्यवसाय, शेतीपूरक उद्योग यांना चालना मिळाली आहे. ग्रामीण महिला उद्योजकतेमुळे केवळ आर्थिक उन्नती होत नाही, तर सामाजिक स्थान, निर्णयक्षमता, आत्मविश्वास आणि कुटुंबातील सहभाग वाढतो. त्यामुळे ग्रामीण महिला उद्योजकता ही सामाजिक परिवर्तनाची प्रभावी साधन ठरते. भारताच्या ग्रामीण अर्थव्यवस्थेत महिलांचा मोठा वाटा आहे. ग्रामीण महिलांचा सहभाग केवळ शेतीपुरता मर्यादित नसून दुग्धव्यवसाय, हस्तकला, अन्नप्रक्रिया उद्योग, किरकोळ व्यापार, सेवा उद्योग आदी क्षेत्रांतही दिसून येतो. महिला उद्योजकता ही केवळ आर्थिक उत्पन्नाचे साधन नसून सामाजिक परिवर्तनाची प्रक्रिया आहे. महिला उद्योजकतेमुळे कुटुंबातील निर्णय प्रक्रियेत सहभाग वाढतो .मुलींच्या शिक्षणाबाबत सकारात्मक दृष्टीकोन निर्माण होतो.आरोग्य व पोषणाच्या बाबतीत जागरूकता वाढते.ग्रामीण महिला उद्योजकतेला चालना देण्यासाठी केंद्र व राज्य शासन विविध योजना राबवत आहे. विशेषतः स्वयं-साहाय्य गटांच्या माध्यमातून महिलांना बचत, कर्ज व व्यवसाय प्रशिक्षण दिले जाते.

**उद्दिष्टे**

१. ग्रामीण महिला उद्योजकतेच्या संधींचा अभ्यास करणे.

२. महिला उद्योजकतेमुळे होणाऱ्या सामाजिक परिवर्तनाचे विश्लेषण करणे.

३. ग्रामीण महिला उद्योजकांना भेडसावणाऱ्या अडचणी ओळखणे.

४. महिला उद्योजकतेसाठी शासकीय व स्वयंसेवी संस्थांच्या भूमिकेचा अभ्यास करणे.

**संशोधन गृहीतके**

१. ग्रामीण महिला उद्योजकतेमुळे महिलांची आर्थिक स्वावलंबनाची पातळी वाढते.

२. महिला उद्योजकतेमुळे कुटुंबातील व समाजातील निर्णय प्रक्रियेत महिलांचा सहभाग वाढतो.

३. शासकीय योजना व बचत गटांच्या मदतीने ग्रामीण महिला उद्योग क्षेत्रात अधिक सक्षम होतात.

४. शिक्षण आणि प्रशिक्षणामुळे महिला उद्योजकतेची यशस्वितेची शक्यता वाढते.

**संशोधन पद्धती**

या संशोधनासाठी वर्णनात्मक (Descriptive) व विश्लेषणात्मक (Analytical) संशोधन पद्धती चा वापर करण्यात आला आहे.

**माहितीचे स्त्रोत**

प्राथमिक माहिती (Primary Data), प्रश्नावली (Questionnaire),मुलाखत पद्धत (Interview Method),प्रत्यक्ष निरीक्षण (Observation)

द्वितीयक माहिती (Secondary Data)

शासकीय अहवाल,पुस्तके, संशोधन लेख,इंटरनेट या स्त्रोतांचा वापर करण्यात आला आहे.

**माहितीचे विश्लेषण**

**ग्रामीण महिला उद्योजकतेच्या संधी**

स्वयं-साहाय्य गट (SHG) व बचत गट,दुग्ध व्यवसाय व पशुपालन, सेंद्रिय शेती व प्रक्रिया उद्योग,हस्तकला, कुटीर उद्योग, डिजिटल उद्योजकता (ऑनलाईन विक्री),प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, स्टार्टअप योजना इत्यादी क्षेत्रात महिलांना उद्योजकतेच्या संधी आहेत .

**महिला उद्योजकता ही सामाजिक परिवर्तनाची बहुआयामी प्रक्रिया आहे— तिचा परिणाम .**

| अनु.क्र. | घटक | परिवर्तन |
|---|---|---|
| १ | आर्थिक | स्वावलंबन व उत्पन्नवाढ |
| २ | सामाजिक | प्रतिष्ठा व निर्णयसत्ता वाढ |
| ३ | शैक्षणिक | मुलींच्या शिक्षणात वाढ |
| ४ | सांस्कृतिक | पारंपरिक रूढींमध्ये बदल |

| | | |
|---|---|---|
| ५ | राजकीय | स्थानिक स्वराज्य संस्थांमध्ये सहभाग |

महिला उद्योजकतेमुळे समाजातील लिंगसमानता-, आर्थिक समता आणि सामाजिक न्याय यांना चालना मिळतेत्यामुळे महिला उद्योजकता ही केवळ व्यवसायिक क्रिया नसून सामाजिक परिवर्तनाची . .ग्रामीण विकास धोरणांमध्ये महिला उद्योजकतेला प्राधान्य देणे अत्यावश्यक आहे .प्रभावी शक्ती आहे

**ग्रामीण महिला उद्योजकांना भेडसावणाऱ्या अडचणी :**

ग्रामीण महिला उद्योजकता ही सामाजिक व आर्थिक परिवर्तनाची प्रभावी प्रक्रिया असली तरी महिलांना उद्योग सुरू करताना व चालविताना अनेक प्रकारच्या अडचणींचा सामना करावा लागतो . :खालीलप्रमाणे त्या अडचणींचे विश्लेषण करता येते

1) **आर्थिक अडचणी** )Financial Constraints)

**भांडवलाची कमतरता** – व्यवसाय सुरू करण्यासाठी आवश्यक प्रारंभिक गुंतवणूक उपलब्ध नसणे .**कर्जप्राप्तीतील अडथळे** – बँकांकडून कर्ज मिळविताना जामीनदार, कागदपत्रे व तांत्रिक अटींची अडचण.**उच्च व्याजदर** – अनौपचारिक सावकारांकडून घेतलेल्या कर्जावर जास्त व्याज . आर्थिक संसाधनांच्या अभावामुळे व्यवसायाचा विस्तार मर्यादित राहतो व नफ्यात घट होतेया . .स्वरूपाच्या आर्थिक आडचणी येतात

2) **शैक्षणिक व तांत्रिक अडचणी** )Educational & Technical Barriers)

शिक्षणाची कमी पातळीलेखा व्यवस्थापन,, विपणन, डिजिटल व्यवहार याबाबत अपुरी माहिती,नाचा अभावनवीन तंत्रज्ञा, कौशल्य व प्रशिक्षणाच्या कमतरतेमुळे उत्पादनाची गुणवत्ता व बाजारातील स्पर्धात्मकता कमी होते.

3) **सामाजिक व सांस्कृतिक अडचणी** )Socio-Cultural Barriers)

पारंपरिक मानसिकता .महिलांनी घराबाहेर व्यवसाय करू नये अशी धारणा –कुटुंबातील पुरुषांचा विरोध किंवा पाठिंब्याचा अभावसामाजिक बंधनांमुळे .घरगुती जबाबदाऱ्यांचा अधिक भार. महिलांना पूर्णवेळ व्यवसायाकडे लक्ष देता येत नाही

4) **बाजारपेठेची अडचण** )Marketing Problems)

उत्पादनांसाठी योग्य बाजारपेठेचा अभावब्रँडिंग,मध्यस्थांवर अवलंबित्व, व जाहिरातीची कमतरताट उपलब्धता नसल्यामुळे नफ्याचा मोठा भाग मध्यस्थांकडे जातबाजारपेठेची थे.

5) **पायाभूत सुविधांचा अभाव** )Lack of Infrastructure)

वीज, पाणी, रस्ते यांची अपुरी उपलब्धतावाहतूक ,इंटरनेट व डिजिटल साधनांची कमतरता, पायाभूत सुविधांच्या अभ,सुविधेचा अभावाावामुळे उत्पादन व वितरण प्रक्रियेत अडथळे निर्माण होतात.

**6) कायदेशीर व प्रशासकीय अडचणी )Legal & Administrative Issues)**

व्यवसाय नोंदणी प्रक्रिया गुंतागुंतीचीशासकीय योजनांची ,करप्रणाली व नियमांची अपुरी माहिती, प्रशासकीय प्रक्रियेतील गुंतागुंत,माहिती नसणेमहिलांच्या उद्योजकतेच्या प्रवासात अडथळा ठरते.

**7) मानसिक व वैयक्तिक अडचणी )Psychological Barriers)**

आत्मविश्वासाचा अभाव,जोखीम घेण्याची मर्यादित तयारी,अपयशाची भीती, सामाजिक दबावामुळे महिलांच्या निर्णय क्षमतेवर परिणाम होतो.

ग्रामीण महिला उद्योजकांना भेडसावणाऱ्या अडचणी बहुआयामी स्वरूपाच्या आहेत. आर्थिक, सामाजिक, तांत्रिक आणि मानसिक घटक एकमेकांशी संबंधित असून त्यांचा एकत्रित परिणाम महिला उद्योजकतेच्या यशावर होतो. त्यामुळे या अडचणी दूर करण्यासाठी शासन, स्वयंसेवी संस्था आणि समाजाने समन्वयित प्रयत्न करणे आवश्यक आहे.

**महिला उद्योजकतेसाठी शासकीय व स्वयंसेवी संस्थांच्या भूमिकेचा अभ्यास**

महिला उद्योजकतेचा विकास हा केवळ वैयक्तिक प्रयत्नांचा परिणाम नसून शासकीय धोरणे, वित्तीय संस्था आणि स्वयंसेवी संघटनांच्या सक्रिय सहभागावर अवलंबून असतोग्रामीण व शहरी भागात महिलां .ना आर्थिक, तांत्रिक आणि सामाजिक आधार देण्यासाठी विविध योजना व कार्यक्रम राबविले जातात . .खालीलप्रमाणे या संस्थांची भूमिका अभ्यासता येते

**१शासकीय संस्थांची भूमिका (**

**(अ) धोरणात्मक पाठबळ (Policy Support)**

भारत सरकारने महिला सक्षमीकरण व उद्योजकतेसाठी अनेक धोरणे व योजना सुरू केल्या आहेत . **सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योग मंत्रालय** )MSME) – महिला उद्योजकांना नोंदणी, प्रशिक्षण व अनुदान सुविधा,**महिला व बालविकास मंत्रालय** – महिला सक्षमीकरण कार्यक्रम.**ग्रामीण विकास मंत्रालय** – स्वयं.साहाय्य गट व आजीविका उपक्रम-

**(ब) आर्थिक सहाय्य (Financial Assistance)**

**प्रधानमंत्री मुद्रा योजना** )PMMY) – लघुउद्योगांसाठी कर्ज सुविधा,**स्टँडअप इंडिया योजना-** – महिला उद्योजकांना 10 लाख ते 1 कोटीपर्यंत कर्ज,.National Rural Livelihoods Mission (NRLM) – स्वयं ,साहाय्य गटांच्या माध्यमातून बचत व कर्ज सुविधा-National Bank for Agriculture

and Rural Development (NABARD) – SHG-बँक लिंक कार्यक्रमाद्वारे आर्थिक मदत .या योजनांमुळे महिलांना प्रारंभिक भांडवल उपलब्ध होऊन उद्योग सुरू करण्यास प्रोत्साहन मिळते

**) प्रशिक्षण व कौशल्य विकास ( क ) Skill Development)**

उद्योजकता विकास कार्यक्रम )EDP)उत्पादन व विपणन कौशल्य ,डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण, प्रशिक्षण प्रशिक्षणामुळे व्यवसाय नियोजन, लेखा व्यवस्थापन आणि विपणन कौशल्ये विकसित होतात.

**(डविपणन व तांत्रिक ( सहाय्य**

सरकारी प्रदर्शन )Exhibitions)ता वाढल्याने बाजारपेठेची उपलब्ध,मार्केटिंग प्लॅटफॉर्मशी जोडणी-ई, .महिला उद्योजकांच्या उत्पादनांना व्यापक संधी मिळते

**२) स्वयंसेवी संस्थांची (NGOs) भूमिका**

**(असंघटनात्मक विकास (**

Self Employed Women's Association (SEWA) सारख्या संस्थांनी महिलांना संघटित करून आर्थिक स्वावलंबनाचा मार्ग दाखविला आहेसामूहिक ,नेतृत्वगुणांचा विकास,गट तयार करणे महिलांचे. .बचत व कर्ज व्यवस्था इ

**(बप्रशिक्षण व मार्गदर्शन (**

हस्तकला, शेतीपूरक उद्योग, अन्नप्रक्रिया याबाबत प्रशिक्षणकायदेशीर ,बाजारपेठेची माहिती, .मार्गदर्शन उपलब्ध करून दिले जाते

**(कसामाजिक जागरूकता (**

लिंग समानतेबाबत जनजागृती,महिला हक्कांविषयी मार्गदर्शन,शिक्षण व आरोग्य मोहिमा,महिला उद्योजकतेसाठी शासकीय व स्वयंसेवी संस्थांची भूमिका परस्परपूरक आहे. शासकीय योजना आर्थिक व धोरणात्मक आधार देतात, तर स्वयंसेवी संस्था तळागाळात जाऊन महिलांना संघटित व सक्षम करतात. दोन्हींच्या समन्वित प्रयत्नांमुळे महिला उद्योजकतेला गती मिळून सामाजिक परिवर्तन साध्य होते.

**निष्कर्ष**

१ (ग्रामीण महिला उद्योजकता ही केवळ आर्थिक क्रिया नसून सामाजिक परिवर्तनाची प्रभावी चळवळ आहे. महिला उद्योजकतेमुळे महिलांचे आर्थिक सक्षमीकरण होते, आत्मविश्वास वाढतो आणि समाजातील त्यांचे स्थान उंचावते. शासकीय योजना, स्वयंसेवी संस्था व समाजाच्या सहकार्याने ग्रामीण महिला उद्योजकतेचा विस्तार अधिक वेगाने होऊ शकतो.

२) महिला उद्योजकतेमुळे समाजातील लिंगसमानता-, आर्थिक समता आणि सामाजिक न्याय यांना चालना मिळतेवळ व्यवसायिक क्रिया नसून सामाजिक परिवर्तनाची प्रभावी त्यामुळे महिला उद्योजकता ही के . ग्रामीण विकास धोरणांमध्ये महिला उद्योजकतेला प्राधान्य देणे अत्यावश्यक .शक्ती आहेआहे.

(3 ग्रामीण महिला उद्योजकांना भेडसावणाऱ्या अडचणी बहुआयामी स्वरूपाच्या आहेत. आर्थिक, सामाजिक, तांत्रिक आणि मानसिक घटक एकमेकांशी संबंधित असून त्यांचा एकत्रित परिणाम महिला उद्योजकतेच्या यशावर होतो. त्यामुळे या अडचणी दूर करण्यासाठी शासन, स्वयंसेवी संस्था आणि समाजाने सामाईक प्रयत्न करणे आवश्यक आहे.

४) महिला उद्योजकतेसाठी शासकीय व स्वयंसेवी संस्थांची भूमिका परस्परपूरक आहे. शासकीय योजना आर्थिक व धोरणात्मक आधार देतात, तर स्वयंसेवी संस्था तळागाळात जाऊन महिलांना संघटित व सक्षम करतात. दोन्हींच्या समन्वित प्रयत्नांमुळे महिला उद्योजकतेला गती मिळून सामाजिक परिवर्तन साध्य होते.

त्यामुळे ग्रामीण महिला उद्योजकता ही ग्रामीण विकासाचा आणि सामाजिक परिवर्तनाचा महत्त्वाचा आधारस्तंभ आहे.

**शिफारशी**

१.ग्रामीण भागात कौशल्यविकास प्रशिक्षण केंद्रे सुरू करावीत.

२ .महिलांसाठी सुलभ कर्जप्रक्रिया उपलब्ध करावी.

३ .डिजिटल साक्षरतेवर भर द्यावा.

४.स्वयं-साहाय्य गटांना अधिक आर्थिक मदत व मार्गदर्शन द्यावे.

५.स्थानिक बाजारपेठ व ऑनलाईन प्लॅटफॉर्म उपलब्ध करून द्यावेत.

६.महिला उद्योजकांसाठी मार्गदर्शक (Mentorship) योजना राबवाव्यात.

**संदर्भसूची (References)**

Sen, Amartya (1999). Development as Freedom. Oxford University Press.

Government of India (2023). Annual Report — Ministry of Rural Development.

Reports of Self Employed Women's Association (SEWA).

Guidelines of National Rural Livelihoods Mission (NRLM).

NABARD (2022). SHG-Bank Linkage Programme Report.

Desai, V. (2010). Rural Development in India.

# पर्यायी व्यवसाय आणि पर्यावरण पूरक उत्पादनांमध्ये महिला बचत गटाची भूमिका

**Dr. Swati Kulkarni[1] and Prof. S. S. Sasane[2]**

[1]Assistant Professor, Department of Physics, Swa. Sawarkar Mahavidyalaya, Beed, meerachothwe@gmail.com, 9422326988

[2]Professor, Department of English, Swa. Sawarkar Mahavidyalaya, Beed

**सारांश (Abstract)**

आजच्या औद्योगिकीकरण आणि वाढत्या पर्यावरणीय समस्यांच्या पार्श्वभूमीवर शाश्वत विकासाची गरज अत्यंत महत्त्वाची बनली आहे. ग्रामीण व अर्धशहरी भागातील महिला बचत गट (Self Help Groups – SHGs) हे आर्थिक सक्षमीकरणासोबतच पर्यावरण संवर्धनाचे प्रभावी माध्यम ठरत आहेत. महिला बचत गट पर्यायी व्यवसाय स्वीकारून पर्यावरणपूरक उत्पादने तयार करत आहेत, ज्यामुळे रोजगार निर्मिती, प्रदूषण नियंत्रण आणि स्थानिक अर्थव्यवस्थेचा विकास साधला जात आहे. प्रस्तुत संशोधन निबंधामध्ये महिला बचत गटांची भूमिका, पर्यावरणपूरक उत्पादनांचे प्रकार, सामाजिक-आर्थिक परिणाम आणि भविष्यातील संधी यांचा अभ्यास करण्यात आला आहे.

## १. प्रस्तावना (Introduction)

भारतात महिला बचत गट चळवळ ही ग्रामीण विकासाची प्रभावी संकल्पना म्हणून उदयास आली आहे. पारंपरिक शेतीवर अवलंबून राहण्याऐवजी महिलांनी पर्यायी व्यवसाय स्वीकारण्यास सुरुवात केली आहे. पर्यावरणीय संतुलन राखण्यासाठी प्लास्टिकमुक्त, जैवविघटनशील आणि नैसर्गिक उत्पादनांची मागणी वाढत आहे. महिला बचत गट आर्थिक स्वावलंबनाबरोबरच हरित अर्थव्यवस्था (Green Economy) निर्माण करण्यात महत्त्वपूर्ण भूमिका बजावत आहेत.

## २. महिला बचत गटांची संकल्पना

महिला बचत गट म्हणजे समान आर्थिक व सामाजिक परिस्थितीतील महिलांनी स्वयंस्फूर्तीने एकत्र येऊन स्थापन केलेला छोटा गट होय. या गटामध्ये सदस्य नियमित बचत करतात, परस्परांना लहान कर्जे देतात आणि विविध उपक्रम राबवून आर्थिक स्वावलंबन साधतात. महिला बचत गटांमुळे महिलांमध्ये आत्मविश्वास वाढतो, आर्थिक शिस्त निर्माण होते आणि कुटुंबाच्या विकासात त्यांचा सक्रिय सहभाग वाढतो.

### महिला बचत गटामध्ये बँकेची भूमिका:

महिला बचत गटामध्ये बँकेची भूमिका अत्यंत महत्त्वाची असते. बँक बचत गटाचे खाते उघडते आणि त्यांच्या नियमित बचतीची सुरक्षितता सुनिश्चित करते. गटाच्या कार्यप्रदर्शनाच्या आधारे बँक त्यांना कर्ज उपलब्ध करून देते, ज्यामुळे महिलांना लघुउद्योग, स्वयंरोजगार किंवा इतर आर्थिक उपक्रम सुरू करता येतात. तसेच बँक आर्थिक व्यवहारांची शिस्त, कर्जफेडीची सवय आणि आर्थिक साक्षरता वाढवण्यास मदत करते. यामुळे महिला बचत गट आर्थिकदृष्ट्या सक्षम व स्वावलंबी बनतात.

**महिला बचत गटांची मुख्य उद्दिष्टे:**

महिला बचत गटांची मुख्य उद्दिष्टे म्हणजे महिलांमध्ये बचतीची सवय निर्माण करणे, त्यांना आर्थिकदृष्ट्या स्वावलंबी बनवणे आणि लघुउद्योगांसाठी आवश्यक भांडवल उपलब्ध करून देणे. तसेच महिलांचा आत्मविश्वास वाढवणे, सामाजिक एकजूट निर्माण करणे आणि कुटुंब व समाजाच्या विकासात त्यांचा सक्रिय सहभाग वाढवणे हेही या गटांचे महत्त्वाचे उद्दिष्ट आहे.

**३. पर्यायी व्यवसायांची गरज:**

पर्यायी व्यवसाय म्हणजे व्यक्तीने आपल्या मुख्य व्यवसायाबरोबर किंवा त्याऐवजी स्वीकारलेला दुसरा व्यवसाय. हा व्यवसाय आर्थिक स्थैर्य वाढवण्यासाठी, अतिरिक्त उत्पन्न मिळवण्यासाठी किंवा परिस्थितीनुसार पर्याय म्हणून केला जातो. पारंपरिक रोजगाराच्या मर्यादा लक्षात घेता पर्यायी व्यवसाय आवश्यक ठरतात.

**प्रमुख कारणे:**

बेरोजगारी कमी करणे, ग्रामीण स्थलांतर रोखणे, स्थानिक संसाधनांचा योग्य वापर करणे, पर्यावरणाचे संरक्षण करणे आणि शाश्वत उत्पन्न निर्मिती साध्य करणे ही या उपक्रमामागील प्रमुख कारणे आहेत. या माध्यमातून स्थानिक स्तरावर रोजगाराच्या संधी निर्माण होतात, गावांची आर्थिक स्थिती मजबूत होते आणि विकास प्रक्रियेला स्थैर्य प्राप्त होते.

**४. महिला बचत गटांद्वारे निर्मित पर्यावरण पूरक उत्पादने**

महिला बचत गटांद्वारे विविध पर्यावरणपूरक उत्पादने तयार केली जातात, ज्यामुळे पर्यावरणाचे संरक्षण होत असताना महिलांना उत्पन्नाचे साधनही उपलब्ध होते. कापडी पिशव्या, कागदी पिशव्या, अगरबत्ती, सेंद्रिय खत, गोमूत्र-आधारित उत्पादने, अगरबत्ती व नैसर्गिक उत्पादने नैसर्गिक साबण, अगरबत्ती व नैसर्गिक उत्पादने , जैवविघटनशील प्लेट व दोने, हस्तनिर्मित वस्तू, पुनर्वापर करता येणाऱ्या सजावटी वस्तू इत्यादी उत्पादनांची निर्मिती मोठ्या प्रमाणावर केली जाते. ही उत्पादने प्लास्टिकसारख्या घातक वस्तूंना पर्याय देतात आणि पर्यावरण संवर्धनास हातभार लावतात.

अशा उपक्रमांमुळे स्थानिक संसाधनांचा योग्य वापर होतो, कचऱ्याचे पुनर्वापर व पुनर्निर्मिती (recycling) प्रोत्साहित होते आणि शाश्वत विकास साध्य करण्यास मदत होते. त्यामुळे महिला बचत गट आर्थिक स्वावलंबनासोबतच पर्यावरण रक्षणातही महत्त्वाची भूमिका बजावतात.

**५. पर्यावरण संवर्धनातील भूमिका**

महिला बचत गट पर्यावरण जनजागृती, स्वच्छता मोहिमा, वृक्षारोपण, प्लास्टिकमुक्त उपक्रम आणि सेंद्रिय शेतीचा प्रसार यांसारख्या कार्यांद्वारे पर्यावरण संवर्धनात सक्रिय सहभाग नोंदवतात. त्यांच्या सामूहिक प्रयत्नांमुळे समाजात पर्यावरणपूरक जीवनशैलीची जाणीव निर्माण होते आणि स्थानिक पातळीवर शाश्वत विकासाला गती मिळते. महिला बचत गट खालील प्रकारे पर्यावरण संरक्षणास हातभार लावतात:

* प्लास्टिक वापर कमी करणे * सेंद्रिय शेतीला प्रोत्साहन

* कचरा व्यवस्थापन * पुनर्वापर (Recycling) व पुनर्निर्मिती (Reuse)

* कार्बन उत्सर्जन कमी करणे

**६. महिला बचत गट — सामाजिक व आर्थिक परिणाम**

**आर्थिक परिणाम:**

महिला बचत गटांमुळे महिलांमध्ये नियमित बचतीची सवय निर्माण होते आणि लघुकर्जांच्या माध्यमातून त्यांना लहान उद्योग, व्यवसाय किंवा पूरक उपक्रम सुरू करण्याची संधी मिळते. त्यामुळे कुटुंबाचे उत्पन्न वाढते, आर्थिक स्थैर्य निर्माण होते आणि कर्जबाजारीपणा कमी होतो. स्थानिक पातळीवर रोजगारनिर्मिती होऊन ग्रामीण अर्थव्यवस्थेला चालना मिळते. तसेच महिलांचा आर्थिक निर्णयप्रक्रियेत सहभाग वाढतो, आत्मविश्वास दृढ होतो आणि संपूर्ण समाजाच्या आर्थिक विकासाला सकारात्मक दिशा मिळते.

**सामाजिक परिणाम:**

महिला बचत गटांमुळे महिलांमध्ये एकजूट, परस्पर सहकार्य आणि सामूहिक जबाबदारीची भावना निर्माण होते. त्यांचा आत्मविश्वास वाढतो व समाजातील निर्णयप्रक्रियेत त्यांचा सहभाग अधिक सक्रिय होतो. शिक्षण, आरोग्य, स्वच्छता आणि स्त्रीसक्षमीकरणाबाबत जागरूकता वाढते. बालविवाह, व्यसनाधीनता, कौटुंबिक हिंसा यांसारख्या सामाजिक समस्यांविरुद्ध महिलांचा संघटित आवाज निर्माण होतो. त्यामुळे महिला बचत गट समाजात सकारात्मक बदल घडवून सामाजिक विकासाला चालना देतात.

**७. महिला बचत गटांसमोरील आव्हाने**

महिला बचत गटांसमोरील प्रमुख आव्हानांमध्ये आर्थिक मर्यादा, अपुरी भांडवली क्षमता आणि बाजारपेठेचा अभाव यांचा समावेश होतो. अनेक वेळा उत्पादनांची गुणवत्ता, पॅकेजिंग आणि विपणन कौशल्ये कमी असल्यामुळे स्पर्धात्मक बाजारात टिकून राहणे कठीण जाते. तसेच बँक कर्ज मिळविण्याच्या प्रक्रियेत येणाऱ्या अडचणी, कागदपत्रांची पूर्तता आणि आर्थिक व्यवस्थापनातील मर्यादा यांमुळे गटांची प्रगती मंदावू शकते.

याशिवाय सामाजिक बंधने, कुटुंबीयांचा अपुरा पाठिंबा, शिक्षणाचा अभाव आणि तांत्रिक ज्ञानाची कमतरता ही देखील महत्त्वाची आव्हाने आहेत. सातत्य, पारदर्शकता आणि गटातील एकजूट टिकवणे हेही आवश्यक असते; अन्यथा अंतर्गत मतभेदांमुळे गटाची कार्यक्षमता कमी होऊ शकते

**८. शासकीय योजना व सहाय्य**

महिला बचत गटांना विविध योजनांद्वारे प्रोत्साहन दिले जाते:

1. **राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका अभियान (NRLM):**

केंद्र शासनाची ही योजना ग्रामीण गरीब कुटुंबांना स्वयं-सहायता गटांच्या माध्यमातून संघटित करून त्यांना शाश्वत उपजीविकेच्या संधी उपलब्ध करून देते. आर्थिक मदत, प्रशिक्षण व बँक-संलग्नता याद्वारे महिलांचे सक्षमीकरण साध्य केले जाते.

2. **महाराष्ट्र राज्य ग्रामीण जीवनोन्नती अभियान:**

महाराष्ट्र शासनाची ही योजना ग्रामीण भागातील महिला बचत गटांना प्रोत्साहन देते. कौशल्यविकास, वित्तीय सहाय्य व उद्योजकतेसाठी मार्गदर्शन देऊन ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत करण्याचा प्रयत्न केला जातो.

3. **मुद्रा योजना**

सूक्ष्म व लघुउद्योगांना आर्थिक सहाय्य देण्यासाठी ही योजना राबवली जाते. शिशु, किशोर व तरुण अशा तीन प्रकारांत कर्ज उपलब्ध करून उद्योजकतेला चालना दिली जाते.

4. **कौशल्य विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम**

या कार्यक्रमांतर्गत महिलांना विविध उद्योग, हस्तकला, अन्नप्रक्रिया, शिवणकाम इत्यादी कौशल्यांचे प्रशिक्षण दिले जाते. यामुळे त्यांची रोजगारक्षमता वाढते व स्वावलंबन साध्य करण्यास मदत होते.

**भविष्यातील संधी**

ई-कॉमर्सद्वारे विक्रीमुळे महिला बचत गटांना स्थानिक बाजारपेठेपलीकडे जाऊन राज्य, देश व आंतरराष्ट्रीय स्तरावर ग्राहकांपर्यंत पोहोचण्याची संधी मिळते. ऑनलाईन प्लॅटफॉर्मच्या माध्यमातून उत्पादनांचे विपणन, थेट ग्राहक संपर्क आणि अधिक नफा मिळवणे शक्य होते. हरित उद्योग (Green Entrepreneurship) संकल्पनेतून पर्यावरणपूरक उत्पादने तयार करून शाश्वत विकासाला चालना दिली जाते आणि बाजारात वेगळी ओळख निर्माण होते.

कार्बन क्रेडिट संधींमुळे पर्यावरणपूरक उपक्रम राबविणाऱ्या गटांना अतिरिक्त आर्थिक लाभ मिळू शकतो. सौर ऊर्जा आधारित उद्योगांमुळे वीजखर्च कमी होतो, उत्पादन खर्चात बचत होते आणि पर्यावरणाचे संरक्षणही होते. तसेच ग्रामीण पर्यटनाशी जोडलेल्या उत्पादनांमुळे स्थानिक हस्तकला, पारंपरिक खाद्यपदार्थ आणि सांस्कृतिक वस्तूंना बाजारपेठ उपलब्ध होते, ज्यामुळे ग्रामीण अर्थव्यवस्थेला नवे उत्पन्न स्रोत निर्माण होतात.

**निष्कर्ष (Conclusion)**

महिला बचत गट हे ग्रामीण व शहरी समाजाच्या सर्वांगीण विकासाचे प्रभावी साधन म्हणून उदयास आले आहेत. आर्थिक स्वावलंबनासोबतच पर्यावरण संरक्षण, स्थानिक संसाधनांचा योग्य वापर आणि शाश्वत उत्पन्न निर्मिती यांद्वारे ते हरित व समतोल विकासाला चालना देत आहेत. पर्यायी व्यवसायांच्या माध्यमातून महिलांनी आत्मनिर्भरतेचा नवा आदर्श निर्माण केला आहे. योग्य प्रशिक्षण, पुरेशी आर्थिक मदत, तांत्रिक मार्गदर्शन आणि व्यापक बाजारपेठ उपलब्ध झाल्यास महिला बचत गट हरित अर्थव्यवस्थेचे भक्कम आधारस्तंभ ठरतील आणि देशाच्या शाश्वत विकासात महत्त्वपूर्ण योगदान देतील.

## संदर्भ (References)

1. NABARD Reports on Self Help Groups
2. Ministry of Rural Development, Government of India
3. Sustainable Development and Women Empowerment Studies
4. NRLM Guidelines Reports
5. Environmental Entrepreneurship Research Papers

# स्वयं-लासाहाय्य गट चळवळीचा ऐतिहासिक विकास आणि ग्रामीण महिलांचे नेतृत्व

**डॉवनिता . भास्कर साबळे**
सहयोगी प्राध्यापक,इतिहास विभाग,
महिला कला महाविद्यालय,छत्रपती संभाजीनगर.

**सारांश**

स्वयं-साहाय्य गट (Self-Help Group – SHG) चळवळ ही भारतातील ग्रामीण महिलांच्या आर्थिक, सामाजिक आणि नेतृत्व सक्षमीकरणाची प्रभावी व संस्थात्मक विकासप्रक्रिया मानली जाते. १९९० नंतर सूक्ष्म वित्तव्यवस्था आणि बँक-संलग्न उपक्रमांच्या माध्यमातून या चळवळीला स्थैर्य आणि व्यापकता प्राप्त झाली. विशेषतः National Bank for Agriculture and Rural Development (NABARD) यांनी १९९२ मध्ये प्रारंभ केलेल्या SHG–Bank Linkage Programme मुळे महिलांचा औपचारिक बँकिंग व्यवस्थेशी संबंध दृढ झाला. पुढे Deendayal Antyodaya Yojana अंतर्गत राबविण्यात आलेल्या National Rural Livelihoods Mission (NRLM) मुळे SHG चळवळीला राष्ट्रीय स्तरावर संस्थात्मक चौकट मिळाली. प्रस्तुत लेखात SHG चळवळीचा ऐतिहासिक विकास, ग्रामीण महिलांचे नेतृत्व, सामाजिक परिवर्तनातील भूमिका, धोरणात्मक संदर्भ, सांख्यिकीय परिणाम आणि भावी आव्हाने यांचे सविस्तर विश्लेषण करण्यात आले आहे.

**मुख्य शब्द:**स्वयं-साहाय्य गट, ग्रामीण महिला, सूक्ष्म वित्तव्यवस्था, नेतृत्व विकास, आर्थिक सक्षमीकरण

प्रस्तावना

भारतीय समाजव्यवस्थेत महिलांचे योगदान ऐतिहासिकदृष्ट्या महत्त्वपूर्ण राहिले असले, तरी दीर्घकाळ त्यांना अर्थव्यवस्थेपासून वंचित ठेवण्यात आले. ग्रामीण भागात महिलांनी शेती, पशुपालन, अन्नप्रक्रिया, हस्तकला, कापडनिर्मिती, लघुउद्योग आणि घरगुती उत्पादन व्यवस्थेत सक्रिय सहभाग नोंदविला; परंतु या कार्याला 'उत्पादक श्रम' म्हणून मान्यता मिळाली नाही. सामाजिक परंपरा, पितृसत्ताक व्यवस्था, शिक्षणाचा अभाव आणि वित्तीय संसाधनांवरील मर्यादित प्रवेश यांमुळे महिलांचे आर्थिक योगदान दुय्यम मानले गेले.

प्राचीन भारतीय ग्रामव्यवस्थेत परस्पर सहकार्य आणि सामूहिक बचतीची परंपराआढळून येते. महिलांनी भिशी, परस्पर कर्ज, धान्यसाठवण आणि सामूहिक श्रम यांसारख्या पद्धती विकसित केल्या. मध्ययुगीन काळात घरगुती उद्योग व्यवस्थेत महिलांचे योगदान महत्त्वाचे राहिले. वसाहतकाळात ब्रिटिश धोरणांमुळे पारंपरिक कुटीरउद्योगांना मोठा फटका बसला; तरीही स्वदेशी चळवळीच्या काळात महिलांनी खादी व हस्तकला उत्पादनातून स्वावलंबनाची जाणीव निर्माण केली.स्वातंत्र्योत्तर काळात भारताने योजनाबद्ध विकास प्रक्रियेचा स्वीकार केला. दारिद्र्य निर्मूलन,सहकार, लघुउद्योग आणि ग्रामीण पुनर्रचना कार्यक्रमांत महिलांच्या सहभागाची गरज अधोरेखित झाली. १९८० च्या दशकात स्त्री-अभ्यास आणि महिला विकास

कार्यक्रमांनी आर्थिक सक्षमीकरणाला धोरणात्मक आधार दिला. या पार्श्वभूमीवर स्वयं-साहाय्य गट (Self-Help Group – SHG) ही संकल्पना ग्रामीण विकासाच्या केंद्रस्थानी आली.

SHG चळवळीचा विकास

स्वयं-साहाय्य गट म्हणजे समान सामाजिक-आर्थिक स्थिती असलेल्या १०–२० महिलांचा स्वेच्छेने स्थापन झालेला लहान बचत व कर्ज गट. १९९२ मध्ये National Bank for Agriculture and Rural Development (NABARD) यांनी SHG–Bank Linkage Programme सुरू केला. या कार्यक्रमामुळे महिलांच्या बचतीला औपचारिक बँकिंग व्यवस्थेशी जोड मिळाली. नियमित बचत, आंतरिक कर्जपुरवठा आणि नंतर बँक कर्जसुविधेमुळे महिलांच्या आर्थिक सहभागाला संस्थात्मक आधार मिळाला.१९९० च्या दशकात स्वयंसेवी संस्थांनी SHG चळवळीचा ग्रामीण भागात प्रसार केला. २०११ मध्ये Deendayal Antyodaya Yojana अंतर्गत राष्ट्रीय ग्रामीण उपजीविका अभियान (NRLM) राबविण्यात आले. या अभियानाने SHG चळवळीला व्यापक राष्ट्रीय स्वरूप देण्यात आले. या अभियानांतर्गत आर्थिक क्रियाकलापांसोबत कौशल्यविकास, उत्पादनांचे ब्रँडिंग, बाजारपेठीय प्रसार, डिजिटल व्यवहार प्रशिक्षण आणि उद्योजकता मार्गदर्शन यांचा समावेश करण्यात आला.

प्रारंभी बचत-केंद्रित असलेली चळवळ पुढे उत्पादनाधारित उपक्रमांकडे वळली आणि कालांतराने सामाजिक व राजकीय नेतृत्वाचे व्यासपीठ ठरली. आज अनेक गट कृषीपूरक उद्योग, दुग्धव्यवसाय, मसाला प्रक्रिया, शिवणकाम, पर्यावरणपूरक उत्पादने आणि स्थानिक बाजारपेठेतील विक्रीसारख्या क्षेत्रांत कार्यरत आहेत.

ग्रामीण महिलांचे नेतृत्व आणि सामाजिक परिवर्तन

SHG चळवळीमुळे ग्रामीण महिलांमध्ये नेतृत्वक्षमता विकसित झाली. नियतकालिक सभांचे आयोजन, लेखाव्यवस्थापन, कर्जनिर्णय प्रक्रिया आणि बँक अधिकाऱ्यांशी संवाद या प्रक्रियांमुळे महिलांची निर्णयक्षमता वाढली. आर्थिक स्वावलंबनामुळे कुटुंबातील स्थान उंचावले आणि सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त झाली.उत्पन्नवाढीमुळे मुलांच्या शिक्षणावर अधिक खर्च झाला, आरोग्यसेवांचा वापर वाढला आणि पोषणस्थितीत सुधारणा दिसून आली. अनेक महिलांनी ग्रामसभा आणि स्थानिक स्वराज्य संस्थांमध्ये सक्रिय सहभाग नोंदविला. काही ठिकाणी महिलांनी निवडणुकांमध्ये यश संपादन करून नेतृत्वधारक म्हणून स्थान निर्माण केले.

SHG च्या माध्यमातून महिलांनी स्वच्छता, जलसंवर्धन, पोषण, पर्यावरण संरक्षण आणि सामाजिक जागृती कार्यक्रमांत पुढाकार घेतला. परिणामी ग्रामीण समाजात महिलांची प्रतिमा आश्रित घटकापासून नेतृत्वक्षम व्यक्ती म्हणून परिवर्तित झाली.

धोरणात्मक संदर्भ व संस्थात्मक भूमिका

भारतातील SHG चळवळ ही शासनाच्या धोरणात्मक पाठबळावर आधारित विकासप्रक्रिया आहे. National Bank for Agriculture and Rural Development, Deendayal Antyodaya Yojana, राज्य महिला विकास महामंडळे आणि सहकारी बँका यांनी या चळवळीला संस्थात्मक आधार दिला आहे.SHG—Bank Linkage Programme मुळे महिलांचा वित्तीय समावेश मोठ्या प्रमाणात वाढला.सरकारने सूक्ष्मवित्तपुरवठा, व्याजअनुदान, कौशल्यविकास प्रशिक्षण, विपणन मेळावे आणि डिजिटल व्यवहार सुविधा उपलब्ध करून दिल्या. जनधन खाते, आधार-संलग्न सेवा आणि मोबाईल बँकिंगमुळे आर्थिक व्यवहार सुलभ झाले.

सांख्यिकीय विश्लेषण व परिणाम

गेल्या तीन दशकांत भारतात लाखो स्वयं-साहाय्य गट स्थापन झाले असून कोट्यवधी महिला त्यात सहभागी आहेत. बँक-संलग्न गटांची संख्या सातत्याने वाढत आहे. विविध अहवालांनुसार SHG सदस्यांच्या कुटुंबांचे उत्पन्न वाढले, बचत वाढली आणि कर्जपरतफेडीचे प्रमाण समाधानकारक राहिले.महिलांच्या निर्णयक्षमतेत वाढ, मुलींच्या शिक्षणात सुधारणा, आरोग्यसेवांमध्ये वाढलेला वापर आणि सामाजिक सहभाग यांसारखे सकारात्मक परिणाम दिसून आले आहेत. सूक्ष्मवित्त व्यवस्था ग्रामीण दारिद्र्य कमी करण्यासाठी प्रभावी साधन ठरली आहे.

आव्हाने आणि भावी दिशा

SHG चळवळीसमोर व्यवस्थापन कौशल्याचा अभाव, गुणवत्तानियंत्रण, बाजारपेठेतील स्पर्धा आणि डिजिटल साक्षरतेतील मर्यादा ही प्रमुख आव्हाने आहेत. काही ठिकाणी सामाजिक बंधने आणि पितृसत्ताक मानसिकता महिलांच्या प्रगतीस अडथळा निर्माण करतात.या पार्श्वभूमीवर सतत कौशल्यविकास, उत्पादनांचे ब्रँडिंग, ई-मार्केटिंग सुविधा, पारदर्शक लेखाव्यवस्था आणि स्थानिक प्रशासनाचे सहकार्य आवश्यक ठरते. भावी काळातील तंत्राधिष्ठित प्रगती, अभिनव उपक्रम आणि जागतिक बाजारपेठेतील संधी यांची सांगड घालून SHG चळवळ अधिक सक्षम होऊ शकते.उपाय म्हणून सतत कौशल्य प्रशिक्षण, उत्पादनांचे ब्रँडिंग, ई-मार्केटिंग सुविधा, पारदर्शक लेखाव्यवस्था आणि स्थानिक प्रशासनाचे सहकार्य आवश्यक आहे. डिजिटल साक्षरता वाढविणे आणि उद्योजकता मार्गदर्शन देणेही गरजेचे आहे.

निष्कर्ष

स्वयं-साहाय्य गट चळवळ ही भारतीय ग्रामीण विकासाच्या इतिहासातील महत्त्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनाची प्रक्रिया आहे. पारंपरिक सहकार परंपरेपासून आधुनिक सूक्ष्म वित्तव्यवस्थेपर्यंतचा हा प्रवास महिलांच्या नेतृत्व विकासाचा साक्षीदार आहे.ही चळवळ ऐतिहासिक परंपरेचे समकालीन रूपांतर ठरून ग्रामीण महिलांना आर्थिक स्वावलंबन, सामाजिक प्रतिष्ठा आणि निर्णयक्षमतेची नवी ओळख प्रदान करते.

संस्थात्मक समर्थन, धोरणात्मक पाठबळ आणि महिलांची सामूहिक इच्छाशक्ती यांच्या समन्वयातून सामाजिक परिवर्तनाची सशक्त प्रक्रिया घडत आहे.

भविष्यात तंत्राधिष्ठित साधने, उद्योजकता विकास आणि बाजारपेठीय विस्तार यांच्या साहाय्याने SHG चळवळ ग्रामीण भारतातील महिलांच्या सर्वांगीण सक्षमीकरणाचा अधिक व्यापक आणि शाश्वत पाया निर्माण करू शकते.

संदर्भ

1. मुलाणी, एम. यू. महिला स्वयं-साहाय्य बचतगट. डायमंड पब्लिकेशन, पुणे.
2. मुलाणी, एम. यू. अल्पबचत नियोजन (बचतगट). डायमंड पब्लिकेशन, पुणे.
3. National Bank for Agriculture and Rural Development (1992). SHG—Bank Linkage Programme Report.
4. Deendayal Antyodaya Yojana (2011). राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका अभियान मार्गदर्शक तत्त्वे.
5. ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार. राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका अभियान वार्षिक अहवाल.
6. महाराष्ट्र राज्य महिला आर्थिक विकास महामंडळ. महिला बचत गट अहवाल.

# मराठा कालखंडातील कर्तृत्ववान स्त्रिया

**प्रा .बप्पासाहेब रामलिंग शेजूळ**
सहायक प्राध्यापक इतिहास विभाग
के. एन. भिसे आर्टस्, कॉमर्स अँड
विनायकराव पाटील सायन्स कॉलेज कुर्डूवाडी ता .माढा जि.सोलापूर .
मो.न.९४०४२५०३२९
Email Id - bappasahebshejul71@gmail.com

**प्रस्तावना-:**

भारतात प्राचीन काळापासून 'मातृदेवोभव' हि संकल्पना प्रचलित आहे. म्हणजेच मातेला देवासमान मानले आहे. यावरून स्त्रियांना भारतात महत्वाचे स्थान होते असे दिसते. त्यांना शिक्षणाचा अधिकारही असल्याचे दिसते. प्राचीन काळातील स्त्रिया सुद्धा शिक्षण घेवून नावारूपास आल्याचे दिसते. त्यामध्ये गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, अपाला, घोषा, सुलभा, अरुंधती इत्यादींचा समावेश होतो. मात्र कालांतराने काळ बदलत गेला आणि धार्मिक कट्टरता निर्माण होवून वर्णव्यवस्था निर्माण झाली. त्याचबरोबर कर्मकांड, यज्ञयाग, होमहवन, इत्यादी महत्व प्राप्त होत गेले. त्यामुळे स्त्रियांचे सर्व हक्क डावलले गेल्याने 'चूल व मूल' एवढेच त्यांचे कार्यक्षेत्र मर्यादित झाले. धार्मिक अवडंबर, अंधश्रद्धा, अश्पृश्यता, विटाळ हे सर्व त्यांच्या भोवती गुंफण्यात आले. त्यामुळे स्त्रियांचे स्थान दुय्यम बनले. विशेषतः उत्तर वैदिक काळामध्ये स्त्रियांची स्थिती अत्यंत दयनीय असल्याचे दिसते. मध्ययुगीन काळात तर 'स्त्री ही फक्त उपभोगण्याची वस्तू आहे' असेच दिसते. युद्ध आणि युद्धोत्तर परिस्थिती बघितली तर जागोजागी स्त्रियांची गुलामी, त्यांच्यावर होणारे अत्याचार, लूट, हे जवळपास सर्वच ठिकाणी दिसून येते. या सर्वांचे मूळ हे वर्णव्यवस्थेने स्त्रियांना नाकारलेल्या शिक्षणात व त्यांच्यात निर्माण झालेल्या न्यूनगंडात दिसते. एक शुद्र म्हणून स्त्रियांकडे पहिले गेले. त्यामुळे समाजातील एक मोठा वर्ग हा अज्ञानी, अंधश्रद्धाळू, बनला असे दिसते. मात्र सर्वच स्त्रियांची अवस्था दयनीय होती असे नाही. प्रत्येक कालखंडात. काही बोटावर मोजण्या इतक्याच स्त्रिया ह्या पुढे आल्या आणि त्यांनी आपल्या कर्तृत्वाची छाप सोडल्याचे दिसते. त्यामध्ये राजमाता जिजाऊ, महाराणी सईबाई, महारणी येसूबाई, महाराणी ताराबाई, राजसबाई, गोपिकाबाई, उमाबाई दाभाडे, पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर, आनंदीबाई, पार्वतीबाई इत्यादी धोरणी, मुत्सद्दी, व महत्वाकांक्षी स्त्रियांचा उल्लेख होतो. त्यांचे कार्य आणि कर्तृत्व हे कधी तत्कालीन परिस्थितीला अनुसरून तर कधी विरोधी असल्याचे दिसते.

१

**मराठा कालखंडातील कर्तृत्ववान स्त्रिया -:**

**१. राजमाता जिजाऊ-:**

साधारणतः सन १६३० ते १८१८ पर्यंत मराठा कालखंड मानला जातो. हा कालखंड म्हणजे मराठी सत्तेच्या उद्याचा व अस्ताचा कालखंड होय. ज्या छत्रपती शिवरायांनी हिंदवी स्वराज्याची स्थापना केली त्या हिंदवी स्वराज्याच्या संकल्पिका म्हणून राजमाता जिजाऊ यांच्याकडे पहिले जाते. राजमाता जिजाऊ यांचा

जन्म बुलढाणा जिल्ह्यातील सिंदखेड राजा या ठिकाणी लखुजी जाधव यांच्या घराण्यात झाला. त्यांच्या आईचे नाव म्हाळसाबाई असे होते. त्या अत्यंत संस्कारी असल्यामुळे जिजाऊ यांच्यावरही चांगले संस्कार घडले. त्यांचा विवाह मालोजी भोसल्यांचे कर्तबगार पुत्र शहाजी यांच्याशी झाला. त्यानंतर त्यांना संभाजी व शिवाजी असे दोन पुत्ररत्न प्राप्त झाले.

तत्कालीन कालखंड हा अतिशय धामधुमीचा उत्तर भारतात मुघलांचे वर्चस्व होते तर दक्षिण भारतात आदिलशाही, निजामशाही, कुतुबशाही, बरीद्शाही, व इमादशाही या पाच मुस्लीम शासकांचे राज्य असल्याचे दिसते. आपापसातील सततचे युद्ध, अनागोंदी, लुटमार, कटकारस्थाने, यामुळे सर्वसामान्य रयतेचे अतोनात हाल झाल्याचे दिसते. 'बळी तो कानपिळी' अश्या प्रकारचा न्याय होता. लखुजी जाधव, मालोजी भोसल्यांसारखे इतर अनेक मातब्बर सरदार हे वरील पाच शाह्यांकडून आपापसात लढत असत. मात्र यात सुरक्षित कोणीही नव्हते. निजामशहाच्या दरबारातील जिजाऊंचे बंधू आणि दीर यांच्या झालेल्या हत्या, कानकगिरीच्या लढाईत मुलगा संभाजीचा कपटाने झालेला वध अश्या सर्व विपरीत पार्श्वभूमीवर जिजाऊनी शिवाजी महाराजांच्या हातून स्वराज्याचे स्वप्न पार पडले. त्यांनी शिवरायाना न्याय-अन्याय, धर्मरक्षण, सदाचार, नैतिकता, स्त्रियांचा आदर, यांची शिकवण दिली. त्यांना राम-कृष्णाच्या कथा सांगून सात्विकता निर्माण केली.

छत्रपती शिवरायांनी जिजाऊंच्या आज्ञेत राहून लोककल्याणकारी राज्याची निर्मिती केली. शिवाजींच्या कृषी व स्त्री विषयक धोरणातून जिजाऊंच्या शिकवणुकीचे फळ स्पष्ट दिसते. संकटाना धैर्याने सामोरे जाण्याची हिम्मत शिवबांमध्ये निर्माण केली. वेळप्रसंगी जिजाऊनी तलवार हाती घेतल्याचे दिसते. त्या धाडसी, मुत्सद्दी, व राजकारण कुशल होत्या. अत्यंत कठीण आणि विपरीत परिस्थिती मधेही त्यांनी धैर्य सोडले नाही. त्यामुळेच शिवाजी महाराजांवर चालेन आलेल्या मोठ्या संकटांचा (अफजलखान, शायिस्तेखान, सिद्धी जौहर इ.) सामना त्यांनी मोठ्या धाडसाने तोंड देवून त्यांना योग्य ती अद्दल घडवली.

**२. महाराणी सईबाई भोसले -:**

सईबाई या फलटणच्या निमाबलकर घराण्यातील मुधोजीराव नाईक निंबाळकर यांच्या कन्या होत. त्यांचा जन्म २९ ऑक्टोबर १६३३ रोजी फलटण येथे झाला. त्यांच्या आईचे नाव



रेऊबाई होते. त्यांना लहानपणी तलवारीची आवड होती. त्यांचा विवाह १६ मे १६४० रोजी वयाच्या सातव्या वर्षी पुण्यातील लाल महालात झाला. यावेळी शिवरायांचे वय ११ वर्षे होते. त्या शिवाजींची प्रथम पत्नी होत्या. त्यामुळे त्यांना महाराणी म्हणून मन मिळाला होता. त्यांना तीन मुली व संभाजी सारखा एक मुलगा असल्याचे दिसते. या काळात स्त्रियांना पुढे येण्याचा अधिकार नव्हता तरी सईबाई नी पद्यामागे आपले कर्तृत्व पार पाडले. त्यांनी आपल्या सवतीना सन्मानाने वागणूक दिली. त्यांच्यात मतभेद होऊ दिले नाहीत. त्या आपल्या पतीच्या पाठीमागे खंभीरपणे उभ्या असल्याचे दिसते. म्हणून तर त्यना शिवाजी महाराजांची प्रेरणा असे देखील म्हटले गेले आहे. त्यांनी कधीही शिवरायांना अडचणीत आणले नाही. अश्या या महाराणी सईबाई यांचा मृत्यू संभाजीच्या जन्मानंतर अवघ्या सहा महिन्यातच म्हणजे ५ सप्टेबर १६५९ रोजी रायगडावर झाला.

**३. महाराणी येसूबाई -:**

महाराणी येसूबाई या संभाजी महाराजांच्या द्वितीय पत्नी व शिवाजी महाराजांच्या सून होत. त्यांचा जन्म सन १६५८ मध्ये शृंगारपुर मधील शिर्के घराण्यात झाला. त्यांचे वडील पिलाजीराव शिर्के मराठ्यांचे सेनानी होते. येसुबाईंचे मूळ नाव हे राजाऊ असे होते. छत्रपती संभाजी महाराजांच्या जीवनात येसुबाईंचे महत्वाचे स्थान होते. त्यांना भवानीबाई व दुसरा शिवाजी हे अपत्य होते. त्यांना शिवाजी महाराजांनी स्वराज्याच्या कुलमुखत्यार पदाची सिक्के कट्यार प्रदान केले होते. त्या स्वराज्याच्या पहिल्या कुलमुखत्यार होत्या. महाराणी येसूबाई बद्दल लोकांच्या मनात मोठा आदरभाव असल्याचे दिसते.

याचवेळी मुघल बादशहा औरंगजेब याने सर्व भारतवर वर्चस्व मिळवण्याच्या दृष्टीने व शहजादा अकबराने केलेले बंड मोडून काढण्यासाठी दक्षिण मोहीम हाती घेतली होती. संभाजी महाराजांनी अकबरास आश्रय दिला असल्याने साहजिकच त्याचा मराठ्यांशी संघर्ष निर्माण झाला. त्या मध्येच औरंगजेबाने फितुरीने सन १६८९ साली पकडले व त्यांचा अतोनात छळ करून त्यांना ठार मारले. त्यानंतर लगेच स्वराज्याची राजधानी असलेल्या रायगड किल्ल्याला वेढा घालून तो सन १६९० मध्ये जिंकून घेतला. त्यावेळी मात्र महारणी येसूबाई, बाल शाहू व संभाजी महाराजांचा दासीपुत्र मदनसिंग व त्यांच्या दोन बायका हे मुघलांच्या हाती सापडले. तत्पूर्वीच त्यांनी राजाराम महाराज व महाराणी ताराबाई यांना छत्रपती बनवून निवडक साथीदारांसह गुप्त मार्गाने जिंजीकडे रवाना केले.

महाराणी येसूबाई या सुमारे २९ वर्षे औरंगजेबाच्या कैदेत होत्या. त्याठिकाणी अतिशय धैर्याने त्यांनी आलेल्या संकटांचा सामना केला. त्यांनी स्वराज्य व स्वराज्याचा छत्रपती वाचवण्याचे महत्वपूर्ण कार्य केले. सन १७०७ मध्ये औरंगजेबाचा मृत्यू झाल्यानंतर त्याच्या मुलांमध्ये गाडीसाठी भांडणे सुरु झाली. त्यामुळे इतर सरदार मंडळीच्या म्हणण्यानुसार त्यांनी



बाल शाहूची १७०८ मध्ये दोराह या ठिकाणी सुटका केली. त्यानंतर सुमारे ११ वर्षांनी म्हणजे ४ जुलै १७१९ रोजी महाराणी येसूबाई व इतर राजकैद्यांची सुटका पेशवा बाळाजी विश्वनाथ यांच्या नेतृत्वाखाली झाल्याचे दिसते. त्यानंतर जवळपास १२ वर्षे त्यांनी शाहुबरोबर साताऱ्यात आनंदात घालावली. अश्या या महाराणी येसूबाई यांचा मृत्यू वयाच्या ७२ व्या वर्षी सातारा येथे सन १७३१ मध्ये झाला.

**४. महाराणी ताराबाई -:**

दिल्ली झाली दीनवाणी ! दिल्लीशाचे गेले पाणी !!
ताराबाई रामराणी ! भद्रकाली कोपली !!
ताराबाईच्या बखते ! दिल्लीपतीची तखते !!
खचो लागली तेवि मते ! कुराणेही खंडली !!
रामराणी भद्रकाली ! रणरंगी क्रुद्ध झाली !!
प्रलयाची वेळ आली ! मुघलहो सांभाळा !!
कवि देवदत्त

वरिल ओळी ज्यांच्याबद्दल लिहिल्या गेल्या त्या म्हणजे राजारामपत्नी महाराणी ताराबाई होय. मराठ्यांच्या इतिहासात त्यांचे नाव मोठ्या आदराने घेतले जाते. राजाराम महाराजांच्या मृत्यूनंतर ताराबाईनी मराठा सरदाराना एकत्र करून मुघला विरुद्धचा संघर्ष चालूच ठेवला. आपल्या कार्यकाळात सुमारे ७ वर्षे मुघलांना 'सळो कि पळो' करून सोडले होते.

ताराबाईंचा जन्म सन १६७५ रोजी मोहिते घराण्यात तळबीड येथे झाला. त्यांचे वडील हंबीरराव मोहिते हे स्वराज्याचे सरसेनापती होते. त्यांनी बालपणी ताराऊना तलवार, तिरंदाजी, भालाफेक राज्यकारभाराचे शिक्षण दिले. त्या बालपणापासूनच धाडशी व महत्वाकांक्षी होत्या. त्यांचा विवाह १६८७ मध्ये शिवपुत्र राजाराम यांच्याशी झाला. त्यानंतर अवघ्या दोन वर्षांनी म्हणजेच १६८९ ला रायगडला वेढा पडला. या वेढ्यातून निसटून राजाराम जिंजीला, तर ताराबाई, राजसबाई, अंबिकाबाई या विशाळगडावर राहिल्याचे दिसते. त्या ठिकाणी रामचंद्रपंत अमात्यांच्या मार्गदर्शनाखाली मुलकी व्यवहाराची माहिती घेवून त्या जिंजीला राजारामाकडे गेल्याचे दिसते. सततच्या धावपळीमुळे राजाराम महाराजांचा मृत्यू १७०० मध्ये झाला.

राजाराम महाराजांच्या मृत्युनंतर ताराबाईने आपला मुलगा दुसरा शिवाजीला राज्याभिषेक करून त्याचे पालक म्हणून राज्यकारभार हाती घेतला. आणि मुघलांना जेरीस आणले. संताजी—धनाजी सारखे सरदार याच काळात उदयास आले. गनिमी कावा हे या काळातील सर्वात महत्वपूर्ण युद्धतंत्र म्हणून वापरले गेले. यावेळी त्यांचे वय फक्त २४-२५ वर्ष होते. असे असूनही औरंगजेबासारख्या बलाढ्य शत्रूशी सात-आठ वर्षे लढा दिला व स्वराज्याचे संरक्षण केले. ताराबाई च्या आर्थिक स्थिरतेचे एक सूत्र होते ते म्हणजे वाटाघाटी करून, तह



करून, किंवा पैसे घेऊन किल्ला मुघलांना द्यायचा आणि पावसाळा जवळ आला कि तो किल्ला मुघलांकडून जिंकून घ्यायचा अश्या प्रकारे धोरण ठेवून आपली पैशाची अडचण सोडविल्याचे दिसते. सन १७०८ मध्ये जेंव्हा शाहूंची सुटका झाली तेंव्हा स्वराज्यात आल्यानंतर त्यांनी ताराबाईकडे आपला स्वराज्याचा हक्क मागितला मात्र ताराबाईनी तो नाकारल्यामुळे दोघात सत्तेसाठी यादवी निर्माण होवून संघर्ष सुरु झाला. त्यामुळे ताराबाईनी कोल्हापूर या ठिकाणी स्वराज्याची दुसरी गादी निर्माण केली. त्यामुळे स्वराज्याच्या सातारा व कोल्हापूर अश्या दोन गाद्या निर्माण झाल्याचे दिसते.

मराठ्यांच्या इतिहासाला कलाटणी देणारी एक घटना सन १७१४ या साली घडली. ती म्हणजे 'कोल्हापूरची राज्यक्रांती'. ज्यावेळेस ताराबाईनी कोल्हापूर या ठिकाणी दुसरी गादी निर्माण केली होती त्याचवेळेस राजारामाची दुसरी पत्नी राजसबाई यांनी एक महत्वाकांक्षी योजना आखून ताराबाई व दुसरा शिवाजी यांना कैदेत टाकले. व आपला मुलगा दुसरा संभाजी याला गादीवर बसवून सर्व कारभार आपल्या हातात घेतला. मात्र अल्पावधीतच ताराबाईनी आपली सुटका करून घेतली. तरीही त्यांनी निजाम व इतर मराठा सरदारांच्या साह्याने शाहूंना त्रास देण्याचे काम केल्याचे दिसते. त्यानंतरही त्यांना बराच वेळ कैदेतच राहावे लागेल. या घटनेमुळे ताराबाई चे महत्व व पकड कमी झाली त्यामुळे शाहूंची सत्ता निर्धोक बनल्याचे दिसते. ताराबाई या धूर्त, चतुर व चाणाक्ष होत्या. मात्र आपल्या अति महत्वाकांक्षेपोटी त्यांना त्यांची किमत

मोजावी लागली. अश्या या कर्तृत्ववान महाराणीचा मृत्यू सातारा या ठिकाणी वयाच्या ८६ व्या वर्षी सन १७६१ रोजी झाला. एका स्त्रीने प्रतिकूल परिस्थितीत राज्य राखून ते कसे वाढवायचे याचे उत्तम उदाहरण या महाराणी ताराबाई या होत.

**५. उमाबाई दाभाडे -:**

मराठा कालखंडातील उमाबाई या पहिल्या महिला सरसेनापती होत. त्यांचा जन्म नाशिकमधील अभोणा या गावचे देशमुख ठोके कुटुंबात झाला होता. त्यांचे वडील अंभोकर देवराव ठोके हे होते. तळेगावच्या दाभाडे घराण्यातील खंडेराव दाभाडे यांच्याशी उमाबाईंचा विवाह झाला. त्या अत्यंत धाडशी व स्वाभिमानी वृत्तीच्या होत्या. त्यांना एकूण सहा अपत्ये झाली त्यामध्ये १. त्र्यंबकराव २. यशवंतराव ३. सवाई बाबुराव ही तीन मुले तर १. शाहुबाई २. दुर्गाबाई ३. आनंदीबाई या तीन मुली होत्या.

दाभाडे घराणे हे शिवकालापासून स्वराज्याचे सेवक होते. येसाजीराव दाभाडे हे शिवरायांचे अंगरक्षक होते. म्हणूनच ते छत्रपतीच्या विश्वासातले असल्याचे दिसते. छत्रपती संभाजी व राजारामच्या काळात खंडेरावांनी महत्वपूर्ण कामगिरी बजावल्यामुळे त्यांच्या कामगिरीवर खुश होवून राजारामांनी त्यांना 'सेनाखासखेल' ही पदवी दिली व तेरा गावाची सरपाटीलकी दिल्याचे दिसते.

५

खंडेरावांची खरी प्रगती ही छत्रपती शाहू महाराजांच्या काळात झाल्याचे दिसते. ज्यावेळी ते शाहूंना जाऊन मिळाले. यावेळी शाहूंचे सर्व कामकाज हे पेशवे बाळाजी विश्वनाथ हे बघत होते. त्यांनीच 'मराठा राजमंडळ' ही संकल्पना मांडून ती कृतीत आणली. या काळात मराठा सरदार हे आपसात लढत होते. आणि एकमेकांच्या प्रदेशावर हल्ले करत होते. मराठा राजमंडळानुसार मात्र सरदाराना उत्तरेकडील क्षेत्र विभागून दिले गेले. त्यानुसार शिंदे-ग्वाल्हेर, होळकर-इंदोर, पवार-धार, दाभाडे गुजरात या ठिकाणी आपापले कार्यक्षेत्र निर्माण केले. त्याठिकाणी दाभाड्यानी आपला जम बसवला. त्यामुळे शाहू महाराजांनी त्यांना मराठा साम्राज्याचे 'सरसेनापती' हे पद दिल्याचे दिसते. त्यानंतर सन १७२९ मध्ये खंडेरावाचा मृत्यू झाला.

खंडेरावाच्या मृत्युनंतर सरसेनापती हे पद त्यांचा मुलगा त्र्यंबकराव यांना दिले. पेशवे जरी स्वतःला छत्रपतीचे सेवक समजत असले तरी कालांतराने मात्र पेशवे प्रबळ झाल्याचे दिसते आणि खरे कार्यकारी प्रमुख बनले. त्यामुळे पहिले बाजीराव व त्र्यंबकराव यांच्यात गुजरात सुभ्याच्या चौथाई व सरदेशमुखीच्या कारणावरून वाद निर्माण होऊन सन १७३१ मध्ये डभईची लढाई झाली त्यामध्ये त्र्यंबकराव मारले गेले. या घटनेमुळे उमाबाईंना अतिशय दु:ख झाले. परंतु तरीही स्वाभिमानी उमाबाई डगमगल्या नाहीत. त्यांचा मुलगा यशवंतराव यांना शाहुंनी सरसेनापती हे पद व सर्व मानमरातब दिला. मात्र यशवंतराव हे अल्पवयीन असल्याने सर्व कारभार त्यांनी आपल्या हाती घेतला. वरिल संदर्भात शाहुंनी पेशव्यांना उमाबाईची माफी मागण्यास भाग पडले. परंतु तरीही उमाबाई यांनी पेशव्यांच्या विरोधात महाराणी ताराबाई यांच्याशी सन १७५० मध्ये दोन वेळेस गुप्त पद्धतीने संधान साधले. परंतु त्याचा फार काही परिणाम झाला नाही असे दिसते. पुढील काळातही चौथाई व सरदेशमुखी वसुलीच्या प्रश्नावरून उमाबाई व पेशवे यांचे कधी पटले नाही. त्यांनी निजाम व इतर बंडखोर सरदार यांच्याशी संपर्क साधून पेशवे व छत्रपतींच्या विरोधात बंड केल्याचे दिसते. त्यामुळे मात्र छत्रपतीच्या आदेशावरून बाजीराव पेशव्यांनी उमाबाई चा पराभव केला.

त्यामुळे गुजरातमध्ये दाभाड्यांची सत्ता जावून दमाजी गायकवाड यांनी आपली सत्ता निर्माण केली. अश्याप्रकारे उमाबाई चा मृत्यू २८ नोव्हेंबर १७५३ रोजी पुण्यातील नाडगेवाडी या ठिकाणी झाला. त्यांची समाधी तळेगावातील बनेश्वर या मंदिरात आजही उपलब्ध आहे.

**६. पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर -:**

मराठी सत्तेच्या प्रमुख आधार स्तंभापैकी एक असलेले होळकर घराणे हे मराठ्यांच्या इतिहासात प्रमुख मानले जातेत्यांनी आपल्या कर्तृत्व .या घराण्याचे मुख्य पुरुष म्हणजे मल्हारराव होळकर . आणि अतिशय कठोर परिश्रमाने माळवा प्रांतातील इंदोर या ठिकाणी होळकरांचे राज्य निर्माण केल्याचे दिसते . र या एक मयाच घराण्यातील सून म्हणजेच खंडेराव होळकर यांची पत्नी अहिल्यादेवी होळकहत्वपूर्ण महिला शासक व प्रशासक म्हणून गणल्या जातात .

६

अहिल्याबाई यांचा जन्म महाराष्ट्रातील बीड परगण्यातील चोंडी या (सध्याचा जामखेड तालुका) ते .रोजी झाला १७२५मे ३१लहानश्या खेड्यात माणकोजी व सुशीलाबाई शिंदे या दाम्पत्याच्या पोटी उदार मनाच अतिशय धर्मशील वे संस्कारी असल्याचे दिसतेबालपणा पासूनच त्यांच्या घरात अतिशय . .त्याचा प्रभाव अहिल्यादेवी यांच्यावर ही असल्याचे दिसते .धार्मिक व संस्कारी वातावरण असल्याचे दिसते १७३३च सन व्या वर्षी म्हणजे ९वयाच्या .त्या शिवभक्त असल्याने महादेवावर त्यांची निस्सीम भक्ती होती मध्ये त्यांचा विवाह मल्हारराव होळकरांचे जेष्ठ सुपुत्र खंडेराव यांच्याशी झालाआणि त्या होळकर . प्रेरणा व उत्साहाचे ,त्या दिवसापासून होळकर कुटुंबात एक प्रकारचे चैतन्य .घराण्याची सून बनल्या .वातावरण निर्माण झाल्याचे दिसते

कालचक्र पुढे हा काळ .पुढे सरकत होते-अतिशय धामधुमीचा होतापेशव्यांनी थकीत राहिलेल्या . या मोहिमेत मल्हारराव .चौथाई वसुलीसाठी उत्तर मोहीम रघुनाथराव यांच्या नेतृत्वाखाली काढल्याचे दिसते मध्ये मराठ्यांनी जाटांचा प्रमुख १७५४सन .होळकर यांच्यासोबत त्यांचा मुलगा खंडेराव हे ही बरोबर होते सुरजमल राजाजाट याच्याकडे एक करोड रुपये खंडणी मागितलीपरंतु सुरजमल जाताने एक करोड ऐवजी . तेंव्हा .मात्र रघुनाथराव हे एक करोड रुपयाचाच हट्ट धरून बसले .चाळीस लाख देण्याचे कबूल केले रोप सुरजमल नेही चाळीस लाख घ्याचे असतील तर घ्या नाहीतर युद्धाला आम्ही तयार आहोत असा नि पाठवलाआणि मराठ्यांनी जाटांच्या अभेद्य असलेल्या .त्यामुळे दोन्ही पक्षाने युद्धाची तयारी सुरु केली . त्याचबरोबर .वालुकामय प्रदेश असल्याने सुरुंग लावणे जमत नव्हते .कुंभेरीच्या किल्ल्यास वेढा घातला टाचा पराभतरीही सुरजमल जा .तोफांचा मारा ही व्यवस्थित करता येत नव्हताव करणे गरजेचे होतेमात्र . रोजी दुपारी जेवण करून खंडेराव आपल्या छावणीच्या बाहेर आले १७५४मार्च १७एका दिवशी म्हणजेच ही घटना .आणि जागीच त्यांचा मृत्यू झाला .असता अचानक एका तोफेच्या गोळ्याने त्यांचा वेध घेतला खंडे .तीम्हणजे होळकर कुटुंबावर मोठा आघात करणारी होरावांच्या मृत्यूची बातमी समजताच मल्हारराव अतिशय दुयावेळी अहिल्यादेवी ही .तला सावरले:मात्र त्यांनी परिस्थिती बघून स्व .खाने आक्रोश करत होते: त्यांना खंडेरावांच्या मृत्यूची बातमी कळताच तत्कालीन प्रथेनुसार त्या .त्याप्रसंगी छावणीत असल्याचे दिसते जायला तया सतीर झाल्या होत्या .कारण सती जाने हे तत्कालीन समाज व धर्मानुसार स्त्रियांसाठी योग्य होते . मात्र मल्हारराव यांनी धर्म व समाज रूढी बाजूला ठेवून अहिल्यादेवीना सती न जाण्यसाठी विनवणी करताना

**,री दौलतमाझी सा ?बाई माझ्या आयुष्याचा आणिक उन्हाळा करतेस की काय"** ,म्हटले**राज्याचा कारभारतूच माझा खंडू , समजून मी तुझ्यावर घालत होतो .तू माझ्या पाठीवर आहेसतर अहिल्या , ह्या ,माझ भाग्य ठेवण आता तुझ्या हाती आहे .मेली आणि खंडू जिवंत आहे हा मला भरवसा ."म्हाताऱ्याची कीव तुला येवू दे पोरी** आपल्या पित्यासमान सासरयाच्या विनंतीला मान देवून लोकनिंदेचा विचार न करता लोकहितासाठी त्यांनी सती न जाण्याचा निर्णय घेतला .ही घटना म्हणजे अहिल्यादेवी च्या जीवनाला कलाटणी देणारी महत्वपूर्ण घटना मानली जाते.

पती खंडेरावाच्या मृत्यूने अहिल्यादेवीना अकाली वैधव्य प्राप्त झाले मात्र मल्हाररावांच्या . छत्रःाखाली राज्यकारभार .राजकीय डावपेच इत्यादीचे प्रत्यक्ष ज्ञान त्यांना मिळाले ,प्रशासन ,युद्धनीती , यामुळे मल्हारररा ,सततची दगदग ,काही काळानंतर युद्धमोहिमावांचा देह खंगला होता अश्यातच .२० मे १७६६ रोजी त्यांचा मृत्यू झालाक्यावरचे छत्र हरपल्याची तीव्र यावेळी मात्र अहिल्यादेवीना आपल्या डो . .मल्हाररावानंतर खंडेरावाचा मुलगा मालेराव हा होळकरांचा वारस बनला .जाणीव त्यांना झाल्याचे दिसते मात्र मानसिक व शारीरिक प्रकृती ठीक नसल्याने अल्पावधीत त्यांचाही मृत्यू २६ मार्च १७६७ रोजी झाला . मात्र परिस्थितीचे गांभीर्य ओळखून त्यांनी राज्यकारभाराची .दिसून येते ख झाल्याचे:त्यामुळे त्यांना अतीव दु कारण की होळकर घराण्याला वारस नाही हे लक्ष्यात घेवून होळकरांचे .सूत्रे आपल्या हाती घेतल्याचे दिसते राज्य घश्यात घालण्यःासाठी रघुनाथराव व गंगाधर यशवंत चंद्रचूड यांनी कटकारस्थान करून पन्नास हजाराची फौज घेऊन उज्जैन पर्यंत आले होतेयाचा सुगावा लागताच त्यांनी सर्व मराठा सरदारांना तातडीने . आणि तुकोजीरावांच्या नेतृत्वाखाली .पत्रव्यवहार करून राघोबाला मदत न करण्याचे आवाहन केले लढण्याची सज्जता केली .यांची फौज तयार केलीत्याचबरोबर अहिल्यादेवीनी स्वतःच्या नेतृत्वाखाली स्त्रि . या संबंधी त्यांनी राघोबाला एक खरमरीत पात्र लिहून .आणि त्या राघोबासोबत लढण्यास तयार झाल्या **,माझे राज्य हिरावून घेण्यासाठी आपण आला आहात"** -पाठवले त्याचा आशय असा होता**परंतु आपली ही इच्छाकधीच पूर्ण होणार नाहीमी कोणत्या परंतु ,आपण मला अबला समजत आहात . माझ्या अधिपत्त्याखाली तयार केलेली .प्रकारची अबला आहे हे आपणास रणांगणावरच कळेल मी हरले तर मला कोणी हसणार नाही परंतु आपण हरलात .स्त्रियांची फौज तुमच्याशी समर करेल तर आपल्यालातोंड लपवायलाही जागा उरणार नाही."याची जाणीव असावी** . सर्व परिस्थिती लक्ष्यात घेवून राघोबांनी माघार घेल्याचे दिसतेबुद्धि बुद्धी ,या प्रसंगी मात्र अहिल्यादेवींनी आपले चातुर्य . .वापरून होळकरशाहीचे संरक्षण केल्याचे दिसते

इंदोर मधील हा भाग भिल्ल या 'नेमाड'आदिवासी जमातीच्या ताब्यात होतात्यांना पेंढारी असे ही . नावाचा 'भिलकवडी' दरोडे घालणे इत्यादी वरच न थांबता त्यांनी ,प्रवाश्यांना लुटने ,चोऱ्या करणे .म्हणत भिल्लांच्या या .व्यापारी यांच्याकडून वसूल केला जाई ,प्रवाशी ,कर सुरु करून तो जबरदस्तीने यात्रेकरू उछादाची बातमी अहिल्यादेवीना समजताच त्यांनी भिल्लांचा मोरक्यास बोलावून प्रेमाने समजावून सांगितल्याचे दिसतेत्यामुळे त्यांनी भिल्ल आणि त्यांच्या .मात्र तरीही भिल्लांवर त्याचा परिणाम झाला नाही . मोरक्यास पकडून आणण्यासाठी सैनिक

८

पाठवलेआणि त्यांना कडक शिक्षा केल .्याचे दिसतेमात्र काही काळाने भिल्लांना क्षमा करून त्यांना . .त्यांच्या जीवनाला योग्य दिशा दाखवल्याचे दिसते .मधंद्याला लावले व गुन्हेगारी बंद केलीजमिनी देवून का प्राचीन काळापासून आणि आजही भारत हा कृषिप्रधान देश असल्याचे मानले जातेअहिल्यादेवीनी . सर्वप्रथम इंदोरचा कारभार हातात घेताच शेतकरी व जनतेला जाचक असणारे करकायदे आणि नियम मोडून नवीन जनतेच्या हिताचे कायदे तयार केलेशेतीवरच राज्याचा विकास अवलंबून असल्याने शेतीचे . नैसर्गिक .उत्पन्न वाढविण्यासाठी शेतकऱ्यांच्या समस्या लक्ष्यात घेऊन त्यावर उपाययोजना केल्या आपत्तीच्या काळात जसे कीनुकसान झाले तर अतिवृष्टी इत्यादी कारणामुळे जर शेतकऱ्यांचे ,दुष्काळ , त्यामुळे अल्पावधीतच शेतीचे .त्यांना शेतसारा माफ केला तसेच आवश्यक ती सर्व मदत पुरविल्याचे दिसते त्याचबरोबर व्यापार उदीम वाढवू .उत्पादन वाढून अन्नधान्याची टंचाई कमी झालीन वस्त्रोद्योगाला चालना दिली व महेश्वर सारखी एक समृद्ध बाजारपेठ निर्माण केलीअहिल्यादेवी नी आपल्या कालावधीत खूप . मोठ्या प्रमाणात लोककल्याणकारी कार्य केल्याचे दिसते.

अश्या प्रकारे अहिल्यादेवीनी भारतातच नव्हे तर पार नेपाळ पर्यंत आणि भारताच्या कानाकोपऱ्यात आपल्या कार्याची छाप सोडल्याचे दिसते .

- **संदर्भग्रंथ सूची -:**

१. मराठ्यांचा इतिहाससोमनाथ रोडे .डॉ ,
२. मराठी रियासत खंड सरदेसाई .स .गो : १ :
३. होळकरशाहीच्या इतिहासाची साधने ,१भाग :२ ठाकूर .वा.संपादक वा :
४. होळकरांची कैफियत केळकर .न .य – संपादक :
५. मराठी रियासत खंड सरदेसाई .स .गो : ७ :
६. मराठ्यांचा इतिहास खरे .ह .कुलकर्णी व ग .रा .अ :
७. मोगलकालीन भारत साहेबराव गाठाळ .डॉ :
८. मराठी सत्तेचा विस्तार आणि ऱ्हास

# महिला उद्योजकतेमध्ये कौशल्य विकास प्रशिक्षण आणि नाविन्याची भूमिका

**Dr.P.R.Bodke**
Assistant professor, Department of political science
Shri Saibaba College Shirdi. Ta -Rahata, Dist-Ahmadnagar
Email id- manishbodke30@gmail.com
Mob.NO-9766828588

**Abstract (सारांश):-** "महिला उद्योजकतेमध्ये कौशल्य विकास प्रशिक्षण आणि नाविन्याची भूमिका" या शोध निबंधात महिला सक्षमीकरण आणि आर्थिक स्वावलंबनाच्या प्रक्रियेत कौशल्य प्रशिक्षण व नाविन्य यांचे महत्त्व विशद केले आहे. तांत्रिक, व्यवस्थापन, आर्थिक व डिजिटल कौशल्यांमुळे महिला उद्योजकांची कार्यक्षमता आणि स्पर्धात्मकता वाढते, तर नाविन्यपूर्ण कल्पना व्यवसायाच्या विस्तार व टिकावाला चालना देतात. प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजना, मुद्रा योजना आणि महिला आर्थिक विकास महामंडळ यांसारख्या योजनांमुळे प्रशिक्षण व आर्थिक सहाय्य उपलब्ध होत आहे. अभ्यासातून कौशल्य विकास व नाविन्य हे महिला उद्योजकतेच्या यशाचे परस्परपूरक घटक असल्याचे स्पष्ट होते. परिणामी, महिला आर्थिकदृष्ट्या सक्षम होऊन सामाजिक व राष्ट्रीय विकासात मोलाचे योगदान देतात.

- **प्रस्तावना:-**

भारतामध्ये महिला सक्षमीकरणासाठी आर्थिक स्वावलंबन अत्यंत महत्त्वाचे मानले जाते आणि त्यात उद्योजकतेची भूमिका दिवसेंदिवस वाढत आहे. बदलत्या सामाजिक, आर्थिक व तांत्रिक वातावरणामुळे महिलांनी पारंपरिक चौकटीपलीकडे जाऊन व्यवसाय क्षेत्रात सक्रिय सहभाग नोंदविला आहे. महिला उद्योजक स्वतःसाठीच नव्हे तर इतरांसाठीही रोजगारनिर्मिती करून स्थानिक तसेच राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थेला बळकटी देतात. त्यांच्या यशामध्ये कौशल्य विकास प्रशिक्षण हा महत्त्वाचा घटक ठरतो. तांत्रिक, व्यवस्थापन, आर्थिक व डिजिटल कौशल्यांमुळे व्यवसायाची कार्यक्षमता वाढते. या ज्ञानामुळे महिलांची स्पर्धात्मक बाजारपेठेत टिकून राहण्याची क्षमता मजबूत होते. नाविन्यपूर्ण कल्पना आणि आधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर व्यवसाय अधिक परिणामकारक व विस्तारक्षम बनवतो. विशेषतः ग्रामीण व अर्धशहरी भागातील महिलांसाठी हे स्वयंपूर्णतेचे प्रभावी साधन ठरते. परिणामी, महिला सक्षमीकरण, आर्थिक प्रगती आणि शाश्वत विकास यांचा परस्परसंबंध स्पष्ट होतो.

- **उद्दिष्टे :-**

1)महिला उद्योजकतेचे स्वरूप व महत्त्व समजून घेणे.
2)कौशल्य विकास प्रशिक्षणाचे प्रकार व त्यांची उपयुक्तता अभ्यासणे.
3)कौशल्य प्रशिक्षणामुळे आर्थिक स्वावलंबनात होणारा बदल स्पष्ट करणे.
4)महिला उद्योजकतेमध्ये नाविन्याची भूमिका व परिणाम समजावून घेणे.
5)शासनाच्या योजना व अडचणींचा आढावा घेऊन महिला सक्षमीकरणातील योगदान स्पष्ट करणे.

- **गृहीतके :**

1)कौशल्य विकास प्रशिक्षणामुळे महिला उद्योजकांची कार्यक्षमता वाढते.
2)नाविन्यपूर्ण कल्पनांचा वापर केल्यास व्यवसायाचा नफा व विस्तार वाढतो.
3)डिजिटल कौशल्ये आत्मसात केल्यास बाजारपेठेत स्पर्धात्मकता वाढते.

4)शासनाच्या प्रशिक्षण व कर्ज योजनांमुळे महिला उद्योजकतेला चालना मिळते.
5)ग्रामीण व शहरी महिला उद्योजकांच्या प्रगतीत कौशल्य प्रशिक्षण महत्त्वाची भूमिका बजावते.

- **संशोधन पद्धती :-**

प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी वर्णनात्मक विश्लेषणात्मक संशोधन पद्धतीचा वापर करण्यात आलेला आहे तसेच माहिती संकलनासाठी प्रश्नावली, मुलाखत व प्रत्यक्ष निरीक्षण व प्राथमिक स्त्रोतांचा तसेच पुस्तके, शासकीय अहवाल व शोध निबंध या द्वितीय स्त्रोतांचा आधार घेतला आहे ग्रामीण व शहरी भागातील महिला उद्योजकांचा नमुना निवडला आहे त्या आधारावर माहिती संकलित करून करून शोधनिबंधाची मांडणी व निष्कर्ष काढलेले आहेत.

- **अभ्यास विषयाची निवड व महत्त्व:**

सध्याच्या स्पर्धात्मक व तंत्रज्ञानाधारित युगात महिला उद्योजकतेचे महत्त्व वाढले आहे. प्रशिक्षणाचा अभाव, भांडवलाची कमतरता व सामाजिक अडचणी लक्षात घेता कौशल्य विकास आणि नाविन्याची भूमिका अभ्यासणे आवश्यक वाटल्याने हा विषय निवडला आहे. कौशल्य प्रशिक्षण व नाविन्यामुळे महिला आर्थिकदृष्ट्या स्वावलंबी बनतात व आत्मविश्वास वाढतो. महिला उद्योजकता रोजगारनिर्मिती करून आर्थिक व ग्रामीण विकासाला चालना देते. तसेच हा अभ्यास शासनाच्या धोरणांसाठी मार्गदर्शक ठरतो.

- **महिला उद्योजकतेमध्ये कौशल्य विकास प्रशिक्षण आणि नाविन्याची भूमिका:-**

आजच्या स्पर्धात्मक आणि तंत्रज्ञानाधारित युगात महिला उद्योजकतेला मोठी संधी उपलब्ध झाली आहे. मात्र, केवळ व्यवसाय सुरू करणे पुरेसे नसून तो टिकवून ठेवणे आणि वाढविणे अधिक महत्त्वाचे ठरते. यासाठी कौशल्य विकास प्रशिक्षण आणि नाविन्य (Innovation) हे दोन मूलभूत घटक अत्यंत आवश्यक आहेत.

1) **कौशल्य विकास प्रशिक्षणाची भूमिका:_** कौशल्य विकास म्हणजे विशिष्ट क्षेत्रातील तांत्रिक, व्यवस्थापकीय, आर्थिक आणि डिजिटल ज्ञान प्राप्त करणे. महिला उद्योजकांसाठी हे प्रशिक्षण पुढील प्रकारे महत्त्वाचे ठरते **(अ) तांत्रिक कौशल्ये:-** उत्पादन प्रक्रिया, गुणवत्ता नियंत्रण, पॅकेजिंग, आधुनिक यंत्रसामग्रीचा वापर यांसारखी तांत्रिक कौशल्ये व्यवसाय अधिक कार्यक्षम बनवतात. उदाहरणार्थ, फूड प्रोसेसिंग, फॅशन डिझायनिंग, ब्यूटी पार्लर, हस्तकला उद्योग यामध्ये विशेष प्रशिक्षणामुळे दर्जेदार उत्पादने तयार होतात.

**(आ) व्यवस्थापन कौशल्ये;-** व्यवस्थापन कौशल्यामुळे खालील गुणवैशिष्ट्ये विकसित होतात

- नियोजन (Planning)
- संघटन (Organizing)
- नेतृत्व (Leadership)
- निर्णय क्षमता (Decision Making)

ही कौशल्ये व्यवसायाचे योग्य नियोजन आणि नियंत्रण करण्यास मदत करतात.

**(इ) आर्थिक व लेखा कौशल्ये:-** भांडवल व्यवस्थापन, नफा-तोटा समजणे, कर्ज योजना, बँक व्यवहार, डिजिटल पेमेंट यांचे ज्ञान असल्यास आर्थिक स्थैर्य निर्माण होते.

**(ई) विपणन (Marketing) कौशल्ये:-** ग्राहकांची गरज ओळखणे, जाहिरात तंत्र, सोशल मीडिया मार्केटिंग, ऑनलाइन विक्री (E-commerce) यामुळे बाजारपेठ वाढवता येते.

**(उ) डिजिटल साक्षरता:-** आजच्या काळात डिजिटल प्लॅटफॉर्मवर व्यवसाय वाढविणे आवश्यक आहे. वेबसाइट, व्हॉट्सॲप बिझनेस, इंस्टाग्राम, फेसबुक यांचा वापर करून विक्री वाढवता येते.

कौशल्य विकासामुळे महिला उद्योजकांचा आत्मविश्वास वाढतो, जोखीम घेण्याची तयारी निर्माण होते आणि व्यवसायात स्थिरता येते.

2) **नाविन्याची (Innovation) भूमिका:**-नाविन्यामुळे ग्रामीण भागातील महिलांना नवीन कल्पना, नवीन तंत्रज्ञान आणि नवीन पद्धतीच्या वापर करून आपल्या व्यवसाय व उत्पादनात परिणामकारकता आणणे सोयीस्कर होते. **या नाविन्याची** महिला उद्योगातील भूमिका पुढीलप्रमाणे स्पष्ट करता येईल.

**(अ) उत्पादनातील नाविन्य:**-नवीन डिझाइन, गुणवत्ता सुधारणा, पर्यावरणपूरक उत्पादने तयार करणे.

**(आ) सेवांमधील नाविन्य:**- ग्राहकाभिमुख सेवा, घरपोच सेवा, ऑनलाइन ऑर्डर सुविधा.

**(इ) प्रक्रियात्मक नाविन्य:**- उत्पादन खर्च कमी करणे, वेळेची बचत, आधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर.

**(ई) विपणनातील नाविन्य:**-ब्रँडिंग, डिजिटल जाहिरात, ग्राहकांशी थेट संवाद. बाजारपेठेत वेगळेपणा निर्माण होतो. स्पर्धात्मक फायदा मिळतो. व्यवसायाचा विस्तार आणि टिकाव सुनिश्चित होतो.

3) **कौशल्य विकास आणि नाविन्य यांचा परस्परसंबंध:**- कौशल्य विकासामुळे महिला उद्योजकांना नवीन कल्पना अंमलात आणण्याची क्षमता प्राप्त होते. नाविन्य स्वीकारण्यासाठी तांत्रिक व व्यवस्थापन कौशल्य आवश्यक असते. त्यामुळे हे दोन्ही घटक परस्परपूरक आहेत.

4) **महिला सक्षमीकरणावर परिणाम:**- महिला सक्षमीकरणामुळे सामाजिक,राजकीय,आर्थिक दृष्टिकोनातून झालेले परिणाम पुढीलप्रमाणे

- आर्थिक स्वावलंबन वाढते.
- सामाजिक स्थान उंचावते.
- कुटुंब व समाजातील निर्णयप्रक्रियेत सहभाग वाढतो.
- रोजगारनिर्मिती होते.
- ग्रामीण भागात स्थानिक विकासाला चालना मिळते.

5) **शासनाच्या योजना आणि प्रशिक्षण उपक्रम:**- भारत सरकार व राज्य शासनाच्या च्या वतीने महिला उद्योजकतेचे प्रमाण वाढावे यासाठी पुढील योजना आणि प्रशिक्षण उपक्रम राबवले जातात

- प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजना (PMKVY)
- प्रधानमंत्री मुद्रा योजना
- स्टार्टअप इंडिया
- महिला आर्थिक विकास महामंडळ (MAVIM)
- स्वयं-सहायता बचत गट (SHG)
- तांत्रिक व व्यावसायिक कौशल्य प्रशिक्षण
- डिजिटल साक्षरता व ई-कॉमर्स प्रशिक्षण
- उद्योजकता विकास कार्यशाळा
- आर्थिक सल्लामसलत व मार्गदर्शन सत्रे

6)**महिला उद्योजका पुढील आव्हाने किंवा अडचणी** :-

- प्रशिक्षण व माहितीचा अभाव
- भांडवलाची कमतरता व कर्जप्रक्रियेतील
- या योजनांमुळे महिला उद्योजकांना प्रशिक्षण, कर्ज आणि मार्गदर्शन उपलब्ध होते.

महिला उद्योजकतेच्या यशासाठी कौशल्य विकास प्रशिक्षण आणि नाविन्य हे अत्यावश्यक घटक आहेत. कौशल्य प्रशिक्षण महिलांना सक्षम बनवते, तर नाविन्य त्यांना स्पर्धात्मक बाजारपेठेत वेगळेपण

देऊन यशस्वी बनवते. या दोन्ही घटकांच्या प्रभावी वापरामुळे महिला केवळ आत्मनिर्भर होत नाहीत, तर देशाच्या आर्थिक व सामाजिक विकासातही मोलाचे योगदान देतात.

- **निष्कर्ष** :-"महिला उद्योजकतेमध्ये कौशल्य विकास प्रशिक्षण आणि नाविन्याची भूमिका" या अभ्यासातून पुढील निष्कर्ष स्पष्ट होतात.

1)महिला उद्योजकतेच्या यशामध्ये कौशल्य विकास प्रशिक्षण हा मूलभूत घटक आहे. योग्य प्रशिक्षणामुळे महिलांची कार्यक्षमता, आत्मविश्वास आणि निर्णयक्षमता वाढते.

2)तांत्रिक, व्यवस्थापन, आर्थिक आणि डिजिटल कौशल्ये आत्मसात केल्यामुळे व्यवसाय अधिक शाश्वत आणि स्पर्धात्मक बनतो.

3)नाविन्यपूर्ण कल्पना आणि आधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर केल्यास महिला उद्योजकांना बाजारपेठेत वेगळेपणा निर्माण करता येतो.

4)कौशल्य विकास आणि नाविन्य यांचा परस्परसंबंध व्यवसायाच्या विस्तार, टिकाव आणि नफा वाढीसाठी उपयुक्त ठरतो.

5)शासनाच्या विविध योजना व स्वयं-सहायता गटांमुळे महिला उद्योजकतेला चालना मिळत असली तरी प्रशिक्षण व मार्गदर्शनाचा अधिक व्यापक प्रसार आवश्यक आहे.

ग्रामीण भागातील महिलांसाठी कौशल्य प्रशिक्षण व नाविन्याच्या संधी उपलब्ध झाल्यास स्थानिक आर्थिक विकासाला मोठी गती मिळू शकते. यावरून स्पष्ट होते की महिला सक्षमीकरण आणि आर्थिक प्रगतीसाठी कौशल्य विकास व नाविन्य हे अत्यंत आवश्यक घटक आहेत.

- **शिफारशी** :- वरील निष्कर्षांच्या आधारे खालील शिफारशी सुचवता येतात.

1)महिला उद्योजकांसाठी नियमित आणि गुणवत्तापूर्ण कौशल्य विकास प्रशिक्षण केंद्रे सुरू करावीत.

2)डिजिटल साक्षरता आणि ई-कॉमर्स प्रशिक्षणावर विशेष भर द्यावा.

3)नाविन्यपूर्ण कल्पनांना प्रोत्साहन देण्यासाठी शासनाने विशेष अनुदान व प्रोत्साहन योजना राबवाव्यात.
ग्रामीण व अर्धशहरी भागात मोबाइल प्रशिक्षण शिबिरे आयोजित करावीत.

4)महिला उद्योजकांसाठी सुलभ कर्जप्रक्रिया आणि आर्थिक सल्लामसलत सुविधा उपलब्ध कराव्यात.
यशस्वी महिला उद्योजकांच्या अनुभवांचे मार्गदर्शन सत्र (Mentorship Program) आयोजित करावे.

5)स्वयं-सहायता गट आणि उद्योगसंस्था यांच्यात समन्वय वाढवून नेटवर्किंगची संधी उपलब्ध करावी.

6)स्थानिक बाजारपेठेबरोबर राष्ट्रीय आणि आंतरराष्ट्रीय बाजारपेठेतील संधींबाबत जागरूकता निर्माण करावी.

याप्रमाणे योग्य नियोजन, प्रशिक्षण आणि नाविन्यपूर्ण दृष्टिकोन यांच्या साहाय्याने महिला उद्योजकता अधिक सक्षम, टिकाऊ आणि प्रभावी होऊ शकते.

- **सारांश** :-

महिला उद्योजकतेच्या यशामध्ये कौशल्य विकास प्रशिक्षण आणि नाविन्य यांची अत्यंत महत्त्वाची भूमिका आहे. योग्य तांत्रिक, व्यवस्थापन व डिजिटल कौशल्यांमुळे महिला व्यवसाय अधिक प्रभावीपणे चालवू शकतात. नाविन्यपूर्ण कल्पना आणि आधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर केल्यास बाजारपेठेत स्पर्धात्मक लाभ मिळतो. कौशल्य आणि नाविन्य यांच्या समन्वयामुळे व्यवसायाचा विस्तार, टिकाव आणि नफा वाढतो. यामुळे महिला आर्थिकदृष्ट्या स्वावलंबी होऊन समाजाच्या विकासात मोलाचे योगदान देतात.

- **संदर्भग्रंथसूची (Bibliography)**

1)जैन, पी. सी. (2012). Entrepreneurship Development. नवी दिल्ली : हिमालय पब्लिशिंग हाऊस.

2)पाटील, शंकरराव, (2015). उद्योजकता विकास, निराली प्रकाशन, पुणे (2012).

3)देशपांडे, सुमन, महिला सक्षमीकरण आणि उद्योजकता, मुंबई, ग्रंथाली प्रकाशन, मुंबई

4)भारत सरकार, कौशल्य विकास आणि उद्योजकता मंत्रालय. (2023). प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजना (PMKVY) – वार्षिक अहवाल. नवी दिल्ली : भारत सरकार प्रकाशन,(2018).

5)सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योग मंत्रालय (MSME). (2022). महिला उद्योजकता विकास अहवाल. नवी दिल्ली, भारत सरकार.

6)Government of India, ministry of Textile, Office Development Commissioner (Handicraft)

Three Days Craft Demonstration cum awareness program, Development commissioner handicraft ministry of textile Government of India,14 NOV 2024, Shri Saibaba college Shirdi.

7)महिला आर्थिक विकास महामंडळ (MAVIM), महाराष्ट्र राज्य. (2023). वार्षिक अहवाल. मुंबई : महाराष्ट्र शासन.

7)रिझर्व्ह बँक ऑफ इंडिया (RBI). (2022). लघुउद्योग व महिला उद्योजक कर्ज योजना अहवाल. मुंबई : RBI प्रकाशन विभाग.

8)विविध संशोधन लेख – Indian Journal of Entrepreneurship, Economic and Political Weekly मधील महिला उद्योजकता विषयक लेख.

# मुलींसाठी नवीन शैक्षणिक धोरण आणि कौशल्य विकास : एक ऐतिहासिक मीमांसा

**डॉ. अनिता व्यंकटराव शिंदे**
उपप्राचार्य तथा इतिहास विभाग प्रमुख
सौ. के. एस. के. महाविद्यालय, बीड
संपर्क : 7278305050

**सारांश (Abstract)**

भारताच्या शैक्षणिक इतिहासात मुलींच्या शिक्षणाचा प्रश्न हा केवळ शैक्षणिक नसून सामाजिक, आर्थिक, राजकीय आणि सांस्कृतिक परिवर्तनाचा केंद्रबिंदू राहिला आहे. प्राचीन काळातील गार्गी, मैत्रेयी यांच्या विदुषी परंपरेपासून ते सावित्रीबाई फुले यांच्या ऐतिहासिक संघर्षापर्यंत आणि तेथून राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण २०२० (NEP 2020) पर्यंतचा प्रवास हा मुलींच्या शैक्षणिक अधिकारांच्या संघर्षाची गाथा आहे. या शोधनिबंधात मुलींच्या शिक्षणाचा ऐतिहासिक आढावा घेताना NEP 2020 मध्ये मुलींसाठी असलेल्या तरतुदी, कौशल्य विकासाच्या संधी आणि या धोरणाच्या अंमलबजावणीतील आव्हाने यांचे सखोल विश्लेषण केले आहे. भारतीय संदर्भात विशेषतः ग्रामीण, दलित, आदिवासी आणि अल्पसंख्याक समुदायातील मुलींच्या शैक्षणिक वास्तवाची तपासणी करताना ऐतिहासिक मीमांसेच्या (Historical Analysis) दृष्टिकोनातून या धोरणाचे मूल्यमापन करण्यात आले आहे.

## १. प्रस्तावना

'जेव्हा तुम्ही एका पुरुषाला शिक्षण देता तेव्हा तुम्ही एका व्यक्तीला शिक्षण देता, परंतु जेव्हा तुम्ही एका स्त्रीला शिक्षण देता तेव्हा तुम्ही संपूर्ण कुटुंबाला शिक्षण देता' — ही उक्ती आज जगभरात मान्य झाली आहे. मात्र हे सत्य प्रत्यक्ष धोरणात आणि सामाजिक व्यवहारात उतरविण्यासाठी भारताला शतकानुशतके संघर्ष करावा लागला आहे. भारतीय इतिहासात स्त्री-शिक्षणाचे प्रश्न हे नेहमीच सामाजिक सत्तासंघर्षाशी जोडलेले राहिले आहेत. पितृसत्ताक व्यवस्थेने, जातिव्यवस्थेने आणि वसाहतवादाने मुलींच्या शिक्षणाला वेगवेगळ्या प्रकारे मर्यादित केले. स्वातंत्र्यानंतर भारताने अनेक शैक्षणिक धोरणे राबवली, परंतु लिंग-समानतेच्या दृष्टीने अपेक्षित परिणाम साध्य होण्यासाठी दीर्घकाळ लागला. राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण २०२० (National Education Policy 2020) हे भारताच्या शैक्षणिक इतिहासातील एक महत्त्वपूर्ण वळण आहे. तब्बल ३४ वर्षांनंतर आलेले हे नवे धोरण मुलींच्या शिक्षणाला, कौशल्य विकासाला आणि सर्वसमावेशक

शिक्षणाला नव्या दृष्टीने संबोधित करते. मात्र कोणत्याही धोरणाची परिणामकारकता समजण्यासाठी त्याच्या ऐतिहासिक संदर्भाचे आकलन अत्यावश्यक आहे.

## २. संशोधनाची उद्दिष्टे

१. भारतात मुलींच्या शिक्षणाचा ऐतिहासिक विकास समजून घेणे.

२. स्वातंत्र्यपूर्व आणि स्वातंत्र्योत्तर काळातील शैक्षणिक धोरणांचे विश्लेषण करणे.

३. NEP 2020 मधील मुलींसाठीच्या विशेष तरतुदी आणि कौशल्य विकास योजनांचे परीक्षण करणे.

४. महाराष्ट्र आणि मराठवाड्याच्या संदर्भात मुलींच्या शैक्षणिक वास्तवाचे आकलन करणे.

५. NEP 2020 च्या अंमलबजावणीतील संधी आणि आव्हाने ओळखणे.

## ३. संशोधन पद्धती

हा शोधनिबंध ऐतिहासिक विश्लेषण पद्धती (Historical Analysis Method), दस्तावेज विश्लेषण (Document Analysis), तुलनात्मक पद्धत (Comparative Method) आणि आंतरशाखीय दृष्टिकोन (Interdisciplinary Approach) यांच्यावर आधारित आहे. सरकारी अहवाल, शैक्षणिक आयोगांचे दस्तावेज, ASER अहवाल, NFHS-5 डेटा, Census 2011 आणि विविध विद्वानांच्या संशोधनांचा आधार घेतला आहे.

## ४. ऐतिहासिक मीमांसा : मुलींच्या शिक्षणाचा इतिहास

### ४.१ प्राचीन भारतात स्त्री-शिक्षण (इ.स.पू. १५०० ते इ.स. ६००)

ऋग्वेदिक काळात स्त्री-शिक्षण अस्तित्वात होते याचे पुरावे आहेत. गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, अपाला, विश्ववारा, घोषा यांसारख्या विदुषींनी वेदमंत्रांची रचना केली आणि तात्त्विक वादविवादात भाग घेतला. याज्ञवल्क्य-गार्गी संवाद हा भारतीय तत्त्वज्ञानाच्या इतिहासातील सर्वात प्रसिद्ध बौद्धिक वाद म्हणून ओळखला जातो, ज्यात गार्गीने ऋषी याज्ञवल्क्याला कठीण प्रश्न विचारले. उपनिषद काळात 'ब्रह्मवादिनी' आणि 'सद्योवधू' असे दोन प्रकार होते — ब्रह्मवादिनी स्त्रिया आजन्म शिक्षण आणि अध्यापन करत, तर सद्योवधू विवाहापर्यंत शिक्षण घेत. बौद्ध काळात (इ.स.पू. ५०० ते इ.स. २०० पर्यंत) थेरीगाथा या ग्रंथात ७३ बौद्ध भिक्खुणींनी रचलेल्या गाथा आहेत, ज्या त्यांच्या शैक्षणिक आणि आध्यात्मिक उन्नतीचे प्रमाण देतात. अंबपाली, खेमा, धम्मदिन्ना यांसारख्या विदुषी बौद्ध भिक्खुणी शिक्षण देत असत. जैन परंपरेतही स्त्री-शिक्षणाला मान्यता होती. नालंदा आणि तक्षशिला विद्यापीठांत काही स्त्रिया अध्ययन करत असत. मात्र हळूहळू स्मृती काळात स्थिती बदलली. मनुस्मृती आणि अन्य स्मृतिग्रंथांनी स्त्री-शिक्षणावर बंधने घातली.

उपनयन संस्कार (पवित्र धाग्याची परंपरा) स्त्रियांना नाकारला गेला, ज्यामुळे त्यांना वेदाध्ययनाचा अधिकार गेला. बालविवाहाच्या प्रथेमुळे मुलींना शिक्षण घेण्यासाठी वेळच मिळेनासा झाला.

**४.२ मध्ययुगीन काळात स्त्री-शिक्षण (इ.स. ७०० ते इ.स. १७५०)**

मध्ययुगीन भारतात स्त्री-शिक्षणाची स्थिती मोठ्या प्रमाणात ढासळली. सुलतानशाहीच्या काळात पडदा पद्धत, बालविवाह आणि सती प्रथा यांमुळे मुलींच्या शिक्षणावर विपरीत परिणाम झाला. मात्र या काळातही काही उल्लेखनीय अपवाद होते. मुघल काळात बेगम समरू, जहांआरा बेगम, झेब-उन-निस्सा या शिकलेल्या आणि काव्यरचना करणाऱ्या होत्या. चोल, विजयनगर आणि मराठा साम्राज्यात काही स्त्रियांनी प्रशासन, युद्धकला आणि साहित्यात योगदान दिले. भक्ती चळवळीने (इ.स. १२०० ते १७००) स्त्रियांना धार्मिक अभिव्यक्तीसाठी एक मंच दिला. मीराबाई, अक्काशहाणेम्माय (कर्नाटक), जनाबाई, मुक्ताबाई (महाराष्ट्र), आंडाळ (तमिळनाडू) यांच्या साहित्यकृती मध्ययुगीन स्त्री-विचारांचा अनमोल वारसा आहेत. परंतु हे शिक्षण औपचारिक आणि व्यापक नव्हते, तर वैयक्तिक आणि धार्मिक स्वरूपाचे होते.

**४.३ वसाहतकालीन भारत आणि स्त्री-शिक्षणाची लढाई (इ.स. १७५७ ते १९४७)**

ब्रिटिश वसाहतवादाच्या काळात स्त्री-शिक्षणाचे प्रश्न अत्यंत गुंतागुंतीचे झाले. एकीकडे ब्रिटिश धोरणांनी काही प्रमाणात स्त्री-शिक्षणाला प्रोत्साहन दिले, तर दुसरीकडे वसाहतवादाने 'भारतीय स्त्रीचे रक्षण करण्याचे' निमित्त सांगून आपल्या साम्राज्यवादी हस्तक्षेपाला वैधता दिली.

**चार्ल्स वुडचा शैक्षणिक आदेश (१८५४) :** 'Wood's Despatch' म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या या आदेशाने भारतात सार्वजनिक शिक्षण व्यवस्थेचा पाया घातला. त्यात स्त्री-शिक्षणाचाही उल्लेख होता, परंतु प्रत्यक्षात त्याची अंमलबजावणी नगण्य होती.

**हंटर आयोग (१८८२) :** या आयोगाने भारतात प्राथमिक शिक्षणाच्या व्यापकीकरणावर भर दिला आणि स्त्री-शिक्षणाची गरज मान्य केली. मात्र आर्थिक तरतुदी अपुऱ्या राहिल्या.

**महिला क्रांती — ज्योतिबा आणि सावित्रीबाई फुले :** भारताच्या शैक्षणिक इतिहासातील सर्वात क्रांतिकारी घटना म्हणजे १ जानेवारी १८४८ रोजी पुण्यात ज्योतिबा फुले आणि सावित्रीबाई फुले यांनी सुरू केलेली मुलींसाठीची पहिली शाळा. या घटनेचे महत्त्व अनेक कारणांसाठी आहे. ही शाळा एका बहुजन जोडप्याने सुरू केली होती. सावित्रीबाई फुले या स्वतः त्या शाळेत शिकवत होत्या. शाळेत सर्व जातींच्या मुलींना प्रवेश होता. समाजाच्या तीव्र विरोधाला, शेणाच्या आणि चिखलाच्या गोळ्यांना तोंड देऊन सावित्रीबाई शाळेत जात राहिल्या.

ज्योतिबा फुले यांनी 'सत्यशोधक समाज' (१८७३) च्या माध्यमातून बहुजन समाजात शिक्षणाचा प्रसार केला. त्यांनी 'गुलामगिरी' (१८७३) आणि 'स्त्रीपुरुष तुलना' सारख्या ग्रंथांतून पितृसत्ता आणि जातिव्यवस्थेविरुद्ध प्रखर विचार मांडले. पंडिता रमाबाई यांनी 'शारदासदन' (१८८९) स्थापन करून विधवा आणि पीडित स्त्रियांसाठी शिक्षण आणि पुनर्वसनाचे कार्य केले.

**महर्षी धोंडो केशव कर्वे (१८५८-१९६२) :** कर्वे यांनी १८९३ मध्ये विधवाविवाह केला आणि विधवा स्त्रियांच्या शिक्षणासाठी 'विधवाविवाहोत्तेजक मंडळी' स्थापन केली. १९०७ मध्ये 'महिला विद्यालय' आणि १९१६ मध्ये 'श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विद्यापीठ' (SNDT) स्थापन केले, जे आशियातील पहिले महिला विद्यापीठ होते.

**राष्ट्रीय चळवळ आणि स्त्री-शिक्षण :** महात्मा गांधींनी स्त्री-शिक्षणाचे महत्त्व मान्य केले, मात्र त्यांच्या 'नई तालीम' (Basic Education) संकल्पनेत स्त्रियांना पारंपरिक भूमिकांमध्येच पाहिले गेले. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी मात्र 'शिका, संघटित व्हा, संघर्ष करा' हे सूत्र देऊन दलित स्त्रियांना उच्च शिक्षणाची प्रेरणा दिली. १९२७ मध्ये 'बहिष्कृत भारत' या पत्रात त्यांनी स्त्री-शिक्षणावर विशेष लेख लिहिले.

**४.४ स्वातंत्र्योत्तर भारत : शैक्षणिक धोरणांचा आढावा (१९४७ ते २०२०)**

**भारतीय संविधान आणि शैक्षणिक हक्क :** डॉ. आंबेडकरांनी तयार केलेल्या संविधानाने अनुच्छेद १४ (समानतेचा हक्क), अनुच्छेद १५ (भेदभाव विरोध), अनुच्छेद २१ (जगण्याचा हक्क), अनुच्छेद ४५ (सक्तीचे मोफत प्राथमिक शिक्षण), अनुच्छेद ४६ (अनुसूचित जाती-जमाती आणि दुर्बल घटकांच्या शैक्षणिक हिताचे संरक्षण) या तरतुदींद्वारे सर्व मुलांसाठी, विशेषतः वंचित मुलींसाठी, शैक्षणिक समानतेचा पाया घातला.

**कोठारी आयोग (१९६४-६६) :** 'Education and National Development' हा आयोगाचा अहवाल भारताच्या शैक्षणिक इतिहासातील मैलाचा दगड मानला जातो. या आयोगाने स्त्री-शिक्षणाच्या प्रसारासाठी विशेष उपाययोजना सुचवल्या. GDP च्या ६% रक्कम शिक्षणावर खर्च करण्याची शिफारस केली. '10+2+3' ही शैक्षणिक रचना सुचवली.

**राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण १९८६ आणि १९९२ :** या धोरणाने 'Mahila Samakhya' कार्यक्रम सुरू केला, ज्याने ग्रामीण स्त्रियांना शिक्षण, आरोग्य आणि सामाजिक न्याय यांसाठी सक्षम करण्याचा प्रयत्न केला. 'Operation Blackboard' योजनेद्वारे प्राथमिक शाळांमध्ये सुविधा उपलब्ध करण्यात आल्या. 'Navodaya Vidyalaya' संकल्पनेद्वारे प्रतिभावान विद्यार्थ्यांना, मुलींसह, दर्जेदार शिक्षणाची संधी दिली.

**सर्व शिक्षा अभियान (SSA, २०००-०१) आणि राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA, २००९) :** या योजनांनी मुलींच्या नावनोंदणीत लक्षणीय वाढ केली. २०१० मध्ये 'शिक्षणाचा हक्क कायदा' (Right to Education Act, 2009) लागू झाला, ज्याने ६ ते १४ वयोगटातील सर्व मुलांना, विशेषतः मुलींना, मोफत आणि सक्तीच्या शिक्षणाचा हक्क दिला. 'कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालय' योजनेद्वारे अनुसूचित जाती, अनुसूचित जमाती, अन्य मागासवर्गीय आणि अल्पसंख्याक समुदायातील मुलींसाठी निवासी शाळा सुरू केल्या.

## ५. राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण २०२० : एक सखोल विश्लेषण

### ५.१ NEP 2020 ची पार्श्वभूमी आणि निर्मिती

K. कस्तुरीरंगन यांच्या अध्यक्षतेखाली तयार करण्यात आलेले राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण २०२० हे भारताच्या शैक्षणिक इतिहासातील सर्वाधिक व्यापक धोरण आहे. तब्बल ३४ वर्षांनंतर — NEP 1986 नंतर — आलेले हे नवे धोरण २१व्या शतकातील गरजांना अनुसरून शिक्षण व्यवस्था पुनर्रचित करण्याचा प्रयत्न आहे. हे धोरण ५+३+३+४ अशी नवी शैक्षणिक रचना प्रस्तावित करते, जी मुलांच्या विकासाच्या वेगवेगळ्या टप्प्यांशी सुसंगत आहे.

### ५.२ NEP 2020 आणि मुलींच्या शिक्षणासाठी विशेष तरतुदी

**लिंग समावेशन निधी (Gender Inclusion Fund) :** NEP 2020 मध्ये 'Gender Inclusion Fund' (लिंग समावेशन निधी) ची विशेष तरतूद आहे. हा निधी सामाजिक-आर्थिकदृष्ट्या वंचित मुलींच्या शिक्षणासाठी, विशेषतः ट्रान्सजेंडर विद्यार्थ्यांसह, वापरला जाईल. या निधीद्वारे सुरक्षित शाळा वातावरण, मुलींसाठी स्वच्छतागृहे, सायकल आणि शिष्यवृत्ती दिल्या जातील.

**सर्वसमावेशक शिक्षण (Inclusive Education) :** NEP 2020 विशेष गरजा असलेल्या मुलींसाठी (CWSN - Children With Special Needs), अनुसूचित जाती-जमाती, OBC, अल्पसंख्याक आणि ट्रांसजेंडर मुलींसाठी विशेष उपाययोजना सुचवते. 'Socially and Economically Disadvantaged Groups (SEDGs)' ही संकल्पना मांडून वंचित गटांच्या शिक्षणाला प्राधान्य दिले आहे.

**बालपण काळजी आणि शिक्षण (ECCE - Early Childhood Care and Education) :** NEP 2020 मध्ये ३ ते ६ वयोगटातील बालकांसाठी ECCE चा समावेश शालेय शिक्षणात केला आहे. यामुळे ग्रामीण भागातील मुलींना, जिथे Anganwadi सेवा अपुऱ्या आहेत, त्यांना शिक्षणाचा आधार

मिळेल. ECCE अभ्यासक्रम विकसित करताना लिंगसंवेदनशीलता (Gender Sensitization) ला महत्त्व दिले आहे.

**शालाबाह्य मुलींसाठी पर्यायी शिक्षण :** NEP 2020 ने 'Open and Distance Learning (ODL)' आणि 'National Open Schooling (NIOS)' यांच्या माध्यमातून शालाबाह्य मुलींना शिक्षण प्रवाहात आणण्याचे लक्ष्य ठेवले आहे. Online courses, digital libraries आणि community-based programs यांद्वारे वंचित मुलींपर्यंत शिक्षण पोहोचवण्याचा प्रयत्न आहे.

**उच्च शिक्षणात लिंगसमानता :** NEP 2020 ने उच्च शिक्षणाचे Gross Enrollment Ratio (GER) ५०% पर्यंत वाढविण्याचे लक्ष्य ठेवले आहे (सध्या सुमारे २७%). यात मुलींच्या GER मध्ये लक्षणीय वाढ अपेक्षित आहे. 'National Scholarship Portal' च्या माध्यमातून मुलींना अधिक शिष्यवृत्ती उपलब्ध करण्याचे नियोजन आहे.

### ५.३ NEP 2020 आणि कौशल्य विकास (Skill Development)

NEP 2020 चे एक महत्त्वपूर्ण वैशिष्ट्य म्हणजे शालेय स्तरापासून व्यावसायिक शिक्षण आणि कौशल्य विकासावर भर दिला आहे.

**व्यावसायिक शिक्षणाचे एकीकरण (Vocational Education Integration) :** इयत्ता ६ ते १२ पर्यंत व्यावसायिक शिक्षण एकत्रित केले जाईल. इयत्ता ६ पासून Coding, AI, Data Science यांसारख्या आधुनिक विषयांचा समावेश होईल. 'Bagless Days' संकल्पनेद्वारे मुलांना व्यावहारिक कौशल्ये शिकण्याची संधी दिली जाईल. Local vocational experts (सुतार, माळी, मातीकाम करणारे कारागीर) शाळेत येऊन शिकवतील, ज्यामुळे पारंपरिक कौशल्यांचेही जतन होईल.

**मुलींसाठी विशेष कौशल्य विकास कार्यक्रम :** 'Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana (PMKVY)' आणि NEP 2020 यांच्या एकत्रित अंमलबजावणीने मुलींसाठी खालील क्षेत्रांत कौशल्य विकासाच्या संधी उपलब्ध होतील :

**i) डिजिटल कौशल्ये :** Internet literacy, Coding, Digital financial literacy, Social media management, E-commerce

**ii) आरोग्य आणि परिचर्या क्षेत्र :** Nursing, Paramedical, Community Health Worker, Midwifery

**iii) कृषी आणि संलग्न क्षेत्रे** : Organic farming, Food processing, Floriculture, Dairy management

**iv) हस्तकला आणि उद्योजकता** : Handicrafts, Textile design, Jewellery making, Small Business Management

**v) शिक्षण आणि बालसंगोपन** : Preschool teaching, ECCE Training, Special education

**'National Skills Qualifications Framework (NSQF)' आणि मुली** : NEP 2020 ने NSQF शी अभ्यासक्रम जोडला आहे, ज्यामुळे कौशल्य शिक्षणाला शैक्षणिक पात्रतेचा दर्जा मिळेल. यामुळे व्यावसायिक शिक्षण घेतलेल्या मुलींना उच्च शिक्षणात प्रवेश मिळणे सोपे होईल आणि कौशल्य शिक्षण 'कमी दर्जाचे' असल्याचा सामाजिक पूर्वग्रह दूर होण्यास मदत होईल.

**'Multiple Entry and Exit' आणि मुली** : NEP 2020 च्या 'Multiple Entry and Exit' संकल्पनेमुळे मध्येच शिक्षण सोडावे लागलेल्या मुलींना (विवाह, गरोदरपण, कौटुंबिक जबाबदारी यांमुळे) नंतर पुन्हा शिक्षण प्रवाहात येणे शक्य होईल. 'Academic Bank of Credits (ABC)' मुळे मागे मिळवलेले credits जतन राहतील.

## ६. महाराष्ट्र आणि मराठवाड्यातील संदर्भ

### ६.१ मराठवाड्यातील मुलींच्या शिक्षणाची वास्तवता

मराठवाडा हा महाराष्ट्रातील सर्वाधिक मागास विभागांपैकी एक आहे. बीड, लातूर, नांदेड, उस्मानाबाद, परभणी, हिंगोली, जालना आणि औरंगाबाद या जिल्ह्यांमध्ये दुष्काळ, ऊसतोड मजुरांचे स्थलांतर, बालविवाह आणि गरिबी यांमुळे मुलींचे शिक्षण विशेष आव्हानाचे आहे. बीड जिल्ह्याचे उदाहरण विशेष महत्त्वाचे आहे. बीड हे ऊसतोड मजुरांचे प्रमुख जिल्हे म्हणून ओळखले जाते. दरवर्षी ऑक्टोबर ते मार्च या काळात लाखो कुटुंबे स्थलांतरित होतात. या स्थलांतरामुळे मुलींच्या शिक्षणात मोठ्या प्रमाणात व्यत्यय येतो. बालविवाहाचे प्रमाण राज्याच्या सरासरीपेक्षा अधिक आहे. 'साखर शाळा' (School on Wheels) सारख्या उपक्रमांनी या समस्येवर काही प्रमाणात उपाय केला आहे.

### ६.२ महाराष्ट्रातील यशस्वी उपक्रम

**सावित्रीबाई फुले शिष्यवृत्ती योजना** : महाराष्ट्र सरकारने इयत्ता ५ ते ७ मधील SC मुलींसाठी ही शिष्यवृत्ती सुरू केली आहे.

**माझी कन्या भाग्यश्री योजना** : मुलींच्या जन्माला प्रोत्साहन देण्यासाठी आणि त्यांच्या शिक्षणासाठी आर्थिक सहाय्य देणारी ही योजना प्रभावी ठरत आहे.

**डिजिटल शाळा उपक्रम** : महाराष्ट्रातील जिल्हा परिषद शाळांमध्ये डिजिटल शिक्षणाचा प्रसार होत आहे, ज्याचा ग्रामीण मुलींना विशेष फायदा होत आहे.

**'लेक लाडकी' आणि 'बेटी बचाओ बेटी पढाओ'** : या राज्य आणि केंद्र सरकारच्या योजनांनी मुलींच्या शिक्षणाबाबत जागृती वाढविण्यात महत्त्वाची भूमिका बजावली आहे.

## ७. NEP 2020 च्या अंमलबजावणीतील आव्हाने

### ७.१ ऐतिहासिक आव्हाने

भारताचा इतिहास सांगतो की चांगले शैक्षणिक धोरण तयार करणे आणि त्याची प्रभावी अंमलबजावणी करणे यात नेहमीच मोठे अंतर राहिले आहे. कोठारी आयोगाने १९६६ मध्ये GDP च्या ६% शिक्षणावर खर्च करण्याची शिफारस केली होती, परंतु आजही भारत शिक्षणावर GDP च्या अवघ्या ३-४% खर्च करतो. हे ऐतिहासिक उदाहरण NEP 2020 च्या अंमलबजावणीबाबत सावध राहण्याची आवश्यकता दर्शवते.

### ७.२ संरचनात्मक आव्हाने

**शिक्षकांची कमतरता आणि प्रशिक्षण** : ग्रामीण भागात पुरेशा प्रशिक्षित शिक्षकांची उपलब्धता नाही. NEP 2020 ने '४ वर्षांचा Integrated B.Ed.' प्रस्तावित केला आहे, परंतु सध्याच्या शिक्षकांच्या पुनर्प्रशिक्षणाचे आव्हान मोठे आहे.

**पायाभूत सुविधांचा अभाव** : अनेक ग्रामीण शाळांमध्ये मुलींसाठी स्वतंत्र स्वच्छतागृहे नाहीत, जे त्यांच्या गैरहजेरीचे प्रमुख कारण आहे. डिजिटल शिक्षणासाठी इंटरनेट कनेक्टिव्हिटी, वीज आणि उपकरणे यांची तीव्र कमतरता आहे.

**भाषिक आव्हान** : NEP 2020 ने मातृभाषेत शिक्षणावर भर दिला आहे, जे सैद्धांतिकदृष्ट्या योग्य आहे. मात्र बहुभाषिक आणि बहुसांस्कृतिक परिस्थितीत याची अंमलबजावणी जटिल आहे.

### ७.३ सामाजिक-सांस्कृतिक आव्हाने

**बालविवाह** : NFHS-5 (२०१९-२१) नुसार भारतात २०-२४ वयोगटातील २३.३% महिलांचे विवाह अल्पवयीन असताना झाले होते. मराठवाड्यातील काही जिल्ह्यांमध्ये हे प्रमाण राज्याच्या सरासरीपेक्षा अधिक आहे.

**स्थलांतर** : ऊसतोड, बांधकाम आणि विटभट्टी यांसारख्या क्षेत्रांमध्ये स्थलांतरित मजुरांच्या मुलींसाठी शिक्षणाची व्यवस्था करणे हे मोठे आव्हान आहे.

**लिंगरूढ धारणा** : 'मुलींना जास्त शिक्षण नको' ही मानसिकता अजूनही ग्रामीण भागात प्रबळ आहे. मुलींच्या शिक्षणात आर्थिक गुंतवणूक करण्याऐवजी 'लवकर लग्न करणे' हे अनेक कुटुंबांना अधिक व्यावहारिक वाटते.

**डिजिटल विभाजन (Digital Divide)** : COVID-19 महामारीने हे सिद्ध केले की डिजिटल शिक्षणाचा लाभ ग्रामीण, दलित आणि आदिवासी मुलींपर्यंत पोहोचत नाही. ASER 2022 नुसार ग्रामीण भारतातील अनेक मुलींकडे स्मार्टफोन आणि इंटरनेट सुविधा नाही.

**८. शिफारशी आणि उपाययोजना**

ऐतिहासिक मीमांसेच्या आधारावर NEP 2020 च्या प्रभावी अंमलबजावणीसाठी खालील उपाययोजना सुचवण्यात येतात :

**पहिली शिफारस — सावित्रीबाई फुले प्रेरणेचे संस्थात्मकीकरण** : सावित्रीबाई फुले यांच्या कार्याची प्रेरणा घेऊन प्रत्येक तालुका आणि जिल्हा स्तरावर 'मुलींच्या शिक्षणासाठी सामुदायिक समिती' स्थापन कराव्यात. या समित्यांमध्ये महिला प्रतिनिधी, शिक्षक आणि सामाजिक कार्यकर्ते असावेत.

**दुसरी शिफारस — स्थलांतरित मुलींसाठी विशेष व्यवस्था** : 'मोबाइल स्कूल' आणि 'ई-लर्निंग' यांच्या माध्यमातून स्थलांतरित कुटुंबातील मुलींना सतत शिक्षण मिळेल अशी यंत्रणा उभारावी. 'Academic Bank of Credits' चा लाभ अशा मुलींना विशेषतः द्यावा.

**तिसरी शिफारस — बालविवाह प्रतिबंधाशी शिक्षणाची सांगड** : NEP 2020 च्या अंमलबजावणीत बालविवाह प्रतिबंध कायद्याची कठोर अंमलबजावणी एकत्रितपणे करावी. 'मुलगी वाचवा, मुलगी शिकवा' या घोषणेपलीकडे जाऊन मुलींना उच्च शिक्षण आणि रोजगाराची वास्तविक संधी दिली पाहिजे.

**चौथी शिफारस — लिंगसंवेदनशील अभ्यासक्रम** : NEP 2020 च्या अंमलबजावणीत सर्व पातळ्यांवरचे अभ्यासक्रम लिंगसंवेदनशील (Gender Sensitive) बनवावेत. पाठ्यपुस्तकांमधून स्त्रीच्या रूढ प्रतिमा (stereotypes) काढून टाकाव्यात आणि वीरांगना, शास्त्रज्ञ, उद्योजिका अशा सशक्त स्त्री व्यक्तिमत्त्वांचा समावेश करावा.

**पाचवी शिफारस — आर्थिक तरतुदी वाढवाव्यात :** GDP च्या ६% शिक्षणावर खर्च करण्याची NEP 2020 ची घोषणा प्रत्यक्षात आणण्यासाठी ठोस कालबद्ध कार्यक्रम आखावा. Gender Inclusion Fund साठी पुरेसा निधी उपलब्ध करावा.

## ९. निष्कर्ष

भारताच्या मुलींच्या शिक्षणाचा इतिहास हा एका बाजूने संघर्षाचा आणि दुसऱ्या बाजूने आशेचा इतिहास आहे. गार्गीने याज्ञवल्क्याशी केलेल्या तात्त्विक वादापासून ते सावित्रीबाई फुले यांनी शेणाचा मार खात उभारलेल्या शाळेपर्यंत आणि तेथून NEP 2020 मधील Gender Inclusion Fund पर्यंत हा प्रवास खडतर पण दिशादायी आहे.

ऐतिहासिक मीमांसेतून हे स्पष्ट होते की मुलींच्या शिक्षणाची समस्या केवळ शैक्षणिक नसून ती सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आणि राजकीय आहे. NEP 2020 हे एक महत्त्वाकांक्षी आणि दूरदर्शी धोरण आहे, परंतु त्याची परिणामकारकता ही त्याच्या अंमलबजावणीच्या दर्जावर अवलंबून आहे.

सावित्रीबाई फुले यांचे शब्द आजही प्रेरणादायी आहेत : 'जा, जा, मुली शाळेत जा!' हा संदेश NEP 2020 ने केवळ घोषणेत नव्हे तर प्रत्येक ग्रामीण शाळेत, प्रत्येक वंचित मुलीच्या जीवनात प्रत्यक्षात उतरवणे हे आजच्या काळाची सर्वात महत्त्वाची गरज आहे.

जेव्हा भारतातील शेवटची मुलगी — मग ती दलित असो, आदिवासी असो, ऊसतोड मजुराची मुलगी असो किंवा अपंग असो — शिक्षणाच्या मुख्य प्रवाहात येईल, तेव्हाच NEP 2020 चे यश खऱ्या अर्थाने साजरे करता येईल. ती वेळ लवकर यावी यासाठी ऐतिहासिक जाणीव, राजकीय इच्छाशक्ती आणि सामाजिक बांधिलकी या तिन्हींची एकत्रित आवश्यकता आहे.

## संदर्भ ग्रंथसूची

१. Ministry of Education, Government of India (२०२०). National Education Policy २०२०. New Delhi: MoE.

२. Kothari Commission (१९६४-६६). Education and National Development: Report of the Education Commission. New Delhi: MHRD.

३. ASER Centre (२०२२). Annual Status of Education Report (Rural) २०२२. New Delhi: ASER Centre.

४. Ministry of Health and Family Welfare (२०२१). National Family Health Survey (NFHS-५), २०१९-२१. New Delhi: Government of India.

५. Karve, D.K. (१९३६). Looking Back. Pune: Hindustan Publishing Press.

६. Phule, Jyotirao (१८७३). Gulamgiri (Slavery). Pune: Jyotiba Phule.

७. Ambedkar, B.R. (१९३६). Annihilation of Caste. Bombay: Self Published.

८. Kumar, Krishna (२००५). Political Agenda of Education: A Study of Colonialist and Nationalist Ideas. New Delhi: Sage Publications.

९. Chanana, Karuna (२००४). Globalisation, Higher Education Policies and Gender: Issues of Access, Equity and Participation. Indian Journal of Gender Studies, ११(२), १३१-१६५.

१०. Deshpande, Satish (२०१३). Caste and Castelessness. New Delhi: Economic and Political Weekly.

११. Nambissan, Geetha B. (२०१०). Exclusion and Discrimination in Schools: Experiences of Dalit Children. Working Paper Series, Indian Institute of Dalit Studies, Vol. १.

१२. Sahoo, Sarbeswar (२०१३). Civil Society and Democratisation in India. Sociology and Social Policy, ३३(१), ३३-५०.

१३. Thorat, Sukhadeo and Umakant (Eds.) (२००४). Caste, Race and Discrimination: Discourses in International Context. Jaipur: Rawat Publications.

१४. UNESCO (२०२०). Global Education Monitoring Report: Inclusion and Education. Paris: UNESCO.

१५. Wazir, Rekha (Ed.) (२०००). The Gender Gap in Basic Education: NGOs as Change Agents. New Delhi: Sage Publications.

१६. महाराष्ट्र शासन (2023). राज्य शैक्षणिक वार्षिक अहवाल. मुंबई : शिक्षण विभाग.

१७. राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA) (2018). Higher Education in Maharashtra: Progress Report. मुंबई.

१८. Skill India Mission, MSDE (२०२२). Annual Report २०२१-२२. New Delhi: Ministry of Skill Development and Entrepreneurship.

१९. UNICEF India (२०१९). Girls' Education in India: Progress and Challenges. New Delhi: UNICEF.

# लघु उद्योगांमध्ये महिलांचे योगदान

**डॉ. सुनिता अंबादास बोराडे**
सहाय्यक प्राध्यापक, मराठी विभाग
बलभीम महाविद्यालय बीड
मो. 7020616414

**वार नाही तलवार आहे,**

**ती समशेरीची धार आहे...**

**स्त्री म्हणजे अबला नाही,**

**ती तर धगधगता अंगार आहे.**

स्त्री शिकली आणि प्रगती झाली. या उक्तिप्रमाणे आज आपणाला स्त्री प्रत्येक क्षेत्रामध्ये काम करताना दिसत आहे. कुठले असे क्षेत्र उरलेले नाही की ज्यामध्ये स्त्रियांचा सहभाग नाही. नोकरी क्षेत्रामध्ये जशा महिला अग्रेसर आहेत. त्याचप्रमाणे अनेक प्रकारच्या व्यवसायामध्येही महिला काम करताना दिसून येतात.

महात्मा ज्योतिराव फुले आणि क्रांतीज्योती सावित्रीबाई फुले यांनी मुलींची पहिली शाळा 1 जानेवारी 1848 रोजी पुण्यात (भिडे वाडा) या ठिकाणी मुलींची पहिली शाळा काढली. आणि स्त्री शिक्षणाचा पाया रोवला गेला. स्त्रियांसाठी शिक्षणाची दारे खुली झाली. भिडे वाड्यात शिक्षणासाठी येणाऱ्या मुली ह्या केवळ तीन-चारच होत्या पण आज जर आपण पाहिलं तर त्याचं रूपांतर मोठ्या वटवृक्षात झालेला आहे. प्रत्येक महिला शिकू लागलेली आहे. आज महिला प्रत्येक क्षेत्रामध्ये काम करताना दिसत आहेत. अगदी पुरुषांच्या बरोबरीने स्त्रिया काम करू लागलेले आहेत.

स्त्री अबला नाही तर, ती देखील प्रत्येक क्षेत्रात काम करू शकते. काही महिला नोकरी मधून करिअर करतात तर काही आपले करिअर हे व्यवसायातून करतात. आज ग्रामीण शहरी भागातील स्त्रिया देखील लघुउद्योगाच्या माध्यमातून आपला ठसा समाजामध्ये कोरत आहेत. लघुउद्योगांमध्ये महिलांचे योगदान अनन्य साधारण असून भारतात 70% कामगार शक्तीचे प्रतिनिधित्व महिला करत आहेत.

**लघुउद्योग :**

लघुउद्योग म्हणजे असे व्यवसाय जे मर्यादित भांडवल, कमी कर्मचारी आणि स्थानिक संसाधनाचा वापर करून लहान स्तरावर वस्तूचे उत्पादन करतात. हे उद्योग अर्थ-स्वयंचलित मशिनरी वापरतात. आणि देशाच्या रोजगार निर्मिती व आर्थिक विकासात महत्त्वाची भूमिका बजावतात.

**लघु उद्योगाची व्याख्या:**

१) नवीन MSME व्याख्येनुसार ज्या उद्योगात यंत्रसामग्री किंवा उपकरणांमध्ये गुंतवणूक 10 कोटीपेक्षा कमी आणि उलाढाल 50 कोटीपेक्षा कमी आहे अशा उद्योगांना लघु उद्योग म्हणतात.

2) लघुउद्योग म्हणजे मर्यादित भांडवल , कमी मजूर आणि लहान यंत्रसामग्री वापरू वस्तूचे उत्पादन किंवा सेवा पुरविणारे छोटे व्यवसाय होय. हे सहसा स्थानिक गरजा पूर्ण करतात.

3) महिला लघुउद्योगांमध्ये अगदी १० हजारापासून देखील व्यवसायाला सुरुवात करता येते.

लघुउद्योग भारतीय अर्थव्यवस्थेचा कणा मानला जातो.लघु उद्योगांमध्ये महिलांचे योगदान अनन्य साधारण आहे. महिला बचत गट गृह उद्योग यामध्ये हस्तकला शिवणकाम दुग्ध व्यवसाय आणि अन्नप्रक्रिया क्षेत्रात महिला सक्रिय भूमिका बजावत आहेत. बचत गट, कृषी पूरक उद्योगाद्वारे महिला आर्थिक सक्षमीकरण, गरीबी निर्मूलन आणि देशाच्या आर्थिक विकासात (GDP मध्ये 8% वाटा) महत्त्वाची भूमिका बजावत आहेत. हे योगदान केवळ आर्थिक उत्पादनामध्ये भर घालत नाही तर, ग्रामीण महिला स्वावलंबी होणे त्यांच्या सक्षमीकरणात मदत करत आहे.

**लघु उद्योगांमध्ये यशस्वी महिला:**

लघुउद्योगामधून यशस्वी झालेल्या काही महिलांची आपण माहिती पाहू

1) कल्पना सरोज यांचे नाव घ्यावे लागेल ती छोट्या व्यवसायातून सुरुवात करून त्यांनी kamani Tubes कंपनी पुन्हा उभी केली आणि त्याच्या अध्यक्ष बनले अगदी गरिबी परिस्थिती त्यांनी व्यवसायाला सुरुवात केली नंतर मोठे उद्योजक बनल्या त्यासाठी त्यांना 2013 चा पद्मश्री पुरस्कार मिळालेला आहे.

2) जयंती कटाळे यांनीही अगदी घरातून आपला व्यवसाय सुरू केला होता पण आज

त्या प्रसिद्ध पूर्णब्रह्म रेस्टॉरंटच्या संस्थापक आहेत. अस्सल महाराष्ट्रीयन जेवणासाठी विशेषतः पुरणपोळीसाठी ओळखल्या जातात. साध्या घरगुती जेवणापासून सुरुवात करून ही महिला त्यामध्ये करिअर करू शकते. लघु उद्योगाच्या माध्यमातून महिला आपल्या आवडत्या विषयावर आधारित करिअर करू शकल्या.

3) लंडनच्या आजीबाई (राधाबाई बनारसे)

1950 ते 70 चा दशकात इंग्लंड मध्ये राहणाऱ्या मराठी लोकांच्या मायेची सावली होत्या . अशिक्षित असूनही त्यांनी लंडनमध्ये हॉटेल व्यवसायातून कोट्यावधीची माया उभी केली. त्यांना मराठी जेवणाची आवड होती लंडनमध्ये शिक्षण नोकरीसाठी राहणाऱ्या भारतीय लोकांना त्यांनी महाराष्ट्रीयन जेवण दिले. त्यांची लंडनची भाकरी प्रसिद्ध होती.

5. लघुउद्योग, घरगुती उद्योगाच्या माध्यमातून अशा अनेक यशस्वी स्त्रियांची उदाहरणे आपल्याला देता येथील.

**लघु उद्योगांमध्ये महिलांच्या योगदानाची वैशिष्ट्ये :**

1) **आर्थिक विकास:**

महिला आज स्वावलंबी बनत आहे मग त्या ग्रामीण असो अथवा शहरी आता त्या पुरुषावरती आर्थिक बोज नाहीत. पुरुषांच्या बरोबरीने त्या काम करू लागल्या आहेत त्या घराला हातभार लावतात. त्यामुळे कुटुंबाची आर्थिक स्थिती सुधारलेली आहे. कुटुंबातील आर्थिक निर्णय महिला घेऊ शकते त्यामुळे कुटुंबाचा आर्थिक दर्जा उंचावलेला आहे.

2) **रोजगार निर्मिती:**

महिला उद्योजिका या केवळ स्वतःसाठीच रोजगाराची निर्मिती करतात असे नाही तर, इतरांसाठी ही त्या रोजगाराच्या संधी निर्माण करतात. स्थानिक पातळीवर इतर गोरगरीब महिलांसाठी तसेच पुरुषांसाठी रोजगाराच्या संधी निर्माण करतात. काम करणाऱ्या हातांना रोजगाराच्या संधी मिळाल्यामुळे महिला उद्योजकावर कोलंबून असणाऱ्या स्त्रियांनाही हाताला काम मिळाल्यामुळे त्यांचीही जीवनमान उंचावले.

3) **ग्रामीण विकास**

शहरांच्या तुलनेमध्ये आज खेडी देखील विकसित झालेली आहेत. महिला बचत गटाच्या माध्यमातून कर्ज घेऊन महिलांना वेगवेगळे व्यवसाय करण्यासाठी संधी मिळत आहे. यामध्ये दुग्ध व्यवसाय, शिवणकाम , शेळीपालन, कुटीर उद्योग, गृह उद्योगांमध्ये, पापड-लोणचे करण्याचा उद्योग, मसाले, कुरड्या पापड्या चटण्या करून विकणे अशा प्रकारच्या गृह उद्योग मधून महिला स्वावलंबी बनत आहे यामुळे ग्रामीण भागातील आर्थिक स्थर उंचावलेला आहे. यामुळे ग्रामीण भागाच्या विकासाला गती मिळालेली आहे. भारत हा खेड्यांचा देश आहे खेडी सुधारली तर देशाचा विकास नक्कीच होणार आहे.

4) **सामाजिक बदल आणि निर्णय क्षमता:**

पूर्वीच्या काळी स्त्रिया अशिक्षित होत्या त्यामुळे कुटुंबातील पुरुषावर अवलंबून राहत होत्या पण आज तसे नाही. आज स्त्रिया स्वतःचे निर्णय स्वतः घेत आहेत. लघुउद्योग व गृह उद्योगामुळे महिलांच्या स्थितीत बदल झालेला आहे आर्थिक स्वावलंबनामुळे कुटुंबातील आणि समाजातील त्यांची निर्णय क्षमता वाढलेली आहे. कुटुंबातील कोणताही निर्णय महिला घेऊ शकतात मग तो आर्थिक असो, शैक्षणिक असो, खानपान विषयी असो कुटुंबातील कोणतेही निर्णय महिला घेऊ लागल्या त्यामुळे समाजातही त्यांची प्रतिष्ठा वाढलेली आहे. पुरुषांच्या बरोबरीने कुटुंबामध्ये स्त्री आपली जागा निर्माण करत आहे.

5) **नाविन्यपूर्ण कल्पना:**

आजच्या ग्रामीण भागातील स्त्रिया देखील नवनवीन नावीन्यपूर्ण कल्पना करत आहेत. पारंपारिक पद्धतीच्या कामातूनच नव्हे तर आधुनिक लघु उद्योगांमध्ये देखील नवनवीन कल्पना करत आहे यामध्ये फॅशन डिझायनिंग, आयटी सेवा, सेंद्रिय शेती, आणि ई-कॉमर्स यासारख्या आधुनिक उद्योगांमधूनही त्या यशस्वी वाटचाल करत आहेत.

6) **महिला सक्षमीकरण:**

लघु उद्योगाच्या माध्यमातून महिलांचे सक्षमीकरण झालेली आहे. महिला कमावती असल्यामुळे स्वतःच्या पायावर उभी राहून ती स्वतःची निर्णय स्वतः घेऊ शकते यासाठी तिला कोणावर अवलंबून राहण्याची गरज नाही. स्त्री सक्षमीकरणामुळे स्त्रियांचे जीवनमान उंचावलेली आहे. कुटुंबात समाजात ती ताठ मानेने वावरत आहे.

एकंदर महिलांनी लघुउद्योग गृह उद्योगाच्या माध्यमातून आपले जीवनमान उंचावलेली आहे. त्या कोणावरही बोज न राहता. सक्षम नागरिक म्हणून समाजामध्ये आपली जागा निर्माण करत आहेत.

**संदर्भ ग्रंथ :**

1) 50 लघु व घरगुती उद्योग, श्रीकांत आव्हाड उद्योजक मित्र प्रकाशन.

2) महिला स्वयंसहाय्यता बचत गट, डायमंड पब्लिकेशन, पुणे

3) व्यवसायिक यशाच्या गुरुकिल्ली, डॉक्टर सुधीर राशिंग कर.

# मुलींसाठी नवीन शैक्षणिक धोरण आणि व्यावसायिक दिशा व दशा

**सुनिता अनंतराव राठोड**
जिल्हा परिषद केंद्रीय प्राथमिक शाळा,
आपचुंदा.जिल्हा लातूर ,औसा .ता ,
महाराष्ट्र.भारत ,

(1 - प्रस्तावना

भारतामध्ये शिक्षण व्यवस्थेत मोठा बदल घडवून आणण्यासाठी स्वातंत्र्योत्तर काळापासून अनेक शिक्षण आयोग स्थापन करण्यात आले मध्ये विद्यापीठ शिक्षण आयोग 49-1948 सर्वप्रथम . या आयोगानुसार शिक्षित पुरुषांशिवाय समाज चालू .राधाकृष्ण आयोग स्थापन करण्यात आले) पण शि ,शकतोक्षित स्त्रियांशिवाय समाज चालू शकत नाही असे मत मांडण्यात आले व यानुसारच , 'समाज हक्क' आणि विशिष्ट गरजा या दोन्ही गोष्टींचा विचार करण्यात आला .

विद्यार्थ्यामध्ये जबाबदार (मुदलियार आयोग) मध्ये माध्यमिक शिक्षण आयोगात 53-1952 ,नागरिकत्वाची भावना निर्माण करणेमुलींना सामाजिक आणि व्यावसायिक क्षेत्रात नेतृत्व तयार करण्यासाठी त्यांची याबाबीतील कार्यक्षमता वाढवून त्यांचा देशाच्या आर्थिक विकासात सहभाग वाढविणे अशाप्रकारचे उद्दिष्ट ठरविण्यात आले .

(1958 दुर्गाबाई देशमुख आयोग) ला राष्ट्रीय स्त्री शिक्षण समिती 1958ने स्त्री शिक्षणातील समस्यांचे निराकरण करणेस्त्रीयांसाठी स्वतंत्र शिक्षण विभाग आणि व्यावसायिक शिक्षणाची सोय , .यावर लक्ष केंद्रीत करण्यात आले .करणे

66-1964'कोठारी शिक्षण आयोग' याचे मुख्य उद्दिष्ट शिक्षणाची सर्वसमावेशक व राष्ट्रीय पध्दत विकसीत करणे हा होताना शिक्षणाच्या प्रवाहात आणण्यासाठी समानता या आयोगाने मुलीं . .व व्यावसायिकीकरण या दोन बाबींवर भर दिला

तद्नंतर मध्ये भारतामध्ये शिक्षण व्यवस्थेत मोठा बदल घडवण्यासाठी 2020NEP 2020 (National Education Policy 2020) लागू केलेयात विशेषतः मुलींना समान शैक् .षणिक संधी उपलब्ध करून देणे आणि त्यांना आत्मनिर्भर बनवणे हे उद्दिष्ट आहे .

(2 - संशोधनाची उद्दिष्टे

(1 .नवीन शैक्षणिक धोरणातील मुलींसाठी असलेल्या तरतुदी समजून घेणे
(2 .मुलींच्या शिक्षणामुळे व्यावसायिक संधीमध्ये झालेल्या बदलांचा अभ्यास करणे
(3 ग्रामीण आणि शहरी भागातील मुलींच्या शिक्षणातील अडचणी समजून घेणे .
(4 .मुलींच्या सक्षमीकरणात शिक्षणाची भूमिका समजून घेणे
(5 .मुलींच्या व्यावसायिक विकासासाठी आवश्यक उपाय सुचविणे

(3 - संशोधन पध्दती(Research Methodology)

(1 संशोधन ,शिक्षणविषयक पुस्तके - साहित्य अभ्यास लेखयांचा सरकारी अहवाल , .अभ्यास
(2 .सर्वेक्षण अहवाल ,शिक्षण मंत्रालयाचे अहवाल - दुय्यम माहिती

(3 .उपलब्ध माहितीचे विश्लेषण करून निष्कर्ष काढणे - विश्लेषण पध्दती

(4 - नवीन शैक्षणिक धोरणाची वैशिष्ट्ये

(1 .कौशल्यावर आधारित शिक्षण

(2 .समान शिक्षणावर भर

(3 मुलींसाठी शिष्यवृत्ती योजना.

(4 .डिजिटल शिक्षणाची सुरुवात

(5 .व्यावसायिक शिक्षणाचा समावेश

(6 कला आणि क्रीडा आदी क्षेत्रात मुलींना संधी ,शिक्षण उद्योजकता ,वैद्यकीय ,तंत्रज्ञान .मिळवून देणे

(7 (विषय निवडीचे स्वातंत्र्य) .लवचिक शिक्षण प्रणाली

(8 बहुभाषिक शिक्षण .

(5 - शिक्षणातील अडचणी मुलींच्या

(1 .आर्थिक समस्या

(2 (सामाजिक बंधने ,लवकर लग्न ,सामाजिक परंपरा) .सामाजिक समस्या

(3 .शिक्षणाची सुविधा कमी असणे

(4 .सुरक्षित वाहतूक व्यवस्था नसणे

(5 .पालकांमध्ये जागरुकतेचा अभाव

(6 - उपाययोजना

(1 पालकप्रबोधन कार्यक्रम.

(2 .योजना वाढवणे शिष्यवृत्ती

(3 .सुरक्षित शाळा व वाहतूक व्यवस्था

(4 .ग्रामीण भागात शाळा व महाविद्यालये वाढविणे

(5 .डिजिटल शिक्षण सुविधा

(6 .कौशल्य प्रशिक्षण केंद्र

(7 KG to PG मोफत व सक्तीचे शिक्षण.

(8 .मुलींची वसतिगृहे सुविधा

(7 मुलींच्या सक्षमीकरणात शिक्षणाचे महत्त्व -

(1 .शिक्षणामुळे मुली आर्थिक स्वावलंबी बनेल

(2 .शिक्षणामुळे मुलीत निर्णय घेण्याची क्षमता वाढते

(3 .समाजात सन्मानाचे स्थान मिळते

(4 .कुटुंब व समाजाच्या विकासात योगदान देतात

(8 - निष्कर्ष

नवीन शैक्षणिक धोरणामुळे मुलींच्या शिक्षणामध्ये मोठा सकारात्मक बदल होत आहे . .शिक्षणामुळे मुलींना व्यावसायिक क्षेत्रात नवनवीन संधी मिळत आहेत

समाज व सरकार यांनी एकत्रीतपणे सकारात्मक प्रयत्न केले तर मुलींचे शिक्षण ,जर कुटुंब अधिक सक्षम व कौशल्याधिष्ठीत होईलव देशाच्या विकासात त्यांचे योगदान वाढेल .

(9 - संदर्भ(References)

(1 National Education Policy 2020 report.

2) शिक्षण मंत्रालय.भारत सरकार अहवाल ,

(3 .सामाजिक सुधारकांवरील पुस्तके

(4 .स्त्री शिक्षण विषय संशोधन लेख

(5 .बातमीपत्रातील लेख

# कुटीर आणि हस्तकला उद्योगांमध्ये महिलांचा सहभाग आणि नेतृत्व : एक संशोधनात्मक अभ्यास

**श्री अजय सुर्यकांत लांडगे**
संशोधक केंद्राचे नाव : बलभीम कला, वाणिज्य आणि विज्ञान महाविद्यालय, बीड.
संशोधन विषय : मराठी (पीएच.डी. (मराठी)

**सारांश :**

कुटीर आणि हस्तकला उदयोग हे भारताच्या पारंपारिक अर्थव्यवस्थेचे महत्त्वाचे घटक मानले जातात. ग्रामीण आणि अर्धशहरी भागात उदयोगांच्या माध्यमांतून मोठ्या प्रमाणावर रोजगारनिर्मिती होते. विशेषत: महिलांसाठी हे उद्योग आर्थिक स्वावलंबनाचे प्रभावी साधन ठरले आहेत. महिलांचा सहभाग केवळ उत्पादन प्रक्रियेत मर्यादित न राहता त्यांनी उदयोजक, व्यवस्थापक आणि नेतृत्व करणाऱ्या व्यक्ती म्हणूनही आपली भूमिका सिद्ध केली आहे. प्रस्तूत संशोधनात्मक लेखामध्ये कुटीर आणि हस्तकला उदयोगांमध्ये महिलांचा सहभाग, त्यांचे नेतृत्व, त्यातून होणारे सामाजिक, आर्थिक परिणाम आणि त्यांच्या समोर असलेल्या अडचणी यांचा सविस्तर आढावा घेण्यात आला आहे. तसेच महिलांच्या सक्षमीकरणांसाठी आवश्यक असलेल्या उपाययोजनांचाही विचार करण्यास आला आहे.

**प्रस्तावना :**

भारतातील कुटीर उद्योगांची परंपरा अत्यंत प्राचीन आहे. हातमाग, विणकाम, मातीची भांडी, बांबु काम, भरत काम, अगरबत्ती निर्मिती, पापड लोणचे उत्पादन, यांसारखे अनेक उदयोग घरगुती पातळीवर चालवले जातात. या उदयांगामध्ये कमी भांडवल, स्थानिक संसाधने आणि पारंपारिक कौशल्यांचा वापर केला जातो. त्यामुळे ग्रामीण महिलांसाठी हे उदयोग अत्यंत उपयुक्त ठरतात. शिक्षण, रोजगार आणि आर्थिक संधीच्या अभावामुळे अनेक महिला घराबाहेर नौकरी करू शकत नाहीत. अशा वेळी कुटीर उदयोग त्यांना घरबसल्या उत्पन्न मिळवण्याची संधी देतात.

गेल्या काही दशकांमध्ये महिला स्वयंसाहय्यता गट, सहकारी संस्था आणि सरकारी योजनांमुळे महिलांचा या क्षेत्रातील सहभाग मोठ्या प्रमाणात वाढला आहे. त्यामुळे महिलांचे सामाजिक स्थान उंचावले असून कुटुंबाच्या आर्थिक विकासात त्यांचे योगदान वाढले आहे.

**महिलांचा सहभाग :** कुटीर आणि हस्तकला उदयोगांमध्ये महिलांचा सहभाग विविध प्रकारे दिसून येतो. उत्पादन प्रक्रिया, डिझाईन पॅकेजींग, विक्री आणि व्यवस्थापन या सर्व टप्प्यांमध्ये महिलांची भूमिका महत्त्वाची आहे. ग्रामीण भागांतील अनेक महिला पारंपारिक कौशल्यांचा वापर करून हस्तकला वस्तू तयार करतात.

उदा : हातमागावर साड्या विणणे, भरतकाम करणे, बांबु किंवा गवताच्या वस्तू तयार करणे, मातीच्या मुर्ती बनवणे, इत्यांदी कामामध्ये महिलांचा मोठ्या प्रमाणावर सहभाग असतो.

अनेक राज्यांमध्ये महिला स्वयंसाहय्यता गटांच्या माध्यमांतून सामूहिक उदयोग चालवले जातात. या गटांमुळे महिलांना बचत, कर्ज, प्रशिक्षण आणि बाजारपेठेची माहिती मिळते. परिणामी त्यांचा आत्मविश्वास वाढतो आणि त्या आर्थिकदृष्ट्या सक्षम बनतात.

**महिलांचे नेतृत्व :**

कुटीर उदयोंगामध्ये महिलांनी केवळ कामगार म्हणून नव्हे तर नेतृत्व करणाऱ्या उदयोजक म्हणूनही आपली ओळख निर्माण केली आहे, अनेक महिला स्वत:चे उदयोग सुरू करून इतर महिलांना रोजगार देत आहेत. काही स्वयंसाहय्यता गटांनी स्थानिक उत्पादनांना राष्ट्रीय आणि आंतरराष्ट्रीय बाजार पेठेत पोहचवले आहे.

महिला नेतृत्वांमुळे उदयोगांमध्ये, सहकार्य, पारदर्शकता आणि सामुहिक निर्णयप्रक्रिया वाढते. महिलांच्या नेतृत्वाखालील उदयोग सामाजिकदृष्ट्या अधिक संवेदनशील असतात. आणि त्यामध्ये नफा कमाविण्याबरोबरच समुदायाच्या विकासालाही महत्त्व दिले जाते.

**सामाजिक आणि आर्थिक परिणाम :**

महिलांच्या सहभागामुळे कुटीर उदयोगांचा सामाजिक आणि आर्थिक प्रभाव मोठ्या प्रमाणात वाढला आहे. सर्वप्रथम महिलांना स्वत:चे उत्पन्न मिळाल्यामुळे त्यांचे आर्थिक स्वावलंबन वाढते. कुटुंबाच्या उत्पन्नात वाढ झाल्यामुळे मुलांचे शिक्षण, आरोग्य आणि जीवनमान सुधारते.

दुसरे म्हणजे ग्रामीण भागात रोजगार निर्मीती होते. स्थलांतर कमी होते आणि स्थानिक अर्थव्यवस्था मजबुत होते. तिसरे म्हणजे पारंपारिक कला आणि संस्कृती जतन होण्यास मदत होते. अनेक हस्तकला प्रकार हे स्थानिक संस्कृतीचे प्रतिक असतात, महिलांच्या सहभागामुळे हे कौशल्य पुढील पिठ्यांपर्यंत टिकून राहते.

**अडचणी आणि आव्हाने :**

कुटीर आणि हस्तकला उदयोगामध्ये महिलांना अनेक अडचणींचा सामना करावा लागतो. सर्वप्रथम आर्थिक भांडवलाची कमतरता ही मोठी समस्या आहे. अनेक महिलांना उदयोग सुरू करण्यास आवश्यक कर्ज सहजपणे मिळत नाही. दुसरे म्हणजे तांत्रिक प्रशिक्षण आणि आधुनिक तंत्रज्ञानाचा अभाव असल्यामुळे उत्पादनाची गुणवत्ता आणि प्रमाण मर्यादित राहते.

याशिवाय बाजारपेठेची माहिती नसणे, वाहतुक सुविधा कमी असणे, आणि सामाजिक बंधने यांसारख्या अडचणीही महिलांच्या प्रगतीत अडथळा निर्माण करतात. काही ठिकाणी महिलांच्या कामाचे योग्य मुल्यमापनही केले जात नाही.

**उपाययोजना :**

महिलांचा सहभाग आणि नेतृत्व वाढवण्यासाठी काही महत्त्वाच्या उपाययोजना आवश्यक आहेत. सर्वप्रथम महिलांसाठी कौशल्यविकास आणि उदयोजकता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करणे आवश्यक आहे. दुसरे म्हणजे बँका आणि वित्तीय संस्थांनी महिलांना सुलभ कर्ज सुविधा उपलब्ध करून द्याव्यात. तिसरे म्हणजे डिजिटल तंत्रज्ञान आणि ई-कॉमर्सच्या माध्यमांतून हस्तकला वस्तुंना व्यापक बाजारपेठ, उपलब्ध करून देता येईल. तसेच सरकारी योजनांची प्रभावी अंमलबजावणी करून महिलांना आर्थिक मदत, वित्तीय साहय्य आणि प्रशिक्षण दिले पाहिजे.

**निष्कर्ष :**

कुटीर आणि हस्तकला उदयोगांमध्ये महिलांचा सहभाग हा ग्रामीण विकास आणि महिला सक्षमीकरणासाठी अत्यंत महत्त्वाचा आहे. महिलांनी या क्षेत्रात केवळ कामगार म्हणुन नव्हे तर उदयोजक आणि नेतृत्व करणाऱ्या व्यक्ती म्हणूनही आपली सक्षमता सिद्ध केली आहे. योग्य प्रशिक्षण, आर्थिक मदत आणि बाजारपेठ उपलब्ध झाल्यास महिलांचे उदयोग अधिक सक्षम होऊ शकतात.

भविष्यात कुटीर उदयोगांचा विकास करताना महिलांच्या सहभागाला केंद्रस्थानी ठेवणे आवश्यक आहे. त्यामुळे केवळ आर्थिक प्रगतीच नव्हे तर सामाजिक समता आणि सर्वांगीण विकास साध्य होऊ शकतो.

**संदर्भ ग्रंथ यादी :**

1) खैरनार, अ. (2015), भारतीय हस्तकला आणि लोककला पुणे: डायमंड पब्लिकेशन.

2) पाटील, स. (2012) ग्रामीण उदयोग आणि महिला सक्षमीकरण, पुणे : यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ प्रकाशन.

3) कुलर्णी म. (2018), भारतातील कुटीर उदयोग, नागपूर विद्याभारती प्रकाशन.

4) देशपांडे, ग. (2016), महिला उदयोजकता आणि विकास पुणे ; प्रतिमा प्रकाशन.

5) जाधव, र. (2014) ग्रामीण अर्थव्यवस्था आणि लघुउदयोग कोल्हापूर ; फडके प्रकाशन.

6) पवार श. (2013) भारतीय लोककला आणि हस्तकला परंपरा, मुंबई : लोकवाङ्मय गृह.

# डिजिटल युगातील महिला सशक्तीकरण

**मार्गदर्शक**
प्रो. डॉ. मनोहर सिरसाट
संशोधन मार्गदर्शक आणि विभाग प्रमुख
पदवी व पदव्युत्तर मराठी विभाग आणि संशोधन केंद्र,

**संशोधक**
प्रा. आकांक्षा भगवानराव सोनवणे
मराठी विभाग,
बलभीम महाविद्यालय, बीड.

## प्रस्तावना

महिला सशक्तीकरण म्हणजे महिलांना सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक आणि राजकीय क्षेत्रात समान संधी, अधिकार आणि निर्णयक्षमता प्रदान करणे.

पारंपरिक समाजरचनेत महिलांना अनेक बंधने आणि मर्यादा होत्या, परंतु डिजिटल युगाने या मर्यादा मोठ्या प्रमाणावर कमी केल्या आहेत.

भारतासारख्या विकसनशील देशात डिजिटल तंत्रज्ञान हे सामाजिक परिवर्तनाचे प्रभावी साधन ठरत आहे. विशेषतः ग्रामीण आणि दुर्बल घटकांतील महिलांसाठी डिजिटल माध्यमे ही संधीची नवी दारे उघडत आहेत.

प्रस्तुत शोधनिबंधात सक्षमीकरण, डिजिटल युगातील महिला सशक्तीकरण, त्याचे विविध आयाम, उपलब्ध संधी, आव्हाने यांचा आढावा घेतला आहे.

## महिला सक्षमीकरण

महिलेला सबल बनवणे, तिला तिच्या अस्तित्वाची जाणीव करून देणे, व्यक्तिमत्त्वाचा विकास घडवणे, स्वयं विकासासाठी प्रवृत्त करणे, जागरूकता निर्माण करणे या सर्व घटकांचा समावेश महिला सक्षमीकरणाच्या संकल्पनेत होतो.

प्राचीन काळापासून स्त्रियांच्या सामाजिक व सांस्कृतिक इतिहासाचा अभ्यास केला असता असे दिसून येते की, स्त्रियांचा दर्जा हा पुरुषांपेक्षा नेहमीच दुय्यम स्वरूपाचा राहिलेला आहे. सार्वजनिक जीवनात कोणतेही हक्क व अधिकार महिलांना नव्हते. पितृसत्ताक समाजात तिला दुय्यम स्थान होते. परंतु शिक्षणाने या परिस्थितीमध्ये बदल घडवून आणला. महात्मा ज्योतिबा फुले आणि सावित्रीबाई फुले यांनी स्त्री शिक्षणाचे उचललेले पाऊल फारच महत्वपूर्ण ठरले. शिक्षण हे प्रत्येक व्यक्तीला सर्वार्थाने सक्षम, सुशिक्षित व सुसंस्कृत बनवते असा विचार ठामपणे त्यांनी समाजात पसरवला व स्त्री शिक्षणासाठी प्रयत्न केले. तसेच डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी शिक्षणाचे महत्त्व खऱ्या अर्थाने पटवून दिले व न्याय, स्वातंत्र्य, समता आणि बंधुता या मूल्यांच्या आधारावर राज्यघटना तयार करून नोव्हेंबर १९४९ मध्ये राज्यघटना भारतीयांना बहाल केली.भारतीय संविधानात लैंगिक समानतेला महत्त्व दिले गेले असून स्त्रियांना शिक्षणाचे स्वातंत्र्य व हक्क प्रदान केले आहेत.

सक्षमीकरणामुळे महिलांना त्यांच्या हक्क व अधिकारांची जाणीव झाली आहे. त्यांच्या कौशल्यात वाढ झाली असून त्यांचा आर्थिक स्तर उंचावला आहे. त्यांना मानसन्मान मिळत आहे. आज सार्वजनिक जीवनात सर्व क्षेत्रांमध्ये स्त्रिया आत्मविश्वास आणि मेहनतीच्या बळावर कर्तृत्व गाजवत आहेत आणि समाजाच्या शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक विकासाला हातभार लावत आहेत.

**डिजिटल युगातील महिला सशक्तीकरण**

महिला सशक्तीकरण ही बहुआयामी संकल्पना आहे. त्यामध्ये शैक्षणिक, आर्थिक, राजकीय, सामाजिक आणि मानसिक घटकांचा समावेश होतो व त्यासाठी गुणवत्तापूर्ण शिक्षण, रोजगार व उद्योजकतेच्या संधी, निर्णय प्रक्रियेत सहभाग, समानता, सन्मान, आत्मविश्वास आणि कौशल्य या घटकांची उपलब्धता अत्यावश्यक आहे. डिजिटल तंत्रज्ञान या सर्व घटकांना बळकटी देणारे माध्यम ठरत आहे.

डिजिटल युगातील तंत्रज्ञानामध्ये इंटरनेट सेवा, स्मार्टफोन व मोबाईल अॅप्स, ई लर्निंग प्लॅटफॉर्म्स, डिजिटल पेमेंट प्रणाली किंवा डिजिटल बँकिंग, सोशल मीडिया नेटवर्क्स अशा अनेक साधनांचा समावेश होतो. डिजिटल युगातील माहिती व संवाद तंत्रज्ञानामुळे डिजिटल पायाभूत सुविधा आणि प्लॅटफॉर्म विकसित होऊन जागतिक स्तरांवर माहितीप्रवाह सुलभ झाला आहे. या सर्व सुविधांमुळे महिलांच्या सशक्तीकरणाचा मार्ग अधिक सुलभ झाला आहे. २१ व्या शतकातील डिजिटल क्रांतीमुळे महिलांना आर्थिक स्वावलंबन, रोजगार व उद्योजकतेच्या नव्या संधी उपलब्ध झाल्या आहेत.

**डिजिटल युगातील महिला सशक्तीकरणाचे विविध आयाम**

१) शैक्षणिक सशक्तीकरण

ऑनलाईन शिक्षण प्लॅटफॉर्म्समुळे महिलांना घरबसल्या उच्च शिक्षण आणि कौशल्य प्रशिक्षण घेणे शक्य झाले आहे. विविध ऑनलाईन कोर्सेस उपलब्ध आहेत, त्यामुळे विशेषतः ग्रामीण भागातील महिलांनाही तंत्रज्ञान, व्यवस्थापन, भाषा आणि डिजिटल मार्केटिंग यांसारखी कौशल्ये आत्मसात करता येतात.

२) आर्थिक सशक्तीकरण

ई- कॉमर्स, डिजिटल बँकिंग किंवा डिजिटल पेमेंट प्रणालीमुळे आर्थिक व्यवहार पारदर्शक व सोपे झाले आहेत, त्यामुळे महिलांना व्यवसाय सुरू करणे अधिक सोपे झाले आहे. Amazon आणि Flipkart सारख्या अनेक ऑनलाईन अॅप्स वर महिला उद्योजिका स्वतःची उत्पादने विक्रीस ठेवतात.

३) सामाजिक सशक्तीकरण

सोशल मीडिया महिलांना आपले मत मांडण्यासाठी व्यासपीठ देते. फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम यांसारख्या अनेक समाज माध्यमांवरून महिलांनी सामाजिक प्रश्नांवर प्रभावी आवाज उठवला आहे. ऑनलाईन मोहिमा, जनजागृती चळवळींमुळे महिलांमध्ये जागरूकता वाढली आहे.

४) राजकीय सहभाग

डिजिटल माध्यमांमुळे राजकीय क्षेत्रातील महिलांबरोबरच सर्वसामान्य महिलांचा देखील राजकीय सहभाग वाढला आहे. ऑनलाईन चर्चा, वेबिनार्स आणि सामाजिक मोहिमांद्वारे महिलांना राजकीय क्षेत्रातील ज्ञान, घडामोडी तसेच धोरणनिर्मिती व निर्णय प्रक्रियेत सहभागी होण्याची संधी मिळत आहे.

५) डिजिटल उद्योजकता

डिजिटल युगात अनेक महिला ब्लॉगिंग, कंटेंट क्रिएशन, फ्रीलांसिंग, यूट्यूब चॅनेल, ऑनलाईन बुटीक, उत्पादन विक्री इत्यादी व्यवसायांमध्ये सक्रिय आहेत. डिजिटल मार्केटिंग आणि सोशल मीडिया जाहिरातींमुळे कमी गुंतवणुकीत व्यवसाय वाढविणे शक्य झाले आहे

**आव्हाने**

डिजिटल युगाने महिला सशक्तीकरणाला खरोखर बळकटी दिली आहे, परंतु त्यासोबतच या डिजिटल युगात महिलांना अनेक आव्हानांना सामोरे जावे लागते. त्यामध्ये डिजिटल साक्षरतेचा अभाव, सायबर सुरक्षितता, ऑनलाईन छळ, तांत्रिक अडचणी यांचा समावेश होतो. विशेषतः ग्रामीण भागात इंटरनेट सुविधा आणि उपकरणांची कमतरता तसेच सांस्कृतिक व लैंगिक रूढीवाद या घटकांमुळे महिलांना अडथळा निर्माण होतो.

**निष्कर्ष**

डिजिटल क्रांती ही केवळ तांत्रिक बदल नसून सामाजिक परिवर्तनाची चळवळ आहे. या परिवर्तनामध्ये महिलांचा सक्रिय सहभाग सुनिश्चित करणे हेच खरे सर्वसमावेशक विकासाचे लक्षण आहे. डिजिटल युगातील तंत्रज्ञान हे महिला सशक्तीकरणासाठी प्रभावी साधन आहे. २१ व्या शतकातील डिजिटल क्रांतीने जागतिक पातळीवर सर्वच क्षेत्रात बदल घडवून आणला. या परिवर्तनाचा महिलांच्या जीवनावर विशेष प्रभाव पडला असून महिलांना आर्थिक स्वावलंबन, शिक्षण, उद्योजकता आणि नेतृत्वाच्या नव्या संधी उपलब्ध झाल्या आहेत.

**संदर्भ**

१) महिला सक्षमीकरण- डॉ. जयश्री महाजन. अथर्व पब्लिकेशन्स, जळगाव.

२) स्त्री सक्षमीकरणाची वाटचाल आणि वास्तव- प्रा. डॉ. वर्षा गंगणे. ऋचा पब्लिकेशन, नागपूर.

३) विकिपीडिया

# महिलांच्या स्वयंरोजगारासाठी सरकारी योजना व धोरणे : कुक्कुटपालन आणि बंदिस्त शेळीपालनाच्या माध्यमातून आर्थिक सक्षमीकरणाचा अभ्यास.

**डॉ अशोक दशरथ.सातपुते**
सहायक प्राध्यापक
कुंभलकर कॉलेज ऑफ सोशल वर्कमहाराष्ट्र.वर्धा,

**सारांश )Abstract)**

भारतामध्ये ग्रामीण महिलांच्या आर्थिक सक्षमीकरणासाठी स्वयंरोजगार हा एक प्रभावी मार्ग आहे . व धोरणांद्वारे महिलांना कृषी व पशुपालन क्षेत्रात प्रोत्साह सरकारने विविध योजनान दिले आहेया संशोधन . ) पेपरमध्ये कुक्कुटपालनPoultry Farming) आणि बंदिस्त शेळीपालन )Stall-fed Goat Farming) या व्यवसायांच्या माध्यमातून महिलांनी कशाप्रकारे स्वयंरोजगार निर्माण करू शकतात याचा अभ्यास करण्यात आला आहेतसेच ., सरकारी योजना, अनुदाने, प्रशिक्षण व वित्तपुरवठा यांचा प्रभाव देखील विश्लेषित केला आहे.

**प्रस्तावना )Introduction)**

भारतामध्ये ग्रामीण अर्थव्यवस्थेत महिलांचा मोठा वाटा आहे) स्वयं सहाय्यता गट .SHGs) आणि सरकारी योजनांमुळे महिलांना आर्थिकदृष्ट्या सक्षम होण्याची संधी मिळाली आहे .National Rural Livelihood Mission अंतर्गत महिलांना उद्योजकतेसाठी प्रोत्साहन दिले जाते.
SHGs चा मुख्य उद्देश आर्थिक समावेशन, उद्योजकता आणि कौशल्य विकास वाढवणे हा आहे.

**संशोधनाचे उद्दिष्टे )Objectives)**
.यंरोजगारासाठी उपलब्ध सरकारी योजनांचा अभ्यास करणेमहिलांच्या स्व -
-कुक्कुटपालन व शेळीपालनाच्या व्यवसायिक संधींचा अभ्यास करणे.
.आर्थिक सक्षमीकरणात या व्यवसायांचे योगदान समजून घेणे -
.धोरणात्मक शिफारसी सुचवणे -

**संशोधन पद्धती )Methodology)**
दुय्यम माहिती )Secondary Data)
सरकारी अहवाल, संकेतस्थळे, संशोधन लेख
योजनांची तुलना व विश्लेषण

**महिलांसाठी सरकारी योजना व धोरणे**
प्रधानमंत्री रोजगार निर्मिती कार्यक्रम )PMEGP)
महिला उद्योजकांसाठी कर्जावर अनुदान
ग्रामीण व शहरी भागात व्यवसाय सुरू करण्यासाठी मदत

**राष्ट्रीय पशुधन अभियान )National Livestock Mission - NLM)**

कुक्कुटपालन व शेळीपालनासाठी %50पर्यंत भांडवली अनुदान

SHG, FPO आणि वैयक्तिक उद्योजकांसाठी उपयुक्त

**पशुधन पायाभूत सुविधा विकास निधी )AHIDF)**

व्याज सवलत )interest subvention)

प्रक्रिया, मूल्यवर्धन व शेतीपूरक व्यवसायांसाठी सहाय्य

**बँक कर्ज व NABARD सहाय्य**

शेळीपालनासाठी लाखांपर्यंत 50कर्ज

SHG, JLG आणि वैयक्तिक महिलांसाठी सुविधा

**स्वयं सहाय्यता गट )SHG) आधारित मॉडेल**

महिलांना सामूहिक बचत व कर्ज सुविधा

व्यवसायासाठी प्रशिक्षण व बाजारपेठ उपलब्ध

**कुक्कुटपालनाद्वारे स्वयंरोजगार —**

**व्यवसायाचे स्वरूप**

अंडी व मांस उत्पादन, कमी गुंतवणूक, जलद परतावा

**महिलांसाठी फायदे**

घराजवळ व्यवसाय शक्य, कमी जागेत चालवता येतो, SHG द्वारे समूह व्यवसाय

**सरकारी अनुदान**

NLM अंतर्गत कुक्कुटपालनासाठी अनुदान, शेड, फीड, उपकरणांसाठी सहाय्य

**उत्पन्न क्षमता**

यमित उत्पन्नपक्ष्यांपासून नि 1000—500, स्थानिक बाजारपेठेत मागणी जास्त

**बंदिस्त शेळीपालनाद्वारे स्वयंरोजगार**

**व्यवसायाचे स्वरूप**

मांस व दूध उत्पादन, बंदिस्त पद्धतीमुळे उत्पादन वाढ

**सरकारी सहाय्य अनुदान /**

NLM अंतर्गत %50पर्यंत अनुदान

1+10“ Goat Unit” योजना 10)मादी 1 +नर(

**आर्थिक फायदे**

कमी खर्चात जास्त नफा, वर्षभर उत्पन्न स्रोत, शेणखताचा उपयोग

**रोजगार निर्मिती**

महिला व कुटुंबीयांना रोजगार, SHG द्वारे मोठ्या प्रमाणावर व्यवसाय

**महिलांच्या सक्षमीकरणावर परिणाम )Impact)**

**आर्थिक परिणाम**

स्थिर उत्पन्न, कुटुंबाच्या आर्थिक स्थितीत सुधारणा

**सामाजिक परिणाम**

निर्णयक्षमता वाढ, सामाजिक प्रतिष्ठा वाढ

**कौशल्य विकास**

पशुपालन कौशल्य, व्यवसाय व्यवस्थापन

**अडचणी )Challenges)**

तांत्रिक ज्ञानाचा अभाव, बाजारपेठेची मर्यादा, कर्जप्राप्तीतील अडथळे, रोग व्यवस्थापन समस्या

**उपाययोजना )Suggestions)**

प्रशिक्षण केंद्रांची संख्या वाढवणे, डिजिटल मार्केटिंग सुविधा उपलब्ध करणे

महिला SHG साठी विशेष अनुदान वाढवणे, पशुवैद्यकीय सेवा मजबूत करणे

**निष्कर्ष )Conclusion)**

कुक्कुटपालन आणि बंदिस्त शेळीपालन हे ग्रामीण महिलांसाठी अत्यंत प्रभावी स्वयंरोजगाराचे साधन आहेसरकारी योजना ., SHG मॉडेल आणि आर्थिक सहाय्य यांच्या एकत्रित परिणामामुळे महिलांचे आर्थिक व सामाजिक सक्षमीकरण शक्य झाले आहेयोग्य प्रशिक्षण ., वित्तपुरवठा व बाजारपेठ उपलब्ध झाल्यास या क्षेत्रात मोठ्या प्रमाणावर रोजगारनिर्मिती होऊ शकते.

**संदर्भ )References – APA Style)**


१. Government of India. ( .(2023Animal Husbandry Infrastructure Development Fund & NLM Guidelines.

२. National Commission for Women. ( .(2022Women Centric Schemes in India.

३. Paisabazaar. ( .(2024Goat Farming Loan and Schemes in India.

४. National Livestock Mission Reports. (.(2025

५. Farm-D Organization. ( .(2024Role of SHGs in Rural Livelihood.

६. Goat Farm India. ( .(2025NLM Subsidy Scheme.

# महिला उद्योजकांसाठी सामाजिक व सांस्कृतिक अडथळे आणि त्यांचे निराकारण

**डॉ. अभिषेक राजेंद्र परब**
घर क्रमांक-B-2,भुमिका,
सातेरी महामाया मंदिराजवळ
पालये-उसकई, म्हापसा- गोवा
उत्तर गोवा
पिन कोड क्रमांक-403507

भारत हा विकसनशील देश आहे. देशाच्या सार्वभौम विकासामध्ये महिलांचे योगदान महत्त्वपूर्ण असते. परंतु प्राचीन काळापासून महिलांच्या बाबतीत उद्योगक्षेत्र हे उपेक्षित क्षेत्र मानले गेले, पण आधुनिक युगात काही महिलांनी उद्योगक्षेत्रात आपला ठसा उमटवलेला दिसतो. आधुनिक काळात कायदेशीरदृष्ट्या स्त्री-पुरूष समानता प्रदान केलेली आहे व पुरूषांप्रमाणे महिलांही उद्योग करण्यास पात्र आहे. उद्योजकता हे आर्थिक विकासाचे महत्त्वपूर्ण अंग आहे. २१व्या शतकात भारतीय महिला ही उच्च शिक्षणात व नोकरीत भरारी घेताना दिसते. पण तरीही उद्योजकक्षेत्रात महिलांचे प्रमाण अल्प दिसते. भारतीय समाजव्यवस्थेत असलेले सामाजिक व सांस्कृतिक घटक महिलांना उद्योजकतेमध्ये यशस्वी होण्यास बाधा निर्माण करतात. आधुनिक तंत्रज्ञान, सरकारी धोरणे यामुळे महिलांनी उद्योजकतेमध्ये व्यासपीठ मिळत असले, तरीही सामाजिक पूर्वग्रह व सांस्कृतिक अडथळे यामुळे त्यांचा समग्र विकास होत नाही. सामाजिक संरचना, पुरूषप्रधान संस्कृतीचे वर्चस्व, बुरसटलेली मानसिकता यामुळे महिलांची उद्योजक क्षेत्रामधील वाटचाल संघर्षमय बनलेली आहे. प्रस्तुत शोधनिबंधात महिला उद्योजकांसाठी सामाजिक व सांस्कृतिक अडथळे यांचे सखोल विश्लेषण करून, सरकारी योजना लक्षात घेऊन एकंदर त्यांच्या निराकरणाचे प्रभावी मार्ग सूचविले आहे.

भारतीय समाजात आजही पुरूषप्रधान संस्कृतीचे वर्चस्व असल्याने स्त्रीला दुय्यम स्थान दिले जाते. पारंपरिक चौकट स्त्रीच्या वाटचालीवर मर्यादा आणतात. परंपरेच्या नावाखाली स्त्रीला कुटुंबात व समाजात दुय्यम स्थान देण्याची प्रवृत्ती प्रबळ असलेली दिसते. पारंपरिक चौकटीत घर व कुटुंब हीच प्राथमिक जवाबदारी मानली जाते. निर्णयस्वातंत्र्य, मालमत्ता हक्क, अधिकार, सार्वजनिक जीवन या बाबतीत पुरूषांना अग्रस्थान देणारी मानसिकता समाजात खोलवर रूजलेली आहे. परिणामी स्त्रीच्या स्वायत्ततेवर अनेक बंदने लादले जातात. तिच्यामधील क्षमता पाहण्याऐवजी तिच्यावरील मर्यादा अधोरेखीत केल्या जातात. या संरचनेमुळे असमानतेचा परिणाम महिलांना उद्योगक्षेत्रात कार्य करताना होतो. तिला केवळ उद्योगक्षेत्रातील आव्हानांना व स्पर्धेलाच नव्हे तर सामाजिक मानसिकतेला सामोरे जावे लागते. जेव्हा स्त्री उद्योगक्षेत्रात पाऊल ठेवते, तेव्हा तिच्या क्षमतेवर दुर्लक्ष करून तिच्या लिंगावर अधिक लक्ष देऊन त्यावर चर्चा केली जाते. तिने कमावलेले यश याला अपवादात्मक म्हणून पाहण्याचा दृष्टिकोन दिसतो, तर तिच्या अपयशला स्त्रीत्वाशी जोडले जाते. अशा दुटप्पी विचारसरणीमुळे स्त्रीवर अतिरिक्त मानसिक ताण निर्माण होतो.

समाजिक व सांस्कृतिक अडथळ्यांमुळे महिलांना पूर्णपणे सक्षमरित्या उद्योगक्षेत्रात कार्य करता येत नाही. परंपरा, मानसिकता व संस्थात्मक रचना या सर्वामधून महिला उद्योजकीय प्रवासाला मर्यादा येतात.

तसेच अर्थदृष्ट्या परावलंबित्व येते व रोजगाराची संधी खुंटते. या अडथळ्यांवर निराकारण करण्यासाठी आवश्यक बाबींवर भर दिला पाहिजे. त्यासाठी शिक्षण, तांत्रिक व डिजिटल कौशल्य देणे गरजेचे आहे. स्वयंसेवी व शासकीय संस्थामध्ये प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित केले पाहिजे. तसेच लिंगसमता या विषयावर अधिक जागृती करणाऱ्या मोहिमा राबवल्या पाहिजे. शासकीय पातळीवर देण्यात येणारे अनुदान व कर्जयोजना यांचा प्रसार व प्रचार तळागळातील लोकापर्यंत केला पाहिजे. कायदेशीर व धोरणात्मक पाठबळ यामधून महिला उद्योजक सशक्त होतात. लिंगसमतेचे शिक्षण प्राथमिक बालवयात देणे. तसेच शाळा, महाविद्यालयांमध्ये यशस्वी महिला उद्योजकांच्या माहितींचे व्हिडिओ प्रसारण व सार्वजनिक व्यासपीठावर त्यांचा सत्कार केला पाहिजे यामधून समाजमनाला प्रेरणा मिळू शकेल. ई-कॉमर्स व सोशल मिडिया याद्वारे महिला उद्योजकांना घराबाहेर न पडता व्यवसाय करता येईल. महिलांना डिजिटल प्लॅटफॉर्मच्या माधम्यातून व्यवसायाची मोठी संधी मिळू शकते.

स्वातंत्र्योत्तर काळात संविधानामुळे स्त्रियांना हक्क व अधिकार प्राप्त झाले. यामुळे महिला उद्योजकाना आपले स्थान निर्माण करता आले आहे. कोणत्याही क्षेत्रात महिलांना केलेला विकास हे प्रगतीचे सूचक आहे. तरीही सर्व अडथळ्यावर मात करीत महिलांनी उद्योजकतेमध्ये यशस्वी योगदान देऊन रूढ संकल्पनांना छेद दिलेला आहे. त्यामुळे तिची निर्णयशीलता वाढली, आत्मसन्मान वाढला व आर्थिकदृष्ट्या सक्षम झाली. या तिच्या भरीव यशामुळे 'स्त्री ही केवळ चूल व मूल यापुरती आहे' ही रूढ संकल्पना खंडित झाली. स्त्री उद्योजकता ही केवळ आर्थिक व्यवहाराशी संबंधित नाही, तर सामाजिक पुनर्रचनेशीही संबंधित आहे. समाजातील लिंगसमतेच्या दिशेने असलेले एक महत्त्वाचे पाऊल आहे. स्त्रीने उद्योगक्षेत्रात संपादन केलेल्या यशाने अन्य महिलांनाही प्रेरणा मिळते. यामधून रोजगारनिर्मिती व सामाजिक परिवर्तनाची बीजे पेरली जातात. त्यामुळे महिला उद्योजकता ही अर्थकारणापूरती मर्यादित नसून, सामाजिक समतेच्या व्यापक संदर्भात पाहणे आवश्यक ठरते. महिलेच्या कर्तृत्वाला व्यासपीठ मिळाल्याने केवळ उद्योग उभारणीलाच हातभार लागला नाही, तर सामाजिक दृष्टिकोणालाही नव्याने आकार प्राप्त झाला.

महिला उद्योजकता म्हणजे अशी स्त्री जी स्वत:च्या कर्तृत्वाने उद्योगक्षेत्रात पाऊल ठेवते. उद्योजकतेचे व्यवस्थापन करते, आर्थिक धोके पत्करते व नवनिर्मिती घडवून आणते. यामुळे स्त्री आर्थिक स्वालंबित होते व त्याचबरोबर सामाजिक परिवर्तनातही तिचा वाटा उल्लेखनीय बनतो. महिलांच्या उद्योगामुळे कौटुंबिक उत्पन्नस्तर वाढतो व समाजातील लिंगसमता सशक्त बनते. चित्रा वाळंबेच्या मते, 'केवळ उद्योजक बनण्याच्या मागे लावू नका, उच्च कार्यक्षमता असलेले उद्योजक बनण्यासाठी प्रयत्न करा...उच्च कार्यक्षमता असलेले उद्योजक बनणे, प्रत्येकाला शक्य होत नाही.'[१] महिला उद्योगक्षेत्रात पाऊल ठेवतात, पण काहीजण त्या क्षेत्रात टिकून राहतात. या क्षेत्रात टिकून राहण्यासाठी धैर्य, चिकाटी, संभाषणकौशल्य, इच्छाशक्ती, लवचिकता, संधिशोधक, दूरदृष्टी आवश्यक आहे. उच्च कार्यक्षमता असलेला उद्योजक बनण्यासाठी शिस्तीचा भोक्ता असणे अनिवार्य आहे. धैर्य, चिकाटी, संभाषणकौशल्य, इच्छाशक्ती, लवचिकता, संधिशोधक, दूरदृष्टी व शिस्तीचा अभाव कार्यक्षम उद्योजक होण्यास बाधा आणते. याचाच परिणाम म्हणून जोमाने उद्योगक्षेत्रात पदार्पण करूनही, सातत्य राखण्यास अयशस्वी बनतात. यामुळे उद्योगक्षेत्रात उच्च कार्यक्षमता असलेले उद्योजक यशस्वी झालेले दिसतात.

१९ नोव्हेंबर हा महिला उद्योजकता दिवस म्हणून जगभरात साजरा केला जातो. या दिवसाचे औचित्य साधून महिलांमध्ये उद्योजकतेची भावना जागृत करणे व यशस्वी उद्योजक महिलांच्या कार्याचा, जिद्दीचा गौरव करणे आहे. हा दिवस केवळ उद्येगापूरता सीमीत नसून तर आत्मनिर्भर व सामाजिक समता याचाही संदेश देतो. सध्या भारतात महिला उद्योजकतेमध्ये लक्षणीय वाढ झालेली दिसते. महिलांनी शहाराबरोबरीनेच ग्रामीण भागातही आपल्या ठसा उमटवलेला आहे. महिलांना समान संधी व पाठबळ मिळाला, तर त्या केवळ आपलेच नाही तर समाजाचे भविष्यही उज्ज्वल करू शकतात. महिला उद्योजकता ही आर्थिक उन्नतीबरोबरच सामाजिक समतेचा प्रमुख मार्ग आहे. केंद्र शासनाने महिला उद्योजकांसाठी मोठी घोषणा करीत 'उद्योगिनी योजना २०२५' सुरू केलेली आहे. या योजने अंतर्गत भारतीय खेड्यातील नवोदित उद्योजक महिलांना स्वत:चा व्यवसाय सुरू करण्यासाठी ३ लाखापर्यंत कर्ज, कमी व्याजदार आणि ३०% पर्यंत अनुदान दिले जाते. यासाठी १८ ते ५५ वयोगटातील पात्र महिला सरकारी बॅक (ऑफलाईन) किंवा उमंग (UMANG) ॲपद्वारे (ऑनलाईन) अर्ज करू शकतात. गरीब महिला उद्योजकांना आर्थिकदृष्ट्या सक्षम करणे हे सदर योजनेचे उदिष्ट आहे. या योजनेच्या माध्यमातून कौशल्य विकास प्रशिक्षणही देण्यात येणार आहे. यामधून लघु उद्योग करण्याची व व्यवसायिक क्षमता सशक्त केली जाते. यामधून महिलांच्या आर्थिक उत्पन्नाची वृध्दी होते याचाच परिणाम म्हणून कुटुंबही आर्थिकदृष्ट्या सक्षम बनतात. संपूर्ण देशात आर्थिक सुबत्तेचा प्रारंभ यामधून दिसतो. तसेच या योजनेत दिव्यांग व विधवा महिलांना विशेष सवलती प्रदान केलेल्या आहेत. या योजनेद्वारे ब्यूटी पार्लर, किराणा दुकान, दुग्ध व्यवसाय किंवा अन्य लघु उद्योग करू शकतात. यासाठी मागील कोणते अर्ज थकीत असता कामा नये व वार्षिक उत्पन्न १.५ लाखापेक्षा कमी असावे ही सदर योजनेची पात्रता आहे. केंद्र सरकारने महिला उद्योजकांसाठी हे महत्त्वाचे पाऊल उचलून त्यांना आत्मनिर्भर बनवण्याचा व महिला सक्षमीकरण करण्याचा त्यांचा मानस आहे.

तसेच अन्य योजना आहेत जे महिलांना उद्योगक्षेत्रात सहाय्यभूत ठरताता त्या खालीलप्रमाणे

'प्रधानमंत्री कृषी व अन्न प्रक्रिया योजना'-

महाराष्ट्र शासनाद्वारे कार्यान्वित केलेल्या योजनेद्वारे शेतकरी व महिला उद्योजकांना अन्न प्रक्रिया उद्योगाखातर प्रोत्साहन देते. आधुनिक तंत्रज्ञान याच्या आधाराने नूतन प्रकल्प व जूने प्रकल्प यांचा विस्तार व ग्रामीण भागात रोजगार निर्मिती यांना प्रोत्साहन दिले जाते.

'महिला उद्यम विकास योजना'-

नॉर्थ ईस्टर्न डेव्हलपमेंट फायनान्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड (NEDFI) या योजने अंतर्गत महिला उद्योजकांना आर्थिक, प्रशिक्षण व विपणन सहाय्य प्रदान करते. ज्याद्वारे महिला उद्योजकांना त्यांच्या व्यवसायात वृध्दी करता येईल.

'महिला उद्यम निधी योजना'-

पंजाब नॅशनल बॅकद्वारे चालवली जाणारी सदर योजना १० लाख रूपयापर्यंताचे कर्ज प्रदान करते, ज्यामुळे त्यांना व्यवसायाची स्थापना व विस्तार करण्यास मदत होते.

भारतातील काही प्रमुख महिला उद्योजकांमध्ये 'किरण मजुमदार—शॉ या बायकॉन संस्थापक, बायोटेक्नॉलॉजी क्षेत्रातील अग्रगण्य व्यक्तिमत्त्व, फाल्गूनी नायर नायका संस्थापक, सौंदर्य आणि फॅशन ई-कॉमर्स, विनीता सिंग या शुगर कॉस्मेटिक्सच्या सीईओ, रिचा कार झिव्हेम याच्या सह-संस्थापक, रोशनी नादार मल्होत्रा या एचसीएल टेक्नोलॉजीच्या अध्यक्षा, इंद्रा न्यूया, अध्यक्षा-पेप्सी कंपनी, नैना लाल किडवानी, जनरल मॅनेजर-एचएस्बीसी ग्रुप इंडिया, इंदू जैन, चेअरमन-टाइम्स ग्रुप, चंदा कोचर, सीईओ एण्ड मॅनेजिंग डायरेक्टर, एकता कपूर , सीईओ-बालाजी टेलिफिल्मस, जागतिक स्तरावर ओप्राह विन्फ्रे, जे. के. रोलिंग, झांग तीन, येलेने बाटूरिना जुली मयेर, एल. के. बेनेट या महिला उद्योजक आघाडीवर आहेत. तसेच महाराष्ट्रातील काही यशस्वी महिला उद्योजकांमध्ये शीला साबळे-औद्योगिक क्षेत्रातील उद्योजिका, उषा शिंदे या डायमंड पब्लिकेशन व पार्वतीबाई फुंदे या पीव्हीसी पाईप उद्योग याच्या उद्योजिका आहेत.'[२]

देशात लिंगसमानता असली तरीही महिलांना पुरूषांच्या बरोबरीने उद्योग करण्यास अनेक संकटाना तोंड द्यावे लागते. महिलांना समान संधी मिळाल्यास निश्चितच कुटुंबाची प्रगती होईल त्याचप्रमाणे गावाची, राज्याची पर्यायाने राष्ट्र ही प्रगतीपथावर जाईल. कुटुंबातील एक स्त्री उद्योजक झाली तर उद्योजकतेच्या संस्कारातून भावी पिढी उद्योजकीय होईल. कुटुंबाच्या आणि समाजाच्या विकासासाठी आर्थिकरित्या महिला सक्षम होणे अनिवार्य आहे. आर्थिक सक्षमीकरणाद्वारे निश्चितच राजकीय, शैक्षणिक, सांस्कृतिक सक्षमीकरण साधता येईल. देशाच्या शाश्वत, आर्थिक व सामाजिक विकासात महिला उद्योजकांची महत्त्वाची भुमिका आहे यासाठी केंद्र व राज्य सरकाने विविध योजना राबवल्या आहेत. आगामी काळात या योजनांच्या अंमलबजावणीद्वारे महिला उद्योजकांना अनेक नावीन्यपूर्ण संधी उपलब्ध होणार आहेत. भारत सरकारच्या नवा भारत हा महत्त्वकांक्षी दृष्टिकोण महिलांना आर्थिक प्रवाहात आणल्याशिवाय शक्य होणार नाही. महिलांना आर्थिक प्रवाहात सामावून घेणे ही काळाची गरज आहे. या सकारात्मक दृष्टिकोणाद्वारे देशाच्या विकासाकरीता पोषक वातावरण निर्मिती केली जाऊ शकते. या पोषक व सकस वातावरणाद्वारे देशातील महिलांचे कौटुंबिक व सामाजिक स्थान सक्षम करता येते.

**निष्कर्ष:-**

1. स्त्री उद्योजकता ही केवळ आर्थिक व्यवहाराशी संबंधित नाही, तर सामाजिक पुनर्रचनेशीही संबंधित आहे. समाजातील लिंगसमतेच्या दिशेने असलेले एक महत्त्वाचे पाऊल आहे.
2. महिलेच्या कर्तृत्वाला व्यासपीठ मिळाल्याने केवळ उद्योग उभारणीलाच हातभार लागला नाही, तर सामाजिक दृष्टिकोणालाही नव्याने आकार प्राप्त झाला.
3. स्त्री जेव्हा उद्योगक्षेत्रात पाऊल ठेवते, तेव्हा ती अन्य महिलांसाठीही प्रेरणास्थान बनते.
4. महिला उद्योजकता ही आर्थिक उन्नतीबरोबरच सामाजिक समतेचा प्रमुख मार्ग आहे.
5. महिलांना उद्योगक्षत्रात समान संधी मिळाल्यास निश्चितच कुटुंबाची प्रगती होईल त्याचप्रमाणे गावाची, राज्याची पर्यायाने राष्ट्र ही प्रगतीपथावर जाईल.

6. भारत सरकारच्या नवा भारत हा महत्त्वकांक्षी दृष्टिकोण महिलांना आर्थिक प्रवाहात आणल्याशिवाय शक्य होणार नाही. महिलांना आर्थिक प्रवाहात सामावून घेणे ही काळाची गरज आहे. या सकारात्मक दृष्टिकोणाद्वारे देशाच्या विकासाकरीता पोषक वातावरण निर्मिती केली जाऊ शकते. या पोषक व सकस वातावरणाद्वारे देशातील महिलांचे कौटुंबिक व सामाजिक स्थान सक्षम करता येते.

संदर्भ ग्रंथ-

1. बागची सुबोता, वाळिंबे चित्रा, 'तुम्हीही व्हा...धडाडीचे उद्योजक', रोहन प्रकाशन, गिरगांव-मुंबई, २०१३ पृ. १४
2. Wikipedia

# महिला बचत गटांची आर्थिक भूमिका आणि नेतृत्व क्षमता

**डॉवैशाली बागुल .,**
इतिहास विभागप्रमुख,
श्री मुक्तानंद महाविद्यालय, गंगापूर जि. छत्रपती संभाजीनगर

**प्रस्तावना:** भारतीय ग्रामीण आणि शहरी समाजव्यवस्थेत महिलांचे योगदान अत्यंत महत्त्वाचे आहे . कुटुंबाच्या आर्थिक, सामाजिक आणि सांस्कृतिक उभारणीत महिलांची भूमिका केंद्रस्थानी असली तरी दीर्घकाळ त्यांना निर्णयप्रक्रियेत योग्य स्थान मिळाले नाहीशिक्षणाचा अभाव ., आर्थिक परावलंबित्व, सामाजिक बंधने आणि संधींची कमतरता यामुळे महिलांच्या प्रगतीला मर्यादा आल्याया पार्श्वभूमीवर . महिला बचत गट ही संकल्पना परिवर्तनाचे प्रभावी साधन म्हणून पुढे आलीबचत ., कर्ज, लघुउद्योग, सामूहिक निर्णयप्रक्रिया, सामाजिक सहभाग आणि स्थानिक नेतृत्व यांद्वारे महिला बचत गटांनी महिलांना केवळ आर्थिकदृष्ट्या सक्षम केले नाही, तर त्यांच्यात नेतृत्वगुणही विकसित केले.

महिला बचत गट हे सामान्यतः १० ते २० महिलांचे स्वयंप्रेरणेने तयार झालेले समूह असतात या समूहातील . सदस्य नियमित बचत करतात, त्यातून अंतर्गत कर्जव्यवस्था चालवतात आणि गरजेनुसार विविध उपजीविकेचे उपक्रम राबवतातसुरुवातीला या गटांचे प्रमुख उद्दिष्ट बचत आणि परस्पर सहकार्य असे . असले तरी कालांतराने ते ग्रामीण विकास, महिला सक्षमीकरण, सामाजिक सुधारणा आणि स्थानिक प्रशासनातील सहभाग यांचे प्रभावी माध्यम बनलेत्यामुळे महिला बचत गटांकडे केवळ आर्थिक . .संस्थेप्रमाणे न पाहता सामाजिक परिवर्तनाच्या शक्तीप्रमाणे पाहणे आवश्यक आहे

या संशोधनपर लेखात महिला बचत गटांची आर्थिक भूमिका, त्यांचे महिला सक्षमीकरणातील स्थान, तसेच नेतृत्व क्षमता विकसित करण्यातील योगदान यांचा सविस्तर अभ्यास करण्यात आला आहे.

महिला बचत गट संकल्पना आणि स्वरूप :

महिला बचत गट म्हणजे समान सामाजिकआर्थिक पार्श्वभूमी असलेल्या महिलांनी एकत्र येऊन - या गटांचे कार्य नियमित बचत .स्वयंसाहाय्याच्या तत्त्वावर उभारलेला समूह, कर्जपुरवठा, लघुउद्योग, सामुदायिक प्रश्नांवर चर्चा आणि सामाजिक जनजागृती अशा विविध स्वरूपांत चालतेसाहाय्य -स्वयं . गटांची संकल्पना ग्रामीण विकासाच्या दृष्टिकोनातून महत्त्वाची मानली जाते, कारण ती तळागाळातील लोकांना स्वावलंबी बनवते.

बचत गटांच्या काही मुख्य वैशिष्ट्यांकडे लक्ष दिल्यास त्यांची रचना अधिक स्पष्ट होतेसदस्य नियमित . समूहातील महिलांना तातडीच्या .प्रत्येक व्यवहाराची नोंद ठेवली जाते .ठराविक रक्कम जमा करतात .बैठकीत सर्व निर्णय सामूहिकरीत्या घेतले जातात .गरजांसाठी किंवा व्यवसायासाठी अंतर्गत कर्ज दिले जाते यामुळे महिलांमध्ये उत्तरदायित्व, शिस्त, आर्थिक नियोजन आणि संघटनकौशल्य विकसित होते.

महिला बचत गटांचे यश त्यांच्या परस्पर विश्वासावर आधारित असतेहा विश्वास आर्थिक व्यवहारापुरता . त्यामुळे बचत गट ही फक्त बचतीची .मर्यादित नसून सामाजिक आधाराचे जाळे निर्माण करतोपद्धत नसून महिलांच्या सर्वांगीण विकासासाठी तयार झालेली सशक्त चळवळ आहे.

**महिला बचत गटांची आर्थिक भूमिका**

**१बचतीची सवय आणि आर्थिक शिस्त .**

महिला बचत गटांची सर्वात मूलभूत आर्थिक भूमिका म्हणजे महिलांमध्ये बचतीची सवय निर्माण करणे . अल्प उत्पन्न असलेल्या कुटुंबांमध्ये नियमित बचत करणे कठीण मानले जाते; परंतु समूहाच्या माध्यमातून अगदी लहान रक्कमही सातत्याने साठवता येतेया प्रक्रियेमुळे महिलांना पैशाचे नियोजन ., प्राधान्यक्रम ठरवणे आणि खर्चावर नियंत्रण ठेवणे शिकायला मिळते.

बचतीची ही सवय केवळ आर्थिक स्थैर्य देत नाही, तर आत्मविश्वासही वाढवते" .आपल्या हातातही पैसा साठवण्याची क्षमता आहे" ही जाणीव महिलांच्या मानसिक बळकटीस कारणीभूत ठरतेअनेक महिलांसाठी . .हीच आर्थिक स्वातंत्र्याची पहिली पायरी ठरते

**२अंतर्गत कर्जव्यवस्था आणि साहाय्य .**

बचत गटातील महिलांनी जमा केलेल्या निधीतून सदस्यांना अल्प व्याजदराने कर्ज दिले जातेहे कर्ज . वैद्यकीय गरजा, मुलांचे शिक्षण, शेती, पशुपालन, घरगुती व्यवसाय किंवा तातडीच्या प्रसंगांसाठी उपयुक्त ठरते.यामुळे महिलांची सावकारांवरील अवलंबित्व कमी होते आणि कर्जाच्या दुष्टचक्रातून सुटका होते .

अंतर्गत कर्जव्यवस्था महिलांना कर्ज व्यवस्थापनाची समज देतेकर्ज घेणे ., ते योग्य कारणासाठी वापरणे, परतफेडीचे नियोजन करणे आणि समूहापुढे जबाबदारी स्वीकारणे या प्रक्रियेत आर्थिक परिपक्वता वाढते . .ही आर्थिक शिस्त भविष्यात मोठ्या प्रमाणावर बँकिंग व्यवहार करण्यासाठी उपयोगी ठरते

**३जकताउत्पन्नवर्धक उपक्रम आणि उद्यो .**

महिला बचत गटांनी अनेक ठिकाणी लघुउद्योगांना चालना दिली आहेउदाहरणार्थ ., शिवणकाम, अगरबत्ती निर्मिती, पापडमसाला व्यवसाय-, दुग्धव्यवसाय, कुक्कुटपालन, बकरीपालन, सेंद्रिय शेती, अन्नप्रक्रिया, हस्तकला, कॅटरिंग इत्यादी उपक्रम गटांमार्फत राबवले जातातमांमुळे महिलांना स्वतंत्र उत्पन्नाचे या उपक्र . .साधन मिळते

व्यवसाय करताना महिलांना बाजारपेठ, कच्चा माल, उत्पादन, विक्री, नफातोटा-, ग्राहक संबंध आणि स्पर्धा यांची जाण येतेकाही ठिकाण .त्यामुळे त्यांच्यात उद्योजकतेची भावना वाढीस लागते .ी महिला बचत गटांनी सामूहिक व्यवसायातून मोठे आर्थिक यश मिळवले असून त्यांच्या कुटुंबाच्या जीवनमानात लक्षणीय बदल घडून आला आहे.

**४बँकिंग आणि वित्तीय समावेशन .**

महिला बचत गट बँकिंग प्रणालीशी जोडले गेल्याने महिलांना औपचारिक वित्तीय संस्थांशी व्यवहार करण्याची संधी मिळतेबँक खाते उघडणे ., कर्ज प्रस्ताव तयार करणे, निधीचे नियोजन, सरकारी योजनांचा लाभ घेणे, डिजिटल व्यवहार करणे यांसारख्या कौशल्यांचा विकास होतोयामुळे महिलांचा . वित्तीय समावेशन वाढतो.

पूर्वी अनेक महिला बँकेत जाण्यास कचरायच्या किंवा आर्थिक व्यवहारात पुरुषांवर अवलंबून असतपरंतु . ही प्रक्रिया आर्थिक .अनुभवामुळे त्या स्वतः बँकेत जाऊन काम करू लागतात बचत गटांच्या .स्वावलंबनासोबत सामाजिक प्रतिष्ठाही निर्माण करते

**५कुटुंबाच्या आर्थिक स्थैर्यात योगदान .**

महिला बचत गटांमुळे महिलांचे उत्पन्न वाढल्यास त्याचा थेट परिणाम कुटुंबाच्या जीवनमानावर होतो . अन्न, आरोग्य, मुलांचे शिक्षण, घराची दुरुस्ती, शेतीतील गुंतवणूक आणि आपत्कालीन गरजा यासाठी अधिक चांगल्या प्रकारे खर्च करता येतोअनेक अभ्यासांत असे दिसून आले आहे की महिलांच्या हाती पैसा . आल्यास तो कुटुंबाच्या कल्याणासाठी अधिक जबाबदारीने वापरला जातो.

म्हणून महिला बचत गटांची आर्थिक भूमिका केवळ वैयक्तिक पातळीवर मर्यादित राहत नाही; ती संपूर्ण कुटुंब आणि समुदायाच्या आर्थिक विकासाशी जोडलेली आहे.

**महिला सक्षमीकरणात बचत गटांचे योगदान**

महिला बचत गट हे आर्थिक साधन असले तरी त्यांचा प्रभाव सामाजिक आणि मानसिक पातळीवर अधिक खोलवर जाणवतोसमूहाच्या माध्यमातून महिलांना स्वतःच्या समस्या मांडण्याची ., अनुभव शेअर करण्याची आणि एकमेकांना आधार देण्याची संधी मिळतेअनेक महिला पहिल्यांदाच घराबाहेर पडून नियमित . त्यामुळे त्यांचा सामाजिक स .बैठकीत सहभागी होतातंपर्क वाढतो.

बचत गट महिलांना "मी काही करू शकते" ही जाणीव देतातआर्थिक व्यवहार सांभाळताना ., बैठका घेताना आणि सामूहिक निर्णय घेताना त्यांच्यात आत्मविश्वास वाढतो .हीच सक्षमीकरणाची खरी सुरुवात आहे . महिलांना आपले मत व्यक्त करण्याचे धैर्य मिळते, कुटुंबातील निर्णयात सहभाग वाढतो आणि मुलींच्या शिक्षण, आरोग्य, स्वच्छता, व्यसनमुक्ती, बालविवाह, कौटुंबिक हिंसा यांसारख्या प्रश्नांवर त्या सक्रिय भूमिका घेऊ लागतात.

**नेतृत्व क्षमता विकसित करण्यात महिला बचत गटांची भूमिका**

**१सामूहिक निर्णयप्रक्रियेत सहभाग .**

नेतृत्वाची पहिली पायरी म्हणजे निर्णय घेण्याची क्षमतातील प्रत्येक बैठक ही निर्णयप्रक्रियेची एक बचत गटा . बचतीची रक्कम .शाळाच असते, कर्ज वितरण, परतफेडीचे नियम, व्यवसायाचे नियोजन, कार्यक्रमांचे आयोजन अशा अनेक बाबींवर महिलांना चर्चा करून निष्कर्ष काढावा लागतोयामुळे विचारमंथन ., तर्कशक्ती, संवादकौशल्य आणि निर्णयक्षमता विकसित होते.

**२जबाबदाऱ्या सांभाळण्याची संधी .**

गटात अध्यक्ष, सचिव, खजिनदार अशा विविध जबाबदाऱ्या असतातया पदांवर काम करणाऱ्या महिलांना . नोंदी ठेवणे, बैठकांचे नियोजन करणे, बँक व्यवहार करणे, सदस्यांशी समन्वय साधणे, बाह्य संस्थांशी संपर्क ठेवणे अशी कामे करावी लागतातया प्रक्रियेमुळे प्रशासन ., लेखा, नियोजन आणि व्यवस्थापन कौशल्य विकसित होते.

पूर्वी सार्वजनिक जबाबदारी न सांभाळलेल्या महिलांसाठी ही मोठी प्रशिक्षणप्रक्रिया असतेहळूहळू त्या . आत्मविश्वासाने लोकांसमोर बोलू लागतात, समस्या सोडवू लागतात आणि इतरांना मार्गदर्शन करू लागतात.

**३संवाद आणि सार्वजनिक सहभाग .**

नेतृत्वासाठी प्रभावी संवाद महत्त्वाचा असतोबचत गटांच्या माध्यमातून महिलांना बैठकांमध्ये बोलणे ., बँक अधिकारी, ग्रामपंचायत सदस्य, सरकारी कर्मचारी, स्वयंसेवी संस्था आणि इतर गटांशी संवाद साधण्याची संधी मिळते.चे व्यक्तिमत्त्व अधिक सक्षम बनतेयामुळे त्यां .

अनेक ठिकाणी महिला बचत गटांच्या नेत्यांनी गावपातळीवरील प्रश्नांसाठी पुढाकार घेतला आहे . पाणीपुरवठा, स्वच्छता, शाळेची सुविधा, आरोग्य शिबिरे, पोषण, व्यसनमुक्ती आणि महिला हक्क यांसारख्या विषयांवर त्यांनी समुदायाला एकत्र केले आहे.हे स्थानिक नेतृत्वाचे उत्तम उदाहरण आहे .

**४राजकीय आणि सामाजिक नेतृत्वाचा पाया .**

महिला बचत गटांतून तयार झालेल्या अनेक महिला नंतर ग्रामपंचायत, पंचायत समिती, जिल्हा परिषद किंवा इतर स्थानिक संस्थांमध्ये निवडून आल्या आहेतशी संवाद बचत गटातील अनुभवामुळे त्यांना लोकां . साधणे, समस्या समजून घेणे आणि नियोजन करणे शक्य झालेत्यामुळे बचत गट हे स्थानिक लोकशाही . .नेतृत्व घडविणारे महत्त्वाचे व्यासपीठ ठरले आहे

**५ओळख-आत्मविश्वास आणि स्व .**

नेतृत्व हे केवळ पद धारण करण्यात नसून स्वतःच्या क्षमतांची जाणीव होण्यात असतेल बचत गटाती . आर्थिक हातभार .सहभागामुळे महिलांना स्वतःबद्दल आदर निर्माण होतो, सामाजिक सहभाग आणि सार्वजनिक मान्यता यांमुळे त्या स्वतःची ओळख नव्याने घडवतातही मानसिक उभारणी नेतृत्वक्षमतेसाठी . .अत्यंत आवश्यक आहे

**महिला बचत गटांसमोरील अडचणी**

महिला बचत गटांचे महत्त्व असूनही त्यांच्या कार्यात अनेक अडचणी दिसून येतातकाही गटांमध्ये नियमित . आर्थिक साक्षरतेचा अभाव असल्यास .बैठका होत नाहीत किंवा नोंदी व्यवस्थित ठेवल्या जात नाहीत बाजारपेठेची माहिती नसल्यास .कर्जवाटप आणि परतफेडीत अडचणी येतातउत्पादन विक्रीत अडथळे येतात.षसत्ताक मानसिकता महिलांच्या स्वातंत्र्याला मर्यादा आणतेकाही वेळा पुरु .

याशिवाय प्रशिक्षणाचा अभाव, तांत्रिक ज्ञानाची कमतरता, सरकारी योजनांबद्दल अपुरी माहिती, बँकांकडून अपुरा प्रतिसाद, गटातील अंतर्गत मतभेद आणि डिजिटल साधनांचा कमी वापर या अडचणीही महत्त्वाच्या

आहेतकाणी गट केवळ अनुदान किंवा कर्ज मिळवण्यापुरते मर्यादित राहतातकाही ठि ., ज्यामुळे त्यांचा मूळ आत्मनिर्भरतेचा उद्देश कमकुवत होतो.

**उपाययोजना**

महिला बचत गट अधिक सक्षम करण्यासाठी काही ठोस उपाययोजना आवश्यक आहेतसर्वप्रथम ., गटांना आर्थिक साक्षरता आणि व्यवस्थापन प्रशिक्षण दिले पाहिजेनोंदी-लेखा ., कर्जव्यवस्था, बचत नियोजन, डिजिटल बँकिंग आणि उद्योजकता याविषयी सातत्यपूर्ण प्रशिक्षण उपयुक्त ठरेल.

दुसरे म्हणजे, गटांनी तयार केलेल्या उत्पादनांना बाजारपेठेशी जोडणे आवश्यक आहेब्रँडिंग ., पॅकेजिंग, विक्री प्रशिक्षण, ऑनलाइन विक्रीचे मार्ग आणि प्रदर्शन मेळावे यांमुळे आर्थिक स्थैर्य वाढेलतिसरे म्हणजे ., ग्रामपंचायत, स्वयंसेवी संस्था, बँका आणि सरकारी विभाग यांच्यात प्रभावी समन्वय असणे गरजेचे आहे.

चौथे म्हणजे, नेतृत्व विकासासाठी निवडक महिलांना विशेष नेतृत्व प्रशिक्षण दिले जावेणसार्वजनिक भाष ., समस्या निराकरण, नियोजन, कायदेविषयक माहिती आणि स्थानिक प्रशासन यांचे ज्ञान दिल्यास त्यांचे नेतृत्व अधिक प्रभावी होईलशेवटी ., समाजातील पुरुष आणि कुटुंबीयांची सकारात्मक मानसिकता निर्माण करण्यासाठी जनजागृती आवश्यक आहे, कारण महिलांच्या प्रगतीला सामाजिक पाठबळ मिळणे तितकेच महत्त्वाचे आहे.

**निष्कर्ष**

महिला बचत गट हे भारतीय समाजातील महिलांच्या आर्थिक आणि सामाजिक उन्नतीचे प्रभावी साधन ठरले आहेतनियमित बचत ., अंतर्गत कर्जव्यवस्था, लघुउद्योग आणि वित्तीय समावेशन यांद्वारे त्यांनी महिलांना आर्थिक स्वावलंबनाचा मार्ग दिलात्याचबरोबर सामूहिक चर्चा ., जबाबदाऱ्यांचे वाटप, सार्वजनिक संवाद आणि स्थानिक प्रश्नांवरील सक्रिय सहभाग यांमुळे महिलांमध्ये नेतृत्व क्षमता विकसित झाली.

महिला बचत गटांची खरी ताकद त्यांच्या सामूहिकतेत आहे“ या गटांनी महिलांना .लाभार्थी” या भूमिकेतून “निर्णयकर्ता” आणि “नेतृत्वकर्ता” या भूमिकेकडे नेले आहेत्यामुळे महिला बचत गट हे केवळ आर्थिक . विकासाचे माध्यम नसून सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता आणि तळागाळातील लोकशाही बळकट करणारी चळवळ आहे.

भविष्यात महिला बचत गट अधिक प्रभावी व्हावेत यासाठी प्रशिक्षण, बाजारपेठ, आर्थिक सल्ला, तांत्रिक मदत आणि संस्थात्मक पाठबळ यांची जोड देणे आवश्यक आहेयोग्य दिशा ., सातत्यपूर्ण समर्थन आणि सकारात्मक सामाजिक वातावरण मिळाल्यास महिला बचत गट देशाच्या सर्वांगीण विकासात अधिक मोठी भूमिका बजावू शकतीलमहिलांचे सशक्तीकरण म्हणजे कुटुंबाचे ., समाजाचे आणि राष्ट्राचे सशक्तीकरण होय; आणि या प्रक्रियेत महिला बचत गटांचे योगदान अत्यंत मोलाचे आहे.

**संदर्भसूची**

1. बंदिएरा, ओ., ब्युरेन, एन., बर्गेस, आर., गोल्डस्टीन, एम., गुलेस्सी, एस., रसूल, आय., & सुलैमान, एम) .2018). महिला सक्षमीकरणाची प्रत्यक्ष अंमलबजावणीयाद्दच्छ आफ्रिकेतील : नियंत्रित चाचणीतील पुरावे. जागतिक बँक.
2. दत्ता, यू) .2015). बिहार, भारतातील जीविका या मोठ्या स्वयं-सहाय्य गट प्रकल्पाचे सामाजिक-.आर्थिक परिणाम जागतिक विकास, 68, 1—18.
3. डी हूप, टी., व्हॅन केम्पेन, एल., लिन्सेन, आर., & व्हॅन एर्डेवाइक, ए) .2014). महिलांचे स्वायत्तत्व आणि व्यक्तिनिष्ठ कल्याणओडिशा :, भारतातील स्वयंसहाय्य गटांच्या परिणामावर -.लिंगनियमांचा प्रभाव स्त्रीवादी अर्थशास्त्र, 20(3), 103—135.
4. डेनिंगर, के., & लियू, वाय) .2009). भारतामधील स्वयंसहाय्य गटांचे आर्थिक आणि सामाजिक - परिणाम (धोरण संशोधन कार्यपत्रिका क्र .4884). जागतिक बँक.
5. डेनिंगर, के., & लियू, वाय) .2013). भारतातील अभिनव स्वयंसहाय्य गट मॉडेलचे आर्थिक -.आणि सामाजिक परिणाम जागतिक विकास, 43, 149—163.
6. देसाई, आर.एम ., & जोशी, एस) .2014). सामूहिक कृती आणि समुदाय विकासग्रामीण : . गटांमधून मिळालेले पुरावेसहाय्य-भारतातील स्वयं जागतिक बँक आर्थिक समीक्षा, 28(3), 492—524.
7. देशमुखरणदिवे-, जे) .2004). महिलांचे स्वयंसहाय्य गट-. जागतिक बँक.
8. देव, एस .एम., कणबुर, आर., गलाब, एस., & अळिवेलू, जी) .(.संपा) .2012). गरीब महिलांचे संघटनआंध्र प्रदेशचा अनुभव :. अकॅडमिक फाउंडेशन.
9. देविका, जे., & थंपी, बी) .व्ही .2007). 'सक्षमीकरणकेरळमधील :यांच्या दरम्यान 'मुक्ती' आणि ' .कुदुंबश्री उपक्रम भारतीय लिंग अभ्यास जर्नल, 14(1), 33—60.
10. कबीर, एन) .1999). संसाधने, कृतीक्षमता, उपलब्धीमहिला सक्षमीकरणाच्या मोजमापावरील : .चिंतन विकास आणि परिवर्तन, 30(3), 435—464.
11. कुमार, एन., रघुनाथन, के., अरिएटा, ए., जिलानी, ए., & पांडे, एस) .2021). सामूहिक शक्ती महिलांना सशक्त करतेभारतातील स्व :यं.सहाय्य गटांमधील पुरावे- जागतिक विकास, 146, लेख 105579.
12. सांख्यिकी आणि कार्यक्रम अंमलबजावणी मंत्रालय) .2024). भारतामधील महिला आणि पुरुष 2023. भारत सरकार.
13. नायक, ए.के ., & पाणिग्रही, पी) .के .2020). स्वयंसहाय्य गटांतील सहभाग आणि महिला - संरचनात्मक :सक्षमीकरण मॉडेल विश्लेषण. विकसनशील क्षेत्रांचा जर्नल, 54(1), 19—37.
14. भारतीय रिझर्व्ह बँक) .2019). स्वयंलग्नता कार्यक्रमावरील प्रमुख परिपत्रकबँक सं-सहाय्य गट-.
15. समद, एच.ए ., खांडकर, एस.आर ., असदुझ्झामन, एम., & युनूस, एम) .2019). विद्युतीकरण आणि महिला सक्षमीकरण :ग्रामीण भारतातील पुरावे. जागतिक बँक.

16. जागतिक बँक) .2022). भारतामधील ग्रामीण उपजीविका कार्यक्रममागील दशकातील धडे : भविष्यकालीन दिशा आणि. जागतिक बँक.
17. झावलेटा चीक, जे., & कॉर्बेट, पी) .ई .2024). महिलांच्या स्वयंसहाय्य गटांद्वारे सार्वजनिक - निर्णयप्रक्रिया आणित्यांचे महिला सक्षमीकरणातील योगदानपश्चिम बंगाल :, भारतातील पुरावे. जागतिक विकास दृष्टीकोन, 33, लेख 100549.
18. करुणारत्ने, आर.ए ., & प्रवीणा, डी) .2024). भारतामधील महिला सक्षमीकरणात स्वयंसहाय्य - .गटांची भूमिका द अकॅडमिक.
19. तिगरी, एच., & चंद्रप्पा, एन) .2020). स्वयंमहिला सक्षमीकरणाकडे नेणारा प्रभावी :सहाय्य गट- .दृष्टिकोन जर्नल ऑफ क्रिटिकल रिव्ह्यूज, 8(3), 47—55.
20. पांढरे, ए., & महाजन, एस) .2024). भारतातील ग्रामीण महिलांच्या जीवनात परिवर्तन-स्वयं : .सहाय्य गटांमधील सूक्ष्म वित्त आणि उद्योजकतेचा सक्षमीकरणावर परिणाम नवोन्मेष आणि उद्योजकता जर्नल, 13, लेख 419.

# ग्रामीण महिला उद्योजकता संधी आणि सामाजिक परिवर्तन :

सारिका मारोती दळवी
संशोधक विद्यार्थिनी,
मराठी भाषा व वाङ्मय विभाग
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर
मराठवाडा विद्यापीठ,
छत्रपती संभाजीनगर
मो. 9552359956
ई मेल-dalvisarika94@gmail.com

प्रा. डॉ. द्रौपदी पंदीलवाड
श्री मुक्तानंद महाविद्यालय,
गंगापूर, छत्रपती संभाजीनगर.
मो. 7020788464

**प्रस्तावना**

भारतातील खेडोपाडी भागातील महिलांची भूमिका ही पारंपारिक चौकटीपुरतीच मर्यादित होती व महिलांना केवळ घरगुती कामापुरतेच डांबून ठेवले जात होतेमात्र या अलीकडच्या शिक्षण प्रवाहामुळे . .ची जाणीव निर्माण होत गेलीतंत्रज्ञान आणि सरकारी योजनांमुळे ग्रामीण भागातल्या महिलांमध्ये उद्योजकते यामुळे ग्रामीण महिला .या सामाजिक आणि आर्थिक बदलांमुळे त्यांच्यात एक ज्ञानाची भर पडत गेली उद्योजकतासंधी ही भारताच्या विकासासाठी अत्यंत महत्त्वाची आहे व ग्रामीण महिलांना समाजामध्ये एक सकारात्मक बदल घडेल म्हणून या महिला उद्योजकतेला प्रोत्साहन देणेही आजच्या घडीला खूप महत्त्वाचे आहे.

भारतासारख्या कृषीप्रधान देशामध्ये खेडोपाडी दुर्बल भागात मोठ्या प्रमाणातलोकसंख्या दिसून येते व या भरमसाठ लोकसंख्येच्या माध्यमातून महिलांची संख्या ही मोठ्या प्रमाणामध्ये आढळून येतेस्वतःची . व उद्योजकतेच्या क्षेत्रामध्ये महिलांनी पहिलं पाऊल ठेवण्याची त्यांची तयारी दर्शविणे हे ओळख तयार करणे ग्रामीण महिला उद्यो .खूप महत्त्वाचे आहेजकता म्हणजे नेमकं काय तर स्वतःचा व्यवसाय छोटा किंवा मोठा असो तो स्वतःच्या मनगटावर आर्थिक उत्पन्न निर्माण करणे आणि या समाजामध्ये स्वतंत्र ओळख निर्माण करणे होयया रोजच्या बदलत्या प्रवाहामुळे महिलांना केवळ आर्थिक लाभ नाही तर एक आत्मसन्मानाची . ओळख जगाला दाखवून देणे हे फायदेशीरच ठरतेअशा या सामाजिक प्रवाहामध्ये शेतीपूरक उद्योग पापड ., लोणचे, शिवणकाम, खाद्य प्रक्रिया, दुग्धव्यवसाय इत्यादी सारख्या उद्योगातून महिलांना आर्थिक उत्पन्न निर्माण करणे या हेतूने या संधी सरकारने त्यांच्यापर्यंत याचा लाभ पोहोचावा म्हणून प्रयत्न केलेले आहेत .

त्यामध्येच एक छोटासा व्यवसाय म्हणजे दुग्ध व्यवसाय हा या ग्रामीण अर्थव्यवस्थेला पेलणारा व समाजाला या खेडोपाडी भागांमध्ये गाई .रणारा दुग्ध व्यवसाय आहे असे मला वाटतेअत्यंत फायदेशीर ठ, म्हशीचे संगोपन करून त्यांना योग्य वेळी देखभाल करून मुबलक प्रमाणात चारापाणी स्वच्छता आणि आधुनिक तंत्रज्ञानाचा फायदा घेऊन त्यातून तूप, दही, खवा, दूध यासारखे टिकाऊ पदार्थ उत्पादन आरोग्याला महत्त्वाच्या पौष्टिक अवयव पदार्थाची विक्री करून चांगला आर्थिक मोबदला मोठ्या प्रमाणात मिळवता येतो .

**उदिद्ष्टे**

१ (उद्योजकतेमुळे ग्रामीण महिलांच्या सक्षमीकरणाचा अभ्यास करणे.

२.ग्रामीण महिला उद्योजकतेच्या वेगवेगळ्या संधीचा तपास घेणे (

३.हिलांमध्ये आर्थिक उत्पन्नावर भर देणेउद्योजकतेमुळे ग्रामीण म (

४.महिला उद्योजकांसमोरील आव्हानांना व समस्यांचा अभ्यास करणे (

**दुग्ध व्यवसायाचे महत्त्व**

भारतीय अर्थव्यवस्था हा शेतीप्रधान देश असून 60% पेक्षा जास्त लोक हे शेती व्यवसायावर अवलंबून आहेत व्यवसायांपेक्षा हा छोटा दुग्ध व्यवसाय परवडणे मात्र खेडोपाडी भागांमध्ये इतर मोठ्या . म्हणूनच या ग्रामीण महिला उद्योजकता संधी शक्यतो महिलांपर्यंत पोहोच .जोगता आहेत नाहीत व संधीही दिली जात नाहीया महागाई वाढीमुळे कुटुंबाचा भार पेरणे शक्य नाही म्हणून या ग्रामीण महिला या . राच्या संधी व योजना म्हणजेच पापडसरकारने काढलेल्या रोजगा(लोणचे), शिवणकाम, कुक्कुटपालन, दुग्ध व्यवसाय यासारख्या उद्योगातून महिलांना रोजगार मिळावा म्हणून या योजना व कष्टाचा घरगुती व्यवसाय निर्माण व्हावा व समाजाला फायदा होऊन समाजाला आर्थिक पाठबळ देणारे साधन आहे.

**दुग्ध व्यवसाय**

**१ नावरांची निवडज (**

यामध्ये मुख्यत्वे संकरीत गायी .दुध व्यवसायासाठी उत्तम जनावरांची निवड करणे महत्वाचे आहे )HF), देशी गायी, म्हशी, मेंढ्या आणि शेळ्या या पाळीव प्राणी पाळल्या जाऊ शकतात.

**२ गोठा व्यवस्थापन (**

जनावरांना हिरवा चारा, स्वच्छता, मोकळ्या जागेत कोरडा गोठा असावा.

**३ खाद्य व्यवस्थापन (**

व .दुध उत्पादन करतेवेळी मानवी आरोग्यासाठी गोठ्याची नियमितपणे स्वच्छता महत्वाची आहे विक्रीत वाढ करण्यासाठी जनावरांना समतोल आहार देणे गरजेचे आहेलिटर दुधासाठी १त्यातच किमान . -७००७५० ग्रॅम पशुखाद्य असावा.

**४ विक्री (**

डेअरीमध्ये दररोज ताजे दुध विक्री करून रोख पैसे कमवू शकतात तसेच जनावरांच्या दुध आरोग्यासाठी नेहमी काळजी घेतल्यास दुध उत्पादनामध्ये वाढ होते.

**५आर्थिक बाजू व कर्ज सुविधा (**

न शासनाने दुध व्यवसायासाठी मुद्रा लोन योजनेद्वारे ग्रामीण महिलांना कर्जाची सुविधा उपलब्ध करू .व किमान लाखांपर्यंत गुंतवणूक करून चांगल्याप्रकारे आर्थिक स्तर वाढवू शकतो .दिली आहे

या सामाजिक परिवर्तन उद्योजकतेमुळे खेड्यापाड्यातल्या अडाणी महिलांना प्रोत्साहन देणेही तेवढेच समाजाचे काम आहे व यातून कुटुंबाला आर्थिक उत्पन्न ही मोठ्या प्रमाणात मिळत जाते . अशा या आर्थिक .समाजामध्ये या व्यवसायामुळे महिला पुरुषांमध्ये समानतेची भावना ही वाढत जाते भांडवलामुळे स्वत:चे उत्पन्न घरबसल्या मिळाल्यामुळे महिलांची आर्थिक स्थिती ही मजबूत होण्यास मदत होतेव्यवसाय उद्योगास महत्व प्राप्त अर्थव्यवस्थेच्या दृष्टिकोनातून व मानवी आहाराच्या माध्यमातून दुग्ध . म्हणून या .होते व भारतीय मानवी शरीरास आवश्यक असणारे प्रोटीन हे केवळ दुधातूनच मिळत जाते व्यवसायामध्ये जनावरांची निवड व जनावरांच्या आरोग्यासाठी व्यवस्थित गोठा तयार करणे खूप महत्त्वाचे आहेतसेच ग्रामीण महिला . या क्षेत्राकडे वळताना दिसून येतेकमीत कमी हा दुग्ध व्यवसाय दहा ते वीस . जनावरांपासून सुरुवात केल्यास त्यातून अधिक महिलांना नफा मिळत जातो दररोजचा हा व्यवसाय पुरवठा समाजाला देणारा असल्यामुळे ग्रामीण भागातील महिला या उद्योजकेकडे एक रोजगाराचे उत्तम साधन म्हणूनही पाहिले जातेच या ग्रामीण घरगुती कामामध्ये गुंतलेल्या असल्या तरी आजच्या काळात त्या तसे .

उद्योजकतेच्या माध्यमातून आर्थिक, सामाजिक आणि सांस्कृतिक परिवर्तन घडवून आणत आहेतग्रामीण . महिला उद्योजकता ही केवळ आर्थिक प्रगतीसाठी नाही तर सामाजिक सक्षमीकरणासाठीही महत्त्वाची ठरत .आहे

**ग्रामीण महिला उद्योजकतेच्या संधी**

**१) शासकीय योजना आणि सहाय्य**

सरकार विविध रोजगार संधी राबवत आहे जसे की, महिला आर्थिक महामंडळ, महिला बचत गट, स्टार्टअप इंडिया या इत्यादी गट या योजना भारतामध्ये दिसून येतात व ग्रामीण महिलांना आर्थिक मदतही प्राप्त होते व प्रशिक्षणही भेटत जाते .

**२) हस्तकला व घरगुती उद्योग**

ग्रामीण महिला उद्योजकतामध्ये दुर्बल ग्रामीण भागातल्या महिलांना घरबसल्या पारंपारिक कौशल्य सरकारमार्फत त्यांच्यापर्यंत मिळत जातेजसे की ., विणकाम, भरतकाम, पापड, लोणची, अन्नप्रक्रिया या छोट्या मोठ्या व्यवसायाच्या संधीतून आर्थिक लाभ उपलब्ध होतो .

**३) कृषी पूरक उद्योग**

भारत हा कृषीप्रधान देश असल्यामुळे शेती संबंधित व्यवसाय जसे की दुग्धव्यवसाय मधमाशी पालन शेळीपालन, कुक्कुटपालन या ग्रामीण महिलांना रोजगाराच्या संधीही मिळत जातात व सामाजिक परिवर्तनही मोठ्या प्रमाणात होते.

**४) तंत्रज्ञान डिजिटल आणि बाजारपेठ**

या बदलत्या तंत्रज्ञानामुळे महिलांना इंटरनेट आणि मोबाईलच्या माध्यमातून स्वतःची उत्पादने घरबसल्या ऑनलाईन प्रकारे सहज करू शकतात व तेही माध्यमे त्यांना उपलब्ध झाली आहेत .

**सामाजिक परिवर्तनामध्ये महिला उद्योजकतेची भूमिका**

**१) आर्थिक स्वावलंबन**

या ग्रामीण महिला खेडोपाडी भागांमध्ये थोडेफार कमवू लागल्यामुळे त्या आर्थिकदृष्ट्या सक्षम होताना दिसत आहेत व कुटुंबातील योग्य ते निर्णय स्वतः घेऊन या ग्रामीण महिला उद्योजकता संधी प्रक्रियेमध्ये सहभागी होताना दिसत आहेत .

**२) शिक्षण आणि जागरूकता वाढ**

ग्रामीण महिलांच्या आर्थिक उत्पन्न वाढल्यामुळे महिलांमध्ये शिक्षणाची आणि आरोग्यबाबतची .योग्य ती जागरूकता वाढत जाते

**३) लैंगिक समानता**

महिला उद्योजकतेमुळे पुरुषप्रधान मानसिकतेत मोठ्या प्रमाणात बदल होऊन समाजामध्ये स्त्री पुरुष .समानतेला चालना मिळत जाते

**४) गरिबी निर्मूलन**

भारतामध्ये ग्रामीण महिला उद्योजकतेच्या उत्पन्नामुळे कुटुंबाची आर्थिक स्थिती सुधारते व गरिबी कमी होण्यास मदत होते .

**समारोप**

ग्रामीण महिला उद्योजकता ही समाजामध्ये योग्यता पद्धतीने गुंतवणूक करून आर्थिक मोबदला मिळत जातेसारामुळे सरकारच्या योजनशिक्षणाच्या प्र .ा महिलांना उद्योजकतेच्या क्षेत्रात प्रवेश करण्याचे संधी मोठ्या प्रमाणात मिळाली आहेतसेच या भारतीय अर्थव्यवस्थेत दुग्ध व्यवसायाला महत्त्वाचे स्थान . या अशा .दुग्ध व्यवसाय शेतीला पूरक व्यवसाय म्हणूनही अधिक मान्यता देण्यात आलेली आहे .आहे खेडोपाडी भागातल्या महिलांचे परिवर्तन हे आजच्या घडीला महत्त्वाचे ठरत जातेम्हणूनच शासनामार्फत . त्यातली त्यात ग्रामीण भागातल्या महिला .दुग्ध व्यवसायातून मानवी जीवनाची घडणी विकसित होत जाते व कौशल्य शिकवून त्यांच्य या पूर्णतः शेती व्यवसायावर अवलंबून असल्यामुळे हे छोटे मोठे उद्योजकावर एक प्रकारची जबाबदारी पेलण्याची क्षमता निर्माण होत जातेविशेष करून महिलांसाठी प्रशिक्षण राबवणे . कर्ज सुविधा उपलब्ध करून देणे बाजारपेठेपर्यंत पोहोच वाढवणे महिलांमध्ये डिजिटल साक्षरता वाढवणे व

या इतर अनेक वेगवेगळे कौ भारतामध्ये सामाजिक जागृती मोहीम राबवणेशल्य महिलांना उपयोगी पडत जाते.

**निष्कर्ष**

शेतीपूरक उद्योग, खाद्य प्रक्रिया उद्योग, पापड, लोणचे, शिवणकाम, दुग्ध व्यवसाय यांसारख्या उद्योगांपासून महिलांना उत्पन्न मिळत जातेतसेच या खेडोपाडी दुर्बल भागामध्ये महिलांनी स्वतःच्या . वर आधारित या क्षेत्रात सकौशल्या्वतःचा व्यवसाय उभारणे सध्याच्या घडीला महत्त्वाचे आहेया . उद्योजकतेच्या मार्फत आर्थिक, सामाजिक आणि सांस्कृतिक परिवर्तन घडवण्यात मदत होत जातेम्हणूनही . ग्रामीण महिला उद्योजकता खेडोपाडी भागात एक विकासाचे प्रभावी साधन मानले जाते.

**संदर्भ**

१) लोकराज्य दुग्ध व्य-वसाय विशेषांक, नोव्हेंबर, १९८८ .

२) भारतीय शेती व्यवसायातील संस्थात्मक बदल समस्या व उपाय .समाजवादी प्रबोधिनी-

३) महाराष्ट्र दुग्ध व्यवसाय अंतरंग द्वितीय आवृत्ती, १९९२.

४) विकीपीडिया

# महिला उद्योजकांमध्ये आंतरराष्ट्रीय सहकार्य आणि बाजारपेठ

**प्रा.डॉ. शामल भीवराव जाधव**
गृहशास्त्र विभाग प्रमुख
मिल्लिया कला, विज्ञान व व्यवस्थापन शास्त्र महाविद्यालय बीड (महाराष्ट्र)

## प्रस्तावना

जागतिकीकरण, डिजिटल अर्थव्यवस्था आणि मुक्त व्यापार धोरणांमुळे महिला उद्योजकांसाठी आंतरराष्ट्रीय व्यवसायाच्या संधी मोठ्या प्रमाणात उपलब्ध झाल्या आहेत. महिला उद्योजकता ही केवळ आर्थिक क्रिया नसून सामाजिक, सांस्कृतिक आणि आर्थिक सक्षमीकरणाचे प्रभावी साधन आहे. आंतरराष्ट्रीय सहकार्य आणि सखोल बाजारपेठ संशोधन या दोन घटकांमुळे महिला उद्योजकांना जागतिक बाजारपेठेत स्पर्धात्मक स्थान मिळविणे शक्य होते.

## संशोधनाची उद्दिष्टे

- महिला उद्योजकांसाठी आंतरराष्ट्रीय सहकार्याचे महत्त्व स्पष्ट करणे
- आंतरराष्ट्रीय सहकार्याचे विविध प्रकार समजावून सांगणे
- बाजारपेठ संशोधनाची भूमिका आणि त्याचे घटक अभ्यासणे.
- महिला उद्योजकांसमोरील आव्हाने आणि त्यावरील उपाय सुचवणे.
- आंतरराष्ट्रीय विस्तारासाठी प्रभावी धोरणे मांडणे.

## संशोधन गृहितके (Hypotheses)

- आंतरराष्ट्रीय सहकार्यामुळे महिला उद्योजकांच्या व्यवसाय वाढीत सकारात्मक परिणाम होतो.
- प्रभावी बाजारपेठ संशोधनामुळे परदेशी बाजारपेठेत अपयशाचे प्रमाण कमी होते.
- सरकारी धोरणे व आर्थिक सहाय्य महिला उद्योजकांच्या आंतरराष्ट्रीय यशात महत्त्वाची भूमिका बजावतात

## महिला उद्योजकांची संकल्पना

महिला उद्योजक म्हणजे अशी महिला जी स्वतःचा उद्योग, व्यवसाय किंवा सेवा क्षेत्रातील उपक्रम सुरू करून आर्थिक जोखीम स्वीकारते आणि व्यवस्थापन करते. महिला उद्योजकता देशाच्या GDP वाढ, रोजगार निर्मिती आणि सामाजिक विकासात योगदान देते.

## आंतरराष्ट्रीय सहकार्याचे महत्त्व

- नवीन बाजारपेठांमध्ये प्रवेश – निर्यात वाढविणे.
- तंत्रज्ञान हस्तांतरण – आधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर
- गुंतवणूक संधी – परदेशी गुंतवणूक आकर्षित करणे.
- ब्रँड ओळख – जागतिक स्तरावर प्रतिष्ठा निर्माण.

- ज्ञान व कौशल्य विकास — व्यवस्थापन कौशल्य वृद्धी.

**आंतरराष्ट्रीय सहकार्याचे प्रकार**

संयुक्त उपक्रम (Joint Venture)

निर्यात-आयात व्यापार

फ्रँचायझी करार

परवाना करार (Licensing)

ई-कॉमर्स व डिजिटल प्लॅटफॉर्मद्वारे सहकार्य

बाजारपेठ संशोधनाची भूमिका

आंतरराष्ट्रीय व्यवसायात बाजारपेठ संशोधन महत्त्वपूर्ण ठरते कारण प्रत्येक देशाची ग्राहकसंस्कृती, कायदे, आर्थिक परिस्थिती आणि स्पर्धात्मक वातावरण वेगळे असते.

**बाजारपेठ संशोधनाचे प्रमुख घटक:**

- ग्राहक विश्लेषण
- स्पर्धक विश्लेषण
- मागणी अंदाज
- किंमत धोरण
- सांस्कृतिक व कायदेशीर घटकांचा अभ्यास
- महिला उद्योजकांसमोरील आव्हाने
- भांडवलाची कमतरता
- माहिती व तांत्रिक कौशल्याचा अभाव
- सामाजिक अडथळे
- जागतिक स्पर्धा
- धोरणात्मक सहाय्याचा अभाव

**उपाययोजना**

- सरकारी योजना व आर्थिक सहाय्याचा लाभ घेणे.
- कौशल्य विकास व डिजिटल प्रशिक्षण.
- आंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन व व्यापार मेळावे.
- संशोधन संस्थांशी व एनजीओंशी सहकार्य
- महिला उद्योजक नेटवर्कची निर्मिती.

**निष्कर्ष**

महिला उद्योजकता ही आर्थिक विकासासाठी अत्यंत महत्त्वाची आहे. आंतरराष्ट्रीय सहकार्य आणि प्रभावी बाजारपेठ संशोधन यांच्या साहाय्याने महिला उद्योजक जागतिक स्तरावर यशस्वी होऊ शकतात. योग्य धोरणात्मक नियोजन, आर्थिक सहाय्य आणि तांत्रिक सक्षमीकरण यांच्या माध्यमातून महिला उद्योजकांची भूमिका अधिक बळकट होईल.

## संदर्भ सूची (References)

1. Government of India – Ministry of MSME Reports
2. World Bank Reports on Women Entrepreneurship
3. UN Women – Women's Economic Empowerment Reports
4. Drucker, P. F. – Innovation and Entrepreneurship
5. Kotler, P. – Marketing Management